

सातम साक्षी

सातम साक्षी

उपन्यास

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह

www.videha.co.in

सातम साक्षी

गजेन्द्र ठाकुर

© 2026 गजेन्द्र ठाकुर

प्रथम संस्करण: 2026

www.videha.co.in

अनुक्रम

अध्याय १ — बरखाक चारि बजि सतरह मिनट	1
अध्याय २ — सुपारीक डिबिया	10
अध्याय ३ — सूत्रक पहिल उत्तर	20
अध्याय ४ — दुलारी गायब	31
अध्याय ५ — माधवीक पहिल सपना	39
अध्याय ६ — बन्द कोठरीक दोसर साँस	48
अध्याय ७ — वसुधाक घर	56
अध्याय ८ — रोजक आदति	65
अध्याय ९ — माधवी आ अभिराम	74
अध्याय १० — नछत्तर-पोथी	84
अध्याय ११ — घरक एकटा झूठ	91
अध्याय १२ — कनियाँक कोठरी	99
अध्याय १३ — भूकम्पक बर्ख	108
अध्याय १४ — मनाहीक नेह	114
अध्याय १५ — सात टोला	121
अध्याय १६ — गायब दस्तावेज	129
अध्याय १७ — लाल ओढ़नीक राति	136
अध्याय १८ — देवालक पेट	143
अध्याय १९ — हथेली पर दू रेखा	151
अध्याय २० — सूत्रक पहिल भूल	156
अध्याय २१ — दुलारीक आवाज	162

अनुक्रम

अध्याय २२ — नाव पर राति.....	168
अध्याय २३ — ज्योतिषी नहि, स्मृतिकार	175
अध्याय २४ — आध रातिक पायल	181
अध्याय २५ — दुलारी भेटल.....	188
अध्याय २६ — गिरफ्तारी	194
अध्याय २७ — जमानतक बहस	201
अध्याय २८ — साक्ष्यक मालिक के.....	208
अध्याय २९ — कमली देवीक चारि बजिया चाय	214
अध्याय ३० — बनाओल आत्महत्या	220
अध्याय ३१ — जयनारायणक पक्षपात.....	226
अध्याय ३२ — अभिरामक घरक कागज	231
अध्याय ३३ — नेहमे दरार.....	237
अध्याय ३४ — सूत्रक नव नक्सा.....	244
अध्याय ३५ — रहमत काकाक गाँठि	250
अध्याय ३६ — सातम साक्षी शब्दक असल अर्थ.....	255
अध्याय ३७ — परिवारक टूटल घेरा	261
अध्याय ३८ — चारि बजि सतरह मिनट.....	269
अध्याय ३९ — दुलारीक आँखि	277
अध्याय ४० — अन्तिम बहस.....	283
अध्याय ४१ — माटि फेर नाम पबैत अछि	289
अध्याय ४२ — जतऽ तर्क थमि जाइत अछि	294

अध्याय १ — बरखाक चारि बजि सतरह मिनट

रातिक बरखा भोर धरि अपन थकान नहि मानने छल। कचहरीक पुरान भवनक मोट देवाल पर पानि एना बहि रहल छल जेना कोनो पुरान लिखावट धेआन सँ मेटाओल जा रहल हो। आँगनमे दिनक कचहरीक कोलाहल नहि, केवल छप्परक धार, नालीक भरभराहत आ दूर कतहु अधसूतल कुकुरक एकाध भुकबाक ध्वनि छल। घड़ी चारि बजि सतरह मिनट देखबैत छल, मुदा पुरान अभिलेख-कोठरीक भीतरक घड़ी ओही समय पर थमल छल—काँटा एकदम निश्चल।

भवनक पछिला फाटक पर पहरा देनिहार बुच्चन पासवान पहिने तऽ बुझलनि जे भीतर केओ राति धरि काज कऽ रहल हएत। वसुधा कर्णक एहन आदति नब नहि छल। मुकदमा लगैत तऽ दिन-रातिक भेद हुनका लेल पातळ भऽ जाइत। मुदा बरखाक पानी घटैत-बढ़ैत दू घड़ी बीति गेल, भीतरक पीयर बत्ती नहि मिझायल, आ दुआरि खटखटेलापर कोनो उत्तर नहि भेटल।

“वसुधा दीदी?” बुच्चन पहिने धीरे बजलाह। फेर जोर सँ—“दीदी, दुआरि खोलू। भोर होएबाला अछि।”

भीतर सँ किछु नहि।

ओ साँकल हिलौलनि। दुआरि भीतर सँ अँटकायल छल। पुरान लकड़ीक पल्लामे बीचक फाँक सँ पीयर उजास बाहर लीक-जकाँ पड़ि रहल छल। बुच्चनक मनमे एक बेर विचार आयल—वकील लोकनि कतेको कागज पसारि देत छथि; बीचमे निदा लागि गेल हएत। मुदा फेर हुनका काल्हि साँझक दृश्य मोन पड़ल। वसुधा छाता नचबैत भीतर गेल छलीह। संगमे एकटा दुबली, साँवली छौड़ी छल, जेकरा बुच्चन दुलारी कहि चिन्हैत छलाह।

ओहि विचारक संग हुनकर छातीमे अदना-सा काँप उठल।

बरामदाक दोसर छोर पर सफाइक काज करनिहार सोमरी देवी अपन झाड़ू देवालसँ टेकौने पानि थमबाक बाट जोहि रहल छलीह। बुच्चन हुनका बजौलनि। सोमरी दुआरि लग आबि फाँकमे आँखि सटौलनि, मुदा भीतर मेजक कोना आ एकटा कुर्सीक पाछूमात्र देखाइत छल।

“खिड़की?” सोमरी फुसफुसाइत पुछलनि।

“लोहेक जाली। बाहरसँ कीचड़ो नहि।”

“तखन बाबू लोककेँ बजाउ।”

आधा घड़ीक भीतर पुरान भवनक गुमसुम देह जागि उठल। थाना सँ दू सिपाही, एक उपनिरीक्षक, कचहरीक चौकीदार, अभिलेख-विभागक मुंशी, फेर एक-एक कऽ किछु लोक आबि गेल। पानि एखनहुँ झिरझिराइत छल। दुआरि तोड़बाक पहिने सभकेँ दूर कएल गेल। साँकल भीतर छल, एहि बात पर सभक आँखि पहिने-पहिने टिकैत।

पल्ला टूटल तऽ भीतरक हावा बाहर जेना लमहर साँस छोड़लक। ओहिमे पुरान कागजक सीलन, तम्बाकूक हल्का गमक, भीजल कपड़ाक गन्ध आ कोनो तीख वस्तुक ऐंठन छल जेकरा केओ तत्काल नाम नहि दऽ सकल।

वसुधा मेजक बामा कात जमीन पर अधबैसल-अधलेटायल छलीह। पीठ अलमारीक नीचला पल्लासँ सटल। माथक दहिना भाग लग चून-जकाँ उज्जर धूरि चिपकल छल। कातमे पीतल रंगक छोट सुपारी-डिबिया खुलल पड़ल। मेज पर दू कपक गोल दाग, मुदा कप एक्केटा। खुलल कागज पर आध पाँति लिखल छल—“जँ ई कागज फेर गायब भेल...” तकर बाद कलमक रेखा नीचे खसि गेल छल, जेना हाथ एकाएक ढील पड़ि गेल हो।

उपनिरीक्षक विनय ठाकुर झुकि नाड़ी देखबाक औपचारिकता कएलनि। देह ठंढा भऽ चुकल छल। हुनकर संगक सिपाही तुरन्त बजल—“भीतर सँ बन्द। कागज पर लिखलो अछि। आत्महत्या बुझाइत अछि।”

विनय ओकरा आँखि सँ चुप करौलनि। मुदा शब्द हवा मे छूटि गेल। आत्महत्या। बरामदामे ठाढ़ लोकक बीच ई बात पानिक बून्द जकाँ चारु दिस फटफटायल।

माधवी जखन पहुँचल तखन भोरक फीका उजास आकाशमे चढ़ि रहल छल। ओ नंगटे पएर नहि, मुदा चप्पल एतेक भीजल जे प्रत्येक डेग पर चुड़क-चुड़क ध्वनि करैत। ओकर सलवारक नीचला भाग कीचड़ सँ लथपथ; ओढ़नी सिर पर रहितो आध मुँह पानि सँ भीजल। ओकरा खबर बुच्चनक बेटा देलक—“वसुधा दीदी कचहरीमे... किछु अनर्थ भऽ गेल।”

अनर्थ शब्द सुनि ओ पूरा बाट एकहि बात दोहरबैत आयल छल—नहि, नहि, नहि। कचहरीक बरामदा पर भीड़ देखिते ओकर “नहि” भीतर धँसि गेल।

“माधवी, भीतर नहि,” विनय हाथ उठा कऽ रोकलनि।

“हम हुनकर कागज देखैत छलहुँ। काल्हि राति धरि—”

“काल्हि कखन छुटली?”

“साढ़े आठक आसपास। ओ कहलखिन जे हम चलि जाउ। दुलारी एखन आबएत।”

“दुलारी सदाय?”

“हँ।”

विनयक आँखि कने तेज भेल। “ओ आयल छल?”

माधवी बुच्चन दिस तकलीह। बुच्चन धीरे माथ हिलौलनि। “हम देखलहुँ। करीब नौक बाद। छाता नहि छल ओकरा लग। लाल कपड़ा माथ पर खोंसलने भीतर गेल।”

“निकसल कखन?”

बुच्चन उत्तर देबासँ पहिने चुप भऽ गेलाह। बरखा रातिमे फाटक लग ओ कतेक बेर जागल, कतेक बेर ऊँघल—ई सभ हुनका अपनहि पर भरोसा नहि छल। “देखल नहि। मुदा राति एक बेर फाटक खुलबाक ध्वनि भेल जकाँ बुझायल... समय नहि कहि सकब।”

माधवीक देहमे एकाएक ठंड दौड़ल। दुलारी। वसुधा। अधलिखल पाँति।

विनय फेर पूछलनि, “वसुधा जीक मनक अवस्था कतेक दिन सँ खराब छल? तनाव? भय? घरमे झगड़ा?”

माधवीक भीतर किछु तीत उठल। “अहाँ मृत मनुष्यक चारूकात पहिने सँ कारण किएक खोजि रहल छी? पहिने ई नहि देखब जे हुनका भेल की?”

“ओही लेल पूछैत छी।”

“ओ आत्महत्या नहि करतीह।”

“एखन किछु कहल नहि गेल अछि।”

“बाहर सभ कहल जा रहल अछि।”

विनय एक क्षण ओकरा देखैत रहलाह। बीस बर्खक छोड़ी, मुदा स्वर काँपत रहितो पीछे नहि हटैत। “तखन अहाँ बताउ—काल्हि ओ की काज कऽ रहल छलीह?”

माधवीक मुँह सूखल। ओ मेज पर पड़ल कागज दिस टकटकी लगौने रहल। “सात टोला जमीनक मुकदमा। पुरान नकल खोजि रहल छलीह। किछु पन्ना अभिलेखसँ मेल नहि खा रहल छल। ओ कहैत छलीह जे नब नकल पुरान नकलक अँकड़ा खाइत अछि। काल्हि साँझ एकटा लिफाफा भेटल छल... भीतर की छल, हमरा नहि देखौलनि।”

“के देलक?”

“कहलीह—जकरा डर अछि, ओ नाम नहि लिखत।”

विनय कागज पर किछु नोट कएलनि।

ओही समय बरामदामे एक बूढ़ पुरुष धीरे-धीरे छाता झारैत आबि ठाढ़ भेलाह। माथक केस लगभग उज्जर, देह भरल नहि, आँखि स्थिर। गेरुआ नहि, साधारण धूसर कुर्ता, पुरान चप्पल, काँध पर कपड़ाक झोरा। बुच्चन तुरन्त सीधा भऽ गेलाह।

“जयनारायण बाबू?”

उपनिरीक्षक विनय सेहो हुनका चिन्हि गेलाह। “अहाँ एतेक भोर?”

“वसुधाक घर सँ खबर आयल।” जयनारायण मंडल बरामदाक भीड़ नहि, पहिने टूटल दुआरि देखलनि। फेर दुआरि लगक जमीन, फेर बाहरक कीचड़। “हम भीतर जा सकैत छी?”

विनय क्षण भर सोचलनि। अवकाशप्राप्त पदाधिकारी, मुदा कचहरीक पुरान लोक, वसुधाक परिचित, आ हुनकर आँखिक ख्याति एखनहुँ पुलिसमे कथा-जकाँ कहल जाइत छल। “किछु छूबब नहि।”

“छुबबाक प्रयोजन कखन पड़ैत अछि?” जयनारायण हल्का मुस्कुरौलनि। “आँखि ठीक रहए तऽ आध काज दूरहिसँ भऽ जाइत अछि।”

माधवी पहिल बेर हुनका निकट सँ देखलक। वसुधा हुनकर नाम कतेको बेर लेने छलीह—“जयनारायण काका लोकक बोली सँ बेसी ओकरा चुप्पी पढ़ैत छथि।” ओहि वाक्यक अर्थ एखन बुझाइत नहि छल।

ओहि बीच माधवीक मोन काल्हि साँझक छोट-छोट बात पर घुरि गेल। सात बजलापर वसुधा खिड़की लग ठाढ़ भऽ बरखा देखैत कहने छलीह—“माटि भीजला पर पुरान गन्ध उठैत अछि, कागजो ओहिना। दबायल चीज देर-सबेर गमक दैत अछि।” माधवी तखन हँसि देने छल—“दीदी, कागज गमकैत नहि, सीलैत अछि।” वसुधा उत्तर देने छलीह—“सीलन सेहो गवाही अछि।” एखन ओ बात भीतर काँटा जकाँ अँटकल। ओहि समय वसुधा तीन बेर अपन झोरा खोलने-बन्द कएने छलीह। पहिल बेर लिफाफा रखबाक लेल, दोसर बेर कोनो मोट पोथी टटोलबाक लेल, तेसर बेर छोट चाभीक गुच्छा देखबाक लेल। माधवी तखन एहि सभ पर धेआन नहि देने छल।

राति घर लौटैत काल ओ वसुधाक कहल एक आउर पाँति सुनने छल—“जँ दुलारी आबि जाए, ओकरा अकेले बाहर नहि पठाएब।” माधवी पूछने छल, “ककर डर?” वसुधा हँसि देलखिन, मुदा ओ हँसी आँखि धरि नहि पहुँचल छल। “कचहरीमे डरक नाम नहि लिखल रहैत अछि, माधवी। नाम लिखल रहितै तँ मुकदमा आधे सरल होइत।”

माधवीक अपराध-बोध एखन तेहन उमड़ल जे ओकरा लगल ओहि राति ओकरा जाएबाक नहि चाही छल। माय अकेली छल, घरमे सिलाइक तीन जोड़ी कपड़ा देबाक छल, मुदा ई सभ

कारण एखन एतेक छोट किएक लगैत अछि? जँ ओ रुकि जाइत? जँ दुलारी आबिते दुनू संग रहैत? जँ...। प्रश्नक भीड़ मनुष्य केँ पछाँ खींचैत अछि, मुदा समय पछाँ नहि घुरैत। ओ एखन केवल टूटल दुआरि देखैत रहि सकैत छल।

बरामदामे कमली देवी चूल्हि पर चाय चढ़ा देने छलीह। कचहरीक लोक धीरे-धीरे जमा होइत, मुदा सभक आवाज अस्वाभाविक रूपसँ नीच। जे लोक काल्हि धरि वसुधासँ बहस करैत छल, आइ ओकर नाम फुसफुसा कऽ लैत। एक मुंशी कहैत छल—“बड्ड तेज चलैत छलीह, एहन लोकक दुश्मन बनिये जाइत।” दोसर बजल—“घरक बातो तऽ छल।” माधवीक कान जलि उठल। मृत स्त्रीक जीवन पर समाज तुरन्त अपन-अपन कथा चढ़ा दैत अछि; जे मुँह सामने किछु नहि बजल, ओ पाछाँ पूरा न्याय करय लगैत। ओ आगे बढ़ि कऽ कहए चाहलक—“अहाँ सभ चुप रहू”—मुदा जयनारायणक आगमन सँ बात कटि गेल।

जयनारायण दुआरि भीतर डेग रखलनि, फेर ठमकि गेलाह। जमीन पर पानिक एक बूँद छल। दोसर, कने आगाँ। तेसर नहि। ओ ऊपर छत दिस तकलनि। छत सूखल। खिड़की बंद। वेंटिलेटर उँचाइमे अन्हार। फेर वसुधाक देह, मेज, कपक दाग, घड़ी आ डिबिया। हुनकर नजर ककरो पर लमहर नहि ठहरैत छल, मुदा जेना सभक माप लैत चलैत।

ओ वसुधाक चेहरा दिस किछु क्षण तकलनि। माधवीक लगा जे बूढ़ पुरुषक आँखि ओ क्षण पुलिसक नहि, परिचितक भऽ गेल।

जयनारायण वसुधाक दहिना हथेली दिस देखलनि। उँगुरी सभ आध मुड़ल, नखक भीतर चून-जकाँ उज्जर कण। बामा हथेली साफ। कलाई पर घड़ी नहि—वसुधा हाथघड़ी पहिरैत छलीह कि नहि, से ओ पूछलनि। माधवी कहलक, “नहि, कागज लिखैत असुविधा कहैत छलीह।” मेजक पाछाँ देवाल पर लटकल कैलेंडरक एक पन्ना हवा बिना हिलि रहल छल। जयनारायण ऊपर नजर उठौलनि। वेंटिलेटरक जाली भीतर सँ अन्हार, मुदा ओतऽ सँ हल्की हवा आबि रहल छल।

“खिड़की बन्द, दुआरि भीतर सँ, तखन ई पन्ना किएक हिलैत अछि?” ओ स्वयं जकाँ बजलनि।

सिपाही कहलक, “वेंटिलेटर।”

“हँ। कोठरी पूर्ण बन्द नहि।” जयनारायण एतबे कहि चुप भऽ गेलाह।

मेजक तल्ला लग कागजक राखक एक नन्हका धब्बा सेहो छल। राख एतेक कम जे पहिल नजरमे धूरि बुझाइत। जयनारायण झुकि सुंघलनि, छुलनि नहि। “कागज जड़ल अछि?”

विनय कहलक, “अगरबत्ती सेहो हो सकैत।”

“हो सकैत।”

माधवी तुरंत बजली, “दीदी अगरबत्ती नहि जरबैत छलीह। कहैत छलीह धुँआ सँ छींक अबैत अछि।”

जयनारायण ओकरा देखलनि। “एक आउर आदति।”

ओ राखक छवि लेलनि, फेर कोठरीक चहुँदिस आँखि दौड़ौलनि। अलमारीक एक पल्ला कने खुलल। भीतर फाइल सभ सीधा, मुदा बीचमे खाली जगह। एना जेना मोट फाइल निकालल गेल हो। “सूची बनाउ,” ओ विनय केँ कहलनि, “कौन फाइल एतऽ रहबाक छल, ककरा निकालल गेल।”

विनय एखन विरोध नहि कएलनि। घटनास्थल धीरे-धीरे आत्महत्याक सरल चित्र सँ हटि कऽ आदतिक टूटल नक्शा बनि रहल छल।

“राति सुपारी खाइत छलीह?” जयनारायण बिना घूमि पूछलनि।

माधवी चौंकल। “नहि। साँझक बाद तँ बिल्कुल नहि। कहैत छलीह पेट जरैत अछि।”

“डिबिया कतऽ राखैत छलीह?”

“मेजक दहिना कोनमे। सदिखन।”

जयनारायण फेर डिबिया देखलनि। ओ बामा कात जमीन पर छल।

विनय बजलनि, “गिरि गेल हएत।”

“हएत।” जयनारायण सहज स्वरमे कहलनि। “गिरल वस्तु केतेक बात कहैत अछि, ई देखबाक अछि।”

ओ मेज लग झुकलनि। दू गोल दाग। एकटा गहिर, एकटा फीका। उँगली नहि लगौलनि। “दू कप?”

माधवी कहलक, “वसुधा दीदी अपन कप कखनो मेजक बीचमे नहि राखैत छलीह। कागज भीजि जाएत कहि किनार पर राखैत छलीह।”

जयनारायण एकदम ओकरा दिस तकलनि। “अहाँ रोज हुनका संग रहैत छलहुँ?”

“प्रायः।”

“तखन हमरा अहाँक सहायता चाही।”

माधवीक गला भर्ना गेल, मुदा ओ माथ हिलेलक।

बाहरक बरखा एकाएक तेज भऽ गेल। खिड़कीक जाली पर पानि थपथपायल। ओ ध्वनि बीच जयनारायणक नजर मेजक नीचे अटकली। एकटा नन्हकी कागजी पुड़िया, भीजल नहि।

ओ विनय कैं इशारा कएलनि। सिपाही दस्ताना पहिरि उठा लेलक। भीतर चीनीक दू छोट दाना आ चायक सूखल पत्ती चिपकल छल।

“वसुधा चायमे चीनी?” जयनारायण पूछलनि।

माधवी तुरन्त बजली—“कखनो नहि।”

विनयक चेहरा पहिल बेर बदलल। “तखन दोसर कप?”

“एखन नाम नहि।” जयनारायण कहलक। “बस एतेक बुझू—भीतर एकटा आदति टूटल अछि। एकटा नहि, सम्भवतः तीन-चारि।”

ओ घड़ी दिस तकलनि। काँटा चारि बजि सतरह मिनट पर।

“ई घड़ी चलैत छल?”

अभिलेख-मुंशी कहलक, “काल्हि दिउसभर चलैत देखलहुँ।”

“बिजुरी गेल छल?”

“भवनक ई घड़ी अपन सूक्ष्म विद्युत-कोषसँ चलैत अछि।”

जयनारायण किछु नहि बजलाह। ओ दुआरि दिस घूमलनि, फेर टूटल साँकलक भीतरक टुकड़ा देखलनि। पल्ला टूटल, मुदा साँकल सचमुच भीतर अँटकायल छल।

विनय धीमे कहलनि, “बन्द कोठरी। मृतका भीतर। अन्तिम भेटनिहार गायब। अधलिखल वाक्य। आत्महत्या कहब गलत नहि छल।”

जयनारायण बरामदा दिस चलैत कहलनि, “गलत कि सही, ई एखन नहि। मुदा एक बात हम कहि सकैत छी।”

“की?”

“जे दृश्य एतेक जोर सँ अपन अर्थ कहए, ओकरा कने देर चुप करा कऽ देखबाक चाही।”

माधवी हुनकर पछाँ-पछाँ बाहर आयल। भोर आबि चुकल छल, मुदा आकाशक रंग एखनहुँ रातिकें पकड़ने छल। कचहरीक आँगनमे पानि भरल। टूटल दुआरि भीतर पीयर बत्ती जलैत।

ओहि समय ककरो मुँह सँ दुलारीक नाम फेर उठल—“छौड़ी घर पर नहि अछि।”

माधवी एकदम मुड़ली। “की?”

बुच्चनक बेटा हाँफैत आबि रहल छल। “ओकर झोपड़ी खाली। माय कहैत अछि राति सँ घर नहि पहुँचल।”

भोरक पहिल उजासमे ई खबर सभसँ अन्हार लागल।

जयनारायण तुरन्त भीड़क प्रतिक्रिया देखलनि। ककरो मुँह पर भय, ककरो पर जिज्ञासा, ककरो पर ओ विशेष चमक जे अनर्थक खबरमे लोक अनचाहतो आनन्द खोजि लैत अछि। ओ बुच्चनक बेटा सँ दुलारीक घरक बात फेर धीरज सँ पुछलनि—“ओढ़नी भीतर कहाँ छल?” “खूँटी पर।” “जूता?” “खाट लगा।” “थैला?” “कापी संग।” “दुआरि खुलल?” “माय खोलने छल।” जयनारायण प्रत्येक उत्तर पर बस माथ हिलबैत गेलाह।

फेर ओ कोठरीक बाहरक देवाल नापल नजर सँ देखलनि। खिड़कीक नीचे कीचड़ एकरस छल; ताजा पएरक गहिर छाप नहि। वेंटिलेटरक नीचे देवाल पर वर्षाक धार बीच एक पातर उज्जर रेखा छल, जेना पानी ओहि ठाम कोनो सूक्ष्म वस्तु टकरा कऽ दू फाँक भेल हो। विनय कँ देखौलनि। “ई काल्हि सँ पहिने छल कि नहि, पुरान छवि खोजू।”

“तार?” विनय पुछलनि।

“कहब जल्दबाजी। डोरी, बेल, देवालक दरार—किछुओ। केवल चिन्ह राखू।”

माधवी कँ एकाएक बुझायल जे जाँच घटना मात्र नहि, ‘पहिने’ आ ‘एखन’क बीच भेद खोजबाक काज अछि। वसुधाक कोठरी काल्हि कतेक अलग छल? मेज पर कुन फाइल? खिड़की कतेक खुलल? डिबिया कहाँ? ई सभ ओ जानैत छल, मुदा एखन धरि ककरो एक संग नहि कहने। ओकरा अपन स्मृति सँ डर लगल—जँ ओ गलत मोन करैत हो? जँ दुःख चीज सभ बदलि दैत हो?

जयनारायण ओकर चेहरा पढ़ि लेने जकाँ बजलनि। “माधवी, जे पक्का मोन अछि से पक्का कहू, जे धुँधल अछि से धुँधल। स्मृति पर जोर देब तऽ ओ खाली जगह भरि देत। हमरा भरल जगह नहि, सही खाली जगह चाही।”

एहि वाक्य सँ माधवीक भीतरक दबाव कने हल्का भेल। सत्य खोजबाक लेल सभ बात जानब आवश्यक नहि; जे नहि जानैत छी, से स्वीकारब सेहो काजक हिस्सा अछि।

ओ फेर एक बेर टूटल दुआरि दिस तकली। काल्हि एहि दुआरिसँ निकलैत वसुधा पाछाँ सँ बजौने छलीह—“छाता नीकसँ खोलिह, हवा उलटा अछि।” एतेक साधारण वाक्य। मृत्यु सदिखन असाधारण वाक्य छोड़ि नहि जाइत; कखनो अन्तिम स्मृति छाताक सावधानी होइत अछि। माधवीक आँखि फेर भरि आयल। ओ अपनहि कँ कहलक—एखन कानब बादमे; पहिने जे मोन अछि से बचा लिअ।

ओ कापी निकालि काल्हि साँझक पाँच बात लिखलक—नील कप, दहिना डिबिया, लिफाफा, झोरामे पोथी-जकाँ वस्तु, दुलारी कँ अकेले नहि पठेबाक बात। लिखिते ओकरा

बुझायल जे स्मृति कागज पर उतरला बाद भय कने व्यवस्थित होइत अछि। जयनारायण दूर सँ ई देखलनि, किछु नहि बजलाह।

जयनारायण अपन झोराक पट्टी काँध पर ठीक कएलनि। “पहिने दुलारी केँ दोषी नहि, खोजबाक मनुष्य बुझू।”

विनय हुनका देखलनि। “किएक?”

“कारण जे भागल लोक बड्ड किछु संग लैत अछि। जे छौड़ीक जूता दुआरि पर, ओढ़नी भीतर आ एक्कोटा रुपैया नहि, ओकर भागबाक कथा हमरा एखन कमजोर बुझाइत अछि।”

“अहाँ ओकर घर देखलहुँ?”

“नहि।”

“तखन?”

जयनारायणक आँखि बरखा पारि कतहु टिकली। “बुच्चनक बेटा कहैत अछि झोपड़ी खाली। ओ ई नहि कहलक जे सामान गायब। लोक खबर देत काल अपन बुझाइयो संग आनैत अछि। हमरा ओकर बुझाइ सुनाइ देलक।”

माधवी पहिल बेर एतेक रातिक बाद गहिरी साँस लेलक। ओकरा लगैत छल जे सभ किछु टूटि गेल, मुदा टूटल चीजक बीच एक बूढ़ आँखि किछु धागा उठाबय लागल अछि।

पीछाँ कोठरीक घड़ी एखनहुँ चारि बजि सतरह मिनट पर अँटकल छल। बाहर समय चलि रहल छल।

अध्याय २ — सुपारीक डिबिया

भोर फाटि चुकल छल, मुदा कचहरीक पुरान भवनमे रातिक गन्ध एखनहुँ अटकल। पुलिस देह अस्पताल पठा देलक, बरामदाक भीड़ धीरे-धीरे छँटल, आ चाय बेचिनिहार अपन भट्ठी सुलगा देलक। बरखा केवल महीन बूँद बनि रहल। जयनारायण मंडल तखनहुँ नहि गेलाह।

विनय ठाकुरक मनमे कने झुँझलाहट छल। सेवानिवृत्त लोकक सलाह पुलिस विभागमे दू किसिमे लेल जाइत—कखनो सम्मानसँ, कखनो बोझ बुझि। जयनारायणक नाम सम्मानक खेमामे छल, मुदा विनय अपन पहिल स्वतंत्र बड़ जाँचमे कोनो पुरान पदाधिकारीक छाया नहि चाहैत छल।

“अहाँ घटनास्थल फेर देखब?” ओ पूछलनि।

“देखब नहि। पहिने सुनब।”

“केकरा?”

“जतबा लोक वसुधा केँ रोज देखैत छल, सभक। वस्तु सँ पहिने आदति बुझब आवश्यक अछि।”

विनय कुर्सी खिसकौलनि। “अहाँक प्रसिद्ध आदतिक सिद्धान्त।”

“सिद्धान्त नहि। घरक साधारण बुद्धि। मनुष्य जखन डरैत अछि तखन सेहो अपन कतेको आदति नहि छोड़ैत। आ जे दृश्य बनबैत अछि, ओ मृतकक आदति सभसँ कम जानैत हो तँ गलती करैत अछि।”

पहिल बोलाओल गेल माधवी। ओ रातिसँ किछु खाइयो नहि सकल छल, मुदा आँखिमे निद्रा नहि, केवल कठोर जागरण। जयनारायण ओकरा चाय देबय कहलनि। कमली देवी अपन दोकान सँ चाय पठौलनि—एक कप बिनु चीनी, एक कप कम चीनी। माधवी कप हाथमे लैत पूछलक, “अहाँ बिनु चीनी?”

जयनारायण मुस्करौलनि। “वसुधा हमर आदति सेहो जानैत छलीह। मुदा आइ हम अहाँक आदति पूछब।”

माधवी प्रश्न बुझि नहि सकली।

“काल्हि साँझक बात शुरू सँ कहू। घड़ी देखि-देखि नहि; जेना मोन पड़ैत अछि तेना।”

माधवी आँखि बन्द कएलक। “दुपहरिया बाद सँ दीदी बेचैन छलीह। सात टोला जमीनक पुरान नकल आयल छल। एक पन्नामे सीमा ‘उत्तर पोखरि’ लिखल छल, नब अभिलेखमे ‘उत्तर सड़क’। पोखरि एखनहुँ अछि। सड़क बादमे बनल। दीदी कहलीह—‘जे सड़क बादमे भेल, ओ नब नकलमे पुरान सीमा कोना भऽ गेल?’ फेर रहमत काका एकटा पुरान बँधल फाइल देबय आयल छलाह।”

“रहमत?”

“किताब-बँधनिहार। पुरान कागज सुधारैत छथि।”

“आ लिफाफा?”

“साँझ सातक आसपास। एक नन्हका लड़का देलक। नाम नहि कहल। लिफाफा भीजल नहि छल, जबकि बाहर बरखा शुरू भऽ गेल छल।”

जयनारायण आँखि उठौलनि। “अर्थात् लिफाफा दूर सँ नहि आयल हएत। लड़का कहाँ गेल?”

“पता नहि। दीदी ओकरा दू रुपैया देलखिन, ओ भागि गेल।”

“लिफाफा खोलल?”

“हम सामने छलहुँ। भीतर पुरान कागज नहि—नब कागज पर कोनो सूची छल। दीदी पढ़िते चेहरा बदलि गेल। हम पूछलहुँ तँ कहलखिन, ‘जतबा कम जनब, एखन ततेक नीक।’ ई बात हुनकर स्वभावक नहि छल। हमरा कखनो बच्चा जकाँ दूर नहि राखैत छलीह।”

“तखन?”

“साढ़े आठक आसपास हमरा घर पठा देलखिन। कहलखिन—‘माय अकेली हएत। जा।’ दुलारी आबएबाक छल।”

“वसुधा राति सुपारी किएक नहि खाइत छलीह?”

“पेटमे जरन। डाक्टर रोकने छल।”

“डिबिया सदिखन दहिना?”

“हँ। दीदी बामा हाथ सँ लिखैत छलीह, मुदा डिबिया दहिना राखैत छलीह। कहैत छलीह जे बामा कात कागजक जगह।”

जयनारायण एकदम चुप भऽ गेलाह। विनय नोट करैत रहलाह।

“काल्हि डिबिया कतऽ छल?”

“जमीन पर बामा।”

“माने कोनो हाथसँ गिरि सकैत अछि।” विनय कहलनि।

“सकैत अछि।” जयनारायण सहमति देलनि। “मुदा एखन हम ‘सकैत’ जमा कऽ रहल छी, ‘भेल’ नहि।”

माधवीक नजर हुनकर चेहरा पर ठहरल। जयनारायण प्रश्न पूछैत समय उत्तर धक्का दऽ कऽ बाहर नहि निकालैत छलाह। ओ जगह छोड़ैत छलाह, जाहिमे स्मृति स्वयं चलि आबय।

“दू कप?” ओ पूछलनि।

माधवी भौं सिकोड़लक। “दीदीक अपन कप नील किनारीक छल। घटनास्थल पर जे कप छल, ओ सफेद छल।”

विनय तुरन्त बजलनि, “अहाँ भीतर गेल छलहुँ?”

“दुआरि टूटलापर दूर सँ देखलहुँ। नील कप नहि देखल।”

“नील कप काल्हि साँझ छल?”

“हँ। हम चाय बनौने छलहुँ। बिनु चीनी।”

जयनारायणक उँगली टेबुल पर एक बेर टक कएलक। “कमली देवी कै बजाउ।”

कमली देवी करीब पचास बर्खक, गठल देह, तेज आँखि। कचहरीक लग हुनकर छोट दोकान बिना पट्टाक छल, मुदा पचीस बर्ख सँ ओही ठाम। वकील, मुवक्किल, सिपाही, मुंशी, सफाईकर्मी—सभक चायक माप हुनकर हाथ स्वयं याद रखने छल।

“वसुधा बेटी?” ओ प्रश्न सुनिने आँचल सँ आँखि पोछलनि। “ओ तँ हमर दूकानक चायमे चीनीक डब्बा छूयो नहि दैत छल। कहैत—‘कमली काकी, अहाँक चाय मीठ स्वयं अछि, चीनी किएक?’”

“काल्हि राति चाय गेल छल?”

कमली माथ खुजलनि। “राति? बरखा जोर छल। दसक आसपास बुच्चनक छोरा दू कप लेल छल, मुदा कहलक ऊपरक बाबूक लेल।”

“कौन बाबू?”

“नाम नहि। हमरा की? जे कहय, बना देब। एक कप बिना चीनी, एकमे दू चमचा।”

जयनारायणक आँखि चमकल, मुदा स्वर ओही समान। “दू कप एक संग?”

“हँ। मुदा सुनू—बिना चीनीक कप नील किनारीक, मीठ कप सफेद। हमर दूकानक अलग-अलग कप अछि।”

माधवीक हाथ कप पर जकड़ि गेल।

विनय पुछलनि, “नील कप घटनास्थल पर नहि भेटल?”

सिपाही सूची देखलक। “एक सफेद कप। नील नहि।”

कमली देवी बिना पूछने जोड़लनि, “बुच्चनक छोरा फेर कप लौटा देलक कि नहि, हमरा मोन नहि। राति भीड़ नहि छल, मुदा बरखामे दोकान समेटैत रहलहुँ।”

जयनारायण धीरे बजलनि, “कप खोजू। नाली, बरामदा, कोठरीक पाछाँ, सभ ठाम।”

विनय पहिल बेर आदेश बिना प्रतिवाद मानि लेलनि।

तखन बुच्चन पासवान आयलाह। हुनकर कथन छोटे-छोटे टुकड़ामे निकलल। राति नौक बाद दुलारी भीतर गेल। करीब साढ़े नौ बजे कचहरीक सामने सँ एक मोटरगाड़ी गेल, ठहरल कि नहि, स्पष्ट नहि। दसक आसपास बेटा चाय लऽ गेल। राति साढ़े दस-पौने एगारह बिजली एक बेर झपकल। आध राति बाद बरखा एतेक तेज भेल जे फाटकक ध्वनि सुनब कठिन। ओ एक-दू बेर कुर्सी पर ऊँघलो गेलाह।

“दुलारी निकलैत देखल?”

“नहि।”

“केओ आउर?”

“दू छाता दूर सँ गेल जकाँ देखलहुँ। मुदा ई कचहरी अछि; बरामदा पार करैत केओ हो सकैत अछि।”

“कतेक बजे?”

“मोन नहि।”

“मोन नहि अछि, ई नीक उत्तर अछि,” जयनारायण कहलनि। “अटकलबाजीसँ नीक।”

विनय हुनका देखलनि; ई वाक्य अपन लेल सेहो बुझलनि जकाँ।

दुलारीक घरक खबर एखन विस्तृत आयल। ओकर माय भोरमे देखलनि जे बेटी नहि। भीतर ओढ़नी, एक जोड़ी जूता, पुरान थैला, रातिक पढ़ाइक कापी सभ ओहिना। एक जोड़ी घिसल चप्पल गायब; जे सम्भवतः पएरमे छल। पैसा? मिट्टीक डिब्बामे बाइस रुपैया ज्योंक-त्यों।

जयनारायण दुलारीक घर तत्काल जाएबाक बदला ओकर माय सँ वस्तुक सूची मँगौलनि। विनय आश्चर्य कएलनि। “स्वयं देखब नीक नहि?”

“देखब, मुदा पहिने घरक लोक जे देखैत अछि से सुनि लिअ। पुलिस पहुँचला बाद घर बदलि जाइत अछि—लोक वस्तु समेटैत, पड़ोसी घुसैत, भयमे किछु नुकबैत। पहिल नजर घरक लोकक अछि।”

दुलारीक माय फूलो सदाय पुलिसक सामने आबि काँपि रहल छलीह। पैरमे भीजल साड़ी चिपकल, माथ पर आँचल, हाथ बेराबेरी मुँह लग जाइत। “हमर छोड़ी चोरी नहि कएलक बाबू। ओ राति पढ़ए जाएत, काज करैत, मुदा ककरो एक दाना नहि छूबैत।”

विनय कहलक, “हम चोरी कहलहुँ?”

फूलो ठिठकि गेलीह। “गाममे लोक बजैत अछि। कहैत अछि वकीलनीक कागज लऽ भागल।”

जयनारायण धीरे पूछलनि, “दुलारी घर सँ काल्हि की लऽ गेल छल?”

“कापी, कलम, पुरान छाता... छाता फाटल छल। फेर बरखा तेज भेल तऽ सम्भवतः ओतहि छोड़ि देलक।”

“कपड़ा?”

“जे देह पर छल, से। लाल गमछा माथ पर। ओढ़नी घरमे अछि।”

“ककरो सँ झगड़ा?”

फूलो आँखि नीचा कएलनि। “जमीन-समूहक लोक कहैत छल केस छोड़ू। दू बेर राति झोपड़ी लग ढेला पड़ल। दुलारी कहलक—‘माय, डरब नहि। नाम लिखि लेलहुँ।’”

“ककर नाम?”

“हमरा नहि बतौलक। कहलक, जँ हम जानब तँ मुँहसँ निकलि जाएत।”

जयनारायणक चेहरा गम्भीर भऽ गेल। “ओ नाम कहीं लिखने छल?”

“कापीमे होएत। कापी घरमे छै।”

विनय तुरन्त सिपाही पठौलनि। माधवीक हृदय धड़कि उठल। दुलारी केवल अन्तिम भेटनिहार नहि, धमकी पबैत साक्षी सेहो छल।

फूलो जाएब लगलीह तखन जयनारायण पुछलनि, “दुलारीक दूरभाष?”

“एक्केटा सस्ता दूरभाष घरमे सभ चलबैत। काल्हि ओ लऽ गेल छल। छोट भायो ओहि पर खेल खेलैत। नम्बर ओकर नाम पर नहि, पड़ोसीक कागज पर लेल गेल।”

अभिराम एखन कक्षमे नहि आयल छल, मुदा एहि छोट बातक महत्व जयनारायण तखनहि बुझि गेलाह। “विनय बाबू, बादमे जँ यंत्र कहए जे दूरभाष दुलारीक अछि, ई बात मोन राखब—यंत्र नम्बर चिन्हैत, हाथ नहि।”

विनय नोट कएलनि। “ठीक।”

“भागल लोक बाइस रुपैया छोड़ैत?” जयनारायण विनयसँ पुछलनि।

“डरमे भागल हएत।”

“हएत। मुदा एहि ‘हएत’क सामने दोसर ‘हएत’ राखू—केओ ओकरा निकलय पर मजबूर कएलक हएत। या ओ एतेक जल्दीमे गेल जे लौटबाक सोचने हो।”

माधवी कहलक, “दुलारी दीदीसँ डरैत नहि छल। उलट, केवल हुनकहि पर भरोसा करैत छल।”

“किएक?”

“जमीनक मुकदमा। दुलारीक बस्ती सात टोला मे एक। ओ पुरान कागज पढ़ब सीखि रहल छल। रातिक पाठशालामे पढ़ैत। ओकर पिता कहैत छलाह—‘छोड़ी पढ़ि कऽ की करिह?’ वसुधा दीदी कहलीह—‘पहिने ई पढ़त, तखन अहाँ सभक कागज पढ़त।’”

जयनारायणक चेहरा नरम पड़ल। “तखन दुलारी केवल साक्षी नहि। कागज बुझए लागल साक्षी अछि।”

“एहि कारण खतरो बेसी,” माधवी फुसफुसाइत कहलक।

एक सिपाही बाहर सँ आवाज देलक। नील किनारीक कप भेटल छल—कचहरीक पछिला नालीक जालीमे अँटकल। कप टूटल नहि, केवल कीचड़ लागल।

विनय तुरन्त उठलनि। जयनारायण हाथसँ रोकलनि। “पहिने छवि, फेर उठाउ।”

“अहाँ पुलिस नहि छी एखन,” विनय आध मुस्कान सँ कहलक।

“तैं तँ केवल कहि रहल छी।”

सभ नाली लग गेल। कप एना अँटकल छल जे बहाव ओकरा दूर नहि लऽ जा सकल। जालीक भीतर नील किनारी चमकि रहल। जयनारायण जमीन देखलनि। नाली लग कीचड़ छल, मुदा साफ जूताक छाप नहि; बरखा सभ मेटा देने छल।

“कप कोठरी सँ एतऽ कोना?” माधवी पूछलक।

जयनारायण उत्तर नहि देलनि।

फेर ओ सभ अभिलेख-कोठरीमे गेल। एखन देह नहि छल, ताहि कारण वस्तु सभ बेसी नंगा बुझाइत छल। मेजक दहिना कोनमे खाली चौकोर धब्बा—जतऽ सुपारी-डिबिया सदिखन रहैत छल जकाँ। बामा जमीन पर डिबिया भेटल छल। नील कप नालीसँ बरामद भऽ चुकल छल। सफेद कप मेज लग। दू गोल दागमे एकटा नील कपक चौड़ाईसँ मेल खाइत, दोसर सफेद सँ।

जयनारायण कुर्सी देखलनि। वसुधाक कुर्सी मेजक पाछाँ नहि, कने तिरछा। “ओ काम करैत समय कुर्सी कोना राखैत?”

माधवी बिना सोचने कुर्सी सीधा कऽ देखबय चाहलक, मुदा हाथ रोकि लेलक। “सामने। बामा पएर मोड़ि कऽ बैठैत छलीह। कुर्सी दहिना घुमल रहए तऽ लिखब कठिन।”

“एखन कुर्सी दहिना घुमल।”

विनय कहलक, “संघर्ष भऽ सकैत अछि।”

“या दृश्य बनाओल गेल।”

“अहाँ फेर ओही दिस।”

“हम कोनो दिस नहि। बस चीज सभ अपन-अपन जगह सँ किएक हटली, से पूछैत छी।”

जयनारायण सुपारी-डिबिया उठाओल प्रमाण-थैलीक बाहर सँ देखलनि। ढक्कनक भीतर लाल कत्थई चूर्ण चिपकल। डिबियाक किनार पर एक नन्हकी कारी लकीर, जेना जड़ल कपड़ा वा कालिख लागल हो।

“वसुधा डिबिया खोलैत कोन हाथ?” जयनारायण पूछलनि।

माधवी कहलक, “दहिना। बामा हाथमे कलम रहैत।”

“ढक्कन जोर सँ अँटकैत?”

“नहि, हल्का। एना।” माधवी हवा मे अँगुरी सँ हरकत देखेलक।

जयनारायण प्रमाण-थैलीक भीतर डिबियाक तल्ला देखलनि। एक कात महीन खरोंच। “जमीन पर गिरलाक खरोंच हो सकैत। मुदा जमीनक कण जाँचू। अगर ई डिबिया पहिने कतहु आउर राखल गेल, तकर धूरि अलग होएत।”

विनय मुस्कुरौलनि। “एक सुपारीक डिबिया सँ हत्या खोलि देब?”

“हत्या होएत तखन। एखन डिबिया हमरा बस ई कहैत अछि जे ओकर जगह बदलल। मनुष्यक कोठरीमे वस्तु सभ शब्द नहि, व्याकरण होइत अछि। कुर्सी, कप, कलम, चाभी—सभ अपन ठाम रहि वाक्य बनबैत। एक वस्तु बेठाम भेल तऽ वाक्य लड़खड़ाइत। पाँच वस्तु बेठाम भेल तऽ देखू के लिखने अछि।”

माधवी कँ वसुधाक कोठरी सचमुच लिखल वाक्य जकाँ देखाइ पड़ल—डिबिया बामा, कुर्सी दहिना घुमल, नील कप नालीमे बरामद, राख जमीन पर, घड़ी रुकल। केओ वाक्य बदलने छल कि घटना स्वयं सभ बदलि देने? एहि भेद पर पूरा सत्य टिकल छल।

जयनारायण ओकरा कहलनि, “अहाँ काल्हि साँझक मेज कागज पर बना सकैत छी?” माधवी कापी लेलि आ चौकोर मेज खिंचलक। दहिना ऊपर डिबिया, बामा फाइलक ढेरी, बीचमे नील कप, खिड़की दिश चाभी, नीचे थैला। आइक छवि सामने राखल गेल। पाँचमे चारि वस्तु अलग जगह।

विनय पुछलनि, “एहि नक्शा पर भरोसा कतेक?”

“सौ टका नहि,” जयनारायण कहलक, “मुदा ई परीक्षणक आधार। आब दोसर लोकसँ स्वतंत्र रूपेँ पूछू। जँ तीन स्मृति एकहि ठाम मिलत, वजन बढ़त।”

अभिलेख-मुंशी आएल। ओ सेहो डिबिया दहिना कहलक, मुदा चाभी कहाँ रहैत से नहि मोन। बुचन नील कपक बात नहि जानैत। कमली कहलक वसुधा अपन कप स्वयं लौटा दैत छलीह, काल्हि नहि देलखिन। छोट-छोट बात एक दोसरा सँ जुड़य लागल, मुदा जयनारायण हर मेलक बीच शंका छोड़ैत रहलाह। “मेल मात्र सत्य नहि,” ओ बेराबेरी कहैत। “एकहि कथा सुनि लोकक स्मृति सेहो एकरूप भऽ जाइत अछि। बयान अलग-अलग लिअ।”

विनय धीरे-धीरे बुझए लगलाह जे बूढ़ पदाधिकारीक ढंग धीमा अवस्से, मुदा ढील नहि। ओ अनुमानक जगह छोट-छोट कसौटी बनबैत, फेर अनुमान केँ ओहि कसौटी पर राखैत।

जयनारायण फेर मेज पर पड़ल कलमक छवि देखलनि। “वसुधा लिखि कऽ कलम कहाँ रखैत?” माधवी कहलक, “कागजक माथाँ, आ नोक दहिना।” छविमे कलम जमीन पर छल, नोक बामा। विनय हँसि देलनि—“धक्का लागल तऽ सभ उधिया सकैत अछि।”

“सही,” जयनारायण कहलक। “तँ एक कलम किछु नहि कहत। मुदा डिबिया, कुर्सी, कप, कलम, राख—सभ एक संग प्रश्न करैत अछि। हम उत्तर एखनहुँ नहि देब।”

माधवी केँ हुनकर ई संयम अजीब ढंगसँ भरोसा दैत छल। जे लोक तुरन्त अपराधी खोजि नहि रहल, हो सकैत अछि ओ सचमुच सत्य खोजि रहल अछि। बाहर बरखा थमल, मुदा नालीमे पानि एखनहुँ बहैत। नील कप जाँचक थैलीमे जा चुकल छल; ओकर खाली जगह कोठरीमे एखनहुँ देखाइत छल।

“छवि पैघ कऽ देखाउ,” ओ सिपाही केँ कहलनि।

विनय पुछलनि, “की बुझाइत अछि?”

“एखन किछु नहि। मुदा डिबिया केवल बेठाम नहि; ओकरा पर जे लागल, से मेज पर नहि अछि।”

ओ वसुधाक अधलिखल कागज पढ़लनि। “जँ ई कागज फेर गायब भेल...”

माधवी कहलक, “दीदी ‘फेर’ शब्द बेकार नहि लिखतीह। अर्थात् पहिने एक बेर गायब भऽ चुकल।”

जयनारायण ओकरा गौर सँ देखलनि। “ठीक। कोन कागज?”

“सम्भवतः १९३४क सामूहिक दस्तावेज। मुदा हम पक्का नहि।”

“‘सम्भवतः’ आ ‘पक्का नहि’—ई भेद मोन राखू। रहस्य सभसँ पहिने भाषा बिगाड़ैत अछि। लोक सम्भावना केँ ‘एहने भेल’ बना दैत अछि।”

बाहर सँ खबर आयल जे वसुधाक पति शहरमे नहि भेटल। घरक लोक कहैत छल जे ओ राति घरमे छल, मुदा गाड़ी नहि। विनयक चेहरा फेर चौकन्ना।

जयनारायण माथ हिलौलनि। “घरक झूठ भेटल, ताहि सँ हत्या नहि सिद्ध होइत। लोक प्रेम, लाज, ऋण, परस्त्री, डर, कर्ज—सौ कारण सँ झूठ बजैत अछि।”

माधवीक मनमे वसुधाक घरक चेहरा घूमि गेल। पति अरुण, जे सदिखन सभ्य शब्दमे बात करैत; भाई प्रखर, जे बहिनक सामाजिक मुकदमा पर ठट्टा करैत; सासु, जे कहैत—“घरक नाम सँ पैघ कोनो न्याय नहि।” मुदा ओ किछु बजली नहि।

जयनारायण फेर घड़ी लग गेलाह। चारि बजि सतरह मिनट। “ई घड़ी गिरल नहि, टूटल नहि। काँच साबुत। रुकल किएक?”

मुंशी कहलक, “विद्युत-कोष चुकल?”

“विद्युत-कोष निकालि जाँचू। मुदा एहि घड़ीक समय केँ मृत्यु-समय मत मानू। जे दृश्य बनाबैत अछि, घड़ी रोकब सभसँ पुरान नाटक अछि।”

विनय हँसलनि। “अहाँ हत्या मानि चुकल छी।”

“नहि। हम आत्महत्याक नाटकक सम्भावना मानि रहल छी। हत्या, दुर्घटना, दबावमे आत्महत्या—सभ खुलल राखू।”

एतेकमे अभिराम आबि पहुँचल। भीजल केस माथ सँ चिपकल, बाँहि मे संगणकक थैला। ओ माधवी केँ देखिते रुकल। “तोरा राति सँ खोजि रहल छलहुँ। दूरभाष किएक नहि उठा रहल छली?”

माधवीक स्वर थकान सँ खराशदार। “दीदी...”

“खबर भेटल। तें आयल छी।” अभिरामक आँखि एक क्षण कोठरी भीतर गेल, फेर नीचे। “सूत्रक मुख्य संगणक काल्हि राति सँ सभ प्रवेश-अभिलेख राखने अछि। पुलिस चाहत तँ समय-रेखा निकालि सकैत छी।”

विनयक चेहरा उज्जरायल। “एखन?”

“किछु घड़ी लागयत। कचहरीक प्रवेश-द्वार, अभिलेख-कक्षक ताला-संवेदक, डिजिटाइज्ड करबाक यंत्र, दूरभाष-संकेत—जे उपलब्ध अछि सभ जोड़ि सकैत छी।”

जयनारायण शांत भावे ओकरा निहारलनि। “यंत्र वसुधाक सुपारीक डिबिया कहाँ रहैत छल, से जानैत अछि?”

अभिराम चौंकल। “नहि।”

“चीनी खाइत छलीह कि नहि?”

“नहि।”

“तखन अहाँक सूत्र आध दुनिया देखत।”

अभिरामक तरुण गर्व तुरन्त जागल। “आ मनुष्य आधो नहि देखैत, जेकरा मोन जे चाहैत अछि से देखैत अछि। आँकड़ा कम सँ कम झूठ नहि बजैत।”

जयनारायणक आँखिमे हल्का आनन्द चमकल। “आँकड़ा झूठ नहि बजैत, मुदा मौन रहैत अछि। ओकरा बजबैत मनुष्य।”

माधवी दुनू केँ देखैत रहल। एक कात अनुभवी आँखि, दोसर कात गणनाक विश्वास। वसुधा दीदीक देह एखन अस्पतालक ठंढ कोठरीमे होयत; दुलारी पता नहि कतऽ; आ एतऽ सत्यक पहिल खींचातानी शुरू भऽ गेल।

जयनारायण सुपारी-डिबिया दिश फेर तकलनि। “चलू, अभिराम बाबू। अहाँक सूत्र की कहैत अछि, सुनि ली। मुदा एक शर्त।”

“की?”

“पहिल उत्तर केँ अन्तिम मत मानब।”

अभिराम थैला काँध पर कसि लेलक। “अहाँ सेहो अपन पहिल शंका केँ अन्तिम नहि मानब।”

“ठीक।”

दुनूक बीच जे छोट मुस्कान उठल, ओ मित्रता नहि छल। मुदा वैर सेहो नहि। मानू जाँचक असली आरम्भ ओही क्षण भेल।

अध्याय ३ — सूत्रक पहिल उत्तर

कचहरीक नब भवन पुरान भवन सँ दू आँगन दूर छल। ओतऽ बरखा कम उदास लगैत छल, कारण काँचक खिड़की, उज्जर बत्ती आ नब रंगक देवाल पानिक बून्द केँ इतिहास नहि बनए दैत। तेसर मंजिल पर डिजिटाइज़ करबाक छोट कक्ष छल—तीन संगणक, दू दस्तावेज-छवि यंत्र, एक भारी अलमारी, तारक गुच्छा आ कोनमे धूल खाइत पुरान पंखा। अभिराम एतहि काज करैत छल।

कक्षमे प्रवेश करिते ओ पहिने दरवाजा भीतर सँ बन्द नहि, केवल सटा देलक। जयनारायण ई छोट क्रिया सेहो देखलनि।

“अहाँ सभ दुआरि सटबैत छी, अँटकबैत नहि?”

अभिराम कुर्सी खींचैत कहलक, “दिनमे हँ। भीतर-बाहर लोक अबैत-जाइत। रातिमे ताला।”

“पुरान अभिलेख-कोठरीक?”

“ओतऽ संवेदकयुक्त ताला लगल अछि, मुदा लकड़ीक मूल साँकल सेहो अछि। नब यंत्र केवल ई दर्ज करैत अछि जे ताला कखन खुलल-बन्द भेल; साँकलक पता नहि।”

जयनारायणक भौं कने उठल। “माने भीतर सँ साँकल लगल रहितो यंत्र केवल ताला बतायत।”

“ठीक।”

विनय ठाकुर कुर्सी लग ठाढ़ छलाह। माधवी खिड़कीक कात। ओकर कपड़ा एखन सुखि रहल, मुदा देहक थकान बढ़ि गेल छल। ओ घर जाएब चाहितो नहि। घर गेलासँ माय प्रश्न करती, गाममे खबर पसारत, आ वसुधाक मृत्यु सच बनि जाएत। एतऽ काजक बीच ओ एखनहुँ ओकरा अधूरा मानि सकैत छल।

अभिराम संगणक चालू कएलक। पर्दा पर “सूत्र” लिखल साधारण चिह्न उभरल—कोनो चेहरा नहि, कोनो मानवीय आवाज नहि। केवल लिखल पाँति।

सूत्र बनाओल गेल छल मुख्यतः अभिलेखक गड़बड़ी पकड़बाक लेल। एके जमीनक दू नक्शा, एके मुकदमाक अलग तिथि, एक व्यक्ति एकहि समय दू ठाम दर्ज—एहन

विरोधाभास मनुष्य महीनाक खोजमे पकड़ैत, सूत्र क्षणमे सूची बना दैत। बादमे जिला प्रशासनक प्रयोगमे ओकरा समय-रेखा आ प्रवेश-अभिलेख जोड़बाक सुविधा देल गेल। अभिराम एहि परियोजनामे छात्र-सहायक छल, मुदा ओकर मन ई साधनमे केवल काज नहि, भविष्य देखैत छल। ओकरा विश्वास छल—जतऽ मनुष्य रिश्ता, डर, प्रतिष्ठा, जाति, धन वा अपन धारणा सँ प्रभावित भऽ जाए, ओतऽ आँकड़ा कम सँ कम समान नियम लगबैत अछि।

माधवी एहि विश्वास पर बेराबेरी हँसैत छल। “समान नियम सभ पर लगायब न्याय नहि होइत,” ओ कहैत। “गरीब घरमे एक दूरभाष पाँच लोक चलबैत, अमीर घरमे पाँच लोक पाँच दूरभाष। सूत्र दुनूकें एके ढंग पढ़त तँ गरीबहि बेसी संदिग्ध बनत।”

अभिराम उत्तर दैत—“तँ संदर्भ जोड़ल जाइत अछि।”

“संदर्भ के जोड़त?”

“मनुष्य।”

“तखन अन्तमे मनुष्य फेर आयल।”

दुनू एहि बहस पर कतेको बेर हँसल छल। आइ वसुधाक मृत्यु बीच ई हँसी नहि छल।

जयनारायण पर्दा दिस देखैत पूछलनि, “ई प्रणाली अपन गलती मोन राखैत अछि?”

“हँ। जे प्रकरणमे बादमे सही तथ्य भेटैत अछि, ओकर तुलना करैत। मुदा स्थानीय आँकड़ा कम अछि।”

“जे लोकक जीवन लिखल नहि, ओकरा बारे?”

अभिराम एक क्षण चुप। “ओहि ठाम कमजोरी अछि।”

जयनारायण माधवी दिस देखलनि। “अहाँ जे प्रश्न पहिने पूछने छलहुँ, से ई स्वयं मानैत अछि।”

अभिराम कने खिन्न भेल, “कमजोरी मानब कमजोरी नहि, सावधानी अछि।”

“सही बात।” जयनारायण हँसलनि। “हमरो सावधानी चाही।”

“ई बोलैत नहि?” जयनारायण पूछलनि।

“जानि-बुझि नहि। आवाज देल जाए तँ लोक ओकरा व्यक्ति बुझए लगैत। ई विश्लेषणक साधन अछि।”

जयनारायण हल्का मुस्कुरौलनि। “ई बात हमरा पसिन पड़ल।”

अभिराम काल्हिक तिथि भरलक। प्रणाली उपलब्ध अभिलेख जोड़य लागल। प्रवेश-द्वारक समय, अभिलेख-कक्षक ताला, डिजिटाइज्ड यंत्रक उपयोग, कचहरी परिसर लग

दूरभाष-संकेत, वसुधाक अंकीय दस्तावेज खोलबाक समय, बिजलीक उतार-चढ़ाव। पाँति बेराबेरी उभरैत गेल।

माधवीक नजर एक समय पर अटकली—20:41। ओही समय ओ वसुधाक संग अंतिम कागज देखैत छल। फेर 20:52—ओ परिसर सँ बाहर। 21:08—दुलारीक दूरभाष कचहरीक मीनारसँ जुड़ल। 21:11—पुरान अभिलेख-कक्षक ताला खुलल। 21:13—ताला बन्द।

“दुलारी भीतर गेल,” विनय कहलक।

“सम्भव,” अभिराम सुधारलक। “दूरभाष-संकेत क्षेत्र देखबैत अछि, व्यक्ति नहि। मुदा बुच्चनक बयान मिलैत अछि।”

22:02—एक दस्तावेज स्कैन भेल। नाम: पुनर्वास_1934_खंड7।

माधवी आगे झुकली। “ई फाइल हम काल्हि बनौने छलहुँ?”

अभिराम सिर हिलेलक। “नहि। तोहर बनाओल प्रतिकृति काल्हि साँझ 18:16 पर। ई दोसर छवि अछि, राति दसक बाद।”

“के स्कैन कएलक?”

“यंत्रक उपयोगकर्ता-नाम ‘V_Karna’। वसुधा दीदीक।”

जयनारायण पुछलनि, “नाम-गुप्त-संकेत केवल हुनका?”

अभिराम ठिठकल। “सिद्धान्ततः। मुदा कचहरीमे लोक गुप्त-संकेत कागज पर लिखि कऽ कुंजी-पट लग राखि दैत अछि। वसुधा दीदी एहन नहि छलीह, मुदा...”

“मुदा?”

“एक बेर माधवीक सामने प्रवेश-संकेत भरने छलीह। सम्भवतः ई जानैत हएत।”

माधवी तुरन्त कहलक, “हमरा गुप्त-संकेत नहि मोन। ओ तेज कुंजी-पट पर लिखैत छलीह।”

जयनारायण ओकर चेहरा देखलनि, फेर बिना टिप्पणी पर्दा दिस मुड़ि गेलाह।

22:07—यंत्र बन्द। 22:11—कचहरी परिसर सँ एक दूरभाष बाहरक मीनार पर सरकल। नम्बर दुलारीक।

विनय सीधा भऽ गेलाह। “तखन दुलारी निकलल।”

अभिराम कहलक, “सम्भावना प्रबल।”

“आ वसुधा?”

“हुनकर दूरभाष 22:16 धरि कचहरी क्षेत्रमे, तकर बाद संकेत स्थिर। दूरभाष सम्भवतः ओही ठाम।”

“मृत्यु समय?”

“एखन नहि। आगाँ देखू।”

23:48—पुरान अभिलेख-कक्षक ताला फेर खुलल।

सभ चुप।

23:49—बन्द।

विनय कहलक, “के?”

अभिरामक औँठ की-पटल पर थमल। “प्रवेश-पहचान पत्रक कोनो अभिलेख नहि। केवल ताला-संवेदक।”

“बाहरक मुख्य फाटक?”

“ओतऽ अंकीय प्रवेश-अभिलेख नहि। पहरा।”

जयनारायण धीरे पुछलनि, “साँकल?”

“पता नहि।”

00:03—वसुधाक संगणक पर एक दस्तावेज खुलल: “सात_साक्ष्य_सूची।”

00:09—बन्द। 00:12—एक बाहरी भंडारण यंत्र जोडल गेल। 00:15—हटाओल गेल।

माधवीक गला सूखल। “ई नाम हम पहिने नहि देखल।”

“फाइल एखन अछि?”

अभिराम खोजलक। “नहि। केवल खोलबाक चिन्ह अछि। मूल फाइल हटाओल गेल।”

जयनारायण विनय दिस देखलनि। “अधलिखल पाँति—‘जँ ई कागज फेर गायब भेल...’”

विनय सिर हिलेलनि। “मेल खाइत अछि।”

आगाँ राति लमहर अन्हार। 01:37 पर बिजलीक हल्का उतार। 02:14 पर कचहरी क्षेत्रक एक अज्ञात दूरभाष तीन मिनट सक्रिय। 03:52 पर वसुधाक दूरभाषसँ एक अधूरा संदेश बनल, भेजल नहि गेल।

अभिराम ओ खोललक। केवल तीन शब्द—“माधवी, पोथी नहि...”

माधवीक साँस अटकली। “पोथी?”

“कौन पोथी?” विनय पूछलनि।

“हम नहि जानैत,” माधवी कहलक, मुदा वाक्य पूरा होइत-होइत ओकरा काल्हिक एक दृश्य मोन पड़ल—वसुधाक थैलामे कपड़ामे लपेटल मोट वस्तु। ओ पूछने छल, दीदी हँसि कऽ कहने छलीह, “पुरान लोकक आकाश।” तखन ओ ध्यान नहि देने छल।

“किछु मोन पड़ल?” जयनारायण तुरन्त पकड़लनि।

माधवी धीरे कहलि। “सम्भवतः एक पोथी छल। नछत्तर, जन्म-वगैरहक। हम साफ नहि देखल।”

जयनारायण किछु नहि कहला, मुदा नोट करि लेलनि।

04:17—प्रणालीमे अंतिम दर्ज घटना: अभिलेख-कक्षक भीतरी घड़ी सँ जुड़ल नन्हका समय-संकेत बन्द।

अभिराम कहलक, “ई घड़ी साधारण देखाइत अछि, मुदा डिजिटाइज परियोजना समय मिलान लेल ओकरा एक स्थानीय संकेतक जोड़ल गेल छल। चारि बजि सतरह पर संकेत टूटल।”

विनय: “माने घड़ी ओही समय रुकल।”

“हँ।”

“मृत्यु सेहो?”

“ई सिद्ध नहि।”

प्रणाली किछु क्षण सोचैत रहल, फेर पर्दा पर परिणाम उभरल। अभिराम ऊँच स्वरमे पढ़लक—

“उपलब्ध आँकड़ाक आधार पर संभावित क्रम: वसुधा कर्ण 21:11 बाद कक्षमे उपस्थित। दुलारी सदाय 22:11 आसपास परिसर छोड़ैत। 23:48 पर कक्ष-ताला अल्प समय खुलैत। 00:03-00:15 बीच दस्तावेज गतिविधि। 03:52 पर वसुधाक दूरभाष सक्रिय। 04:17 पर स्थानीय समय-संकेत बन्द। बाहरी जबरन प्रवेशक अंकीय प्रमाण अनुपस्थित।”

नीचे प्रतिशत उभरल:

स्व-प्रेरित मृत्यु अथवा आकस्मिक विषप्रभाव: 61 प्रतिशत।

बाहरी व्यक्ति द्वारा हत्या: 27 प्रतिशत।

अपर्याप्त आँकड़ा/अन्य: 12 प्रतिशत।

कक्ष भीतर सँ बन्द रहबाक तथ्य स्व-प्रेरित मृत्यु सम्भावना बढ़बैत अछि।

विनय गहिरी साँस लेलनि। “देखलिए? पुलिसक पहिल अनुमान बेबुनियाद नहि।”

अभिरामक चेहरा पर विजय नहि, मुदा एक प्रकारक संतोष छल। “सूत्र सेहो ओही दिस।”

माधवी पर्दाक प्रतिशत नहि, नीचे लिखल चेतावनी पढ़ैत छल—“उपलब्ध आँकड़ा अपूर्ण हो सकैत अछि।” एहि सात शब्दक आकार परिणामक अंक सँ बड्ड छोट छल। ओ कहलक, “ई चेतावनी ऊपर राखू। अंकक बराबर मोट।”

अभिराम ओकरा देखलक। “तकनीकी पन्ना अछि, दीवाल-पत्र नहि।”

“मृत मनुष्यक नाम जुड़ल अछि। जे पढ़त, अंक पहिने देखत।”

जयनारायण सहमति देलनि। “दृश्य-विन्यासो न्याय करैत अछि। जे चीज पैघ अक्षरमे, लोक ओकरा पैघ सत्य मानैत अछि।”

अभिराम अनिच्छासँ सही, चेतावनी ऊपर खिसका देलक। विनय ई छोट विवाद देखैत रहलाह; हुनका बुझायल जाँच केवल तथ्य नहि, तथ्य कोना देखाओल जाएत से सेहो परिणाम बदलि सकैत अछि।

सूत्र फेर छोट पाँति देलक—“विश्वास-स्तर मध्यम; तीन मुख्य स्रोत अनुपलब्ध।” अभिराम तीनू स्रोत खोलि देखेलक: घटनास्थलक भौतिक जाँच, मृतकक चिकित्सकीय प्रतिवेदन, साक्षीक स्वतंत्र बयान। जयनारायण कहलक, “तखन हम सभ एखन आधा पुल पर छी।”

“मुदा पुलक दिशा देखाइत अछि,” अभिराम दोहरौलक।

“हँ,” जयनारायण मानि लेलनि, “बस नदी केँ सड़क नहि बुझब।”

माधवीक मुँह पर दुःख बीच पहिल बेर हल्का मुस्कान आयल। अभिराम सेहो कने नरम भेल। मुदा अगिला पाँति उभरिते तीनूक चेहरा फेर कड़ा—23:48क ताला-खुलबाक घटना सामान्य रातिक ढाँचासँ मेल नहि खाइत छल। पिछला तीस रातिमे ओहि समय कखनो ताला नहि खुलल छल।

“एहि असंगति केँ ऊपर राख,” जयनारायण कहलक।

अभिराम बिना बहस मानि लेलक।

जयनारायण पर्दा दिस देखैत रहलाह। फेर धीमे पुछलनि, “ई 61 प्रतिशत ककर ज्ञान पर बनल?”

अभिराम कुर्सी घुमा कऽ हुनका सामना कएलक। “ऐतिहासिक प्रकरण, दृश्य-रचना, उपलब्ध समय-रेखा, बन्द कक्ष, दूरभाष क्रिया—सभ।”

“वसुधाक आदति?”

“आँकड़ा रूपमे नहि।”

“सुपारी?”

“नहि।”

“चीनी?”

“नहि।”

“दू कप?”

“छवि-विश्लेषण जोड़ल जा सकैत अछि, एखन नहि।”

“नील कप नालीमे?”

“एखन तथ्य रूपेँ जोड़ल नहि।”

“दुलारीक साझा दूरभाष केओ आउर उपयोग करैत छल कि नहि?”

अभिराम रुकल। “ई जानकारी नहि।”

“23:48 पर ताला खुलल—के भीतर, के बाहर?”

“पता नहि।”

“साँकल?”

“पता नहि।”

“वेंटिलेटर?”

“पता नहि।”

“तखन 61 प्रतिशत हमरा एतेक कहैत अछि जे जे चीज यंत्र जानैत अछि, तकर भीतर आत्महत्याक ढाँचा बेसी मेल खाइत। जे चीज नहि जानैत, तकर बारे ई चुप अछि। ठीक?”

अभिरामक जबड़ा कने कसायल। “ई तऽ हर विश्लेषणक सीमा अछि। मनुष्यक सेहो।”

“बिल्कुल। तँ हम विरोध नहि करैत छी। बस प्रतिशत देखिते श्रद्धा नहि करब।”

विनय बीचमे कहलक, “मुदा एखन अंकीय प्रमाण हमरा हाथमे ठोस अछि। दुलारी दसक बाद बाहर। वसुधाक दूरभाष लगभग चारि बजे सक्रिय। बाहरी प्रवेशक चिन्ह नहि।”

जयनारायण चायमे बिनु चीनीक अंतिम घूँट लेलनि, जे एखन ठंढ भऽ गेल छल। “दुलारीक दूरभाष बाहर, दुलारी बाहर—दुनू एके बात नहि। वसुधाक दूरभाष सक्रिय, वसुधा सक्रिय—दुनू एके बात नहि। ताला खुलल, मनुष्य प्रवेश—दुनू एके बात नहि। हम शब्दक बीच दूरी बचा कऽ रखब।”

ओ कुर्सी पर पाछाँ टेक लगौलनि। “हमरा नौकरीक एक पुरान प्रकरण मोन पड़ैत अछि। एक चोरिक राति घरक मालिकक जूता पोखरि लग भेटल। सभ मानि लेलक—ओहि बाट

भागल। तीन दिन बाद बुझायल जे जूता नौकर धुइ कऽ सुखाबय रखने छल, कुकुर उठा लऽ गेल। जूता साँच छल, निष्कर्ष झूठ। प्रमाण झूठ नहि बजैत, हम ओकरा गलत वाक्यमे जोड़ि दैत छी।”

अभिराम तुरन्त कहलक, “तैं सूत्र सम्भावना देलक, फैसला नहि।”

“ई ओकर गुण अछि। मुदा मनुष्य प्रतिशत देखिते फैसला बना लेत, ई डर हमरा अछि।”

विनय कुर्सी पर अँगुरी थपथपौलनि। “पुलिसो एहन गलती करैत अछि। मुदा बिना प्राथमिक दिशा जाँच चलत कोना?”

“दिशा चाही, निश्चय नहि।”

माधवी धीरे कहलक, “दुलारीक नाम पर्दा पर ऊपर आबिते सभ ओकरा पकड़य दौड़त। ओकर घरक बाइस रुपैया, साझा दूरभाष, धमकी—ई सभ पर्दा पर कहाँ अछि?”

अभिराम जवाब देलक, “जोड़ब। जतेक तथ्य आएत, परिणाम बदलत।”

“मुदा पहिल परिणाम बाहर चलि गेल तऽ?”

एहि प्रश्न पर केओ तुरन्त उत्तर नहि देलक। कक्षक बत्ती हल्का भनभनाइत रहल। जयनारायण अभिरामक दिस देखलनि। “एहि लेल यंत्रक भाषा पर अनुशासन आवश्यक। ‘मुख्य संदिग्ध’ लिखब आसान, ‘उपलब्ध सीमित आँकड़ामे अधिक मेल’ लिखब कठिन, मुदा सत्यक नजदीक दोसर अछि।”

अभिराम कने देर बाद सिर हिलेलक। “हम परिणामक शब्दावली बदलि सकैत छी।”

“आइ नहि, एखनहि।” माधवी कहलक।

अभिराम ओकरा देखलक। दुःखक बीचो माधवीक पुरान जिद जीवित छल। ओ पर्दाक विन्यास खोलि वाक्य सुधारय लागल। जयनारायण चुपचाप देखैत रहलाह। मनुष्य आ यंत्रक पहिल टकराहट मानू एहि छोट सुधार पर समाप्त नहि, आरम्भ भेल छल।

माधवीक आँखि अभिराम पर पड़ल। “तोरा लगैत अछि दीदी आत्महत्या कएलखिन?”

अभिराम तुरन्त उत्तर नहि देलक। “हमरा ‘लगैत’ सँ की होयत? जे उपलब्ध अछि, से ई कहैत अछि।”

“तोहर सूत्र कहैत अछि।”

“सूत्र उपलब्ध चीज जोड़ैत अछि। भावनासँ नतीजा नहि बदलैत।”

“भावना नहि—दीदी कै हम चिन्हैत छलहुँ।”

“चिन्हबो पक्षपात हो सकैत अछि।”

माधवीक आँखि भरि आयल, मुदा स्वर कठोर भेल। “आ नचिन्हब निर्लेप सत्य होइत अछि?”

कक्षमे अजीब मौन उतरि गेल। अभिरामक चेहरा नरम भेल, मुदा देर भऽ चुकल छल। ओ किछु कहए चाहलक, फेर रोकि लेलक।

जयनारायण खिड़की दिस चलि गेलाह। बाहर पुरान भवनक छत देखाइत छल। बरखा लगभग थमि चुकल। छत पर पानीक चमक। पुरान अभिलेख-कोठरीक वेंटिलेटर एतऽ सँ साफ देखाइत छल—छोट, चौकोर, लोहेक जाली लागल। जयनारायण ओकरा कने देर निहारलनि।

“अभिराम बाबू, वेंटिलेटरक माप अछि?”

“पुरान भवनक नक्शा अंकीय रूपमे सुरक्षित अछि। देखैत छी।”

नक्शा खुलल। वेंटिलेटर बाहरी देवालमे, जमीन सँ करीब दस फुट। भीतरक जाली पुरान, बाहरी जाली बादमे जोड़ल। दू जालीक बीच पाँच इंचक खाली जगह।

“मनुष्य नहि घुसत,” विनय कहलक।

“हम मनुष्य खोजियो नहि रहल छी।” जयनारायण कहलक। “दुआरि भीतर सँ साँकल लगाबय लेल मनुष्य सदिखन भीतर रहए, ई आवश्यक?”

अभिराम पर्दा सँ नजर उठेलक। “अहाँ कहय चाहैत छी बाहर सँ साँकल?”

“एखन केवल प्रश्न। पुरान साँकलक आकृति देखू।”

छवि मँगाओल गेल। साँकलक लोहेक डंडा आ लकड़ीक फ्रेम। जयनारायण अपन झोरा सँ सूत निकाललनि—माधवी आश्चर्य सँ देखलक, बूढ़ लोक झोरामे सूत किएक राखैत? ओ मुस्कुरौलनि। “हमर नातिन पतंग उड़बैत अछि; काल्हि सूत रहि गेल।”

ओ हवा मे नमूना बना कऽ देखौलनि—साँकलक डंडा पर फंदा, सूत वेंटिलेटर दिश, बाहर सँ खिंचाव। “सिद्धान्ततः सम्भव। व्यवहारमे कठिन। दूरी, कोण, घर्षण—सभ जाँचबाक पड़त।”

अभिराम तुरन्त नक्शामे रेखा खींचलक। “कोण करीब बत्तीस डिग्री। यदि पतला तार वा मजबूत डोरी हो तँ...”

ओ रुकल।

जयनारायण मुस्कुरौलनि। “देखलहुँ? मनुष्यक प्रश्न, यंत्रक गणना। दुनू अकेले अधूरा।”

विनय एखन सचमुच गम्भीर। “घटनास्थल पर डोरी?”

“नहि भेटल। बाहर फेंकल जा सकैत। या ई कल्पना गलत।”

अभिराम सूत्रमे नया तथ्य जोड़लक—वेंटिलेटर मार्ग सँ साँकल दूरस्थ रूपेँ लगाबयक यांत्रिक सम्भावना। प्रणाली फेर गणना कएलक। प्रतिशत बदलल:

स्व-प्रेरित मृत्यु अथवा आकस्मिक विषप्रभाव: 48 प्रतिशत।

बाहरी व्यक्ति द्वारा हत्या: 39 प्रतिशत।

अन्य/अपर्याप्त: 13 प्रतिशत।

माधवी पर्दा देखैत फुसफुसाइत कहलक, “एकटा प्रश्न तेरह प्रतिशत बदलि देलक।”

अभिराम कहलक, “कारण नया सम्भावना आयल।”

जयनारायण: “तैं प्रतिशत सत्य नहि, वर्तमान ज्ञानक छाया अछि।”

अभिरामक आँखि तेज। “मुदा छाया सेहो दिशा देखबैत अछि।”

“बेशक। आ कखनहुँ छाया वस्तुसँ लमहर होइत अछि।”

विनय हाथ उठा कऽ दुनूकेँ रोकलनि। “दार्शनिक बहस बादमे। एखन काम। दुलारीक दूरभाषक पूरा इतिहास चाही। 23:48 पर ताला खुलबाक कारण। 02:14 पर अज्ञात नम्बर। 03:52क अधूरा संदेश। आ ‘सात_साक्ष्य_सूची’ फाइल कहाँ गेल।”

अभिराम सिर हिलेलक।

माधवी एकाएक कहलक, “एकटा बात।”

सभ ओकरा दिस मुड़ल।

“काल्हि दीदी कागजक पन्ना गिनि रहल छलीह। सात धरि पहुँचि फेर पहिल पन्ना पर लौटली। हम हँसलहुँ—‘दीदी, गिनती भूलि गेलहुँ?’ ओ कहलीह—‘छठम धरि सभ देखैत अछि, सातम पर लोकक आँखि थाकि जाइत अछि।’ तखन हम अर्थ नहि बुझलहुँ।”

कक्षमे फेर मौन।

जयनारायणक चेहरा पर पहिल बेर वह भाव आयल जे माधवी पहिचान नहि सकली—चिन्ता कि उत्सुकता। “ठीक शब्द?”

“हँ। ‘छठम धरि सभ देखैत अछि, सातम पर लोकक आँखि थाकि जाइत अछि।’”

अभिराम तुरन्त प्रणालीमे “सात” सँ जुड़ल फाइल खोजलक। परिणाममे कई नाम आयल—खंड7, सात टोला, सात_साक्ष्य_सूची, सातम_निशान_1934, आ एक पुरान छविक नाम—“साक्षी7_अस्पष्ट।”

“ई खोल,” माधवी कहलक।

अभिराम क्लिक कएलक। छवि अधपढ़। पुरान दस्तावेजक कोना, नीला धागा, आ बामा किनार पर गोल चिह्नक आध भाग। नीचे हस्तलिखित शब्दक केवल दू अक्षर स्पष्ट—“सा...”

“मूल कागज कतऽ?” जयनारायण पूछलनि।

“छविक स्रोत-स्थान लिखा अछि—अभिलेख पेटी 47/ख, पुरान भवन।”

विनय तत्क्षण सिपाही बजौलनि।

पेटी 47/ख खोलल गेल तऽ सूची अनुसार पन्द्रह कागज होएबाक छल। भीतर चौदह छल। सातम क्रमांकक पन्ना गायब।

माधवीक देहमे सिहरन दौड़ि गेल।

जयनारायण बड़ धीरे कहलनि, “वसुधा कागज गिनि रहल छलीह। ‘जँ ई कागज फेर गायब भेल...’ लिखि रहल छलीह। राति ‘सात_साक्ष्य_सूची’ खुलल। आ एखन सातम पन्ना नहि अछि।”

विनयक पहिल आत्महत्याक दृढ़ धारणा टूटि चुकल छल।

अभिराम पर्दाक पहिल 61 प्रतिशत दिस देखलक, जे अब अप्रासंगिक पुरान गणना जकाँ लागैत छल।

जयनारायण ओकर काँध लग आ कऽ कहलक, “अहाँक सूत्र गलत नहि छल।”

अभिराम तीख स्वरमे कहलक, “परिणाम तऽ गलत दिस गेल।”

“अधूरा ज्ञानक सही गणना कखनहुँ गलत दिशा देत। दोष गणनाक नहि, घेराक। हमरा अपन घेरा सेहो देखैत रहबाक अछि।”

माधवी खिड़की सँ बाहर देखलक। पुरान भवनक देवाल बरखाक बाद धुलल, मुदा अन्हार दरार सभ साफ। ओकरा एकाएक याद आयल—वसुधाक थैलामे कपड़ामे लपेटल पोथी। ओ कहाँ अछि?

ओ प्रश्न मुँह तक आयल, मुदा ओही क्षण ओकर दूरभाष काँपल। अनजान नम्बर सँ छोट संदेश—

“दुलारी केँ खोजू नहि। जँ जीवित चाहैत छी तँ सातम पन्ना छोड़ि दिअ।”

माधवीक चेहरा सँ रंग उतरि गेल।

“की भेल?” अभिराम उठल।

ओ दूरभाष जयनारायणक हाथमे दऽ देलक।

जयनारायण संदेश पढ़लनि, फेर समय देखलनि—सात बजि उनचास मिनट।

ओ विनयक दिश मुड़लनि। “एखन आत्महत्या पर चर्चा थामि सकैत छी।”

बाहर सूर्य बादल फाड़ि कने उजास देबय चाहैत छल। मुदा माधवी केँ लगल—असल अन्हार एखन शुरू भेल अछि।

अध्याय ४ — दुलारी गायब

माधवीक दूरभाष पर आयल धमकी पढ़िते विनय ठाकुरक पहिल प्रतिक्रिया छल—नम्बर तुरन्त जाँचू। जयनारायणक पहिल प्रतिक्रिया छल—माधवी केँ कुर्सी पर बैसाउ। अभिरामक पहिल प्रतिक्रिया छल—संदेश फेर खोलि ओकर समय, लिखबाक ढंग आ अक्षरक क्रम देखू। तीनू प्रतिक्रिया अलग छल, मुदा तीनू अपन-अपन ठाम उचित।

“दुलारी केँ खोजू नहि। जँ जीवित चाहैत छी तँ सातम पन्ना छोड़ि दिअ।” विनय फेर पढ़लनि। “ई भेजनिहार केँ दुलारीक ठेकान मालूम हो सकैत अछि।”

“अथवा ओकरा एतेक मालूम अछि जे हम सभ डरब,” जयनारायण कहलनि। “धमकी सूचना सेहो होइत अछि, अभिनय सेहो। पहिने ई मानि नहि लिअ जे शब्द जतेक कहैत अछि, ततेक जानैत सेहो अछि।”

अभिराम संदेशक मूल विवरण खोललक। नम्बर नव छल; काल्हि धरि ओकर कोनो गतिविधि अभिलेखमे नहि। संदेश साधारण दूरभाष-जाल सँ नहि, एक क्षणिक संचार-सेवासँ आयल छल जाहिमे प्रेषकक चिन्ह तुरन्त मेटाओल जा सकैत छल। ओ भृकुटि सिकोड़ि कहलक, “जे भेजलक, ओकरा एतेक तकनीकी समझ अवस्से अछि जे अपन सीधा नम्बर नहि देलक।”

“एतेक बुझनाइ आइ कठिन नहि,” विनय कहलनि। “कचहरीक आध छोड़ा ई कऽ लेत।”

जयनारायण संदेशक शब्द फेर पढ़लनि। “दुलारी ‘जीवित’—ई शब्द किएक? जँ केवल डरबैत, ‘दुलारी चाही तँ’ सेहो लिखि सकैत छल। जीवित शब्द लिखनिहार मृत्यु केँ टेबुल पर राखि देलक। हम एहि शब्द केँ हलुक नहि लैत छी।”

माधवी एखनहुँ चुप छल। ओकर मनमे दुलारीक चेहरा घूमि रहल छल—दुबली देह, हँसैत काल दाँतक बीचक छोट फाँक, कचहरीमे कोनो बात नहि बुझला पर आँखि सिकोड़ि कहब—“फेर सँ बुझाउ ने, हम मूर्ख नहि छी, बस नब छी।” वसुधा हँसैत कहैत छलीह—“ई छोड़ी एक दिन सभक कागज पढ़ि देत।”

“हम ओकर घर चलब,” माधवी एकाएक कहलक।

विनय पहिने रोकय चाहलनि, मुदा जयनारायण सहमत भेलाह। “घर देखबाक समय आबि गेल। फूलो देवी सँ पहिने पूछल बात फेर नहि दोहराएब। एखन घर स्वयं की कहैत अछि से देखब।”

सात टोला शहरक आखिरी पक्का सड़क सँ बाहर, पुरान तटबन्धक नीचा पट्टीमे पसारल छल। नाम सुनिते सात अलग बस्ती बुझाइत, मुदा बरखा आ समय हुनका सभक सीमा एना मिला देने छल जे बाहरक लोक लेल एकहि गुँथा संसार। कतहु फूसक छप्पर, कतहु टीनक टुकड़ा, कतहु ईंटक आध देवाल पर बाँसक ओट; बीच-बीचमे पानिक खड्डा, सूअरक पएर, बाल-बच्चाक नग्न हँसी, धुँआ, भीजल काठ, उबलैत माड़ आ कपड़ा धोइत स्त्रीक हाथ।

पुलिसक जीप भीतर नहि जा सकल। सभकेँ पएरे चलय पड़ल। विनयक सिपाही कीचड़ सँ जूता बचबैत डेग धरैत छल; जयनारायण ओकरा देखि मुस्कुरौलनि। “जतऽ जाँच करबाक अछि, ओतऽ जूता बचाओल कठिन होइत अछि।”

माधवीक चप्पल पहिने सँ भीजल छल। अभिराम ओकर पाछाँ-पाछाँ चलैत एक बेर हाथ बढेलक जखन ओ फिसलय लागल, मुदा माधवी अपनहि सन्तुलन सम्हारि लेलक। दुनूक आँखि एक क्षण मिलल। काल्हिक बहसक तीखापन एखनहुँ बीचमे छल, मुदा एहि समय ओकरा पर बोलबाक अवकाश नहि।

दुलारीक झोपड़ीक आगाँ लोक जमा छल। फूलो सदाय दुआरि पर पीढ़ा पर बैसल छलीह। आँखि रातिभरि जागल मनुष्यक जकाँ सूजल, मुदा रोदन एखन सूखि चुकल। पुलिस देखिते ओ उठलीह। “बाबू, हमर बेटी भेटल?”

विनय सिर नहि हिलौलनि, केवल कहलनि, “एखन नहि। खोजि रहल छी।”

फूलोक चेहरा एक क्षण खाली भेल, फेर ओ माधवी केँ देखलखिन। “बौआ, तोहर दीदी हमर दुलारी केँ अपन बेटी जकाँ देखैत छलीह। आब दीदी गेलीह, हमर छौड़ी कतऽ गेल से के कहत?”

माधवी हुनकर हाथ पकड़ि लेलक। उत्तर किछु नहि छल।

झोपड़ी दू छोट भागमे बँटल। पहिल भागमे चूल्हि, माटिक दू हाँड़ी, पितरक एक थारी, जलक घैला, बाँसक खूँटी पर कपड़ा। दोसर भागमे पातल चटाई, लकड़ीक पेटी आ देवालसँ सटल छोट चौकी। चौकी पर चारि कापी, दू पुस्तक, एक पेंसिलक ठुट्टी आ अखबार सँ बनल जिल्द लागल कानूनक परिचय-पुस्तिका।

“ई वसुधा दीदी देने छलीह,” फूलो कहलखिन। “कहैत छलीह—पहिने अपन नाम पढ़ू, फेर जमीनक नाम पढ़ू।”

जयनारायण कक्षमे प्रवेश करिते किछु छुलनि नहि। हुनकर नजर पहिने दुआरि, फेर खूँटी, फेर पेटी, फेर चटाई पर गेल। दुआरि लग एक जोड़ी कारी सस्ता जूता नीकसँ मिलाओल राखल। भीतरक खूँटी पर फिक्का नील ओढ़नी। कोनमे माटिक डिब्बा, जाहिमे बाइस रुपैया।

“ई जूता कचहरी जाएत काल पहिरैत छल?”

फूलो कहलखिन, “हँ। बरखा हो तऽ चप्पलमे जाइत, ओतऽ पहुँचि जूता पहिरैत। मुदा काल्हि पएरमे घिसल चप्पल छल। जूता घरहि छोड़ने गेल।”

विनय दुआरि लग झुकलनि। “तखन जूता रहब भागबाक प्रमाण नहि।”

“प्रमाण नहि, कथा बनाबय लेल नीक वस्तु,” जयनारायण धीमे कहलनि। “लोक दुआरि पर जूता देखत आ कहत—जूता छोड़ि भागल। मुदा जे छोड़ी रोज एहि जूताक बिना बरखामे निकलैत अछि, ओकर लेल ई साधारण बात।”

फूलो झट कहलखिन, “हम तऽ काल्हिए कहलहुँ जे ओ जूता घरमे छोड़ि गेल छल। मुदा बस्तीमे के सुनैत अछि? सभ कहैत—कागज चोरा कऽ भागि गेल।”

बाहरसँ ककरो स्त्रीक आवाज आयल—“तखन राति घर किएक नहि आयल?” फूलो दुआरि दिस घुरलीह, मुदा जयनारायण हाथ उठा रोकलनि। “लोकक मुँह एखन बन्द नहि कराउ। के की कहैत अछि, सुनबो चाही।”

ओ बाहर निकललाह। पाँच-सात स्त्री, दू बूढ़, किछु किशोर। एक वृद्ध कहलक, “बाबू, हम ककरो बदनाम नहि करैत छी, मुदा गरीबो मनुष्य मनुष्ये होइत अछि। रुपैया देखि आँखि फेरि सकैत अछि।”

फूलो तमतमाइ उठलीह। “बाइस रुपैया एतऽ छोड़ने अछि, तकरा धन लूटबाक लोभ लागल?”

वृद्ध चुप।

एक किशोरी, करिब दुलारीक उमेर, भीड़ पाछाँ सँ बजली—“दुलारी काल्हि संझुका हमरा कहने छल जे देर होएत तँ माए केँ कहि देब, वसुधा दीदी लग छी। ओ भागबाक बात कखनो नहि कहलक।”

“तोहर नाम?” विनय पुछलनि।

“सुनीता।”

“दुलारी तोरा किछु डरक बात कहने छल?”

सुनीता पहिने फूलो दिस देखलक। “दू दिन पहिने रातिक पाठशाला सँ अबैत कहलक—कोनो लोक पाछाँ-पाछाँ चलैत छल। हम पुछलियैक के, तँ कहलक ‘पहिचानैत नहि, मुदा जूता ओहिना चमचम करैत छल जेना कचहरीक बाबू लोकक।’”

विनय तुरन्त नोट कएलनि।

जयनारायण पुछलनि, “चेहरा देखलक?”

“नहि। कहलक छाता नीचा कएने छल।”

“ई बात काल्हि किएक नहि कहल?” विनयक स्वर कड़ा भेल।

सुनीताक चेहरा भय सँ सिकुड़ल। “केओ पुछलक नहि। पुलिस आयल तऽ हम दूर रहली।”

जयनारायण विनय दिस केवल एक नजर देलनि। ओ नजरमे दोषारोपण नहि, स्मरण छल—गरीब बस्तीमे सूचना दुआरि खटखटाने स्वयं बाहर नहि अबैत।

झोपड़ी भीतर लौटि ओ सभ कापी देखय लगल। सबसँ ऊपर रातिक पाठशालाक लेखन-अभ्यास। पन्ना पर दुलारीक गोल-मटोल अक्षर—“हमर घरक कागज हम स्वयं पढ़ब।” नीचे शिक्षक लाल स्याहीसँ लिखने छल—“वाक्य नीक। लिखाइ साफ करू।” अगिला पन्ना पर सात टोला परिवारक नामक अभ्यास, भूमि-खाता अंकक नकल, किछु शब्दक अर्थ—‘बन्दोबस्त’, ‘दखल’, ‘रैयत’, ‘अपील’।

माधवीक गला भरि आयल। “दीदी ओकरा ई सभ सिखबैत छलीह।”

एक कापीक बीच पन्ना फाटल छल। फटबाक धार नब। विनयक नजर अँटकल। “ई पन्ना के फाइलक?”

फूलो माथ पकड़ि सोचलीह। “हमरा नहि मालूम। ओ अपन कापी ककरो छूबए नहि दैत छल।”

अभिराम खाली पन्नाक अगिला पृष्ठ पर तिरछा उजास देलक। दबावक निशान हल्का देखाइत छल। “ऊपरक फाटल पन्ना पर जे लिखल छल, ओकर दबाव एतऽ रहि सकैत अछि।”

विनयक आँखि चमकल। “पढ़ि सकब?”

“एखन अनुमान नहि। छवि लऽ कऽ भिन्न कोणक उजासमे देखब।”

जयनारायण तुरन्त कहलनि, “अनुमानक पहिने कापी थैलीमे। घरमे जतेक लोक अछि, सभक अँगुरी लागल हएत। हम लिखावट पढ़ब, छाप नहि खोजब एखन।”

लकड़ीक पेटी खोलबाक अनुमति फूलो देलखिन। भीतर दू जोड़ी कपड़ा, पुरान कम्बल, एक लाल किनारीक साड़ी जे सम्भवतः फूलोक, छोट शीशा, कंधी, सूखल नीम-पात आ कागजमे लपेटल तीनटा चिट्ठी। चिट्ठी सभ विद्यालयक शुल्क-सूचना आ राशनक पर्ची निकलल। कोनो गुप्त धन, कोनो भागबाक तैयारी नहि।

“कपड़ा लऽ गेल?”

“नहि,” फूलो कहलखिन। “देह पर जे छल से। छोट झोरो नहि।”

“खाय लेल?”

“राति लेल दू रोटी बाँधने छल। वसुधा दीदी देर करबैत छलीह तँ भूख लागैत। झोरामे रोटी गेल।”

जयनारायण फूलोक चेहरा देखलनि। “ओ झोरा भेटल?”

“नहि।”

एहि छोट उत्तर पर सभ चुप भऽ गेल। दुलारी घर छोड़ने छल जेना रातिक सामान्य काज लेल—कापी, कलम, फाटल छाता, दू रोटी, साझा दूरभाष। भागबाक लेल नहि। मुदा ओ लौटली नहि।

दूरभाषक बात पर फूलो छोट बेटा निरंजन केँ बजौलखिन। एगारह बर्खक दुबला बालक, हाथमे आध बनल कागजी नाव। पुलिस देखिते भय सँ बहिनक चौकी लग सटि गेल। जयनारायण ओकरा नीचे बैसि पुछलनि, “दूरभाष पर खेल खेलैत छह?”

बालकक आँखि कने चमकल। “हाँ।”

“काल्हि दीदी लऽ गेल तऽ तोरा खराब लगल?”

ओ सिर हिलेलक। “हम कहने छलियैक जल्दी आनिह। ओ कहलक—‘राति देर होएत, तूँ सूति जइहैं।’”

“दूरभाषमे ककर नम्बर सभ छल?”

“हमरा नहि मालूम। दीदी नाम लिखि देने छल—माए, माधवी दीदी, वसुधा दीदी, स्कूल, कमली काकी... आउर किछु।”

अभिराम पुछलक, “कोनो ताला-संकेत?”

बालक गर्व सँ कहलक, “चारि अंक। हमरा मालूम अछि।” फेर माएक चेहरा देखिते चुप।

“एखन नहि कह,” जयनारायण मुस्कुरौलनि। “जखन पुलिसक काज पड़त तखन विनय बाबू केँ कहिह। सभक आगाँ नहि।”

बालक सम्भवतः पहिल बेर एखन बुझलक जे ओकर छोट रहस्यक सेहो कीमत अछि। ओ सिर हिलेलक।

बाहर निकलैत काल जयनारायण दुआरि उपर लटकैत सूखल तुलसीक गुच्छा, फूसमे अँटकल पॉलिथिन आ पानि रोकबाक लेल राखल ईटक कतार देखलनि। साधारण घर अपन असुरक्षा हजार छोट उपायसँ सम्हारैत अछि। दुलारीक जीवनो ओहिना छल—किछु रुपैया माटिक डिब्बामे, कापी कपड़ाक नीचे, दूरभाष सभक साझा, राति लौटबाक बाट अपनहि देखब। एहन जीवनक आदति केँ शहरक संगणक कतेक जानत?

सात टोला सँ निकलबाक पहिने जयनारायण रातिक पाठशाला देखबाक आग्रह कएलनि। पाठशाला असलमे पंचायतक पुरान गोदामक आध भाग छल—टीनक छप्पर, देवाल पर अक्षरमाला, एक कोनमे टूटल तराजू, आ बीचमे बाँसक तीन लमहर बेंच। दिनमे ओतऽ अनाजक बोरा राखल जाइत, साँझ सात बजलापर बच्चा, घरेलू काज करनिहार छौड़ी, रिक्शा चलौनिहार युवक आ दू-तीन बूढ़ सेहो अक्षर सीखय अबैत।

शैला बहिन, जे प्राथमिक विद्यालयमे दिनक शिक्षक छलीह आ साँझ स्वेच्छासँ एतऽ पढ़बैत, दुलारीक नाम सुनिते चुप भऽ गेलीह। “ओ पिछला छओ मासमे एक दिनो बिनु कारण अनुपस्थित नहि भेल। काज सँ देर हो तऽ पहिले कहि दैत। काल्हि सात बजि बीस पर निकलल। कहलक—वसुधा दीदी कागज बुझाबय बजौने छथि।”

“मनक अवस्था?” जयनारायण पुछलनि।

“उतावली छल, भयभीत नहि। एक प्रश्न बेराबेरी करैत छल—‘गवाही केवल आँखिसँ देखल बात होइत अछि कि कागजो गवाही दैत?’ हम कानून नहि जानैत छी, तँ कहने छलहुँ माधवीसँ पूछिहें।”

माधवीक छाती फेर कसि गेल। दुलारी ओकरा पूछबाक अवसर पाबि नहि सकल।

शैला बहिन लकड़ीक अलमारी खोलि दुलारीक अभ्यास-पुस्तिका निकाललखिन। पुलिस अनुमति सँ पन्ना देखलक। एक पाठमे विषय छल—“हमर गामक बदलैत रूप।” दुलारी लिखने छल जे जे लोक शहर कमाए जाइत छथि, हुनकर बूढ़ माय-बाप घरक जमीनक कागज बुझि नहि पबैत; जे पढ़ल अछि, ओकरा कागज पढ़ि सुनाबक चाही। दोसर पन्ना पर नदीक बाढ़ि, माटिक कटान आ घर सरकबाक कथा। लिखावटमे भूल छल, मुदा विचार साफ।

“ई छौड़ी केवल अपन मुकदमा नहि बुझए चाहैत छल,” जयनारायण कहलनि।

शैला बहिन हल्का गर्व सँ मुस्कुरेलीह। “ओ कहैत—‘हमरा अक्षर भेटल तऽ हम दोसराक कागजो पढ़ब।’” फेर मुस्की बुझा गेल। “एहन छौड़ी भागि गेल, ई हम नहि मानैत छी। हँ, जान बचाबय लेल नुकायल हो सकैत अछि।”

विनय एहि भेद पर धेआन देलनि—भागब आ नुकायब। बाहरक लोक दुनू केँ एक शब्द बना देने छल।

अभिराम पाठशालाक उपस्थिति-बहीक छवि लेलखिन। दुलारीक हस्ताक्षर काल्हि साफ—“दुलारी सदाय”—आ समय 7:19। तकर नीचे एक नब छात्रक नामक आगँ अँगूठाक छाप। अभिराम किछु क्षण ओ पन्ना देखैत रहल। सूत्रक दुनिया मे सभकेँ समान पाँति चाही, मुदा एतऽ केओ नाम लिखैत, केओ अँगूठा लगबैत, केओ अपन जन्मतिथि सेहो नहि जानैत। आँकड़ा समान चौखट बनबैत अछि; जीवन चौखट बराबर नहि।

जयनारायण ओकर चेहरा पढ़ि लेलनि। “की सोचैत छह?”

“ई जे अनुपस्थित आँकड़ा कखनो आलस्य नहि, परिस्थिति होइत अछि।”

“ई बात सूत्र केँ कोना सिखाएब?”

अभिराम उत्तर देबाक पहिने बही बन्द कएलक। “पहिने अपनहि सीखब।”

माधवी ओकरा देखलक। एहन छोट वाक्य ओकर भीतर काल्हिक कटुता सँ अधिक देर टिकि गेल।

पाठशालाक दुआरि लग एक माटिक घैल राखल छल। शैला बहिन सभकेँ पानी देलखिन। फूलो दूर सँ आबि ओतहि ठाढ़ भऽ गेलीह। ओ सम्भवतः पुलिसक पाछाँ-पाछाँ नहि, बेटी चलल बाटक पाछाँ-पाछाँ आयल छलीह। दुलारी काल्हि एतऽ सँ निकलल, एहि दुआरि केँ छूने, एहि घैलासँ पानी पीने हएत। फूलो घैलाक मुँह पर हाथ रखि बड्ड देर निश्चल ठाढ़ रहलीह।

“ओ लौटत ने?” हुनकर प्रश्न ककरो खास व्यक्ति सँ नहि छल।

जयनारायण झूठ सात्वना नहि देलनि। “हम खोजब छोड़ब नहि।”

फूलो हुनकर आँखि देखलीह। सम्भवतः “लौटत”क उत्तर नहि भेटल, मुदा “खोजब छोड़ब नहि” एखन लेल धरबाक योग्य किछु छल।

सात टोला सँ निकलिते अभिराम कहलक, “हम साझा दूरभाषक बात सूत्रमे साफ जोड़ि देब। काल्हिक समय-रेखामे जे स्थान दुलारीक नामसँ देखाओल गेल, ओ वास्तवमे यंत्रक स्थान मात्र अछि।”

जयनारायण कहलनि, “भाषा बदलब आवश्यक। ‘दुलारी 22:11 पर परिसर छोड़ली’ नहि। ‘दुलारीक संग जुड़ल दूरभाष 22:11 पर परिसर क्षेत्र सँ बाहर गेल।’ दुनू वाक्यक बीच एक मनुष्यक जीवन भरि दूरी अछि।”

अभिराम विरोध नहि कएलक। “सही।”

माधवी ओकरा देखलक। काल्हि एहि लड़काक स्वरमे आँकड़ाक कठोर भरोसा छल। आइ ओ अपन वाक्य स्वयं सुधारि रहल छल। ओकरा कने राहत भेल, मुदा किछु कहली नहि।

जीप धरि पहुँचला पर विनयक दूरभाष बाजल। तकनीकी दलक खबर—धमकीक संदेश भेजबाक समय जे जाल-संकेत भेटल, ओ शहरक पूब-दक्खिन किनारक तीनटा मीनारमे सँ कोनो एकक क्षेत्रमे छल। क्षेत्र पैघ—कचहरीक पछिला भाग, पुरान पोखरि, बस-अड्डा, आ नदी दिस जाएवला सड़क सभ ओहि भीतर।

“ठोस किछु नहि,” विनय खीझलनि।

“ठोस नहि, मुदा शून्यो नहि,” अभिराम कहलक।

जयनारायण जीपक दुआरि पर हाथ राखि रुकलनि। “धमकी भेजनिहार केँ हम सभ दुलारीक घर आएब, ई अनुमान सहज छल। जँ ओ हमरा चाल देखैत अछि तँ अगिला चाल ओकरा हिसाबसँ नहि चलब।”

“तखन?” विनय पुछलनि।

“दुलारीक रातिक पाठशाला, कमलीक दोकान, वसुधाक झोरा, आ कचहरीक पाछूक नाली—चारि दिशा। बेराबेरी। भीड़ नहि।”

माधवी घरक तरफ फेर तकलीह। फूलो दुआरि पर एखनहुँ ठाढ़ छलीह। निरंजनक कागजी नाव पानिक धारमे छूटि गेल छल; बालक ओकर पाछाँ दौड़ि रहल छल। एक क्षण लेल दृश्य एतेक साधारण छल जे दुलारीक अनुपस्थिति विश्वास नहि होइत। मानू ओ कोनो मोड़ सँ आबि कहत—“माए, एतेक लोक किएक?”

माधवीक नजर झोपड़ीक भीतर चौकी पर पड़ल खुलल कापीक पन्ना पर गेल। हवा लगलासँ पन्ना उलटल आ अन्तिम लिखल वाक्य बाहर दिस देखाइ पड़ल। ओ भीतर जा पढ़लक। दुलारीक हाथक अक्षर छल—

“हम भागब नहि। जे कागज हमर पुरखा पढ़ि नहि सकलाह, से हम पढ़ब।”

माधवी बड़ देर धरि ओ वाक्य देखैत रहल। बाहर लोक कहैत छल—दुलारी भागि गेल। भीतर ओकर अपन हाथ कहैत छल—हम भागब नहि।

सत्य एहि दुनू वाक्यक बीच कतऽ छल, एखन केओ नहि जानैत छल।

अध्याय ५ — माधवीक पहिल सपना

सात टोला सँ लौटिते दिन झुकि गेल छल। बरखा थमि चुकल, मुदा शहरक गली सभमे पानि अपन स्मृति छोड़ने छल—कतहु हरियर काइ, कतहु नालीक कारी धार, कतहु दुआरि लग उलटल बाल्टी, कतहु भीजल धानक बोरा। माधवी घर पहुँचली तखन सिलाइ-मशीनक ठक-ठक भीतर सँ सुनाइत छल।

ओकर माय मालती देवी आँखि पर पुरान चश्मा चढ़ौने ब्लाउजक बाँहि जोड़ि रहल छलीह। एपर मशीनक पैडल पर, हाथ कपड़ा पर, मुँहमे सूत। माधवी केँ देखिते सूत निकालि कहलीह, “आबि गेली? भोरसँ एक दाना खएने छँ कि नहि?”

माधवी उत्तर देबाक बदला थैला उतारि देवालक खूँटी पर टाँगल। देह एना भारी बुझाइत छल मानू दिनभरि ओ अपनहि नहि, अनेक लोकक डर ढोइत रहल हो।

मालती मशीन रोकलीह। “वसुधा दीदीक बात हम सुनलहुँ। भगवान हुनकर आत्मा—” ओ वाक्य पूरा नहि कएलखिन। बेटी चेहरा देखिते समझि गेलीह जे सांत्वनाक तैयार पाँति एखन चोट देत। “पहिने मुँह-हाथ धो। भात गरम करैत छी।”

घर छोट, मुदा हर वस्तु अपन ठाम। खिड़की लग धागाक डिब्बा रंग अनुसार, ऊपर माप-फीता लपेटल, खूँटी पर अधसिलल कुरती, कोनमे पुरान संदूक। माधवी एही घरमे किताब लेल जगह बनबैत-बनबैत पैघ भेल छल। माय कपड़ा काटैत, ओ बगलमे कानूनक पुस्तक खोलि बैसैत। मशीनक ठक-ठक ओकरा लेल शोर नहि, घरक धड़कन छल।

आइ ओ धड़कन बीचो भय सुनाइत छल।

भातक संग आलू-बैंगनक तरकारी आ आमक खट्टी चटनी छल। माधवी दू ग्राससँ बेसी नहि खा सकली। मालती बेराबेरी ओकर थारी दिस देखैत रहलखिन, अन्तमे पुछलीह, “दुलारीक किछु खबर?”

“नहि।”

“ओहि छौड़ीक माय केँ देखलिहें?”

“हँ।”

“कतेक टूटल होएत।” मालतीक हाथ क्षण भरि थमल। “गरीब घरक बेटी देर राति बाहर रहए तँ लोक पहिने ओकर चाल पर प्रश्न करैत अछि, ओकर सुरक्षा पर बादमे। ई बात हम तोहर उमेरसँ बुझैत आएल छी।”

माधवी माय दिस तकलीह। मालती प्रायः एहन बात खुलि कऽ नहि कहैत छलीह। हुनकर जीवनक बड्ड किछु मशीनक ध्वनिमे दबल छल।

“माए, जँ हम देर राति काजमे फँसि जाउ तँ अहाँ डरैत छी?”

“डरब छोड़ि देब तऽ माए किएक कहाएब?” मालती हल्का हँसलीह। “मुदा डरक कारण तोरा घरमे बाँधि राखब तऽ तोहर पाँखि किएक उगल?”

माधवीक आँखि भरि आयल। ओ तुरन्त मुँह फेरि लेलि।

दूरभाष काँपल। अभिरामक संदेश—“कापीक दबाव-छवि किछु देलक। साफ नहि। दू शब्द सम्भवतः ‘घाट’ आ ‘नील’। सुनिश्चित नहि। काल्हि फेर देखब।” नीचे दोसर पाँति—“दोपहरक बात लेल क्षमा। ‘चिन्हब पक्षपात हो सकैत अछि’ एना नहि कहबाक चाही छल।”

माधवी उत्तर लिखए लगली, फेर मेटा देलक। दोसर लिखलक—“तर्क गलत नहि छल, कहबाक ढंग गलत छल।” फेर ईहो मेटा देलक। अन्तमे केवल लिखलक—“ठीक अछि। काल्हि देखब।”

उत्तर तुरन्त आयल—“खेनाइ खा लिअ।”

माधवीक अधर पर अनचाहे मुस्की आयल। मालती पकड़ि लेलखिन। “के?”

“काजक लोक।”

“काज एतेक मधुर संदेश भेजैत अछि?”

“माए!”

मालती फेर मशीन चला देलखिन। “हम किछु नहि कहलहुँ।”

माधवी अपन कोठरीमे गेली। टेबुल पर वसुधा देने दू पुस्तक रखल छल—साक्ष्य-विधि आ भूमि-अधिकारक छोट पुस्तिका। ऊपर एक कागजमे वसुधाक लिखावटः “कानून केवल धारा नहि, ककरो घरक छप्पर सेहो अछि।” माधवी हाथ फेरलक, फेर कागज तुरन्त बन्द कऽ देलक। शोक कखनहुँ पूरा रोदन बनि बाहर नहि अबैत; कखनहुँ एक पाँति देखिते गला अँटकैत अछि आ मनुष्य कागज उलटि देत अछि।

ओकरा एकाएक काल्हिक झोरा मोन पड़ल—वसुधा तीन बेर खोलने छलीह, एक बेर मोट पोथी टटोलने। अस्पताल सँ देह गेल, निजी वस्तु पुलिस सूचीमे। ओ विनय केँ दूरभाष कएलक।

“वसुधा दीदीक थैला कहाँ अछि?”

विनयक स्वर थाकल। “थानामे मोहरबन्द। किएक?”

“काल्हि ओ एक मोट पोथी खोजि रहल छलीह। कपड़ामे लपेटल जकाँ। हम साफ नहि देखलहुँ।”

“सूची काल्हि खोलब। एखन मोहर तोड़ब उचित नहि। अहाँ आराम करू।”

“दुलारी?”

“तीन दल खोजि रहल अछि। रातिक पाठशालासँ पुष्टि भेल—ओ काल्हि साँझ सात बजि बीस पर निकलल। फेर कचहरी गेल। ओकर बाद एखन धरि किछु ठोस नहि।”

माधवी दूरभाष रखि देलक।

मालतीक काज एखन बाकी छल। पड़ोसक बसंती काकी साँझे कहि गेल छलीह जे पोतीक विद्यालयक पोशाक भोर धरि चाही। घरमे मृत्यु, दुलारीक डर, पुलिसक आवाज—एहि सभक बीचो सिलाइ रोकल नहि जा सकैत; गरीब घरक आय दुःखक सम्मानमे अवकाश नहि लैत। मालती माप-फीता कन्धा पर राखि कपड़ा काटैत रहलखिन।

माधवी मशीनक ध्वनि सुनैत पुरान दिन मोन पाड़ली। विधि पढ़बाक जिद पर परिवारमे सबसँ पहिने वसुधा समर्थन देने छलीह। तखन माधवी बारहम कक्षा पास कएने छल आ काका कहने छलाह—“छौड़ी लेल एतेक खर्च किएक? बी.ए. करि घर बैसत।” वसुधा मालतीक सिलाइघरमे स्वयं आयल छलीह। कपड़ा सिलाबय नहि, मालतीसँ बात करय। कहने छलीह—“अहाँक बेटी प्रश्न करैत अछि। ओकर प्रश्नक मुँह सिलि देब तऽ ई मशीनक धागो लाज मानत।” मालती हँसि पड़ली छलीह, आ ओही हँसीक पाछाँ सहमति निकलल छल।

आइ वसुधा नहि छलीह। माधवीक मनमे एकाएक क्रोध उठल—जे लोक दोसराक बाट खोलैत अछि, ओकर अपन बाट एना बीचमे के बन्द करि सकैत अछि? शोकक संग क्रोध जुड़िते देहमे नब ऊर्जा आयल, मुदा ओ ऊर्जा दिशाहीन।

दूरभाष फेर काँपल। एहि बेर अभिराम बजा रहल छल। माधवी बाहर दुआरि लग गेली, जतऽ बरखाक बादक हवा कने ठंड छल।

“हँ?”

“बस ई जानबाक छल जे ठीक छह,” अभिरामक स्वर अपेक्षासँ नीच। “आ कापीक दबाव पर एक बात—‘घाट’ शब्द पक्का नहि। ‘घात’ सेहो भऽ सकैत। तँ एखन ककरो नहि कहब।”

“नीक केलह। अनुमान केँ शब्द बनिते लोक घटना बना लैत अछि—जयनारायण काका दिनभरि यही सिखबैत छथि।”

“अहाँ हुनका काका कहए लगली?”

“दीदी कहैत छलीह। हमरा सेहो सहज लगैत।”

दुनू किछु क्षण चुप। दूर ककरो घरमे बच्चा रोएल। अभिराम कहलक, “माधवी... काल्हि जखन हम कहलहुँ जे चिन्हब पक्षपात हो सकैत अछि, हमरा असलमे अपनहि डर छल। सूत्रक काममे हमरा सदिखन कहल गेल—व्यक्तिगत सम्बन्ध निकालि दियौ। मुदा मनुष्यक जीवनमे व्यक्तिगत सम्बन्ध निकालि देलापर बाँचत की?”

माधवी दुआरि लगक भीजल ईट पर पएर रगड़ैत रहलि। “तर्क छोड़बाक नहि। बस ई नहि मानब जे तर्क केवल तोहर कात अछि।”

“मानि लेलहुँ।”

“एतेक झट?”

“लिखि कऽ देब?”

माधवी हँसि देलक। दिनभरि बाद पहिल खुलल हँसी। भीतर मालती मशीन रोकि एक क्षण दुआरि दिस देखलीह, फेर बिना किछु कहने फेर सिलाइमे लगलीह।

अभिराम कहलक, “हँसलिहें, नीक भेल। काल्हि भोरमे कचहरी आबिहें? वेंटिलेटर फेर देखबाक अछि।”

“आबब। आ धूरिक लिफाफा सेहो आनब।”

“कौन धूरि?”

माधवी एक क्षण रुकली। “किछु नहि। राति बतायब तऽ तूँ हँसबह।”

“हँसब नहि। अधिकतम कारण खोजब।”

“ओही सँ तऽ डर लगैत अछि,” माधवी कहि दूरभाष राखि देलक। चेहरा पर मुस्की एखनहुँ छल।

राति गहरायल। गलीमे पहिने बच्चाक आवाज थमल, फेर पात्र धोबाक छनछन, फेर दूरक रेडियो, अन्तमे केवल मेंढक आ कखनहुँ कोनो वाहनक ध्वनि। मालती मशीन पर अंतिम सिलाइ पूरा करैत रहलीह। माधवी पुस्तक खोलने छल, मुदा अक्षर आँखिक भीतर प्रवेश नहि करैत। दुलारीक कापीक वाक्य—“हम भागब नहि”—बेराबेरी मोनमे आबैत। तकर संग धमकी—“जँ जीवित चाहैत छी...”

साढ़े एगारह बजे मालती बत्ती मिझाबय कहलीह। “आइ पढ़ाइ नहि होयत। आँखि बन्द कर।”

माधवी लेटि गेली। कोठरीक देवाल हल्का आसमानी रंगक, दू बर्ख पहिने रंगाओल। सिरहाना लग कोनो चून झड़ल नहि। ओ एक बेर हथेली देखि लेलि—साफ। काल्हि कचहरीमे वसुधाक नख भीतर जे उज्जर कण देखल छल, से मोन पड़ल। “चून-जकाँ,” जयनारायण कहने छलाह।

बाहर बादल फेर घुरघुरायल।

निद्रा कखन आयल, माधवी नहि बुझली।

ओ सपना मे पानि सुनली पहिने। देखली बादमे।

ओ कोनो पोखरिक घाट पर ठाढ़ छल। आकाश न राति, न भोर—दुनूक बीचक धूसर रंग। पोखरिक पानि स्थिर नहि, मुदा हवा नहि। सातटा सीढ़ी पानिमे उतरैत। पहिल पाँच साफ। छठम पर काड़। सातम आध पानिक भीतर।

सीढ़ीक दोसर छोर पर लाल ओढ़नी पड़ल छल। मनुष्य नहि। केवल ओढ़नी। कपड़ा भीजल रहितो पानिक ऊपर डूबैत नहि, धीरे-धीरे साँस लैत जकाँ फूलि-सिकुड़ि रहल।

माधवी ओकरा दिस बढ़ली। पएरक ध्वनि नहि। अपन साँस सेहो नहि। केवल कतहु भीतर सँ पायल बजल—एक बेर। फेर चुप। फेर दू बेर।

ओ चारूकात देखली। घाटक पाछाँ मोट देवाल। देवालमे दुआरि नहि, खिड़की नहि। पायल ओहि भीतर सँ।

टुन।

टुन-टुन।

माधवी हाथ देवाल पर रखली। सतह ठंढ। ओकर हथेली लगिते चूनक उज्जर धूरि झरय लागल। धूरि नीचे नहि, ऊपर उड़ल—जेना गुरुत्व भूलि गेल हो। ओ हाथ हटाबय चाहली, मुदा हथेली देवालसँ सटि गेल।

देवालक भीतर ककरो स्त्रीक साँस सुनाइत छल। रोदन नहि। शब्द नहि। केवल साँस।

लाल ओढ़नी एखन घाट पर नहि छल। ओ पोखरिक बीच पहुँचि गेल छल। कपड़ाक एक कोन सँ नील धागा लटकि रहल। पानि पर सात गोल तरंग उठल—एक, दू, तीन, चारि, पाँच, छओ... सातम उठबाक पहिने पायल एकदम तेज बाजल।

माधवी घुरली। देवालमे बाल जकाँ महीन दरार खुलल। दरारक भीतर अन्हार नहि, पीयर उजास। ओहि उजासमे ककरो हाथ एक क्षण देखाइ पड़ल—कलाई पर किछु नहि, अँगुरी पर माटि, नखक भीतर उज्जर धूरि।

ओ वसुधाक हाथ छल कि ककरो दोसर, माधवी बुझि नहि सकली।

ककरो आवाज एतेक धीमे आयल जे शब्द सुनाइयो नहि पड़ल, केवल अर्थ मनमे उतरि गेल—“देवाल सुनैत अछि।”

माधवी झटके सँ जागि उठली।

छाती धौकनी जकाँ चलैत। कोठरी अन्हार। खिड़की बाहर बिजली चमकल। मालती बगलक कोठरीमे गहिरी निद्रामे। माधवी पहिले अपन हाथ टटोललक। बामा हथेली साफ। दहिना हथेली पर उज्जर धूरिक महीन परत।

ओ निश्चल बैसल रहि गेली।

“नहि,” ओ अपनहि सँ फुसफुसाइत कहलक। “ई सम्भव अछि। दिनभरि कचहरी, देवाल, कापी, कीचड़... किछु लागल हएत।”

ओ मोन पाड़ए लगली—घर आबि मुँह-हाथ धोने छल। भात खएने। पात्र उठौने। पुस्तक छूने। जँ धूरि छल, धुलि जएबाक चाही। मुदा नखक रेखामे एखन स्पष्ट उज्जर कण।

माधवी बत्ती जरौलक। सिरहाना, चादर, देवाल, तकिया—कतहु उज्जर चून नहि। देवालक रंग अखण्ड। छतमे पुरान कालिख, मुदा धूरि कारी।

ओ हथेली धोबय नहि गेली। कानून पढ़निहार मस्तिष्क भयक बीचो एक बात कहलक—जे वस्तु विचित्र बुझाइत अछि, पहिने ओकरा बचाउ। ओ टेबुलक दराज सँ साफ कागजक छोट लिफाफा निकालि हथेली हल्का थपथपौलक। कण भीतर झरल। लिफाफा मोड़ि समय लिखलक—“राति 2:13। सपना सँ जागलाक तुरन्त बाद।”

लिखिते ओकरा अपनहि पर हँसी सेहो आयल। “हम पागल भऽ रहल छी?”

दूरभाष हाथमे लेलि। अभिराम केँ संदेश लिखबाक इच्छा भेल, मुदा रातिक दू बजि तेरह। ओ रोकि गेली। फेर स्क्रीन पर देखलक—अभिराम आध घड़ी पहिने सक्रिय छल। सम्भवतः काज करैत।

ओ लिखलक—“जागल छह?”

उत्तर एक मिनटमे—“हँ। कापीक छवि देखैत छी। की भेल?”

माधवी लिखल—“किछु नहि। एकटा बात पुछब। जँ हाथ दू बेर धोइला बादो काल्हिक चून नखमे रहि सकैत अछि?”

उत्तर देर सँ आयल। “सकैत अछि, जँ महीन कण नखक भीतर अँटकल हो। किएक?”
माधवी हाथक छवि पठेलक। फेर सपना लिखबाक साहस नहि भेल। केवल—“जागिते भेटल।”

अभिराम: “तोहर कोठरीमे चून झड़ैत?”

“नहि।”

“काल्हि कचहरीमे देवाल छूने रही?”

“मोन नहि।”

“भय नहि कर। लिफाफामे राखि लिअ। काल्हि तुलना करब। सपना-वपना देखलिहें कि?”

माधवी किछु क्षण स्क्रीन देखैत रहल। “हाँ।”

“कहिह?”

“काल्हि।”

अभिरामक उत्तर आयल—“ठीक। बत्ती जरौने सूति जइहें जँ मन हो। आ पानी पी लिअ।”

माधवी मुस्कराबय चाहली, मुदा आँखिमे आँसू भरि आयल। कतेक विचित्र—मनुष्यक भयक समाधान कखनहुँ दर्शन नहि, केवल “पानी पी लिअ” होइत अछि।

ओ उठि पानी पीलक। बत्ती मिझाओल नहि।

निद्रा फेर आयल, मुदा सपना नहि। भोरक पहिल उजासमे ओ जागली तखन लिफाफा टेबुल पर ओहिना। हथेली साफ। रातिक घटना स्वप्नक विस्तार बुझाइत, जँ कागजमे उज्जर कण नहि रहित।

मालती चाय चढ़बैत पुछलीह, “राति बत्ती किएक जरल छोड़ने छल?”

“निद्रा टूटि गेल छल।”

“डरावन सपना?”

माधवी चौकल। “अहाँ कोना बुझलहुँ?”

“छोटकालसँ तोहर आदति अछि। डरावन सपना देखिते दहिना हाथ मुट्ठी बना लैत छह।”
मालती चायमे अदरक कुटैत कहलीह। “भोरमे तोहर मुट्ठी एतेक कस्सल छल जे नखक दाग पड़ल।”

माधवी दहिना हथेली देखली। चारि लाल अर्धचन्द्राकार दाग। ओकर मनमे सपनाक देवाल फेर उभरल।

“माए, अहाँ सपना मानैत छी?”

मालती किछु सोचलीह। “सपना? मन दिनभरि जे निगलैत अछि, राति ओकर पाचन करैत अछि। कखनो पुरान बात, कखनो डर, कखनो इच्छा। मुदा एक बात अछि—किछु सपना एतेक सजीव होइत जे भोरमे मन ओकरा घटना बुझि बैसैत। तखन हड़बड़ीमे अर्थ नहि निकालबाक चाही।”

“अंबिका काकी तऽ कहैत छथि सपना संकेत दैत अछि।”

“अंबिका काकी पचास घरक कथा जानैत छथि, तँ हुनकर संकेत बेराबेरी सच बुझाईत। जे लोक बड्ड सुनैत अछि, ओकर अनुमान गहिर होइत अछि। तकरा जादू कहब कि अनुभव, ई हम नहि जानैत छी।”

माधवी माय केँ निहारैत रहल। मालती बिना पुस्तक पढ़ने एतेक सरल बात कहि देलखिन जे जयनारायण सेहो पसन्द करितथि।

कचहरी पहुँचल तखन जयनारायण पहिने सँ बरामदामे छलाह। हाथमे कागजक छोट पट्टी, नजर पुरान भवनक बाहरी देवाल पर। माधवी लिफाफा देलखिन। “एकटा अजीब बात अछि।”

ओ पूरा सपना सुनौलनि—पोखरि, सात सीढ़ी, लाल ओढ़नी, देवाल भीतर पायल, नील धागा। अभिराम बीचमे आबि चुपचाप सुनैत रहल। माधवीक स्वर कखनहुँ संकोच सँ नीच, कखनहुँ तेज। अन्तमे लिफाफा देखेलक।

जयनारायण न हँसलाह, न चौंकलाह। केवल पुछलनि, “काल्हि कचहरीमे उज्जर धूरि कतऽ-कतऽ छल?”

“वसुधा दीदीक नखमे। देवालक किछु भागमे चून अछि। हम घरमे हाथ धोने छलहुँ।”

“धोने हाथमे कण रहि सकैत। रातिमे कागज, कपड़ा, थैला सँ फेर लागियो सकैत। पहिने ई सभ बाट जाँचब। सपना केँ प्रमाण नहि बनाउ, मुदा सपना तोहर मनक सामग्री अवस्से कहैत अछि। सात सीढ़ी किएक? लाल ओढ़नी किएक? देवाल किएक? सम्भवतः दिनभरि सुनल-देखल चीजक मेल। सम्भवतः किछु पुरान स्मृति। एखन एतबे।”

अभिराम हल्का स्वरमे कहलक, “धूरिक तुलना करब। घटनास्थलक नमूना प्रयोगशालामे अछि।”

माधवी ओकरा देखलक। काल्हि ओ सम्भवतः कहित—‘सपना तथ्य नहि।’ आइ सेहो ओकर अर्थ ओही छल, मुदा स्वरमे तिरस्कार नहि।

जयनारायण बाहरी देवाल दिस इशारा कएलनि। “आ सपना मे देवाल साँस लैत छल कि नहि?”

माधवी चौंकल। “हम साँस सुनने छलहुँ।”

“हम सपना नहि पुछि रहल छी,” ओ मुस्कुरौलनि। “ई देवाल सचमुच साँस लैत अछि कि नहि, आइ देखब।”

अभिराम ऊपर वेंटिलेटर दिस तकलक। विनय दू सिपाही संग आबि रहल छलाह। हुनका हाथमे दुलारीक फाटल पुरान छाता छल, जे राति कचहरीक पूब बरामदाक खूँटी सँ बरामद भेल छल। फूलो पहचानि देने छलीह।

माधवीक सपना भीतर एखनहुँ पायल बजा रहल छल। बाहर दिनक उजास साफ छल। दुनू संसार एक-दोसरा सँ अलग रहबाक चाही छल—मुदा आइ ओकरा लगल बीचक देवाल बड्ड पातळ अछि।

अध्याय ६ — बन्द कोठरीक दोसर साँस

दुलारीक छाता बड्ड साधारण वस्तु छल—कारी कपड़ा, दू ठाम पैबन्द, एक पसली वाँक, मूठक प्लास्टिक घिसल। पुलिसक प्रमाण-थैलीमे राखल रहितो ओकर भीतर गरीबीक पूरा इतिहास देखाइत छल। नब छाता किनबाक बदला बारम्बार सीलल, तार बाँधल, फेरो उपयोग। फूलो सदाय कहने छलीह—“बरखा रोकय लायक एखनहुँ अछि, फेकि किएक देब?”

जयनारायण छाता देखिते पहिल प्रश्न कएलनि, “ई भेटल कतऽ?”

विनय कहलनि, “पुरान भवनक पूब बरामदामे खूँटी पर। राति पहिल खोजमे केओ धेआन नहि देलक; सभ बुझलक कचहरीक ककरो होएत। भोरमे वस्तु-सूची बनैत काल अलग कएल गेल। फूलो पहचानि देलखिन—मूठ पर पीयर सूत ओ स्वयं बाँधने छलीह।”

माधवीक मनमे काल्हिक बात आयल—बुच्चन देखल छल दुलारी छाता बिना भीतर गेल। तखन छाता बरामदामे छोड़ल असम्भव नहि। प्रश्न ई नहि जे छाता ओतऽ किएक, प्रश्न ई जे दुलारी ओतऽ सँ गेल कतऽ।

विनय प्रमाण-विधिक कारण छाता सीधा जयनारायणक हाथमे देलनि नहि। ओकर ठीक ओहि माप-जकाँ एक पुरान छाता चपरासी सँ मँगाओल गेल। “प्रयोग ईसँ,” विनय कहलनि। “प्रमाणक छाता थैलीमे रहत।”

जयनारायण प्रसन्न भेलाह। “आइ पुलिस हमरा सँ बेसी सावधान।”

“अहाँक संग दू दिन रहि गेलहुँ,” विनय मुस्कुरैलनि। “किछु आदति लागिye जाएत।”

पुरान अभिलेख-कोठरी एखन मोहरबन्द छल। अनुमति सँ मोहर खोलल गेल, सभ प्रवेशक समय लिखल गेल। देह हटि चुकल, कागज सँ बेसी खालीपन भीतर छल। मेज, कुर्सी, घड़ी, अलमारी—सभ ओहिना चिन्हित। दुआरि टूटल पल्ला अस्थायी बाँसक टेक सँ रोकल।

जयनारायण पहिने ओहि दू पानिक बूँदक छवि जमीन पर चिह्नित करौलनि। वास्तविक बूँद सुखा चुकल, मुदा छवि आ माप उपलब्ध छल। दुआरिसँ पहिल बूँद दू हाथ भीतर, दोसर तकर आगाँ वेंटिलेटर दिश। तेसर नहि।

“काल्हि हम सभ सहज कथा बना सकैत छलहुँ,” ओ कहलनि। “कोनो भीजल लोक भीतर आयल, दू बूँद खसल। मुदा भीजल लोक केवल दू बूँद छोड़त? बरखा ओ राति एतेक तेज छल।”

विनय कहलक, “कपड़ा निचोड़ि बाहर आबि सकैत छल।”

“सकैत। तँ ई कथा मेटा नहि रहल छी। केवल दोसर कथा खोजैत छी।”

ओ ऊपर वेंटिलेटर दिस तकलनि। भीतरक जाली पुरान लोहेक, चौकोर खाने। बाहरी जाली बादक, महीन। दुनूक बीच मोट देवाल। काल्हि संगणकक नक्शा पाँच इंचक खाली जगह देखबैत छल, मुदा पुरान भवनक देवाल असलमे दू फुट सँ बेसी मोट। प्रश्न छल—बाकी जगहमे की?

अभिराम टैबलेट पर पुरान नक्शा खोललक। “१९७८ केर मरम्मत-नक्शा ई। एहिमे वेंटिलेटर सीधा बाहरी देवाल धरि। मुदा मूल नक्शा हमरा एखन नहि भेटल।”

“मरम्मत-नक्शा वर्तमान देखबैत, इतिहास नहि,” जयनारायण कहलनि। “देवालक उम्र भवनसँ पूछू।”

ओ कैलेंडरक पन्ना लग पतला कागजक पट्टी टाँगि देलनि। दुआरि आ खिड़की यथासम्भव बन्द कएल गेल। पट्टी हल्का हिलैत रहल।

“बाहर हवा अछि,” अभिराम कहलक।

“ठीक। एखन बाहरी वेंटिलेटर छाता सँ ढाँपू।”

सिपाही सीढ़ी लगा बाहर चढ़ल। पुरान छाताक कपड़ा पूरा जाली पर पसारि देलक, किनार ईंट सँ दबा देल। भीतर सभक नजर कागजक पट्टी पर। पट्टी क्षण भरि थमल—फेर फेर हिलय लागल।

अभिराम भृकुटि सिकोड़लक। “पूर्ण ढँकल अछि?”

बाहरसँ आवाज—“हाँ।”

“खिड़कीक फाँक?” विनय जाँचलनि। भीतरसँ बन्द। दुआरि टूटल होने कारण एखनक प्रयोग शुद्ध नहि, ताहि लेल टूटल भाग पर मोट प्लास्टिक चिपकाओल गेल। पट्टी फेरो हिलल।

जयनारायणक आँखि चमकल। “दोसरा बाट हवा आबि रहल अछि।”

अभिराम तुरन्त छोट धूमरहित वायु-सूचक निकाललक—एक हल्का कागजी फाहा, जे सूक्ष्म हवा दिश झुकैत। वेंटिलेटरक ठीक नीचे राखल तऽ फाहा बाहरक जाली दिस नहि, बामा देवालक भीतर दिस झुकल।

“ई असम्भव,” अभिराम मुँहमे कहलक।

“असम्भव शब्द वैज्ञानिक लोक जल्दी नहि बजैत,” जयनारायण छेड़लनि।

“ठीक—अप्रत्याशित।”

ओ सभ वेंटिलेटरक भीतर उजास देल। जालीक पाछाँ सीधा अन्हार नहि; दहिना भागमे बाहरी उजास, बामा भागमे देवालक भीतर एक सँकरा कारी फाँक। मरम्मतक पलस्तर एहि फाँकक आध भाग ढाँकने छल।

विनय कहलनि, “पुरान वायु-नली?”

अभिराम नक्शा पैघ कएलक। “१९७८क नक्शामे नहि।”

जयनारायण देवाल थपथपौलनि। एक ठाम गम्भीर ठक, दोसर ठाम खोखर टुन। “एतऽ भीतर खाली जगह अछि।”

माधवीक देहमे रातिक सपना फेर दौड़ल—देवाल भीतर साँस। ओ किछु कहल नहि।

भवनक बूढ़ चपरासी रामचरित केँ बजाओल गेल। ओ छप्पन बर्ख सँ कचहरीक आसपास, पहिने पिता संग, फेर स्वयं काज करैत आएल। जयनारायण पुछलनि, “एहि देवालक भीतर कोनो पुरान नली छल?”

रामचरित तुरन्त उत्तर नहि देलनि। ओ वेंटिलेटर, फेर दुआरि, फेर बरामदाक छत निहारलनि। “बाबू, भवन हमरो सँ बूढ़। मुदा पुरान भवनक बात नक्शा सँ बेसी सफाईक लोक, चपरासी, राजमिस्त्री जानैत छल। कागजमे जे बन्द, व्यवहारमे ओ सदिखन बन्द नहि।”

विनयक भौह उठल। “अर्थ?”

“अर्थ ई जे एक बेर बरखा मे अभिलेख भीजि गेल छल। तखन हमर पिता कहने छलाह—देवाल भीतर हवा घूमबाक नली अछि। ओहि नलीक मुँहमे चूहा मरि गेल तऽ पूरा कोठरीमे दुर्गन्ध भरल, मुदा चूहा कतहु देखाइ नहि देलक। दू दिन बाद पछिला कोठरीक लोहेक पट्टी खोलि निकालल गेल।”

“लोहेक पट्टी?” अभिराम तुरन्त पूछलक।

“हँ, मुदा कतऽ छल से एखन ठाम-ठीक मोन नहि।”

जयनारायण विनय दिस देखलनि। “मृत चूहा सेहो भवनक नक्शा सिखा सकैत अछि।”

रामचरित हँसलाह, फेर चेहरा गम्भीर। “पुरान कचहरीमे एहन बड्ड बात अछि जे बाबू लोक फाइलमे नहि लिखैत। ककर कोठरीमे बरखा टपकैत, कतऽ साँप निकलैत, कोन खिड़कीक कुंडी बाहर सँ हिल सकैत—ई सभ हम लोक काज करैत-करैत सीखैत छी। मुदा जे दिन नया साहेब अबैत छथि, फेर सभ ज्ञान शून्य सँ शुरू।”

अभिराम ई बात सुनि चुप भऽ गेल। सूत्रक अभिलेखमे रामचरितक स्मृति कतहु नहि छल। ओकरा पहिल बेर साफ बुझायल—संस्थानक ज्ञानक एक भाग कागजमे, एक भाग मनुष्यक देहक आदतिमे रहैत अछि। जे कागज बाँचि जाइत, ओ डिजिटाइज हो सकैत; जे मनुष्यक संग मरि जाइत, तकर पुनर्निर्माण कठिन।

“अहाँक पिता जीवित?” जयनारायण पुछलनि।

“नहि। बीस बर्ख भेल।”

“ओहि लोहेक पट्टीक बात ककरो आउर मोन हो सकैत?”

रामचरित किछु नाम गिनौलनि—एक अवकाशप्राप्त मिस्त्री, एक पुरान अभिलेखपाल, एक सफाइकर्मी जे एखन बेटी लग नेपालमे। विनय सभ नाम लिखि लेलनि।

“ई सभ सूत्रमे जोड़ब?” जयनारायण अभिराम सँ पुछलनि।

अभिराम उत्तर देलक, “नाम नहि केवल। ‘मौखिक भवन-स्मृति’ अलग श्रेणी बनाबय पड़त। विश्वसनीयता जाँचि कऽ।”

“ठीक। मनुष्यक स्मृति केँ देववाणी नहि, कचरा सेहो नहि।”

रामचरित माथ खुजौलनि। “हमरा छोटकालमे सुनल मोन पड़ैत अछि—एहि भवनमे कागज सुखाबय लेल हवादार सुराख छल। बरखा-सीलन बड्ड होइत। पाछाँ कतेको बन्द कऽ देल गेल। एकटा सीढ़ी लागल सँकरा गलियारा सेहो छल, जे बादमे ईट सँ चुनि देल।”

“कतऽ?”

“पछिला बरामदाक ओ पार। एखन जतऽ कबाड़क कोठरी अछि।”

विनय दू सिपाही भेजलनि। कबाड़क कोठरी खोलल गेल। भीतर टूटल मेज, चुनावक पुरान पेटी, लोहेक जाली, फाटल बैनर। पाछाँक देवाल पर नब पलस्तरक बीच एक लम्बा उभार। थपथपेलापर फेर खोखर ध्वनि।

अभिराम उत्साहित। “यदि ई पुरान गलियारा एहि वेंटिलेटरक नलीसँ जुड़ल अछि, तखन हवा बाहरी जाली ढँकल रहितो एतऽ सँ घूमि सकैत।”

“हवा,” विनय कहलनि, “मनुष्य नहि।”

“एखन केवल हवा,” जयनारायण दोहरौलनि। “प्रवेशक प्रश्न एखन जसक तस।”

ओ सभ फेर अभिलेख-कोठरीमे लौटल। जयनारायण जमीनक दू बूँदक स्थान आ वेंटिलेटरक नीचे अलमारीक माथ देखलनि। अलमारीक ऊपर धूरि, मुदा एक ठाम दू छोट साफ गोल चिन्ह। ऊपरक लोहेक पट्टी पर जंगक धार।

“पानी ऊपर आयल रहत तँ एतऽ रुकि, फेर टपकल हो सकैत,” ओ कहलनि।

अभिराम बाहरी वर्षाक दिशा जाँचबाक लेल काल्हिक मौसम-यंत्रक स्थानीय आँकड़ा खोललक—राति तीन सँ पाँचक बीच हवा पूब-दक्खिन सँ पश्चिम-उत्तर। बाहरी वेंटिलेटर भवनक उत्तर देवाल पर। सीधा बरखा ओतऽ कम पहुँचैबाक चाही।

“मुदा पुरान नलीक दोसर मुँह पूब दिस हो सकैत,” जयनारायण कहलनि। “तखन पानी हवा संग नलीमे घुसि, एहि कक्षमे दू बूँद छोड़ि सकैत।”

विनयक चेहरा कने निराश। “तखन दू बूँद मनुष्यक प्रवेशक प्रमाणो नहि रहल।”

“प्रमाणक मूल्य घटल, मेटल नहि। जाँच एही तरहेँ चलैत अछि—किछु चीज जे काल्हि धारदार छल, आइ कुंद भऽ जाइत। सत्य हमरा प्रसन्न करबाक बन्धनमे नहि।”

माधवी छतरीक प्रयोग देखैत पूछलक, “दुलारीक छाता एहि खोजमे की कहैत अछि?”

जयनारायण बाहरक खूँटी दिस इशारा कएलनि। “दुलारी भीतर गेलापर छाता बाहर छोड़लक—बुच्चनक कथनसँ मेल। जँ ओ राति फेर बाहर निकसल होएत, सामान्यतः छाता उठा लेत, कारण बरखा तेज भेल। छाता ओतहि रहि गेल। एहि सँ दू सम्भावना—ओ एतेक हड़बड़ीमे निकलल जे छाता भूलि गेल, अथवा ओहि बाट निकसबे नहि कएलक। मुदा फेर—”

“ओ गायब कोना?” माधवी पूरा कएलक।

“ओही प्रश्न पर हम छी।”

अभिराम काल्हिक अपन सूतक परिकल्पना मोन कएलक। “साँकल बाहर सँ लगाओल जा सकैत अछि कि नहि, आइ परीक्षण करब?”

विनय अनुमति देलनि। पुरान साँकलक माप लऽ समान मोटाइयक डंडा पर अभ्यास कएल गेल। बाहरक जाली सँ पतली डोरी भीतर पठेबाक प्रयास। पाँच इंचक सीधा भाग पार भेल, मुदा भीतरक जाली आ देवालक कोण पर डोरी अँटकि गेल। असली वेंटिलेटरक जाली नहि हटाओल गेल; छवि आ पतला जाँच-तार सँ मार्ग परखल गेल।

अभिराम तीन बेर अलग कोण अजमौलक। “सीधा बाहरी जाली सँ साँकल धरि पहुँचब लगभग असम्भव। काल्हि संगणक केवल सीधी रेखा मानि लेने छल; बीचक जालीक विस्थापन पूरा नमूनामे नहि छल।”

जयनारायण हल्का मुस्कुरौलनि। “सूत्रक एकटा मान्यता टूटल।”

“हमर सेहो,” अभिराम बिना बचाव कहलक। “हम जल्दी उत्साहित भऽ गेल छलहुँ।”

“उत्साह दोष नहि, जँ अगिला दिन अपनहि अनुमान तोड़ि सकी।”

माधवी दुनू केँ देखैत रहल। जाँचक ई रूप ओकरा नीक लगैत छल—गलत होयब लाज नहि, गलत बात पकड़े रहब लाज।

पुरान नलीक बामा फाँक सँ पतला जाँच-तार भीतर गेल तऽ अपेक्षासँ बेसी लम्बाइ धरि सरकल। अभिराम मापलक—करीब पाँच फुट, फेर किछु कड़ा वस्तुसँ टकरायल। यदि नली कबाड़क कोठरी दिस मुड़ैत, तखन बीचमे ईटक बन्द भाग रहि सकैत।

विनय कहलनि, “देवाल तोड़ब बिना अनुमति नहि।”

“तोड़ब एखन आवश्यको नहि,” जयनारायण उत्तर देलनि। “पहिने मूल नक्शा, मरम्मत अभिलेख, भवनक पुरान छवि। देवाल अन्तिम साक्षी नहि जे तुरन्त पेट फाड़ि देखब।”

माधवीक मनमे “देवालक पेट” शब्द अटकल। सपनामे ओ देवाल पर हाथ रखने छल। ओ अनायास दहिना हथेली देखली। लाल नख-दाग फीका पड़ि रहल छल।

अभिराम ओकरा देखलक। “धूरिक नमूना देलिह?”

“हँ।”

“प्रारम्भिक तुलना काल्हि सँ पहिने नहि। एखन किछु मत सोच।”

“तूँ सेहो सपना पर ‘किछु मत सोच’ कहि रहल छह?”

“नहि,” ओ मुस्कुरायल। “हम कहि रहल छी धूरि पर निष्कर्ष मत बना। सपना तोहर, जे सोचए चाहह सोच।”

माधवीक चेहरा पर हल्का हँसी आयल। काल्हिक तीखापन पूरा गेल नहि, मुदा बीचमे कोमल जगह बनि रहल छल।

ओही समय कबाड़क कोठरी सँ सिपाही दौड़ैत आयल। “सर, देवालक नीचा भागमे छोट लोहेक ढक्कन जकाँ भेटल अछि। सामान हटेलापर देखायल।”

सभ ओतऽ गेल। जमीन सँ करिब डेढ़ हाथ ऊपर पलस्तरक भीतर चौकोर लोहेक पट्टी, रंग-पलस्तर सँ लगभग गायब। किनार पर पुरान पेंचकसक निशान। एखन जंग लागल, मुदा एक कोन अपेक्षाकृत साफ।

विनय गंभीर भेलाह। “हालमे खोलल गेल?”

जयनारायण झुकि देखलनि, छुलनि नहि। “कहल कठिन। साफ कोन नब घर्षण हो सकैत, अथवा सामान टकरायल। छवि, नमूना, फेर कारीगर।”

अभिराम नक्शा पर स्थान मिलेलक। लोहेक पट्टी अभिलेख-कोठरीक वेंटिलेटरक बामा नलीक सम्भावित रेखामे छल।

“यदि ई निरीक्षण-दुआरि हो,” ओ कहलक, “तखन नली एतऽ खुलैत।”

विनयक आँखि पैघ। “मनुष्य?”

“नलीक चौड़ाइ एखन नहि जानि सकैत। सम्भवतः हाथ वा औजार मात्र।”

जयनारायण कोठरी-दर-कोठरी दूरी नापलनि। “हत्या करनिहार भीतर आयल-गेल एहि नली सँ—ई कहब एखन मूर्खता। मुदा कोठरी ‘पूर्ण बन्द’ छल—ई वाक्य एखन निश्चित रूपेँ गलत। हवा, पानी, सम्भवतः पतला औजार अथवा डोरीक लेल दोसर बाट अछि।”

विनय धीरे कहलनि, “बन्द कोठरीक रहस्य आधा टूटल?”

“नहि। बस दुआरि एकटा कम रहस्यमय भेल। मनुष्य एखनहुँ कतऽ सँ आयल, ई प्रश्न जीवित अछि।”

जयनारायण फेर अभिलेख-कोठरीमे लौटि कैलेंडरक पन्ना देखलनि। बाहरी जाली एखनहुँ छाता सँ ढँकल। पन्ना हिलैत। बामा देवालक भीतर सँ महीन हवा अबैत।

ओ हथेली वेंटिलेटरक नीचे राखलनि। “देखू, कोठरीक दोसर साँस।”

माधवीक देहमे सिहरन भेल।

ओहि क्षण नलीक भीतर कतहु धातुक बड्ड हल्का ध्वनि भेल—टिन... केवल एक बेर। सम्भवतः जाँच-तार कतहु टकरायल, सम्भवतः पुरान लोहेक टुकड़ा हवा सँ हिलल। अभिराम तुरन्त बामा दिस तकलक। विनय सिपाही केँ कबाड़क कोठरी जाँचय भेजलनि। किछु नहि भेटल।

माधवीक कानमे रातिक पायल बजल। ओ अपनहि केँ डाँटल—दिनक धातुक ध्वनि केँ सपनाक पायल मत बना।

जयनारायण ओकर चेहरा पढ़ि लेलनि जकाँ। “मन जे कथा पहिने सुनि लेने हो, नब ध्वनि ओकरहि शब्दमे लिखैत अछि,” ओ धीमे कहलनि। “एहि कारण डरक समय कानो साक्षी होइत अछि, मुदा सावधान साक्षी।”

माधवी पुछलक, “अहाँकेँ डर नहि लगैत?”

जयनारायण क्षण भरि चुप रहलाह। “लगैत अछि। जे कहत ओकरा कखनो नहि लगैत, ओ अपन मनक बयान गलत लिखि रहल अछि। फर्क एतबे—डर केँ कुर्सी देब, कलम नहि।”

बाहरसँ छाता हटाओल गेल। वेंटिलेटर पर भोरक बादलक उजास पड़ल। जयनारायण बाहरी देवालक ओहि पातर उज्जर रेखा फेर देखलनि, जतऽ काल्हि वर्षाक धार दू फाँक भेल जकाँ छल। रेखा ठीक नलीक बामा मोड़क सामने पड़ैत।

“पुरान छवि खोजू,” ओ अभिराम कै कहलनि। “१९७८ सँ पहिने। राहत-शिविरक, भूकम्पक, भवन-निर्माणक—जे भेटय। ई वायु-नली कखन बनल, कखन बन्द भेल, के जानैत छल—सभ जानबाक अछि।”

अभिराम सिर हिलेलक। “डिजिटाइज सूचीमे १९३४क किछु छवि अछि। पूरा छाँटब।”

१९३४ शब्द सुनिते माधवीक सपनाक सात सीढ़ी फेर मोन पड़ल। वसुधाक झोरामे कपड़ामे लपेटल पोथी सेहो। पुरान अभिलेख, सात टोला, नील धागा, देवालक साँस—अलग-अलग वस्तु एखन एकहि कोठरीमे छाया बनि घूमि रहल छल, मुदा जयनारायणक सावधानी ओकरा एकहि कथा बनाबयसँ रोकैत छल।

दोपहर धरि प्रयोग समाप्त भेल। विनय मोहर फेर लगौलनि। अभिराम सूत्रमे नया तथ्य जोड़लक—“कक्ष बाह्य वायु-सम्पर्क: बहु-पथ सम्भावित; बन्द-कक्ष मान्यता अमान्य।” प्रणाली पुरान सम्भावना फेर गणना करबाक आग्रह देखेलक।

विनय पुछलनि, “चलाउ?”

अभिराम जयनारायण दिस देखलक।

जयनारायण मुस्कुरौलनि। “चलाउ। मुदा परिणामक ऊपर मोट अक्षरमे लिखू—‘नब तथ्य आएलापर बदलत।’”

अभिराम हँसि देलक। “माधवी काल्हिए ई सुधार करा देलक।”

पर्दा पर प्रतिशत बदलल, मुदा एहि बेर माधवी अंक नहि पढ़ली। ओकर नजर चेतावनी पर गेल। मनुष्य सीखैत अछि कि नहि, ई सम्भवतः एहि छोट बात सँ मापल जा सकैत छल।

सभ बाहर निकलल। पुरान भवनक बरामदा दिनक कचहरीक कोलाहल सँ भरि चुकल—मुक्किल, वकील, कागज, चाय, पुकार। काल्हिए एही ठाम मृत्यु छल; आइ जीवन अपन गति फेर पकड़ि लेने छल।

माधवी एक बेर पाछाँ घुरि मोहरबन्द दुआरि देखली। बाहर सँ दुआरि बन्द। भीतर हवा चलैत। देवालक भीतर एक पुरान नली, जकरा वर्तमान नक्शा भुला चुकल।

बन्द कोठरी एखन पहिने सँ कम बन्द छल, मुदा रहस्य पहिने सँ बेसी पैघ।

किएक तँ एखन प्रश्न केवल ई नहि रहि गेल छल जे ओ राति भीतर के छल। प्रश्न ईहो छल—एहि भवनक ओ पुरान साँसक बाट के-के जानैत छल?

अध्याय ७ — वसुधाक घर

दुपहर ढलैत-ढलैत बरखा पातर भऽ गेल छल, मुदा वसुधाक घरक आगाँ लोकक भीड़ एखनहुँ घटल नहि। दुआरि लग दू जोड़ा चप्पल कीचड़मे आध धँसल, बरामदामे भीजल छाता, कोनमे धूपक सलाई नहि—तुलसीक पात आ धूपक धुआँ। भीतर स्त्रीक दबायल कानब, बाहर पुरुषक फुसफुसाहट। मृत्यु घरमे घुसला बाद लोकक आवाज अपने-आप धीमा भऽ जाइत अछि, जँ कि जिज्ञासा प्रायः आओर तेज भऽ जाइत अछि।

जयनारायण दुआरि पर रुकलाह। विनय हुनका संग छलाह, माधवी कने पाछाँ। अभिराम एहि बेर नहि आयल छल; ओ कचहरीमे पुरान भवनक छवि आ मरम्मत-अभिलेख छाँटि रहल छल।

“पहिने परिवार शोक करय, तखन प्रश्न,” माधवी धीमे कहलक।

जयनारायण ओकरा देखलनि। “हँ। मुदा कतेको बेर शोकक पहिल घड़ीमे जे बात सहज निकलैत अछि, बादमे घर ओकरा सजा-धजा कऽ एकरूप बना दैत अछि। प्रश्न कम, सुनब बेसी।”

विनय दुआरि पर पहरदार केँ कहि देलनि जे भीतर अनावश्यक लोक नहि घुसय। वसुधाक पति अरुण स्वयं बाहर आयल। सफेद कुरता, बिना दाढ़ी बनौने चेहरा, आँखिक नीचा नील छाया। ओ जयनारायण केँ देखिते हाथ जोड़लक।

“अहाँकेँ दीदी बड्ड मानैत छलीह,” ओ कहलक। आवाज थाकल छल, मुदा शब्द साफ। “एहन घड़ीमे अहाँकेँ एहि सभ झंझटमे...”

“झंझट नहि,” जयनारायण रोकलनि। “वसुधा हमरा जतेक मानैत छलीह, ओतेक उलटि कऽ बहसो करैत छलीह। एखन हुनकर पक्षमे हम किछु नहि कहब; केवल जे छल, से बुझबाक प्रयत्न करब।”

अरुणक आँखि एक क्षण उठल, फेर झुकि गेल। “आब की बुझब? जे गेल से...”

वाक्य अधूरा छोड़ि ओ भीतर लऽ गेल।

बैसारक कोठरी बड़का नहि छल। देवाल पर परिवारक तीन फोटो—विवाहक, एक विद्यालयक पुरस्कार समारोहक, एकमे वसुधा कचहरीक कोनो धरना-जकाँ भीड़मे। विवाहक

फोटोमे ओ लाल साड़ीमे गंभीर; पुरस्कारक फोटोमे हँसैत; तेसरमे माइक बिना, हाथमे कागज, ककरो बात सुनैत। एके चेहराक तीन अलग स्वभाव जकाँ।

कोठरीक बीच दरी बिछल। वसुधाक माय देवालसँ पीठ सटौने बैसल छलीह। हुनकर आँखि फुलल, मुदा रोदन थमल। सासु दोसर कोनमे माला फेरैत। भाई प्रखर खिड़की लग ठाढ़, दूरभाष बेराबेरी हाथमे लैत-राखैत।

माधवी भीतर पड़िते माय ओकरा देखलीह आ हाथ पसारि देलखिन। “तूँ तऽ काल्हि धरि ओकर संग छलह ने?”

माधवी घुटना मोड़ि हुनका लग बैसि गेल। “हँ, मायजी।”

“ओ किछु कहने छल? घरक? हमरा? ककरो नाम?”

ई प्रश्नमे केवल जाँचक जिज्ञासा नहि, मायक अन्तिम भूख छल—मृत बेटी अन्तिम बेर ओकरा मोन कएलक कि नहि। माधवीक गला भरि आयल। ओ सच कहलक, “दीदी जमीनक कागजक बात करैत छलीह। आ दुलारी केँ अकेले नहि पठेबाक कहलखिन। घरक कोनो बात विस्तार सँ नहि।”

माय धीरे माथ हिलेलखिन। “बचपनसँ एहन। अपन दुख पेटमे, दोसरा लोकक दुख हाथमे लऽ घूमत।”

खिड़की लग प्रखरक जबड़ा कसल। “माय, एखन ई सभ कहबाक की दरकार अछि?”

जयनारायण ओकर आवाज ध्यान सँ सुनलनि—दुख? खीझ? थकान? मनुष्यक एके शब्दमे तीनू रहि सकैत अछि।

“दरकार अछि कि नहि, से हम नहि ठहराएब,” माय कहलखिन। “हमर बेटी गेल। हम जे मोन पड़त से कहब।”

सासु माला रोकि धीमे बजलीह, “मोनक बात सभ ठाम नहि कहल जाइत अछि। घरक नामो किछु होइत अछि।”

माधवीक कानमे ओही पुरान वाक्य बजल—घरक नाम सँ पैघ कोनो न्याय नहि। वसुधा हँसि कऽ एक बेर बतौने छलीह जे हुनकर सासु एना कहैत छथि। तखन माधवी बुझने छल ई केवल घरेलू चुटकी। आइ वाक्यक धार अलग लागल।

विनय औपचारिक स्वरमे कहलनि, “हम सभ ककरो दोषी मानि कऽ नहि आयल छी। मृत्यु संदिग्ध अछि। घरक जे बात जाँचमे सहायक हो, से बुझब दरकार।”

“संदिग्ध?” प्रखर घुरि कऽ तकलक। “भोरसँ तऽ सुनि रहल छी पुलिस कहैत आत्महत्या।”

“पुलिसक प्रारम्भिक अनुमान अन्तिम सत्य नहि,” विनय उत्तर देलनि। “दरवाजा भीतरसँ बन्द छल, मुदा कोठरी पूर्ण बन्द नहि छल। किछु भौतिक बात मेल नहि खा रहल अछि।”

अरुण पहिल बेर तीक्ष्ण भेल। “की मेल नहि खा रहल?”

“एखन सभ साझा नहि कएल जा सकैत,” विनय कहलक।

“हम पति छी।”

“तँ अहाँसँ पूछबो करब। मुदा घटनास्थलक प्रत्येक बात एखन नहि।”

किछु क्षण कोठरीमे केवल माला सरकबाक क्षीण ध्वनि रहल। जयनारायण कोनो नोटबुक नहि खोललनि। हुनकर तरीका प्रखर केँ असहज कऽ रहल छल। पुलिसक लोक लिखैत तऽ उत्तर देब सरल—प्रश्न समाप्त, पाँति समाप्त। ई बूढ़ लोक केवल देखैत छल।

जयनारायण माय सँ पुछलनि, “वसुधा छोटसँ जिद्दी छलीह?”

प्रखर हँसबाक जकाँ कएलक, मुदा आवाज तीत। “ई प्रश्नक उत्तर पूरा शहर दऽ सकैत अछि।”

माय ओकरा अनदेखा कएलखिन। “जिद्दी? हँ, मुदा जेकरा ओ सही बुझत। पाँच बरखक छल तऽ बथानक बाछी बेचय नहि देलक। कहलक, ‘ई घरमे जनमल, घरहि रहत।’ दस बरखक भेल तऽ विद्यालयमे एक गरीब छौड़ीक नाम काटल गेल; हेडमास्टरक दुआरि पर बैसल रहल। जिद छल, मुदा अपन लेल कम।”

सासु कने खंखारलीह। “जिद जँ घरक मर्यादा बुझि कऽ हो तऽ ठीक। विवाहक बाद स्त्री अकेले अपन मनक नहि रहैत।”

माधवीक भीतर प्रतिक्रिया उठल, मुदा ओ चुप रहली। जयनारायण तुरन्त सासु दिस मुड़लनि। “वसुधा घरक ककर बात नहि मानैत छलीह?”

“हम एना नहि कहलहुँ।” सासु सावधान भेलीह। “ओ पढ़ल-लिखल छलीह। काज करैत छलीह। हम रोकलहुँ कखनो? मुदा राति-बिराति कचहरी, झोपड़पट्टी, नदी-पारि—घरमे लोक चिन्ता करत ने?”

“अरुण?”

अरुण हत्था पर रखल हाथ कसलक। “हम ओकर काज रोकने नहि छी। उलटे कतेको बेर गाड़ी देलहुँ, पैसा देलहुँ। मुदा हँ, पछिला दू-तीन महीना ओ प्रयोजनसँ बेसी जोखिम लऽ रहल छलीह। फोन पर धमकी आबैत छल। हम कहलहुँ पुलिसमे लिखाउ। ओ कहैत—‘नाम बिना धमकी केकरा नामे लिखाउ?’”

विनय तत्क्षण पूछलक, “धमकीक नम्बर?”

“अधिकतर अज्ञात। दू बेर ओ दूरभाष बदललखिन।”

“पुरान दूरभाष कतऽ?”

“एकटा घरमे होएत। खोजि देब।”

प्रखर एकाएक बोलल, “धमकी केवल मुकदमाक कारण नहि छल। दीदी लोकक घरमे घुसि कऽ झगड़ा मोल लैत छलीह। सात टोला, बन्ध, जमीन, मजदूरी—जतऽ दू पक्ष, ओ तेसर पक्ष बनि पहुँचि जाएत।”

माधवी ओकरा देखली। “तैं?”

“तैं ई जे सभ बातक दोष घर पर नहि दियौ। भोरसँ लोक घरक झगड़ाक कथा बना रहल अछि।”

“हम घरक दोष नहि देलहुँ,” माधवी कहलक।

“तोहर चेहरा देलक।”

“प्रखर!” माय कड़ा स्वरमे कहलखिन।

ओ चुप भऽ गेल, मुदा खिड़कीक पट्टी पर उँगुरी टपकाबैत रहल। जयनारायण ओ लय मोनमे राखलनि—तीन धीमा, दू तेज। घबराहट मनुष्यक देहमे अपन ताल खोजि लैत अछि।

जयनारायण अरुण दिस फेर घुरलनि। “काल्हि साँझ वसुधासँ अन्तिम बेर अहाँक बात कखन भेल?”

अरुण एक क्षण सोचलक। “सात बजिक बाद। करीब सात पैंतालीस। ओ कहलीह देर होएत। हम कहलहुँ घर आबि जाउ; बरखा बढ़ि रहल। ओ कहलीह दुलारी आबयत, किछु कागज मिलाबय अछि।”

“स्वर सामान्य?”

“थाकल। कने चिड़चिड़। मुदा भयभीत नहि।”

“झगड़ा भेल?”

अरुणक नजर सासु पर, फेर प्रखर पर गेल। “नहि।”

ई ‘नहि’ एतेक जल्दी आयल जे जयनारायण किछु नहि कहलनि।

माय बजलीह, “दू दिन पहिने भेल छल।”

अरुण आँखि बन्द कएलक। “माय...”

“सच अछि तऽ अछि।” वसुधाक माय नहि, अरुणक सासु—अर्थात् वसुधाक माय—एकदम सीधा कहलखिन। “हम फोन पर सुनल। वसुधा कहैत छल—‘हम कागज लौटाएब नहि।’ अरुण कहैत छल—‘घरमे पहिने बात कर।’”

जयनारायण पुछलनि, “कागज कोन?”

अरुण साँस छोड़लक। “हमरा नहि मालूम। ओ कतेको कागज घर आनैत। ककरो जमीन, ककरो आवेदन। हम केवल ई कहने छलहुँ जे ककरो घरक मूल कागज अपन लग रखब ठीक नहि। बादमे चोरीक दोष लागए।”

“वसुधा कहलीह ‘लौटाएब नहि’?”

“सम्भवतः प्रतिलिपिक बात छल। माय पूरा बात नहि सुनने छलीह।”

माय विरोध करए जकाँ भेलखिन, फेर थमि गेलीह। सम्भवतः हुनको बुझायल जे शोकक बीच स्मृति धारदार होइत अछि, मुदा सदिखन पूरा नहि।

विनय नोट कएलनि। “वसुधाक निजी कागज घरमे कतऽ रहैत?”

अरुण हुनका पिछला कोठरी दिस लऽ गेल। एकटा छोट अध्ययन-कक्ष—काठक मेज, दू अलमारी, जमीन पर फाइलक गठरी, देवाल पर मिथिलाक्षरमे लिखल एक पाँति जे माधवी पूरा पढ़ि नहि सकली। मेज पर नीला स्याहीक कलम, कागजक भार दऽ रखबाक छोट पीतल माछ, कोनमे चीनी-विहीन चाय बनाबय लेल सौँफ-इलायची।

“ई कोठरी ओकर,” अरुण कहलक। “हम बिना पूछने फाइल नहि छूबैत।”

जयनारायण मेजक कागज दूरहिसँ देखलनि। हर ढेरीक ऊपर छोट कागजी पर्ची—मुकदमा, पत्र, प्रतिलिपि, निजी। कागज सभ बामा कोन पर मोड़ल। एक, दू, पाँच, सात—करिब सभ।

माधवी अनायास मेज दिस झुकली। “दीदी कागजक बामा कोन मोड़ैत छलीह। याद राखबाक लेल।”

“की?” विनय पूछलनि।

“जाहि कागज पर फेर लौटबाक हो, बामा ऊपरक कोन कने मोड़ि देत छलीह। कहलखिन क्लिप हर बेर नहि भेटैत।”

जयनारायण किछु क्षण चुप रहलाह। हुनकर आँखिमे घटनास्थलक अधलिखल पन्ना उभरल—ओ पन्ना दहिना कोन सँ मोड़ल छल।

ओ एखन किछु नहि कहलनि। केवल पुछलनि, “ई आदति पुरान?”

अरुण कहलक, “बड्ड पुरान। किताबो एना बिगाड़ैत छलीह। हम कतेक बेर कहने छी।”

सासु दुआरि लग आबि गेल छलीह। “कागज-किताबक बीच जीवन काटल। घरक कागज कोन देखलक?”

“घरक कोन कागज?” जयनारायण तुरन्त पुछलनि।

सासु घबरा कऽ कहलीह, “हम तऽ साधारण बात कहैत छी—बैंक, बीमा, घर-कर। स्त्री लोक सब किछु बाहरक झगड़ामे लगाय देत तऽ घरक हिसाब के देखत?”

अरुण थाकल स्वरमे कहल, “माय, एखन नहि।”

जयनारायण अलमारीक ताला देखलनि। एक पल्ला खुलल। भीतर कपड़ा नहि, अभिलेख, पुरान नक्शा, किछु लिफाफा। पुलिस पहिने सूची बना चुकल छल। विनय फाइल देखेलनि। “घटनास्थलसँ जे झोरा भेटल, से अलग प्रमाणमे अछि। घरक कागजक सूची सेहो बनत। अहाँ सभ किछु नहि हटाएब।”

प्रखर दुआरि पर आबि ठाढ़ भेल। “हमरा सभ केँ अपराधी जकाँ किएक देखल जा रहल अछि?”

विनय शान्त। “कारण ककरो अपराधी मानल नहि गेल अछि, तँ सभ तथ्य एकहि दूरी सँ देखल जा रहल अछि।”

“एकहि दूरी?” प्रखरक स्वर उठल। “दुलारी गायब, ओकर नाम पर लोक बोलि रहल, मुदा पुलिस घरक अलमारी गनैत अछि।”

माधवी तुरन्त कहलक, “दुलारी गायब अछि, दोषी सिद्ध नहि।”

“तोरा तऽ सभ गरीब निर्दोषे देखाइत अछि?”

“नहि। हमरा मनुष्य दोष सिद्ध होएबासँ पहिने मनुष्ये देखाइत अछि।”

प्रखर उत्तर देत, तकर पहिने जयनारायण बीचमे बजलाह, “वसुधा सेहो एही बात पर अहाँसँ झगड़ैत छलीह?”

प्रखरक मुँह बन्द।

“कतेक बेर?”

ओ खिड़की दिस देखैत कहलक, “बहिन-भाइक झगड़ा गनल जाइत अछि?”

“जँ मृत्यु भेल हो, तखन कतेको छोट बात गनल जाइत अछि।”

प्रखर दाँत भींचलक। “ओ सात टोला केस छोड़य नहि चाहैत छलीह। हम कहलहुँ, परिवारक नाम लग भूमि-समूहसँ पुरान लेन-देन अछि; बेकारमे सबकेँ शत्रु बनाबैत अछि। बस।”

“ककर भूमि-समूह?” विनय पूछलक।

“कतेको लोक अछि। साझेदारी बदलैत रहैत। हमरा पूरा नाम नहि मालूम।”

जयनारायण हल्का भौंह उठौलनि। शहरमे जमीनक कारोबार करनिहार प्रखर केँ ‘पूरा नाम नहि मालूम’—ई बात ओहि तरहेँ सुनाइत छल जेना माछ कहए पोखरि कतऽ अछि से नहि जानैत। मुदा ओ एखन बात पकड़ि नहि बैठलाह।

माय धीरे कहलीह, “वसुधा कहैत छल सात टोला जमीनक कागजमे बड्ड पुरान बेइमानी अछि।”

“माय, फेर!” प्रखर झुँझलायल।

“तोरा किएक जलैत छह? तौ तऽ कहैत छह तोरा किछु मालूम नहि।” माय पहिल बेर ओकरा कड़ा आँखि सँ देखलीह।

घरक दुखक नीचा दबायल पुरान दरार स्पष्ट देखाइ पड़ल। मृत्यु परिवार केँ एक नहि करैत; कई बेर ओ केवल ओ सभ दरार पर उजास पाड़ैत अछि जे जीवित लोक पर्दा सँ ढाँकि रखने रहैत।

जयनारायण विषय बदलिलनि। “वसुधा रातिमे सुपारी खाइत छलीह?”

सासु कहलीह, “खाइत तऽ छलीह, मुदा राति नहि। पेटमे जलन होइत।”

अरुण माथ हिलेलक। “डॉक्टर रोकने छल। दिनमे दू-तीन बेर, रातिक भोजन बाद कखनो नहि।”

माधवी सोचली—घटनास्थल पर डिबिया खुलल छल, सुपारीक टुकड़ा बाहर।

“चाय?” जयनारायण पुछलनि।

“चीनी बिना,” माय कहलीह। “बचपनमे मीठ बड्ड, बादमे एकदम छोड़ि देलक।”

“घरमे सभ जानैत?”

अरुणक चेहरा पर पहिल बेर फीकी मुस्की आयल। “जे एक बेर ओकर चायमे चीनी देलक, दोसर बेर भूलत नहि। ओ पीबे नहि करैत छलीह।”

जयनारायण दीर्घ श्वास लेलनि। तीन आदति—कागजक बामा कोन, राति सुपारी नहि, चाय बिना चीनी। ओ मनमे राखलनि। एखन प्रमाणसँ मिलान बाकी छल।

बाहर एकाएक कोनो स्त्री जोर सँ कानय लागलीह। सम्भवतः दूरक नातेदार पहुँचली। कोठरीक सभ लोक एक क्षण उधर तकलक। एहि एक क्षणमे प्रखर अपन दूरभाष जेबमे रखलक, मुदा स्क्रीन पर जे पाँति चमकल से माधवीक नजर बचि नहि सकल—“फेर फोन नहि करू। एखन घरमे पुलिस अछि।” प्रेषकक नाम देखाइ नहि देलक।

माधवीक देह सचेत भेल, मुदा ओ किछु बजली नहि। ओ बुझैत छल—देखल चीज तुरन्त अर्थ नहि बनैत। प्रखरक कारोबारी साथी हो सकैत, पत्रकार, कर्जदार, कोनो स्त्री, कोनो मित्र। जयनारायणक बात मोन पड़ल—मन जे कथा पहिने सुनि लेने हो, नब ध्वनि ओकरहि शब्दमे लिखैत अछि।

अरुण एकाएक पुछलक, “दुलारी भेटल?”

विनय कहलक, “एखन नहि।”

“वसुधा ओकरा किएक बोलौने छलीह, अहाँ सभ जानैत?”

माधवी उत्तर देबाक पहिने विनय ओकरा देखलक। ओ कहली, “सम्भवतः जमीनक कागजक बात छल। दुलारी रातिक पाठशालामे पढ़ैत छल, दीदी ओकरा प्रतिलिपि बुझब सिखा रहल छलीह।”

अरुणक चेहरा पर जटिल भाव आयल—दया, थकान, कि अविश्वास। “ओ छौड़ी नीक अछि। वसुधा ओकरा घरमे कतेको बेर आनने छलीह। माय कैं नहि पसिन्न पड़ैत छल।”

सासु तुरन्त बोललीह, “हम कखन कहलहुँ छौड़ी खराब? हम कहैत छलहुँ घरक भीतर सभकैं बेरोकटोक आनब ठीक नहि। काज करनिहार, मुकदमाक लोक, ककरो घरक झगड़ा—घर घर रहय कि दफ्तर?”

“दुलारी नौकर नहि,” माधवीक स्वर अपने-आप कड़ा भेल।

सासु ओकरा देखलीह। “हम ओकर नामे नहि कहलहुँ।”

कक्ष फेर तना गेल। जयनारायण धीरे उठलाह। “एखन एतबे रहय। शोकक घरमे हम सभ प्रश्नक बोझ नहि बढ़ाएब।”

विनय अरुण कैं कहलनि जे पुरान दूरभाष, धमकी-संदेश, गाड़ी आ काल्हिक घरमे उपस्थित लोकक सूची साँझ धरि उपलब्ध कराउ। ‘गाड़ी’ शब्द पर अरुणक पलक एक क्षण बेसी झपकल। जयनारायण देखलनि, मुदा किछु नहि कहलनि।

बाहर निकलैत माधवी पाछाँ अध्ययन-कक्ष दिस तकली। देवाल पर टाँगल कागजक एक पाँति हवा बिना हिलैत नहि छल। कचहरीक कैलेंडर जकाँ नहि। एतऽ कोठरी साधारण साँस लैत छल।

गलीमे पहुँचि विनय पुछलनि, “की भेटल?”

जयनारायण छड़ीक नोक कीचड़मे टिकौलनि। “एक मृत स्त्रीक चारि जीवित कथा।”

“चारि?”

“माय कहैत छथि—ओ दोसरा लेल जिद्दी। सासु कहैत छथि—घर नहि बुझनिहार। पति कहैत अछि—जोखिम लेनिहार मुदा समर्थ। भाई कहैत अछि—झगड़ा मोल लेनिहार। चारूमे किछु सत्य हो सकैत अछि। ककरो कथा पूरा नहि।”

माधवी धीरे जोड़लक, “आ दीदी अपन कथा एखन कहि नहि सकैत छथि।”

“तँ आदति कहत,” जयनारायण उत्तर देलनि। “मनुष्य झूठ बजैत अछि, आदति झूठ कम बजैत अछि।”

विनय कहलक, “अहाँ चाय, सुपारी आ मोड़ल कागजक बात सोचि रहल छी?”

“हाँ। काल्हि प्रयोगशाला सँ कपक अवशेषक रिपोर्ट माँगू। घटनास्थलक पन्ना फेर देखब। डिबिया पर उँगुरीक निशानक स्थिति सेहो। तीनटा छोट बात एक दिश देखए तऽ ओ दिश कम सँ कम चलि देखबाक चाही।”

ओही समय विनयक दूरभाष बजल। थाना सँ खबर छल—मामलासँ बरामद दुनू कपमे एक कपक तल्ला सँ चीनीक क्रिस्टल भेटल; दोसरमे नहि। मात्रा एखन परीक्षणाधीन।

विनय फोन काटि जयनारायण दिस तकलनि।

जयनारायण किछु क्षण चुप रहलाह। फेर कहलनि, “काल्हि घरक लोक कहत वसुधा चीनी नहि खाइत छलीह। आइ प्रयोगशाला कहि रहल अछि एक कपमे चीनी छल। एखन प्रश्न ई नहि जे कप ककर। प्रश्न ई जे ओ राति कोठरीमे दू लोकक रोजक आदति भेटल कि ककरो बनाओल दृश्य?”

माधवीक मनमे वसुधाक अध्ययन-कक्षक सभ बामा-मोड़ल कागज चमकल।

बरखा फेर महीन बूँदमे शुरू भेल। घरक भीतर रोदन, गलीमे कीचड़, आ तीन छोट आदति धीरे-धीरे मृत्यु सँ जुड़ि रहल छल।

अध्याय ८ — रोजक आदति

भोरमे कचहरी खुललासँ पहिने कमली देवी अपन चूल्हि लग बैसल छलीह। कोयलाक आँच एखन पूरा पकड़ने नहि छल; ओ पंखा झलैत-झलैत धुआँ सँ आँखि मीचैत। रातिक बरखा बाद बरामदाक ईंट धोआइल जकाँ लगैत, मुदा कोन-कोनमे कीचड़ फेर जमा।

जयनारायण हुनकर दोकानक आगाँ पीढ़ा खींचि बैसलाह। माधवी संगमे। विनय दूर ठाढ़ ककरोसँ बात कऽ रहल छल।

कमली देवी पूछलीह, “चाय?”

“टूटा,” जयनारायण कहलनि। “एकटा अहाँ जेना हमरा सदिखन दैत छी, दोसर वसुधा केँ जेना दैत छलहुँ।”

कमलीक हाथ एक क्षण थमल। “ओ आब पीतथि कतऽ?”

“आदति बुझबाक लेल।”

ओ बिना दोसर प्रश्न कएने दू गिलास चढ़ेलखिन। एकमे दूध कने बेसी, चीनी एक चमच। दोसरमे दूध कम, अदरक, चीनी नहि। चाय उतारि अलग राखलनि।

“वसुधा दीदीक ई,” ओ चीनी-विहीन गिलास दिस देखौलनि। “कतेको बर्ख सँ। पहिने कहैत छलीह चीनी छोड़लहुँ, फेर कहैत छलीह—कमली, तोहर चाय चीनी बिना बेसी नीक। हमरा बुझाइट छल ई हमर मन राखबाक बात।”

माधवीक मुँह पर क्षीण मुस्की आयल। वसुधा एहन बात कहि सकैत छलीह।

जयनारायण पुछलनि, “काल्हि राति अहाँ वसुधा लेल चाय बनौने छलहुँ?”

कमली माथ हिलेलखिन। “हम राति साढ़े आठ धरि रहैत छी। काल्हि बरखा देखिकऽ आठ पन्द्रह पर समेटि लेलहुँ। वसुधा दीदी साँझ सातक कने बाद आयलीह। तखन एक गिलास देलहुँ—चीनी बिना। बादमे के देलक, हमरा नहि मालूम।”

“दुलारी?”

“ओ राति नौक बाद आयल। हमर दोकान बन्द भऽ चुकल छल।”

“आओर के वसुधाक चायक आदति जानैत?”

कमली हँसलीह। “कचहरीमे जे हुनका संग दू बेर चाय पीने हो, ओ जानैत। चीनी पड़ि गेल तऽ गिलास घुरा देत छलीह। मुदा गुस्सा नहि—कहती, ‘ई तोहर चाय, हमर दोसर बनाउ।’”

जयनारायण गिलास उठेलनि, मुदा पीलनि नहि। “ककरो आदति तेना छोट होइत अछि जे सभ जानैत अछि, मुदा अपराधक दृश्य बनौनिहार बेराबेरी ई छोट बाते भूलि जाइत अछि।”

माधवी पुछलक, “तऽ एक कपमे चीनी भेटल, तकरा सँ ई सिद्ध जे दोसर लोक छल?”

“नहि। वसुधा ककरो लेल चाय बनौने हो सकैत छलीह। कोनो लोक अपन कप छोड़ि गेल हो सकैत। पुरान कप पहिने सँ ओतऽ रहि सकैत। अथवा दृश्य बनाओल हो सकैत। एकटा चीनीक दाना अपराधी नहि पकड़ैत।”

कमली दुनू केँ देखैत कहलीह, “हमरा एक बात मोन पड़ल।”

जयनारायण गिलास नीचा रखलनि।

“परसू साँझ वसुधा दीदीक संग एक लोक चाय पीने छल। हम पहचानैत नहि। साफ कपड़ा, पएमे चमचम जूता। ओ दू चमच चीनी माँगलक। वसुधा दीदी हँसि कहलखिन—‘एतेक मीठ सँ जीभ सत्य बजत कि नहि?’ ओ लोक हँसल नहि।”

“उमेर?”

“चालीसक आसपास। सम्भवतः कम। छाता पैघ। गाड़ी सड़क पर छल।”

“चेहरा फेर देखलापर चिन्हब?”

कमली आँखि छोट कएलखिन। “सम्भवतः। मुदा अहाँ हमरा फोटो देखाउ, नाम नहि कहू। नाम सुनला पर मन चेहरा बना लैत अछि।”

जयनारायण प्रसन्न भेलाह। “अहाँ हमरा काज छीनि रहल छी।”

“अहाँक संग चाय बेचैत-बेचैत किछु सीखलहुँ,” कमली मुस्कुरेलीह।

विनय एखन लग आबि गेल। ओ फोटो-पहचानक विधि बादमे करबाक बात लिखलक। जयनारायण कहलक, “आइ नहि। स्मृति केँ घेरि नहि देब। अलग समय, समान कद-काठीक कतेको फोटो।”

कचहरी खुलल। मुंशी, वकील, मुवाक्किल, नकलनवीस, चपरासी अपन-अपन दिशा बहय लगल। जयनारायणक मनमे प्रश्न छल—वसुधाक दिनचर्या के-के जानैत? जे जानैत, ओ दृश्य बनाबैत काल गलती किएक करत? अथवा गलती जानि-बुझि कऽ छोड़ल गेल?

पहिल ठाम वसुधाक बैठबाक छोट मेज छल, जतऽ ओ मुकदमाक दिन लोकसँ भेटैत। मेज एखन पुलिसक अनुमति सँ खाली कएल जा रहल छल। नकलनवीस देवकीनन्दन

कहलक, “वसुधा जी कागजक बामा कोन मोड़ैत छलीह। एहन कि हम बेराबेरी सीधा कऽ देब, ओ फेर मोड़ि देती।”

“किएक?” माधवी पूछलक।

“ओ कहैत—जाहि पन्ना पर प्रश्न, ओकर कान मोड़ि दियौ। बामा कोनक अर्थ फेर देखब। दहिना कोनक अर्थ ककरो हस्ताक्षर लेबाक बाकी। हमरा एखन मोन पड़ल।”

माधवी चौंकली। “दहिना कोन सेहो अर्थ रखैत?”

देवकीनन्दन सिर हिलेलक। “हँ। मुदा ओ कम। अधिकांश बामा।”

जयनारायण तुरन्त घटनास्थलक छवि मँगौलनि। वसुधाक सामने पड़ल अधलिखल पन्नाक दहिना ऊपरक कोन मुड़ल छल। पन्ना पर हस्ताक्षरक जगह नहि, केवल एक अधूरा वाक्य।

“सम्भवतः हस्ताक्षर लेबाक दोसर कागजसँ मिलि गेल हो,” विनय कहलक।

“सम्भवतः,” जयनारायण उत्तर देलनि। “एखन केवल नोट करू—दहिना कोनक अर्थ संभवतः ‘हस्ताक्षर बाकी’। प्रश्न ई, अधलिखल पन्ना पर ककर हस्ताक्षर?”

माधवी पन्नाक छवि पैघ कऽ देखली। लिखावट वसुधाक लगैत, मुदा अन्तिम पाँति बीचमे रुकल—“सातम चिन्ह बिना...” तकर बाद खाली।

“ई दीदीक हाथ,” माधवी कहली, “मुदा अक्षर कने खिंचल। जेना जल्दीमे लिखल।”

जयनारायण पूछलनि, “वसुधा लिखैत काल बामा हाथसँ कागज दबबैत छलीह?”

“हँ। आ कलम दहिना।”

“तखन दहिना कोन मोड़बाक लेल लिखन रोकि हाथ बदलए पड़त। ई छोट क्रिया सेहो समय माँगैत।”

विनय मुस्करायल। “अहाँ आदतिक भीतर सेकेंड गनि रहल छी?”

“अपराधक दृश्य कई बेर मिनट सँ नहि, आदतिक आध सेकेंड सँ टूटैत अछि।”

दुपहरिया तक ओ सभ वसुधाक रोजक बाट जोड़ैत रहल। घरसँ निकलि पहिने माय कें छोट संदेश; सोम-बुध रातिक पाठशाला; मंगल-बृहस्पति सात टोला लोकसँ भेट; शुक्र दिन पुरान अभिलेख; अदालतक दिन कमलीक चाय; सुपारी दिनमे भोजन बाद, मुदा रातिक भोजनक बाद नहि। हर छोट आदति अलग मनुष्यक स्मृतिमे बाँचल छल।

रहमत काका सेहो आयलाह। हुनकर उमेर सत्तर पारि, आँखि पर मोट चश्मा, आ उँगुरी सभ धागा बाँधि-बाँधि कठोर। ओ पुरान फाइल बँधबाक काज करैत छलाह।

“वसुधा बेटी सुपारी खूब चबैत छलीह?” जयनारायण पूछलनि।

रहमत हँसलाह। “दिनमे। राति नहि। पेटक रोग। एक बेर हम आठ बजे डिबिया बढ़ा देलहुँ तऽ कहली—‘काका, राति ई देब तऽ बिहान अहाँ हमर पेट सम्हारब?’ ताहि दिनसँ हम राति नहि देब।”

“डिबिया सदिखन दहिना?”

रहमत सोचलनि। “हाथ दहिना, तँ सम्भवतः। मुदा वसुधा बेटी बैग बामा काँध पर राखैत छलीह। बैसल रहली तऽ डिबिया दहिना मेज पर। उठैत काल बैगमे।”

माधवी कहली, “घटनास्थल पर डिबिया बामा जमीन पर छल।”

विनय ओकरा देखलक—ई बात एखन सभकेँ कहबाक नहि छल। मुदा रहमत काका कचहरीक पुरान लोक, आ घटना-सूचना आध शहरमे फैलि चुकल छल।

रहमत आँखि सिकोड़े कहलक, “बामा? ओहि डिबियामे एक कोन टूटल अछि। वसुधा बेटी कहैत छलीह, ‘दहिना राखब, नहि तऽ ढक्कन खुलि जाइत।’”

जयनारायणक नजर तेज भेल। “अहाँ निश्चित?”

“हमरे सामने टूटल छल। दू महीना पहिने जमीन पर खसल। हम कहने छलहुँ फेकि नब लिअ। ओ कहली—‘रहमत काका, चीज टूटला पर फेकब तऽ मनुष्यक की होएत?’”

माधवीक गला भरि आयल। वसुधा एहन वाक्य कहैत छलीह आ हँसि देत छलीह।

जयनारायण धीमे कहलक, “डिबियाक ढक्कन घटनास्थल पर खुलल छल।”

विनय तुरन्त प्रमाण-छवि खोललक। सचमुच ढक्कन आध खुलल। सुपारीक दू टुकड़ा बाहर।

“जँ बामा रखने छल तऽ खुलि सकैत,” रहमत कहलक। “मुदा ओ अपने एना नहि रखत।”

“ककरो हाथ सँ खसल?” विनय।

“हो सकैत।”

“जुझारू घटनामे?”

“हो सकैत।”

जयनारायण फेर रोकलनि। “हर ‘हो सकैत’ केँ कथा मत बनाउ। तीन आदति एकत्र भऽ रहल—चीनी, रातिक सुपारी, कागजक कोन। मुदा तीनू अलग कारणसँ उलटि सकैत। हमरा एखन ई देखबाक अछि जे ओ राति वसुधा अपन आदति तोड़ली कि ककरो दोसर हाथ हुनकर आसपासक वस्तु सजौलक।”

दुपहरिया बाद प्रयोगशालाक विस्तृत सूचना आयल। चीनी पड़ल कप पर स्पष्ट उँगुरीक निशान नहि; कप पोंछल जकाँ। चीनी-विहीन कप पर वसुधाक अंगूठाक आंशिक निशान। दुनू कपक किनार पर लिपस्टिक नहि। चीनी पड़ल कपक तल्लामे दूधक अंश अधिक।

माधवी कहली, “कमली देवी परसू जे लोकक बात कहली, ओ दू चमच चीनी लैत छल।”

विनय माथ हिलेलक। “मुदा परसूक कप घटनाक रातिक नहि। केवल आदति मेल खाइत।”

“चेहरा पहिचानब दरकार,” जयनारायण कहलनि।

ओही समय अभिराम कचहरीक सीढ़ी उतरैत देखायल। आँखि रातिभरि जागल जकाँ, हाथमे तीन फोल्डर। “१९७८क मरम्मत फाइलक आध भाग भेटल। १९५४क एक निरीक्षण-पत्र सेहो। पुरान नलीक उल्लेख अछि—‘वात-मार्ग बन्द करबाक प्रस्ताव’। मुदा प्रस्ताव पूरा भेल कि नहि, प्रमाण नहि।”

जयनारायण फाइल लेलनि नहि; पुलिसक उपस्थितिमे सूची बनवौलनि। “१९३४?”

“अलग सूची अछि। किछु पन्ना डिजिटाइज्ड नहि। मूल अभिलेख भण्डारमे। आइ साँझ माधवी संग मिलि छाँटब, जँ ओ तैयार हो।”

माधवी ओकरा देखली। “हमरा पूछबाक प्रयोजन कखनसँ पड़ए लागल?”

अभिराम कने अचकचायल। “काल्हि कहने छलह यंत्र सभ निर्णय अपने नहि लेत। तें मनुष्यक सहमति लऽ रहल छी।”

जयनारायण हँसि देलनि। “सूत्रक पहिल सुधार फल देलक।”

माधवी चाहितो मुस्करा देली।

साँझसँ पहिने एक छोट प्रयोग कएल गेल। वसुधाक घरसँ पुलिस अनुमति सँ पाँच पुरान कागज, कार्यालयसँ पाँच, आ घटनास्थलक अधलिखल पन्नाक उच्च-गुणवत्ताक छवि। माधवी आ देवकीनन्दन केँ बिना बतौने कागज सभ मिश्रित क्रममे देखाओल। दुनू अधिकांशमे वसुधाक बामा-मोड़, दहिना-मोड़ अलग पहचानि लेलनि। घटनास्थलक पन्ना दहिना-मोड़।

“दहिना कोनक अर्थ हस्ताक्षर बाकी,” देवकीनन्दन फेर कहलक।

“पन्ना पर हस्ताक्षरक जगह नहि,” विनय।

“तखन सम्भवतः अगिला पन्ना?”

घटनास्थल सँ भेटल कागजक क्रम फेर देखल गेल। अधलिखल पन्नाक अगिला क्रमांकक पन्ना गायब। अलमारीमे सेहो नहि।

माधवीक देहमे सिहरन। “दीदी कागजक दहिना कोन मोड़लीह कारण अगिला पन्ना पर ककरो हस्ताक्षर लेबाक छल?”

जयनारायण उत्तर देलनि, “सम्भव। अथवा ककरो जे वसुधाक संकेत-रीति जानैत छल, पन्ना दहिना मोड़ि कऽ किछु बताबय चाहलक। अथवा संयोग। एखन तीनू बाट खुल्ला।”

विनय पुछलनि, “गायब पन्ना खोजब कहाँ?”

“पहिने ई बुझू कागज कोन दस्तावेजक अंश। लेखनी, कागज, जलचिह्न, क्रमांक। माधवी, ‘सातम चिन्ह’ वाक्य वसुधा पहिने कखनो कहने छलीह?”

“नहि। मुदा सात टोला मुकदमामे ओ ‘सात प्रमाण’ कहैत छलीह कि नहि, मोन नहि।”

अभिराम बीचमे कहलक, “सूत्र दस्तावेजक छविमे समान वाक्य खोजि सकैत अछि।”

जयनारायण ओकरा देखलनि। “चलाउ। एहि बेर काम यंत्रक अछि—हजार पन्ना मे एक वाक्य खोजब। मुदा अर्थ निकालब एखन नहि।”

अभिरामक चेहरा पर संतोष। “एही लेल तऽ बनाओल अछि।”

“आ एही सीमा भीतर बड्ड उपयोगी।”

साँझक पहिल अन्हार पड़िते माधवी एकटा आग्रह कएलक—“रातिक पाठशाला चल। दीदीक रोजक आदति ओतहु बेसी लोक जानैत।”

पाठशाला कचहरीसँ आध कोस दूर पुरान पंचायत-भवनक एक कोठरीमे चलैत छल। टाट पर बैसबाक जगह, देवाल पर स्वर-व्यंजन, अंक, आ कोनमे टाँगल एक छोट कारी पट्टी। वसुधा सप्ताहमे दू राति एतऽ अबैत छलीह। दुलारी सेहो एतहि पढ़ैत।

ओहि दिन कक्षा नहि छल, मुदा खबर सुनि पाँच-छह विद्यार्थी अपने आबि गेल छल। ककरो उमेर सत्रह, ककरो चालीस। एक वृद्धा, जे अपन नाम लिखब सीखने छलीह, माधवी केँ देखते कानि पड़लीह—“ओ हमरा अँगूठा नहि, नाम लिखू कहैत छलीह। आब के कहत?”

जयनारायण हुनका सभसँ अलग-अलग एक्के प्रश्न पुछलनि—“वसुधा दीदी कक्षा समाप्त होएबासँ पहिने सदिखन की करैत छलीह?”

उत्तर अलग शब्दमे, मुदा आशय करिब एक—पहिने अगिला दिनक काज कहती; फेर सभक कापी एक नजर देखती; अपन नीला कपमे पानी पीती; सुपारीक डिबिया झोरामे राखती; अन्तमे दुलारी अथवा ककरो तरुण विद्यार्थी केँ कहती जे अकेले अन्हार बाट नहि जाउ।

“सुपारी खाइत छलीह?” जयनारायण फेर पुछलनि।

एक अथेड़ महिला हँसलीह। “आठ बजे धरि खाइत देखलहुँ। नौ बजलापर नहि। कहैत छलीह पेट राति विरोध करैत।”

माधवीक भीतर फेर वही टीस। मृत्यु सँ पहिने मनुष्यक सामान्य वाक्य कतेक मूल्यवान भऽ जाइत अछि।

एक युवक कहलक, “दीदी कागज मोड़बाक चिन्ह सेहो सिखौने छलीह। बामा कोन— फेर पढ़ब। दहिना कोन—ककरो सँ पूछब वा सही लेब। हम सभ ठट्टामे कहैत रही—कागजक कान।”

“ई बात कतेको लोक जानैत?” विनय पुछलक।

“कक्षाक सभ।”

जयनारायण माधवी दिस देखलनि। अर्थात आदति गुप्त संकेत नहि। ककरो दृश्य बनाबय हो तऽ सीखब कठिन नहि। ई तथ्य आदतिक महत्व घटबैत नहि, मुदा ओकर अर्थ बदलि रहल छल।

कोठरीक देवाल पर वसुधाक हाथसँ लिखल एक पाँति छल—“पहिने अपन नाम पढ़ू, फेर कागजक नाम।” फूलो सदायक घरमे देखल वही वाक्यक स्मृति माधवी केँ आयल। दुलारी सम्भवतः एहि पाँतिकेँ जीवनक बाट बनौने छल। एखन ओ कतऽ अछि, के जानय।

बाहर निकलैत जयनारायण कहलक, “आदति व्यक्तिगत होइत अछि, मुदा देखैत-देखैत समाजक ज्ञान बनि जाइत। एतऽ आध दर्जन लोक तीनू बात जानैत अछि। तें ‘ई बात केवल घरक लोक जानैत’ कहल अब ठीक नहि।”

विनय नोट बदललक। “संदिग्धक घेरा छोट होएबाक बदला पैघ भेल।”

“जाँचक काज घेरा जल्दी छोट करब नहि,” जयनारायण उत्तर देलनि। “गलत लोक केँ भीतर बन्द कऽ देल तऽ असली बाहर आरामसँ घूमत।”

सूरज बादलक पाछाँ डूबि रहल छल। कचहरीक बरामदा खाली होमय लागल। कमली देवी चूल्हि बुझा रहल छलीह। जयनारायण फेर हुनका दोकान लग गेलाह आ दिनक आरम्भमे बनाओल वसुधाक चीनी-विहीन चाय मोन कएलनि।

“कमली,” ओ पूछलनि, “वसुधा जँ ककरो संग चाय पीबैत छलीह आ ओ लोक चीनी लैत, वसुधा ओकर कपमे चीनी अपने डालैत छलीह?”

कमली हँसलीह। “नहि। कहती—‘अपन विष अपने घोरू।’ चीनीक डिब्बा सामने सरका देती।”

“अर्थात चीनी पड़ल कप पर वसुधाक उँगुरी होएब दरकार नहि।”

“नहि।”

जयनारायण माथ हिलेलनि। एक सम्भावना फेर बदलल। अपराधक जाँच एना ही—जे बात पल भरि पहिने धारदार लगैत, नब आदति ओकर धार बदलि दैत।

विनय घर जाएबासँ पहिने घटनास्थलक फोटो फेर देखौलक। मेज पर दू कपक गोल दाग छल। उज्जर कप जमीन लग भेटल छल; नील कप नालीसँ बरामद भऽ चुकल छल। एक दागक घेरा छोट, दोसर पैघ। दुनू कप कचहरीक निजी कप छल।

माधवी एकाएक कहली, “दीदी अपन नीला कप पहिचानैत छलीह। ओ नाली धरि कोना पहुँचल?”

सभ चुप।

बरामद सूची फेर देखल गेल—उज्जर चीनीमाटीक कप घटनास्थलसँ, नील किनारीक कप पछिला नालीसँ।

“काल्हि साँझ सात बजे कमलीक चाय केहन कपमे लेने छलीह?” जयनारायण पूछलनि।

माधवी मोन करबाक प्रयास कएलक। “कमलीक काँचक गिलासमे। बादमे दीदी अपन नीला कपमे पानी पीने छलीह। मेज पर छल।”

“कोठरीमे नहि; नालीमे।” विनय धीरे कहलनि।

“अर्थात ककरो कप हटाओल गेल,” अभिराम कहलक।

“अथवा वसुधा स्वयं बाहर लऽ गेली,” जयनारायण सुधारलनि। “बरामद वस्तु सेहो आरोप नहि। मुदा कप कोठरीसँ नाली धरि कोना पहुँचल—ई जाँचू।”

माधवीक मनमे एक विचित्र असहजता उठल। हत्याक कथा कहबाक लेल लोक छुरा, विष, धमकी खोजैत अछि; एतऽ रहस्य चाय, सुपारी, मोड़ल कागज आ नालीमे भेटल नीला कपमे सिमटि रहल छल। सम्भवतः एही कारण ई आओर भयावह लगैत—मृत्यु जीवनक साधारण वस्तु सभक बीच घटल छल।

जयनारायण चलैत-चलैत कहलक, “मनुष्य अपन रोजक आदति सँ घर बनबैत अछि। जे ओकरा मारैत अछि, ओ देह मारि सकैत; मुदा जँ ओकर जीवनक नकल करबाक हो, तऽ आदति सेहो जानए पड़त। आ नकलमे एक छोट गलती...”

“सिलाइक उल्टा टाँका जकाँ?” माधवी पुछलक, अपन मायक काज मोन कऽ।

“ठीक। कपड़ा दूरसँ पूरा, लग गेलापर टाँका बता दैत अछि केहन हाथ चलल।”

अभिराम फोल्डर काँधमे दबौलक। “तखन आइ राति हम सभ वसुधाक पुरान अभिलेखक टाँका देखब।”

माधवी ओकरा देखली। “हम सभ?”

“हँ। अहाँ बिना मैथिली हाशिया आध हम पढ़ि नहि पाबि। आ हम बिना सूचीक हजार पन्ना अहाँ भोर धरि उलटैत रहब।”

“अहाँक अर्थ, मनुष्य आ यंत्रक अस्थायी सन्धि?”

“नहि,” अभिराम मुस्कुरायल, “माधवी आ अभिरामक। सूत्र बीचमे सेवक।”

माधवी मुँह फेरि देली, मुदा मुस्की नुकायल नहि।

जयनारायण दुनूक पाछाँ देखैत रहलाह। “सन्धि लिखित नहि हो तऽ बेसी चलैत अछि,” ओ अपने-आप बजलाह।

आ कचहरीक पुरान घड़ी पाँच बजलाक घंटी देलक। रोजक आदति अनुसार—एक, दू, तीन, चारि, पाँच। एहि बेर ओकर प्रत्येक ध्वनि एहन लगल जेना समय स्वयं गवाही गनि रहल हो।

अध्याय ९ — माधवी आ अभिराम

साँझक सात बजैत कचहरीक नब भवन करिब खाली भऽ गेल। डिजिटाइज़ कक्षमे मात्र तीन बत्ती जरैत छल—एक छत पर, दू संगणकक पर्दा। बाहर बरखा फेर घनायल; शीशा पर बूँद एना सरकैत जेना ककरो अधलिखल पाँति नीचे खसि रहल हो।

माधवी मेजक एक कात पुरान फाइलक ढेरी सामने बैसल छली। अभिराम दोसर कात। बीचमे “सूत्र”क पर्दा, जतऽ खोजक खिड़की खुलल—शब्द: “सातम चिन्ह”, “सात प्रमाण”, “सात टोला”, “नछत्तर”, “१९३४”, “वात-मार्ग”।

“एतेक शब्द एक्के बेर देब तँ यंत्रो घबरा जाएत,” माधवी कहली।

अभिराम आँखि नहि उठेलक। “यंत्र नहि घबराइत।”

“तूँ घबराइत छह?”

“हम? नहि।”

“तखन तीन मिनटमे चारि बेर एक्के फाइल किएक खोललह?”

अभिराम ठमकल। सचमुच ओ “भवन मरम्मत १९५४-७८” फोल्डर फेर खोलि देने छल। माधवी हँसि पड़ली।

“ठीक अछि,” ओ मानि लेलक, “हम थाकल छी।”

“घबरायल नहि?”

“थाकल मनुष्यक उँगुरी बेराबेरी गलती करैत अछि।”

“आ घबरायल मनुष्यक?”

“ओ सेहो।”

“तखन अन्तर?”

“थाकल मनुष्य मानि लैत अछि।”

“घबरायल?”

अभिराम एहि बेर ओकरा देखलक। “बेराबेरी ठट्टा करैत अछि।”

माधवीक हँसी एक क्षण रुकल, फेर आओर गहिर भेल। “हँ तऽ तूँ घबरायल छी।”

“हम एहन किछु नहि कहलहुँ।”

“सूत्रमे दर्ज कऽ दियौ—मानवीय निष्कर्ष।”

कक्षमे वसुधाक मृत्यु बाद पहिल बेर हँसी एतेक स्वाभाविक बजल। दुनू तुरन्त चुपौ भऽ गेल, जेना हँसबाक अपराध-बोध एक्के बेर मोन पड़ल हो। माधवीक आँखि नीचे। “दीदी रहितथि तऽ कहितथि—मृत्यु भेल माने सभ हँसी पर ताला नहि।”

अभिराम धीमे कहलक, “ओ हमरा एक बेर कहने छलीह—‘बड़का दुखक बीच जे हँसि सकैत अछि, से दुख कै छोट नहि करैत; अपन देह कै टिकबैत अछि।’”

माधवी ओकरा देखली। “तोरा कखन कहने छलीह?”

“पिछला बर्ख। हमर बाबा गेलाह तखन।”

“तूँ हमरा नहि कहलह।”

“ककरा-ककरा कहितहुँ?”

माधवी उत्तर नहि देली। अभिरामक जीवनक कतेको कोठरी अछि जाहिमे ओ बिना पूछने घुसल नहि छल—ई बात पहिल बेर स्पष्ट भेल। ओकरा लगैत रहल अभिरामक सभ किछु संगणकक पर्दा जकाँ खुल्ला—पंक्ति, तालिका, तिथि। मुदा मनुष्यक भीतरक डेटा पर कोनो खोज-खिड़की नहि होइत।

ओ फाइलक पन्ना उलटय लगली। १९५४क निरीक्षण-पत्रमे कचहरी भवनक सीलन, छतक दरारि, हवादार नलीक उल्लेख। १९६२मे “उत्तर-पक्ष वात-छिद्र आंशिक बन्द”। १९७८मे “अभिलेख कक्ष आधुनिकीकरण”—मुदा मूल नक्शा गायब।

“ई देख,” माधवी पन्ना ओकरा दिस सरकौलक। “एतऽ ‘पुरनका मार्ग यथास्थिति’ लिखल अछि। कोन मार्ग?”

अभिराम छवि पैघ कएलक। “हस्तलिखित टिप्पणी। सम्भवतः अभियन्ताक। स्कैनमे आध कटि गेल।”

“मूल पन्ना?”

“पुरान भण्डारमे। एखन मँगाबय नहि सकैत। सूचीमे स्थान देखैत छी।”

सूत्र पन्नाक किनारक अस्पष्ट लिखावट अलग करबाक प्रयास कएलक। स्क्रीन पर तीन सम्भावित पाठ उभरल—“पुराना मार्ग”, “पुराना मार्जिन”, “पुराना भाग”।

माधवी तुरन्त कहली, “पहिल। ‘मार्ग’ अछि।”

अभिराम पूछलक, “कतेक निश्चित?”

“अस्सी प्रतिशत।”

“मानवीय आत्मविश्वास?”

“नहि, आँखि।”

“आँखि सेहो भ्रम करैत।”

“तूँ फेर शुरू भेलह।”

“हम केवल...”

“अहाँक यंत्र ‘मार्जिन’ पढ़लक। भवनमे मार्जिन चलैत अछि?”

अभिराम हँसि देलक। “ठीक। ‘मार्ग’ सम्भावित। मुदा मूल देखब।”

माधवी विजयभावेँ कुर्सी पाछाँ धकेलली। “ई लिख—मनुष्य एक, यंत्र शून्य।”

“काल्हि साँकलक सूत्र-परीक्षणमे यंत्रक मान्यता तूँ नहि तोड़ने छलह। जयनारायण काका तोड़लनि।”

“हम मनुष्य दलमे छी।”

“दल बदलल जा सकैत?”

“किएक?”

“किछु नहि।”

ओ ‘किछु नहि’ एतेक सपाट छल जे माधवीक कान गरम भऽ गेल। ओ तुरन्त पन्ना दिस झुकली। बाहर बिजली चमकल; एक क्षण कक्षक शीशामे दुनूक प्रतिबिम्ब साथ देखायल—माधवी झुकल, अभिराम ओकरा दिस देखैत। बिजली गेल, प्रतिबिम्बो गेल।

किछु देर बाद कक्षक दुआरि खुलल। युवा अधिवक्ता शशांक झा फाइल लऽ भीतर आयल। माधवी ओकरा चिन्हैत छली; वसुधा संग सात टोला मुकदमामे कतेको बेर बैसार भेल छल।

“अहाँ एतऽ?” शशांक माधवी दिस देखैत कहलक। “घर नहि गेलहुँ?”

“अभिलेख छाँटि रहल छी।”

“अकेले?”

माधवी अभिराम दिस तकली। “नहि, ई संग अछि।”

शशांक जँ अभिराम केँ पहिने देखनहुँ हो, एखन पहिल बेर ध्यान देलक जकाँ। “ओह, संगणक पर काज करनिहार अभिराम?”

अभिराम कुर्सी सँ उठल नहि। “अभिराम मात्र।”

शशांक हँसि देलक। “ठीक। माधवी, काल्हि वसुधा दीदीक स्मृति-सभा लेल किछु लिखब। अहाँक लग हुनकर फोटो हो तँ पठा दिअ।”

“देखब।”

“आ घर पहुँचयमे देर हो तऽ हम छोड़ि देब। हमर गाड़ी अछि।”

“प्रयोजन नहि।”

“बरखा अछि।”

“छाता सेहो अछि।”

शशांक कने निराश, मुदा सभ्य मुस्कान देलक। फाइल जमा कऽ चलि गेल।

दुआरि बन्द भेलापर अभिराम स्क्रीन दिस तकैत कहलक, “गाड़ी अछि।”

माधवी भौंह उठेलक। “की?”

“किछु नहि। केवल तथ्य दोहरा रहल छलहुँ।”

“सूत्रमे दर्ज करह—गाड़ी अछि।”

“बरखा सेहो अछि।”

“छाता सेहो।”

दुनू एक क्षण एक-दोसराक मुँह तकलक, फेर माधवी हँसि देली। “तोरा ईर्ष्या भेल?”

“हमरा?” अभिरामक कान सचमुच लाल पड़ल। “ककरा सँ?”

“गाड़ी सँ।”

“हमर मोटरसाइकिल खराब नहि।”

“तखन अधिवक्ता सँ?”

“हम काम करब कि ई व्यर्थ प्रश्नक उत्तर देब?”

माधवी आओर किछु नहि कहली। ओकर मन असंगत रूपसँ हल्का भऽ गेल। जे बात ओ पूछलक, ओकर उत्तर अभिराम नहि देलक; मुदा कतेको उत्तर शब्द बिना भेटि जाइत अछि।

ओही समय माधवीक दूरभाष बजल। मायक फोन।

“कतऽ छह?”

“कचहरीमे।”

“एखन धरि?”

“काज अछि। कने देर होएत।”

दोसर कात सिलाइ-मशीनक चर्च-चर्च सुनाइ पड़ल। माधवीक माय राति धरि कपड़ा सीबैत छलीह। घरक खर्च, माधवीक पढ़ाई, दवाई—सभ ओहि मशीनक चक्रसँ निकलैत। वसुधा बेराबेरी कहैत छलीह, “तोहर माय समय केँ सूतमे पिरोइत छथि।”

“खेनाइ खएने छह?” मायक प्रश्न।

“एखन नहि।”

“काज सत्य खोजब अछि कि अपन देह गँवाएब?”

माधवी मुस्कुरेली। “खाइ लेब।”

“अकेले घुरब नहि।”

“अभिराम अछि।”

दोसर कात एक क्षण चुप्पी। फेर माय कहलीह, “तखन ठीक। मुदा ओकर मोटरसाइकिल पर बरखामे उड़ैत नहि आबिह।”

माधवीक गाल गरम। “माय!”

फोन कटि गेलापर अभिराम स्क्रीन दिस तकैत रहला जकाँ कएलक, मुदा ओकर मुस्की छिपल नहि।

“की?” माधवी कड़ा बनबाक प्रयत्न कएलक।

“किछु नहि। केवल ‘मोटरसाइकिल पर उड़ैत नहि आबिह’ सुनलहुँ।”

“तोरा सुनबाक काज छल?”

“कक्ष छोट अछि।”

“कान पैघ अछि।”

“ई नब तथ्य।”

माधवी पन्ना उठाकऽ ओकरा दिस फेंकय जकाँ कएलक, फेर हाँसि देली।

किछु देर बाद ओ पूछली, “तोहर घरमे के अछि?”

अभिरामक उँगुरी की-बोर्ड पर थमल। “माय। छोट बहिन बेंगलुरु मे पढ़ैत अछि। बाबा गेलाह। काका लोक गाँवमे।”

“माय अकेली?”

“हँ। मुदा ओ ‘अकेली’ शब्द नहि मानैत छथि। कहैत छथि—गाछ, पड़ोसिन, दू बकरी आ रेडियो अछि, तखन अकेल कोना?”

“तूँ राति देर करह तऽ फोन करैत छथि?”

“नहि। संदेश पठबैत छथि—‘जीवित छी?’ हम ‘हँ’ लिखैत छी। बस।”

“एतेक छोट?”

“हमर घरमे प्रेमक वाक्य छोट अछि।”

माधवी एहि पाँति पर चुप भऽ गेली। ओकर घरमे प्रेम आदेश बनि अबैत—खाइ लिअ, देर नहि करिअ, दवाई रखिअ। अभिरामक घरमे एक शब्द—जीवित छी? सम्भवतः प्रेमक भाषा घर-घर बदलैत अछि, अर्थ नहि।

“बाबा गेलापर तूँ बड्डु बदललह?” ओ धीरे पुछली।

“कतेक?”

“पहिने बेसी हँसैत छलह।”

अभिराम आँखि स्क्रीन पर रखने कहलक, “लोक गेलापर हम सभ ओकरा संग अपन एक रूप सेहो गँवैत छी। बाबा लग हम बेटा छलहुँ। हुनका बाद घरमे एकाएक पैघ भऽ गेलहुँ। ई पैघ होयब हमरा पसिन्न नहि छल।”

माधवीक मनमे वसुधा उठली—दीदी लग ओ छात्रा, मित्र, कखनो छोट बहिन। आब वसुधा नहि; तखन माधवी केँ सेहो अपन किछु रूप अकेले ढोअय पड़त।

ओ कहली, “हमरा लगैत छल तूँ सभ बात तर्कसँ सम्हारि लैत छह।”

“तर्क सम्हारैत नहि। बस चीजक नाम ठीक राखैत अछि। दुख केँ दुख कहैत, कारण खोजैत। मुदा राति जे खाली कुर्सी देखाइत, ओकर समीकरण नहि बनैत।”

माधवी ओकरा पहिल बेर केवल ‘आँकड़ामे डूबल अभिराम’ नहि, शोक भोगल तरुण मनुष्य जकाँ देखली। ओ किछु कहबाक बदला धीरे पन्नाक ढेरी आध-आध बाँटि देली। “ई भाग तोहर। ई हमर।”

अभिराम हल्का मुस्करायल। “बेराबेरी?”

“नहि। बराबर।”

राति आठक बाद सूत्र पहिल पैघ खोज-फल देखेलक। “सात टोला” शब्दक ४७ उल्लेख; “सात प्रमाण” ९; “सातम चिन्ह” ठीक वाक्य शून्य। मुदा “सातम” आ “चिन्ह” पाँच पन्नाक दूरी भीतर तीन पुरान अभिलेखमे।

एक १९३५क राहत-विवादक सूची, एक १९४१क भूमि-सीमांकन, एक बिना तिथिक हस्तलिखित सूचक-पन्ना।

“बिना तिथिक पन्ना खोल,” माधवी कहली।

छवि खराब छल। कागज पीयर, किनार खायल। शीर्षक पूरा नहि। बीचमे सात क्रमांक— १ सँ ७। पहिल छहक आगे शब्द, सातमक आगाँ धब्बा। नीचे मैथिलाक्षर आ देवनागरी मिलल-जुलल लिखावट।

अभिराम पैघ कएलक। “ई पढ़ि सकह?”

माधवी आँखि कने नजदीक लऽ गेली। “पूरा नहि। ‘साक्षी’ शब्द जकाँ किछु... अथवा ‘साखी’।”

“साखी?”

“पुरान लिखावटमे प्रमाण अर्थो हो सकैत। हम निश्चित नहि।”

“तिथि?”

“नहि।”

“सूची स्रोत कहैत अछि—‘निजी दान, १९८९; मूल अनुमानित १९३०-४०’। दाता नाम अपठनीय।”

माधवीक मनमे वसुधाक अधलिखल पाँति चमकल—“सातम चिन्ह बिना...”

“ई दीदी देखलीह?”

अभिराम अभिलेख-पहुँच लॉग खोललक। “डिजिटल छवि पिछला तीन महीनामे चार बेर खुलल। दू बेर कार्यालयक सामान्य खाता, एक बेर वसुधाक अधिकृत खाता... आ एक बेर...”

ओ रुकल।

“की?”

“एक अतिथि खाता। नाम दर्ज नहि, कारण पुरान प्रणालीमे केवल मशीन क्रमांक।”

“कखन?”

“वसुधा देखलाक दू दिन बाद।”

माधवीक देह तनल। “कोन मशीन?”

“कचहरी पुस्तकालयक सार्वजनिक टर्मिनल।”

“कैमरा?”

“सम्भवतः प्रवेशद्वार पर। तीन महीना पुरान दृश्य बचल कि नहि, बुझल नहि।”

अभिराम तुरन्त विनय केँ संदेश पठेलक। जयनारायण केँ फोन नहि कएलक; राति होमय लागल छल, मुदा पाँच मिनट बाद जयनारायणक फोन अपने आबि गेल।

“अहाँ लोक किछु भेटौने छी?”

अभिराम चौकल। “अहाँकेँ कोना बुझायल?”

“राति आठ बजि बीस मिनट पर तोहर संदेश ‘विनय बाबू, तुरन्त फोन करू’ देखलहुँ। विनय हमरा संग अछि।”

अभिराम संक्षेपमे बतौलक।

जयनारायण फोनक दोसर कात किछु क्षण चुप रहलाह। “तीन बात। एक—अतिथि खाता माने अपराधी नहि। दू—पुरान छवि वसुधाक खोजक संग जुड़ि सकैत, मुदा कारण

जानब बाकी। तीन—मूल पन्ना बिना लिखावट पर निर्णय नहि। कल्हि पुस्तकालयक प्रवेश-
अभिलेख, सार्वजनिक मशीनक मरम्मत-रजिस्टर, आ मूल फाइल।”

“ठीक।”

“आ चौठ बात।”

“की?”

“राति बेसी नहि करू। थाकल आँखि ‘साक्षी’ केँ ‘साखी’ आ ‘साखी’ केँ ‘साक्षी’ बना
दैत अछि।”

माधवी हँसली। “काका, अभिराम कहैत अछि यंत्र नहि थाकैत।”

फोन पर जयनारायणक मुस्की सुनाइ पड़ल। “यंत्र नहि, मुदा ओकरा चलौनिहार प्रेम,
ईर्ष्या, भूख, निद्रा सभसँ थाकैत अछि।”

अभिराम तुरन्त कहलक, “हमरा भूख लगल अछि, बाकी सभ अनुमान।”

“ठीक, पहिने खाउ।” फोन कटि गेल।

माधवी ओकरा घूरली। “काका ‘प्रेम’ किएक कहलनि?”

“ओ सभकेँ छेड़ैत छथि।”

“सभकेँ?”

“सम्भवतः।”

“आ ईर्ष्या?”

“भूख निश्चित अछि।”

माधवी हँसैत उठली। “चल, नीचे किछु खाइ।”

कचहरी बाहर करिब सभ दोकान बन्द। एक ठेला पर गरम मुट्ठी, चना, प्याज, हरियर
मरिच। दुनू बरामदाक सीढ़ी पर बैसि कागजक पुड़िया सँ खायल। बरखा सामने तिरछा पड़ैत।

अभिराम कहलक, “तोरा शशांक नीक लगैत अछि?”

माधवी चना मुँहमे रोकि ओकरा देखली। “ई शोध लेल दरकारक प्रश्न अछि?”

“नहि।”

“तखन उत्तर किएक चाही?”

“नहि चाही।”

“तूँ पूछलह।”

“भूल।”

“सूत्रमे सुधार?”

“हैं।”

माधवी कने देर ओकरा छेड़य चाहली, मुदा एकाएक वसुधा मोन पड़ली। ओ कहने छलीह—“जे लोक तोरा देखैत अछि, ओकरा केवल परखैत नहि रह। कखनो अपना केँ सेहो देखाबय पड़ैत।” तखन माधवी हँसि टारि देने छल।

ओ धीरे कहली, “शशांक नीक मनुष्य हो सकैत अछि। मुदा हमरा ओकरा लेल ओहन किछु नहि।”

अभिराम पुड़ियाक चना गनय जकाँ देखलक। “हम किछु पूछने नहि छलहुँ।”

“एखन झूठ।”

ओ मुस्करायल। “ठीक।”

“आ तूँ?”

“हम की?”

“ककरो...?”

अभिराम सीधा ओकर आँखि देखलक। बरखाक आवाज एकाएक बेसी सुनाइ पड़ल।
“माधवी, हम डेटा-आधारित उत्तर देब कि अन्तर्दृष्टि?”

ओ प्रश्नमे ठट्ठा छल, मुदा ठट्ठाक पाछाँ किछु एहन जे दुनू केँ चुप करा देलक। माधवीक उँगुरी पुड़ियाक किनार मरोड़ि रहल।

तखने विनयक फोन आयल। क्षण टूटल।

“अभिराम, घटनास्थलक झोराक विस्तृत सूची एखन बनल। भीतर एक वस्तु पहिने साधारण धार्मिक पोथी बुझि अलग सीलबन्द कएल गेल छल। कपड़ामे लपेटल अछि। वसुधाक घरक लोक कहैत अछि हुनकर नहि। काल्हि बिहान साक्षीक सामने खोलब। माधवी केँ सेहो बोलाउ—लिखावट पहिचानमे काम पड़ि सकैत।”

“की पोथी?”

“मुखपृष्ठ नहि देखल। ऊपर नछत्तरक गोल आकृति जकाँ किछु।”

अभिराम फोन काटि माधवी दिस तकलक।

माधवीक मनमे अंबिका काकीक चेहरा कौंधल—जन्मक घड़ी, नछत्तर, पुरान बही, घर-घरक कथा।

“दीदीक झोरामे ई काल्हि छल,” ओ फुसफुसैली। “हम कपड़ा देखल छलहुँ, मुदा खोलल नहि।”

“तखन काल्हि...”

“हँ।”

बरखा एखन जोर भेल। दुनू फेर डिजिटाइज़ कक्ष दिस चढ़ल, मुदा काज समेटबाक लेल।
स्क्रीन पर बिना तिथिक पन्ना एखनहुँ खुलल—सात क्रमांक, सातमक आगाँ धब्बा।

अभिराम प्रणाली बन्द करैत कहलक, “आइ मनुष्य एक, यंत्र एक।”

माधवी पूछली, “यंत्रक अंक कतऽ सँ?”

“ओ तीन पुरान पन्ना खोजलक।”

“मनुष्यक?”

“तू ‘मार्ग’ पढ़लह।”

“बराबर?”

“एखन।”

माधवी दुआरि बन्द करैत कहली, “सुन, हम तोरा सँ प्रतियोगिता नहि करैत छी।”

“हमो नहि।”

“तखन अंक किएक?”

अभिराम कने रुकल। “किएक तँ तोरा संग हारब बड्ड खराब नहि लगैत।”

माधवी उत्तर नहि देली। सीढ़ी उतरैत ओकर पएर हल्का लगल, जँ कि मनक भीतर
वसुधा, दुलारी, सातम चिन्ह आ नछत्तर-पोथी सभ एक संग घूमि रहल छल।

बाहर राति छल। बरखामे शहरक बत्ती धुँधली तारा जकाँ। माधवी छाता खोलली।
अभिराम अपन छाता खोलय लगल, फेर हवा ओकर एक पसली उलटा देलक।

माधवी हँसली। “डेटा-आधारित छाता?”

“पुरान नमूना।”

“एतऽ आब।”

दुनू एके छाताक नीचा कने असहज दूरी बनबैत चलल। हवा बेराबेरी छाता एक कात
झुका दैत, तखन दूरी अपने घटि जाइत। ककरो किछु कहल नहि।

माधवी कैँ बुझायल—रहस्यक बीचो जीवन अपन छोट-छोट गुप्त आरम्भ करैत रहैत
अछि।

अध्याय १० — नछत्तर-पोथी

बिहान दस बजिते थाना भवनक पाछाँक साक्ष्य-कोठरी लग छोट बैसार सजि गेल। लोहेक आलमारी, सील कएल झोरा, मेज पर लेखा-पुस्तिका आ एक काँचक खिड़की—जाहि पर रातिक बरखाक बूँद एखनहुँ अटकले छल। विनय ठाकुर पहिले सील देखौलनि, क्रमांक पढ़लनि, फेर उपस्थित सभक नाम लिखौलनि। जयनारायण मेजक एक कात चुप बैसल छलाह। माधवीक आँखि झोरासँ हटि नहि रहल छल। अभिराम अपन यंत्र खोलने छल, मुदा जयनारायण ओकरा पहिने चेतौलनि—“कागज देखबासँ पहिने यंत्र केँ कथा नहि सुनाउ। पहिने कागज जे कहए, से सुनू।”

अभिराम मुस्करायल। “यंत्र कथा नहि सुनैत अछि।”

“मनुष्य जे प्रश्न देत, ओहि दिस देखैत अछि। प्रश्नो कथा बनबैत अछि।”

विनय सीलक डोरी काटलनि। भीतर सँ वसुधाक भूरा झोरा निकलल। झोराक वस्तु बेराबेरी मेज पर राखल गेल—कलम, छोट चाभीक गुच्छा, अधखायल सौंफक पुड़िया, दू रसीद, चश्माक खोखा, एकटा नीला फाइल, आ अन्तमे हल्दी-रंगक पुरान कपड़ा मे लपेटल मोट पोथी। कपड़ाक गाँठि किसि नहि, केवल दू बेर घुमाओल छल। खोलिते पुरान कागजक ओ गन्ध उठल जे माधवी केँ वसुधाक पाँति मोन पाड़ि देलक—“दबायल चीज देर-सबेर गमक दैत अछि।”

पोथीक जिल्द चमड़ाक नहि, मोट हाथ-बनाओल कागजक छल। कोन सभ खायल, बीचमे सूत ढीला। मुखपृष्ठ पर काजर-जकाँ स्याहीसँ एक गोल बनाओल, गोलक चारु दिस बारह छोट घर, भीतर नछत्तरक चिन्ह। शीर्षक नहि। पहिल पन्नाक ऊपर लिखल—“जन्म-नछत्तर आ घर-बही।” तकर नीचा अलग-अलग हाथक लिखावट, अलग-अलग बर्ख। केओ लाल स्याही, केओ करिया, केओ नील।

माधवी धीरे कहली, “ई ज्योतिषक पोथी जकाँ अछि।”

जयनारायण उत्तर देलनि, “जकाँ। पहिने ‘जकाँ’ केँ बचा कऽ राखू।”

माधवी अंबिका काकीक नाम सुझौने छलीह। दू घड़ी नहि बीतल छल जे ओ अपन पुरान बाँसक छाता टेकैत आबि गेलीह। उज्जर केस पाछाँ बान्हल, आँखि पर मोट काँचक चश्मा,

हाथमे कपड़ाक छोट थैली। भीतर घुसिते पुलिसक औपचारिकता देखिकऽ हँसलीह—“हमरा अपराधी जकाँ हस्ताक्षर करब पड़त?”

विनय सेहो मुस्करायल। “साक्ष्य देखबय छी, काकी। नियम सभकेँ एके।”

“ठीक अछि। नियम जँ सभकेँ एके हो तँ नियम नीक।”

ओ हाथ धोएलनि, कपड़ा पोछि सुखौलनि, तकर बादे पोथी लग बैसलीह। पहिल दू पन्ना देखिते हुनकर मुखक हँसी घटल। “ई साधारण जन्म-पत्री नहि।”

माधवी झट पुछली, “तखन?”

अंबिका काकी पन्ना पर उँगुरी नहि, नखक छाया घुमौलनि। “देखू। जन्मक घड़ी अछि, नछत्तर अछि, ग्रहक गणना अछि। मुदा संगहि लिखल—‘एहि बखं पोखरि सूखल’, ‘फागुनमे महाजनसँ पाँच मन धान उधार’, ‘छोट बेटा कलकत्ता गेल’, ‘बहू मायकेसँ नहि घुरली’, ‘सीमा पर झगड़ा’। जे लोक ई लिखैत छल, ओकरा भविष्य कहबासँ बेसी घरक बात बचायब प्रिय छल।”

ओ पन्ना पलटौलनि। “एहि पोथीमे भविष्यसँ बेसी बीतल समय बाँधल अछि।”

वाक्य सुनिते कोठरी एक क्षण निसब्ध भऽ गेल। अभिराम अपन यंत्र दिस तकलक। स्क्रीन पर सूत्रक प्रारम्भिक वर्गीकरण चलि रहल छल—‘ज्योतिषीय तालिका’, ‘वंश-सूचना’, ‘तिथि-क्रम’, ‘अस्पष्ट हस्तलिपि’।

अंबिका स्क्रीन देखलीह। “ई की कहैत अछि?”

“कागजक प्रकार, शब्द, तिथि, नाम अलग करैत अछि,” अभिराम कहलक। “जतऽ पढ़ि सकैत।”

“आ जतऽ नहि पढ़ि सकैत?”

“अनिश्चित कहैत।”

“ई बात नीक। मनुष्य अनिश्चित होइतहुँ बेराबेरी निश्चित बनि जाइत अछि।”

जयनारायण हल्का हँसलाह। “काकी, आइ अहाँ हमरा काज छीनब?”

“अहाँ मनुष्यक मुख पढ़ू, हम कागजक बुढ़ापा।”

पन्ना सभ क्रमसँ देखल जाए लागल। किछु भाग विस्मयकारी रूपसँ साधारण—ककर जनम, ककर विवाह, कोन बरख बाढ़ि, कोन बरख रोग। बीच-बीचमे एहन सूक्ष्म वाक्य जे घरक भीतरक पूरा कथा खोलि सकैत—“ज्येष्ठ कनियाँक गहना गिरवी”, “दोसरा बेटाक नाम बँटवारा सँ काटल”, “दक्षिण खेत पर राति मेड़ सरकल।” माधवी बुझि रहल छलीह जे अंबिका काकी किएक एहि पोथी केँ स्मृतिबही कहैत छथि।

अंबिका काकी एक पन्ना पर ठमकलीह। ओतऽ ग्रहक कोष्ठक नीचा नाम छल—
 “जमुना धोबिनक बेटी, जनम अज्ञात; सावनक पैघ बाढ़िक तेसर दिन।” अगिला पाँति—
 “मल्लाह रामचरितक घर उजड़ल; पाँच जन उत्तर टोला गेल।” काकी कहलीह, “देखू, जेकर
 जन्मक घड़ी पण्डितक घरमे लिखायल नहि, ओकरो ई बही बाहर नहि फेंकने अछि। तिथि नहि
 भेटल तँ घटना सँ समय बाँधल—बाढ़िक तेसर दिन, अमुक विवाहक भोर, अमुक मृत्यु सँ दू
 राति पहिने। गरीब लोकक जीवन सरकारी कागजमे कम पड़ैत, मुदा एहन बहीमे ओहि लोकक
 पएरक धूरि बचि जाइत।”

माधवी ओ पन्ना देर धरि देखती रहल। दुलारीक चेहरा मोन पड़ल। सूत्रक आँकड़ा
 ओकर साझा दूरभाष, नगद मजदूरी, बिना पक्की रसीदक जीवन कतेक बेर खाली जगह बनि
 जाइत। मुदा एहि पुरान बहीमे ककरो जन्मक घड़ी नहि होइतहुँ ओकर अस्तित्व काटल नहि
 गेल छल।

अभिराम सेहो बात बुझलक। “सूत्र जँ एहन बही पढ़त, तऽ घटना-आधारित समय अलग
 प्रकारसँ जोड़य पड़त।”

जयनारायण कहलनि, “पहिने ई बुझू जे आँकड़ा केवल संख्या नहि। ककरो जीवन
 लिखबाक ढंग सेहो आँकड़ा अछि। जे समाज ककरो नाम ठीक सँ लिखबे नहि करय, ओहि
 समाजक यंत्र बादमे ओकरा गलत चिन्हत, तखन दोष केवल यंत्रक नहि।”

अभिराम एहि पाँति पर चुप भऽ गेल। ओ स्क्रीन पर ‘जमुना धोबिनक बेटी’क प्रविष्टि
 देखलक। पाठ-पहिचान ‘जमुना’ केँ ‘यमुना’ आ ‘धोबिन’ केँ ‘धोबी’ पढ़ि रहल छल। ओ
 हाथसँ सुधार कएलक, फेर सुधारक स्रोतमे लिखलक—“मानवीय पठन; मूल छवि संग।”

“आब ठीक?” ओ अंबिका काकी सँ पुछलक।

काकी कहलीह, “अक्षर ठीक भेल। कथा एखनहुँ अधूरी। मुदा अधूरा कहब सेहो
 ईमानदारी अछि।”

अभिराम प्रत्येक पन्नाक उच्च-गुणवत्ताक छवि लैत चलल। सूत्र नामक मिलान करैत,
 तिथि जोड़ैत। पहिल आध घड़ी धरि किछु एहन नहि भेटल जे वसुधाक मृत्यु सँ सीधा जुड़य।
 मुदा १९३४क आसपास पहुँचला पर पोथीक देह बदलि गेल। दू पन्ना पानिसँ फुलल, एक
 पन्नाक आध भाग भूरा, आ तकर बादक एक पन्ना जड़सँ फाड़ल। फाड़ल किनार नब नहि;
 तन्तु पुरान भऽ पीयर पड़ल।

“एतऽ पन्ना छल,” माधवी कहली।

“हँ,” अंबिका काकी कहलनि। “बहुत पहिने निकालल। काल्हि नहि।”

विनय लिखलनि—१९३४ खण्डमे पन्ना अनुपस्थित।

फाइल पन्नाक पहिलाक पन्ना पर तिथि छल—“माघ, संवत...” तकर बगलमे अंग्रेजी अंकमे १९३४। नीचे काँपैत लिखावट—“धरती फाटल, घर झरल, लोक पोखरि कात डेरा।” एक पाँति धब्बामे डूबल। तकर नीचा साफ—“राहत लग नाम लिखनिहार युवक—रास...” शेष स्याही घिसल।

माधवी साँस रोकि पढ़बाक प्रयत्न कएलक। “रास...?”

अंबिका काकी चश्मा उतारि पोंछलीह। “रासबिहारी हो सकैत। रासमोहन सेहो। अनुमान केँ नाम नहि बनाउ।”

अगिला पाँति—“कुसुमा कनियाँ लाल...” फेर कागजक दाग।

माधवीक देहमे हल्का सिहरन उठल। लाल। ओकर सपनाक ओढ़नी एकाएक मोनमे चमकल। ओ ककरो किछु नहि कहली।

अभिराम स्क्रीन पर छवि पैघ कएलक। “लालक बाद ‘ओढ़...’ जकाँ अछि कि नहि?”

“हो सकैत,” माधवी फुसफुसैली।

जयनारायण तुरन्त रोकलनि। “जे देखाइत अछि से लिखू। जे बुझाइत अछि, अलग। दुनू मिलेलहुँ तऽ कागज हमरा मनक बात बजय लागत।”

सूत्रक पाठ-पहिचान ओहि पाँति पर मात्र अठारह प्रतिशत भरोसा देखेलक। अभिराम संख्या पढ़ि सुनौलक। अंबिका काकी कहलनि, “अठारह प्रतिशत मनुष्य रहितै तँ चुप रहितै?”

“कदाचित नहि,” जयनारायण उत्तर देलनि।

फाइल पन्नाक बाद एक विचित्र तालिका छल। बामा कात सात छोट गोल। पहिल छहक भीतर अलग-अलग बिंदी, रेखा, त्रिकोण, नख-जकाँ निशान। सातम गोल खाली नहि—स्याही ओतऽ घिसि गेल छल। गोलक नीचा लिखल—“सात प्रमाण...” तकर बाद शब्द खायल।

अभिराम तुरन्त पिछला रातिक बिना-तिथिक डिजिटल पन्ना खोललक। ओतहुँ सात क्रमांक छल। “ई देखू। ढाँचा मिलैत अछि।”

विनय दुनू छवि लग-लग रखबौलनि। समानता छल, मुदा पूरा नहि। पोथीमे गोल, डिजिटल पन्नामे क्रमांक। जयनारायण कहलनि, “सम्बन्ध सम्भव। प्रमाण नहि।”

अंबिका काकी सातम गोलक नीचा आँखि सटा कऽ देखलीह। “एतऽ ‘साखी’ जकाँ लिखल अछि।”

माधवी चौकली। “हम काल्हि डिजिटल पन्नामे सेहो ई शब्द बुझने रही।”

“साखी, साक्षी, साख—पुरान लिखावटमे एक-दोसराक देह लग लगैत। अर्थ तखन पाँति कहत।”

“पाँति अधूरी,” अभिराम कहलक।

“तखन अर्थो अधूरा रहय।” अंबिका काकीक उत्तर सरल छल।

ओही पन्नाक सिलाइक बीच एक सूक्ष्म नील धागा अटकल छल। पोथीक बाँकी बाँधनी मटमैला उज्जर सूतसँ। नील धागा केवल दू पन्नाक बीच गाँठि जकाँ। विनय चिमटी सँ उठबय लगलाह, मुदा अंबिका रोकलीह—“पहिने छवि।”

अभिराम छवि लेलक। धागा निकालला पर देखल गेल जे ओ पोथी बाँधबाक नहि, अलग सँ कोनो छोट वस्तु बान्हबाक रहल होयत; एक छोर पर पुरान मोमक दाना चिपकल।

“एखन एकर अर्थ?” विनय पुछलनि।

“धागा,” जयनारायण कहलक। “अर्थ बादमे।”

माधवीक मनमे अकारण लाल ओढ़नी आ नील धागा एक संग खिंचि आयल। ओ अपन हथेली देखली—उज्जर धूरि आब नहि छल, मुदा स्मृति छल।

पोथीक पाछिला भाग अपेक्षाकृत नब छल। किछु पन्ना चालीस-पचास बर्ख पुरान; अन्तिम चारि-पाँच पन्ना सम्भवतः बीस बर्ख भीतर लिखल। एक पन्नाक कोनमे अंबिका काकी एकाएक हँसलीह। “ई हाथ हम चिन्हैत छी।”

सभ हुनका दिस तकलक।

“हमर नहि। हमर मामा-श्वसुर नक्षत्रानन्द झा। गाम-गाम घूमि जन्मक घड़ी लिखैत छलाह, मुदा लोकक घरक बात सेहो। ई पोथी कखनो हुनका लग गेल होयत।”

“तखन अहाँ एकरा पहिने देखने छी?” विनयक प्रश्न तीक्ष्ण भेल।

अंबिका काकी माथ हिलेलनि। “एहि पोथी केँ नहि। लिखावट केँ। नक्षत्रानन्दक एहन अनेक बही रहय। लोक जन्मक तिथि पूछय, ओ संगमे लिखि लए—ककर खेत गिरवी, ककर बेटा भागल, ककर घरमे बँटवारा। कहैत छलाह—‘नछत्तर आ मनुष्य दुनू अकेले नहि चलैत; घरक दशा नहि लिखब तऽ जन्मक दशा अधूरी।’”

जयनारायण पुछलनि, “हुनकर बही सभ कतऽ?”

“किछु हमरा लग। किछु बाढ़िमे गेल। किछु लोक लऽ गेल, फेर नहि घुरेलक। हम घरक पुरान पेटी देखब।”

माधवी तुरन्त बोली, “काकी, वसुधा दीदी अहाँ लग ई पोथी लऽ कऽ आयल छलीह?”

अंबिका कने देर सोचलीह। “पोथी नहि। दू सप्ताह पहिने एक छवि देखौने छलीह—एहि सात गोल सन। पूछलीह, ‘सातम चिह्नक अर्थ की?’ हम कहलियनि बिना पूरा पन्ना किछु नहि कहब। फेर ओ पुछलीह—पुरान घरमे ‘कनियाँक कोठरी’ नाम किएक पड़ैत? हम हँसि कहलियनि, जाहि कोठरीमे नव कनियाँक संदूक, बिछौना, गहना, मायकेक वस्तु रखल जाए, ओ कतेको घरमे ओहि नामे रहैत।”

“ओ ककर घरक बात कहैत छलीह?” जयनारायण।

“नहि कहलनि।”

माधवीक मन तीर जकाँ वसुधाक घर दिस दौड़ल। पिछला दिन अध्ययन-कक्षक पाछाँ ओ एक बन्द दुआरि देखने छलीह, जाहि पर पुरान पीतल ताला छल। तखन ध्यान नहि गेल।

पोथीक बीच सँ एक छोट कागजक पर्ची सेहो निकलल। कागज नब, लिखावट वसुधाक—माधवी तुरन्त चिन्हि गेली। केवल तीन पाँति:

“चित्र	खोजू—राहत	शिविर।
कनियाँक		कोठरी?
वेंटिलेटर—एके बनावट?”		

अभिरामक आँखि चमकल। “वेंटिलेटर।”

जयनारायण पर्ची नहि छुलनि। “वसुधा मरबाक पहिने जे खोजि रहल छलीह, ओ केवल जमीनक नकल नहि छल। ओ पुरान चित्र खोजि रहल छलीह।”

विनय कहलनि, “घरक बन्द कोठरीक तलाशी लेल परिवारक अनुमति वा विधिसम्मत आदेश चाही। पहिने सरल बाट।”

माधवी पर्ची दिस तकैत रहली। “दीदी ओतऽ पहुँचलीह कि नहि?”

“ई प्रश्न एखन खुलल,” जयनारायण कहलनि। “आ खुलल प्रश्न केँ उत्तरक कपड़ा पहिरा देब जल्दी होएत।”

अभिराम सूत्रमे पोथीक छवि जोड़ि सम्बन्ध-नक्शा बनबय लगल। स्क्रीन पर रेखा उठल—१९३४, राहत, सात प्रमाण, कुसुमा?, रास...?, वेंटिलेटर, सात टोला। बीचमे सूत्र एक लाल चेतावनी लिखलक—“नाम-पहिचान निम्न भरोसा; ऐतिहासिक पाठ अपूर्ण।”

माधवी पढ़ि मुस्करेली। “आइ यंत्र नीक बात कहलक—अपूर्ण।”

अभिराम कने झुकि कहलक, “काल्हि कहने रही ने, यंत्र अनिश्चित कहि सकैत अछि।”

“मनुष्य?”

“मनुष्य पहिने कथा बनबैत अछि, तखन प्रमाण खोजैत अछि। काका कहैत छथि।”

जयनारायण दूरसँ सुनि लेलनि। “हम ई नहि कहलहुँ जे यंत्र निर्दोष। यंत्र केँ जे संसार देखाओल, ओहि संसारक बाहरक लोक ओकरा अदृश्य रहैत अछि।”

अंबिका काकी पोथी बन्द करैत बजलीह, “नछत्तर सेहो ओतबे देखाइत अछि जतबे आकाश खुलल हो। बादर रहय तऽ तारा नहि मरैत, बस आँखि सँ नुकाइत।”

विनय पोथी फेर सील करौलनि। नील धागा अलग प्रमाण-पुट्टीमे गेल। वसुधाक पर्ची अलग। सभ हस्ताक्षर भेल।

बाहर निकलिते धूप पहिल बेर बादर चीरि कचहरीक भीजल आँगन पर पड़ल छल। पानि छोट-छोट गड्ढामे आकाशक टुकड़ा पकड़ेने। माधवी अंबिका काकीक संग सीढ़ी उतरल।

काकी ओकरा बिना देखले पुछलीह, “राति फेर सपना आयल?”

माधवी ठमकि गेली। “अहाँकेँ कोना...”

“तोहर आँखि कहैत अछि निद्रा पूरा नहि।”

माधवी राहतक साँस लेल। “नहि। मुदा लाल ओढ़नी... पोथीमे ‘लाल’ शब्द पढ़लहुँ।”

अंबिका काकी आब ओकरा देखलीह। “सपना केँ प्रमाण नहि बनाउ। मुदा सपना केँ फेंको नहि। मन दिनभरि जे नहि बुझि सकैत, राति ओकरा रूप देत अछि। रूप सत्यो हो सकैत, भय सेहो।”

“अहाँ भाग्य देखैत छी, तखन एतेक शंका?”

काकी हँसलीह। “जे शंका नहि करय, ओ भाग्य नहि, बजार बेचैत अछि।”

माधवी सेहो हँसि देली, मुदा मनक भीतर पर्चीक तीन पाँति घूमैत रहल—राहत शिविर। कनियाँक कोठरी। वेंटिलेटर।

आ ओतहि, पुलिस भवनक भीतर, सूत्र पोथीक पन्ना जोड़ैत एक नब सम्बन्ध निकालि रहल छल—वसुधाक घरक पुरान सम्पत्ति-अभिलेखमे १९३४क राहत-शिविरक एक खर्च-रसीद दर्ज छल। नाम अपठनीय, मुदा स्थान—ओही इलाका जतऽ आइ पुरान कचहरी ठाढ़ छल।

अध्याय ११ — घरक एकटा झूठ

दुपहरक बाद अभिराम सूत्रक यात्रा-संबन्धी मिलान चलौलक। वसुधाक परिवार पुलिस कें जे लिखित समय-विवरण देने छल, तकरा सड़क-कैमरा, इन्धन-भुगतान, दूरभाषक संकेत आ गाड़ी-प्रवेश अभिलेखसँ अलग-अलग जाँचल जा रहल छल। जयनारायण एहन काजमे सूत्रक उपयोग मानैत छलाह—मनुष्य हजार पाँति पढ़ैत-पढ़ैत जे समय चूकत, यंत्र ओतऽ गाँठि देखाबि सकैत अछि। मुदा ओ बेराबेरी एके बात कहैत—“गाँठि देखब आ गाँठि खोलब दू काज।”

साँझक तीन बजि बत्तीस मिनट पर अभिराम विनय कें फोन कएलक। “अरुण कर्णक गाड़ी राति घरमे नहि छल।”

विनय थाना सँ कचहरी पहुँचल। जयनारायण सेहो ओतहि छलाह। माधवी नछत्तर-पोथीक छवि सँ वसुधाक पर्ची मिलाबैत छल। अभिराम स्क्रीन घुमा देलक।

अरुणक लिखित कथनमे छल—राति आठ बजिक बाद ओ घरहि रहल, लगभग साढ़े दस बजे सुतल, भोर पुलिसक फोन पर उठल। मुदा नगरक पश्चिमी बाहरी पथ पर स्वचालित संख्या-पट्ट कैमरा राति दस बजि सैंतालीस मिनट पर ओकर गाड़ी बाहर जाइत देखबैत छल। राति बारह बजि एकतीस मिनट पर दोसर कैमरा ओही गाड़ी कें उलटा दिशसँ नगरमे घुसैत देखौलक। बीचमे एक इन्धन-दोकानक इलेक्ट्रॉनिक रसीद—एगारह बजि बीस मिनट।

“मोबाइल?” विनय पुछलक।

“अरुणक मुख्य दूरभाष घरक टावरमे,” अभिराम कहलक। “अर्थात गाड़ी बाहर, फोन घर।”

विनयक चेहरा कसल। “ओ जानि-बुझि फोन छोड़ि गेल?”

सूत्रक स्क्रीन पर शब्द उभरल—“व्यक्ति-स्थान निष्कर्षित नहि कएल जा सकैत। उपलब्ध प्रमाण केवल वाहन-स्थानक।”

जयनारायण पाँति देखलनि। “ई उत्तर याद राखू। गाड़ी बाहर छल। अरुण गाड़ीमे छल, से एखन सिद्ध नहि।”

अभिराम एकटा आओर पन्ना खोललक—सूत्रक “असंगति-सूची।” ओ अरुणक कथनक सामने तीन कारण-संकेत देखौलक: “स्थान-विरोध”, “दूरभाष स्थिर, वाहन गतिशील”, “रातिक यात्रा अघोषित।” तकर नीचा जोखिमक माप बढ़ल छल।

जयनारायण भौंह सिकोड़लनि। “ई ‘जोखिम’ कोन चीजक?”

“जाँच-प्राथमिकता,” अभिराम कहलक। “अपराधी होयबाक घोषणा नहि। जे कथनक संग बाहरी आँकड़ा बेसी भिड़ैत, ओकरा पहिने जाँचू।”

“ठीक। मुदा रंग लाल किएक?”

“ध्यान खींचबाक लेल।”

“मानव-मोन लाल केँ खतरा बुझैत अछि। न्यायालयमे कखनहुँ ई स्क्रीन देखाओल जाए तँ शब्द रंगसँ पहिने बुझाओल जाए। नहि तँ संख्या तटस्थ रहत, रंग निर्णय करि देत।”

अभिराम स्क्रीनक रंग-परत बन्द कएलक। “एहि बातक परीक्षण होएबाक चाही।”

माधवी हँसली नहि। ओकरा बुझायल जे जयनारायणक आपत्ति यंत्र-विरोध नहि, मनुष्य-विरोधी भ्रम-विरोध अछि। लोक अक्सर जे स्पष्ट देखाइत से सत्य मानि लैत; यंत्रक चमक ई कमजोरी आओर बढ़ा सकैत अछि।

“मुदा लिखित कथन झूठ,” विनय कहलक।

“हँ। झूठ अछि। मुदा झूठक कारण हत्या हो, ई दोसर बात।”

माधवी किछु नहि बजली। अरुणक घरक चेहरा ओकर आँखि सामने आयल—थाकल, सतर्क, पत्नी गेलोपर भीतर किछु लुकबैत। मन तुरन्त कथा बनाबय चाहलक। ओ अपने केँ रोकलक। जयनारायणक संग दू दिनमे ई एक शिक्षा बारम्बार भेटल छल—पहिल कथा प्रायः सभसँ सुगम, सत्य प्रायः नहि।

विनय निर्णय कएलनि जे अरुण केँ थाना नहि, घरहि पर फेर पूछल जाए। “शोकक बीच सार्वजनिक रूपसँ उठेनाइ एखन उचित नहि। मुदा उत्तर चाही।”

जयनारायण कहलनि, “पहिने गाड़ी जाँचू। भीतरक कीचड़, सीट, रसीद, जे भेटय। आ कैमरा-समयक मूल अभिलेख सुरक्षित करू। सूत्रक स्क्रीन न्यायालयमे अपने नहि बजत।”

अभिराम माथ हिलेलक। कच्चा आँकड़ा सुरक्षित करबाक क्रम ओ तुरन्त शुरू कएलक। माधवी ओकरा देखैत रही। एतऽ यंत्रक उपयोग चमत्कार नहि, धैर्य छल—एक-एक स्रोतक पाँति बचाउ, ताकि बादमे केओ पूछय तऽ उत्तर केवल “सूत्र कहलक” नहि हो, अपितु “एहि कैमरा, एहि रसीद, एहि समय” हो।

वसुधाक घर पहुँचलापर अरुण बरामदामे एकटा कुर्सी पर अकेले बैसल छल। घरमे शोकक लोक कम भऽ गेल छल, मुदा मौन गाढ़। प्रखर कतहु बाहर। सासु भीतर। वसुधाक माय अपन बेटीकेर कपड़ा अलग कऽ रहल छलीह—एक-एक साड़ी तह करैत, फेर खोलि फेर तह।

विनय अरुण केँ लिखित कथन देखेलनि। “अहाँ कहने छी राति आठक बाद घरसँ नहि निकललहुँ।”

“हँ।”

“अहाँक गाड़ी दस सैंतालीस पर पश्चिमी मार्ग सँ बाहर गेल।”

अरुणक चेहरा पहिले बुझल नहि। फेर ओकर दहिना हाथ कुर्सीक बाँह पकड़ि लेलक।
“गाड़ी?”

“अहाँक गाड़ी। संख्या स्पष्ट। बारह एकतीस पर घुरल।”

“के चला रहल छल, ई देखाइत?”

विनय ओकर प्रश्न पकड़लनि। “तखन अहाँ मानैत छी गाड़ी बाहर गेल?”

अरुण उठि ठाढ़ भेल। “हम—”

ओ वाक्य छोड़ि देलक। घर भीतर सँ वसुधाक माय बाहर आबि गेलीह। “की भेल?”

अरुण तुरन्त कहल, “किछु नहि, मायजी। पुलिसक सामान्य प्रश्न।”

जयनारायण ओहि “सामान्य” शब्द पर ध्यान देलनि। अरुणक नजर घरक भीतर, विशेषतः अपन मायक कोठरी दिस बेराबेरी जा रहल छल। हत्या लुकौनिहार डर? कि दोसर किछु?

विनय कहलनि, “हम अलग बात करब चाहैत छी।”

अरुण सभकेँ अध्ययन-कक्षमे लऽ गेल, दुआरि आध बन्द कएलक। माधवी बाहर रुकय चाहली, मुदा अरुण स्वयं कहलक, “माधवी रहय। वसुधा एकरा अपन लोक मानैत छल।”

किछु क्षण अरुण खिड़की लग ठाढ़ रहल। फेर धीमे कहलक, “गाड़ी हमे चला कऽ गेल रही।”

विनयक स्वर समतल। “कतऽ?”

“मधुपुर मार्ग पर ‘सहजिनी’ स्त्री-आरोग्य केन्द्र अछि। नगरसँ करिब पच्चीस कोस नहि, पच्चीस किलोमीटर।”

“ककरा लेल?”

अरुण चुप। ओकरा उत्तर देब कठिन लगैत छल। जयनारायण कहलनि, “जे बात हत्या सँ सम्बन्ध नहि, ओकर मर्यादा बचाओल जा सकैत। मुदा समय छिपेलहुँ तऽ जाँच ओकरा हत्या सँ सम्बन्धित मानत।”

अरुण आँखि बन्द कएलक। “हमर छोट बहिन रूपा ओतऽ भर्ती छलीह।”

“किएक?” विनय।

“ई बात हम एहि घरमे ककरोसँ कहबाक अनुमति नहि लएने छी।”

“हुनकर प्राणक प्रश्न?”

“नहि। मुदा हुनकर वैवाहिक जीवनक बात। तीन महीना सँ ओ अपन पति सँ अलग रहैत छथि। घरमे सभ मानैत अछि ओ ससुरारिमे अछि। परसू राति हुनकर गर्भ खसि गेल। ओ हमरा फोन कएलखिन। हम घरक लोकक फोन छोड़ि गाड़ी लऽ निकलि गेलहुँ।”

माधवीक आँखि झुकि गेल। घरक एक झूठक भीतर दोसर स्त्रीक दुख छल—एहन दुख जाहि पर परिवार प्रतिष्ठाक पर्दा तानय चाहैत।

विनय पुछलक, “वसुधा केँ मालूम छल?”

“हँ।” अरुणक स्वर फूटल। “ओही हमरा कहलखिन—जाउ। रूपा अकेली अछि। हम राति आठक बाद घर आयल रही। वसुधा कचहरीमे। नौ पैतालीस पर रूपाक परिचारिकाक फोन आयल। माय जागल छलीह, तँ मुख्य फोन घरमे छोड़लहुँ। दोसर छोट दूरभाष लऽ गेल रही।”

“ओ नम्बर?”

अरुण देलक। विनय नोट कएलनि।

“लिखित कथनमे झूठ किएक?”

अरुण हँसल, मुदा हँसी कटु छल। “भोर पत्नी मृत। घर भरल लोक। पुलिस प्रश्न करैत। हम कहितहुँ जे आध राति स्त्री-आरोग्य केन्द्रमे रही—काल्हि धरि पूरा शहर कथा बना दैत। रूपाक विवाह तऽ टूटलहि अछि, ओकर देहक बातो बजार बनि जाइत। हम सोचलहुँ, ई रातिक बात वसुधाक मृत्यु सँ जुड़ल नहि, तखन किएक कहूँ?”

जयनारायण धीरे कहलनि, “जाँचमे जे बात अहाँ ‘जुड़ल नहि’ मानैत छी, से कखन जुड़ि जाए, ई पहिने केओ नहि जानैत। मुदा कारण बुझल।”

“अहाँ हमरा विश्वास करैत छी?” अरुणक प्रश्न सीधा हुनका दिस।

“विश्वास जाँचक बदला नहि। केन्द्रक अभिलेख, कैमरा, परिचारिका, गाड़ी—सभ मिलत। मिलल तऽ ई झूठक अर्थ बदलत। नहि मिलल तऽ फेर पूछब।”

अरुण माथ झुका देलक। “ठीक।”

विनय पुछलक, “अहाँ कते बजे घर घुरलहुँ?”

वसुधाक माय दुआरि लग आ पहुँचल छलीह। बातक अन्तिम हिस्सा सुनि लेलखिन। ओ अरुण दिस एना देखलीह जे दुखमे एक नब चोट जुड़ि गेल। “तौँ हमरा किएक नहि कहलह?”

अरुण धीरे कहलक, “रूपा नहि चाहैत छलीह।”

“हम रूपाक माय नहि, मुदा घरक बूढ़ि छी। ओकर दुख सुनितहुँ बजार नहि बनबैत।”

अरुणक आँखि नीचा। “मायजी, घरक सभ लोक अहाँ जकाँ नहि सोचैत।”

वसुधाक माय किछु क्षण चुप रहलीह। फेर कहलीह, “सत्य सुनबाक योग्य लोक चुनब ठीक, मुदा झूठ बजैत-बजैत मनुष्य अपने नहि बुझैत केकरा सँ की बचा रहल अछि।”

जयनारायण हुनका दिस तकलनि। बूढ़ि स्त्रीक ई पाँति कोनो प्रशिक्षण-पुस्तकक नियमसँ बेसी सटीक छल।

“बारह पैतालीसक आसपास।”

“वसुधासँ बात?”

“राति ग्यारह बजि पाँच मिनट पर छोट दूरभाषसँ। केवल दू मिनट। ओ पूछलीह रूपा स्थिर अछि? हम कहलहुँ हँ। ओ कहलखिन—‘घर घुरि माय केँ किछु नहि कहिहऽ, रूपा अपने कहत तखन।’”

“वसुधाक स्वर?”

अरुणक चेहरा एकाएक बदलल। “थाकल। मुदा... ओ पाछाँ ककरोसँ कहलीह—‘बैसू, हम ई पन्ना पूरा पढ़ि लिअ।’ हम पूछलहुँ के अछि। ओ कहलीह—‘दुलारी आएल अछि।’”

माधवीक छाती धक्कएलक। राति एगारह पाँच पर दुलारी वसुधाक संग? तखन दुलारी नौक बाद आयल आ कतेको देर रुकल।

“आओर किछु?” विनय।

“फोन कटबाक पहिने धातुक किछु खनकल। वसुधा कहलीह—‘ई ताला फेर अँटकत।’ बस।”

जयनारायण तुरन्त पुछलनि, “कोन ताला?”

“हम नहि पूछलहुँ।”

माधवीक मनमे नछत्तर-पोथीक पर्ची—‘कनियाँक कोठरी?’

विनय अरुणक छोट दूरभाष जाँच लेल माँगलक। अरुण अलमारी सँ निकालि देलक। कॉल-अभिलेख कथनक आरम्भिक पुष्टि करैत छल—रूपाक नम्बर, वसुधाक नम्बर। समय मिलैत।

जयनारायण अध्ययन-कक्षक दुआरि सँ बाहर निकललाह। बरामदाक पाछाँ ओहि बन्द दुआरि पर नजर गेल जे माधवी पिछला बेर देखने छलीह। पीतल ताला, लकड़ी पर पुरान सिंदूरक दाग, ऊपर धूल।

“ओ कोठरी?” ओ सहज स्वरमे पुछलनि।

अरुणक चेहरा फेर कसल। “पुरान सामान। दादी कहैत छलीह ‘कनियाँक कोठरी’। आब ककरो उपयोग नहि।”

माधवी आ जयनारायण एक संग एक-दोसराक दिस तकल।

“वसुधा ओतऽ गेल छलीह?” जयनारायण।

“दू सप्ताह पहिने चाभी माँगने छलीह। माय देब नहि चाहैत छलीह—पुरान संदूक, गहना, कागज, दीमक। बादमे चाभी हम देलहुँ। ओ करीब एक घड़ी भीतर रहलखिन।”

“की निकाललखिन?”

“हम नहि देखलहुँ। कहलीह पुरान फोटो खोजैत छी।”

विनय तुरन्त कहलक, “आइ फेर खोलब।”

घरक भीतर ई बात पहुँचतहि अरुणक माय, अर्थात् वसुधाक सासु, तमतमा कऽ बाहर अएलीह। “एखन पुरखिनक कोठरी खोदब बाकी रहि गेल? बेटी मरल, घर शोकमे, आ पुलिस संदूक गनत?”

विनय शान्त स्वरमे वसुधाक पर्ची देखेलनि, बिना हाथमे देने। “वसुधा जी स्वयं ‘कनियाँक कोठरी’ लिखने छथि। पुरान चित्र जाँच सँ जुड़ि सकैत अछि। अहाँक उपस्थितिमे, सूची बना कऽ देखब। किछु बिना लेखा बाहर नहि जाएत।”

सासु पर्ची दूरहिसँ पढ़लीह। हुनकर मुँह पर क्रोधक संग भयक क्षीण छाया आयल। “ओ फेर ओही पुरान पागलपन...”

जयनारायण पकड़लनि। “कोन पागलपन?”

ओ चुप भेलीह।

अरुण कहलक, “माय, आब छिपेलासँ लाभ नहि।”

“तोरा की मालूम?”

“जतेक वसुधा हमरा कहने छलीह। घरक पुरान जमीनक कथा।”

सासु माला कसलनि। “पुरान घरमे पुरान कथा रहिते अछि। सभ कथा न्यायालय लेल नहि होइत।”

माधवी धीरे कहली, “दीदी सम्भवतः न्यायालय लेल नहि, सत्य लेल खोजैत छलीह।”

सासु ओकरा लमहर नजरि सँ देखलीह। “तोरा वसुधा बड्ड पसिन्न करैत छल। तँ तौ ओकर जिदो विरासतमे लऽ लेलह?”

माधवी उत्तर नहि देली। दुखक घरमे जीतबाक प्रश्न नहि रहैत।

ताला ओहि दिन खोलल नहि गेल। विनय विधिसम्मत अनुमति लिखित रूपमे लएबाक निर्णय कएलनि, ताकि बादमे साक्ष्य पर प्रश्न नहि उठय। सासु अन्ततः लिखित सहमति देबाक कहलनि, मुदा छोट शर्त—परिवारक एक सदस्य संग रहत।

बाहर निकलिते अभिरामक संदेश आयल। “सहजिनी केन्द्रक प्रवेश-अभिलेखमे अरुण ११:०३ PM; निकास १२:०२। गाड़ी कैमरा समय मिलैत। रूपाक अनुमति बिना चिकित्सकीय विवरण नहि माँगल गेल। यात्रा कथन आरम्भिक रूपसँ पुष्ट।”

विनय संदेश जयनारायण केँ देखेलनि।

जयनारायण कहलक, “देखलहुँ? झूठ भेल, मुदा हत्या नहि बनल।”

माधवी पुछली, “तखन अरुण पर शंका घटल?”

“एक झूठक कारण बुझल। मनुष्यक पूरा जीवन निर्दोष घोषित नहि भेल। जाँच एना चलैत—एक दुआरि बन्द, दोसर खुलल।”

अरुण बरामदा पर ठाढ़ छल। घरक भीतर सासु माला फेरि रहल छलीह। वसुधाक मायक कोठरी सँ कपड़ा तह करबाक खरखराहट आबि रहल छल। एहि घरमे हर लोक किछु बचाबय चाहैत छल—ककरो प्रतिष्ठा, ककरो बहिनक निजी दुख, ककरो पुरखिनक कथा, ककरो मृत स्त्रीक नाम।

माधवी केँ एकाएक बुझायल—सत्य केवल अपराधी सँ नहि, प्रेम करनिहार लोकसँ सेहो नुकाइत अछि। कई बेर लोक झूठ एहि लेल नहि बजैत जे ककरो नोकसान हो, बल्कि एहि लेल जे ओकरा लगैत अछि सत्यक उजास ककरो नग्न कऽ देत। मुदा उजास रोकल जाए तऽ छाया आओर पैघ होइत अछि।

जयनारायण सीढ़ी उतरैत कहलनि, “काल्हि कनियाँक कोठरी। आइ राति ककरो मनमे ओकर भीतरक कथा नहि बनाउ।”

अभिराम, जे ओतऽ आबि चुकल छल, माधवीक कात चलैत फुसफुसायल, “तूँ कथा बना चुकलह?”

माधवी ओकरा देखली। “दसटा।”

“सूत्र पाँचटा सम्भावना बनाएत।”

“मनुष्य जीतल।”

“संख्या बेसी होयब जीत नहि।”

“तू ई बात प्रेममे सेहो मानह?”

अभिराम एक क्षण ओकरा तकलक, फेर सामने। “काल्हि कोठरी खोलू, एखन दर्शन नहि।”

माधवी हँसि देली। मुदा हँसीक नीचा किछु बेचैनी छल। वसुधा दू सप्ताह पहिने ओहि बन्द कोठरीमे एक घड़ी अकेली रहल छलीह। ओ की देखलीह? की निकाललीह? आ जँ फोटो भेटि गेल छल, तखन ओकरा फेर खोजबाक पर्ची किएक?

कनियाँक कोठरी राति भरि बन्द रहल। मुदा आब ताला केवल घरक पुरान वस्तु नहि, जाँचक अगिला प्रश्न छल।

अध्याय १२ — कनियाँक कोठरी

अगिला बिहान बरखा थमल छल। आकाश पूरा साफ नहि, मुदा उजास एतेक जे वसुधाक घरक पाछाँक आमगाछक पात पर पानीक बूँद चमकि रहल छल। विनय लिखित सहमति, दू साक्षी आ सूची-पत्र लऽ पहुँचल। परिवार दिससँ अरुण रहत; सासु स्वयं नहि आयब चाहलीह, मुदा चाभीक गुच्छा हुनके हाथसँ आयल। माधवी, जयनारायण आ अभिराम सेहो उपस्थित। अभिरामक काज केवल छवि बनायब आ जे कागज भेटय तकर डिजिटल प्रतिलिपि; सूत्र एखन बाहर—पहिने कोठरी मनुष्य देखत।

बन्द दुआरि घरक मुख्य भागसँ कने अलग, पाछाँक सँकरा बरामदामे छल। काठ कारी भऽ चुकल, ताला पर हरियर जंग। ऊपर छोट लाल सिन्दूरक पुरान छाप, जाहि पर धूलक परत। अरुण चाभी लगेलक। पहिल चाभी नहि घूमल। दोसर आध घूमि अँटक गेल। तेसर चाभी पर ताला भीतर सँ करकरायल आ खुलि गेल।

जयनारायण अरुण दिस तकलनि। “वसुधा एहि ताला केँ ‘फेर अँटकत’ कहने होयत।”

अरुणक चेहरा उदास भेल। “हँ। ओ दिनो आध घड़ी चाभी घुमाँने छलीह।”

दुआरि खोलिते धूलक गन्ध, नीमक सूखल पात, पुरान कपड़ाक बन्द गमक आ कर्पूरक बहुत पुरान स्मृति-जकाँ वास बाहर आयल। भीतर खिड़की छोट, आध लकड़ीक पट्टीसँ बन्द। उजास एक पातळ धार जकाँ जमीन पर पड़ैत। अभिराम टॉर्च जलौलक, मुदा जयनारायण कहलक, “पहिने जेना अछि तेना छवि।”

छवि बनल। तकर बाद सभ धीरे भीतर गेल।

कोठरीक नाम ‘कनियाँक’ किएक पड़ल, से भीतर पएर पड़िते बुझाइत छल। एक कात तीन लकड़ीक संदूक, एक पर फीका फूल-पातक चित्र; देवाल पर पुरान आइना जाहि पर काँच आध कारी पड़ल; बाँसक मुँज सँ बनल पंखा; पीतल हाथ-पेटी; लाल किनारीक सड़ी चुनरी; कपड़ाक गठरी; टूटल सिंदूरदान; बच्चाक पुरान चाँदीक कड़ा। ई कोनो एक स्त्रीक कोठरी नहि, पीढ़ी-पीढ़ीक बहू सभक बचल वस्तुक अँजोर-अन्हार छल।

माधवी धीरे कहली, “घर सभ स्त्रीक कतेक वस्तु बचा लैत अछि, नाम नहि।”

अरुण सुनि कऽ चुप रहल। किछु देर बाद कहलक, “दादी कहैत छलीह, घरमे नव कनियाँ जे आनत, पुरान भेला पर एहि कोठरीमे सरकि जाएत—संदूक, बिछौना, पत्र, मायकेक चिह्न। फेर नब कनियाँ आएत।”

“मनुष्यो?” माधवी अनायास पुछि देली।

अरुण ओकरा देखलक। “कतेको घरमे सम्भवतः।”

विनय सूची आरम्भ कएलनि। “हम सभ केवल वसुधाक खोज सँ सम्बन्धित वस्तु देखब। संदूक खोलबासँ पहिने छवि, क्रमांक।”

पहिल संदूकमे कपड़ा आ पुरान बिछौना। दोसरमे धातुक बरतन, विवाहक साड़ी, टूटल हारक खाली डिबिया। तेसर संदूक भारी। चाभी गुच्छामे ओकर चाभी नहि। ताला बहुत पुरान, मुदा एक पल्ला नीचे सँ कने खुलल। जयनारायण घुटना मोड़ि जमीन देखलनि। धूल समान नहि छल—संदूकक आगाँ एक पातळ साफ रेखा, जेना किछु सप्ताह पहिने घिसटल हो।

“वसुधा एहि केँ सरकौने छलीह?” विनय अरुण सँ पुछलक।

“हम नहि देखलहुँ।”

माधवीक नजर कोनमे पड़ल। जमीन पर झाड़ूक एक पुरान सीक, तकर पाछाँ कागजक नन्हका टुकड़ा। विनय चिमटी सँ उठौलनि। कागज पर नीला स्याही—केवल “...शिविर” पढ़ाइत।

अभिरामक देह तत्पर। “राहत शिविर?”

जयनारायण तुरन्त कहलनि, “टुकड़ा ‘शिविर’ कहैत अछि। ‘राहत’ हम जोड़ि रहल छी।”

“ठीक।” अभिराम मुस्करायल। “काका, हम सीखि रहल छी।”

संदूकक ताला तोड़ब उचित कि नहि, विनय कने ठमकल। परिवारक सहमति पत्रमे आवश्यक पुरान पात्र खोलबाक अनुमति छल। अरुण कहलक, “खोलू। माय बादमे हमरा दोष देतीह, मुदा वसुधा एही लेल खोजैत छल तऽ खोलू।”

ताला काटल नहि, स्थानीय ताला-मिस्त्री बजाओल गेल। आध घड़ी प्रतीक्षा। एहि बीच माधवी देवालक आलमारी देखली। पल्ला भीतर सँ फुलल, एक कात दीमक। ऊपर धूल पर उँगुरीक दू पुरान रेखा जकाँ। ओ विनय केँ देखेलनि। आलमारी खुलल तऽ भीतर विवाहक फोटो, निमन्त्रण-पत्र, पीयर पड़ल चिट्ठी आ एक बड़का कपड़ामे लपेटल चित्र-गुच्छा भेटल।

माधवीक साँस तेज भेल। “पर्चीमे ‘चित्र खोजू’ छल।”

गुच्छा मेज-जकाँ साफ कएल पीढ़ा पर राखल गेल। एक-एक फोटो अलग। अधिकांश परिवार—बरामदामे बैसल बूढ़ लोक, विवाह, उपनयन, पोखरि-घाट, खेतक मेड़। किछु फोटो

पर तिथि, किछु पर नाम। एक फोटो कागजक बीच चिपकल, जकाँ ककरो जानि-बुझि छिपौने हो।

अभिराम दस्ताना पहिरि कागज अलग करैत छल। “ई बहुत भंगुर।”

फोटो निकलिते माधवीक उँगुरी ठंढा पड़ि गेल।

चित्रमे खुलल मैदान। पाछाँ आध झरल ईटक भवन, सामने बाँस-फूसक अस्थायी छप्पर। जमीन पर बरतन, दवाईक पेटी, लोकक भीड़। बीचमे दू स्त्री। एक बूढ़ि, दोसर बहुत तरुण। तरुण स्त्रीक माथ आ काँध पर लाल ओढ़नी—चित्र श्याम-श्वेत छल, तखन लाल कोना? फोटो पर बादमे रंग चढ़ाओल छल; ओढ़नी पर फीका गेरुआ रंग एखनहुँ टिकले।

माधवी बैठि गेली।

“की भेल?” अभिराम ओकरा देखलक।

ओ उत्तर देबासँ पहिने फोटो पाछाँक भवन दिस उँगुरी देखेलक। भवनक ऊपर छोट आयताकार वेंटिलेटर—लोहेक जाली भीतर चारि तिरछा पत्ती, बीचमे नन्हका गोल। ठीक ओही बनावट जे पुरान कचहरीक अभिलेख-कोठरीमे।

अभिराम फोटो नजदीक लएलक। “ई... एके जकाँ।”

जयनारायण फोटो नहि, माधवीक चेहरा देखलनि। “तोरा आओर किछु देखाइत अछि।”

माधवीक मुँह सूखल। “हम सपना मे...”

अरुण, विनय, अभिराम सभ ओकरा दिस।

“पोखरिक घाट। लाल ओढ़नी। देवाल। हम पहिने ई फोटो नहि देखने छी।”

अभिराम तुरन्त किछु कहब चाहलक, फेर रुकल। पिछला दिनक वचन मोन पड़ल होयत—तुरन्त कथा नहि। ओ केवल पुछलक, “वसुधा दीदी कखनो तोरा एहन फोटो वा १९३४क कथा कहने छलीह?”

“भूकम्पक जमीन-विवाद कहने छलीह। लाल ओढ़नी नहि। ई चित्र नहि।”

“ककरो घरमे एहन फोटो देखल?”

“नहि।”

जयनारायण कहलनि, “सपना एखन अलग पुट्टीमे राखू—मोनक। फोटो अलग—प्रमाणक। दुनू केँ एक बनौलहुँ तऽ दुनू बिगड़त।”

माधवी माथ हिलेली, मुदा भीतरक सिहरन नहि गेल।

फोटोक पाछाँ नीला स्याहीमे लिखल छल—“राहत शिविर, माघ १९९० साल / जनवरी १९३४।” तकर नीचे दू नाम, पहिल साफ—“कुसुमा।” दोसर घिसल, मुदा “रासबि...” देखाइत। आ अन्तिम पाँति—“नाम-नकल करैत।”

अभिराम धीरे पढ़लक, “कुसुमा... रासबि... नाम-नकल करैत।”

जयनारायण कहलक, “एखन ‘रासबिहारी’ नहि। अगिला अक्षर बचल नहि।”

अंबिका काकीक पोथीक पाँति सभ माधवीक मोनमे जुड़ि गेल—“राहत लग नाम लिखनिहार युवक—रास...” “कुसुमा कनियाँ लाल...”

फोटोक एक कोनमे छेद छल, ओतऽ नील धागाक सूक्ष्म अंश अटकल। अभिराम छवि लेलक। विनय चिमटी सँ अलग करौलनि। जयनारायण नछत्तर-पोथीक धागा मोन पाड़ि कहलक, “रंग एके जकाँ देखाइत, मुदा आँखिक मिलान प्रमाण नहि। तन्तु-जाँच अलग।”

अरुण फोटो देखैत चुप छल। “ई कुसुमा के?”

ओही समय दुआरि पर वसुधाक सासु ठाढ़ भेलीह। केओ हुनका बजौने नहि छल। सम्भवतः कोठरी खुलबाक ध्वनि रोकि नहि सकलीह। फोटो देखते हुनकर मुँह बदलि गेल।

“ई कतऽ भेटल?”

अरुण कहलक, “आलमारीमे।”

सासु भीतर नहि अएलीह। दहलीज परे ठाढ़। “ई फोटो छोड़ि दियौ।”

विनय शान्त स्वरमे कहलक, “जाँच लेल प्रतिलिपि बनत। मूलक संरक्षणक लेखा बनत।”

“ई घरक पुरान बात अछि।”

जयनारायण पुछलनि, “कुसुमा नाम चिन्हैत छी?”

सासु माला फेरबाक प्रयत्न कएलनि, मुदा मनका एके ठाम अटकत। “बचपनमे सुनने रही। पुरखिनमे केओ।”

“ककर?”

“ठीक नहि। दादी लोक कथा कहैत छल। एक कनियाँ घरक बात नहि मानल। भूकम्पक बर्ख... बादमे ओकर नाम लेब घरमे पसिन्न नहि छल।”

माधवी धीमे पुछली, “लाल ओढ़नी?”

सासुक आँखि झट ओकरा दिस उठल। “तोरा के कहलक?”

कोठरीक हवा घनी भऽ गेल।

माधवी सच कहली, “पोथीमे अधूरा लिखल छल।” सपना नहि कहलनि। एखन नहि।

सासु किछु क्षण फोटो देखती रहल। “हम बच्चा रही। जे सुनल से आध। कुसुमा सम्भवतः एहि घरक कनियाँ नहि, बेटी छल। केओ कहैत बहिन। पुरान लोक खुदो बात बदलैत। कहैत छल भूकम्पक बाद राहत शिविरमे घरक नाम बिगाड़लक—नीच लोकक कागज पर गवाही दऽ देलक। फेर...”

“फेर?” जयनारायण।

“फेर घरमे झगड़ा। बस।”

“ओकर बाद कुसुमा?”

“हम नहि जानैत।”

जयनारायण हुनकर चेहरा पढ़ैत रहलाह। ई ‘नहि जानैत’ अरुणक पिछला झूठ जकाँ तीखा नहि; एतऽ स्मृति, डर आ सीखनायल मौन मिश्रित छल। परिवारक किछु कथा एना पीढ़ी-दर-पीढ़ी आध होइत चलैत अछि, जेना पुरान कपड़ा—हर बेर कात काटल, अन्तमे मूल आकार चिन्हब कठिन।

ताला-मिस्त्री आबि गेल। तेसर संदूक खुलल। भीतर कागज कम, स्त्रीक वस्तु बेसी—कशीदाक अधूरा कपड़ा, सूखल इत्रक शीशी, कंघी, दू पत्रक गठरी, आ एक छोट टिनक पेटी। पत्र सभ बहुत पुरान आ नाजुक। विनय तुरन्त कहलनि, “बिना सूची खोलब नहि।”

टिनक पेटीमे फोटो-निगेटिव, पुरान टिकट, आ काँचक पट्टी पर रखल एक सूखल फूल। तल्लामे तह कएल कागज। ऊपर मैथिलाक्षरक लिखावट, नीचा देवनागरीमे बादक हाथसँ किछु शब्द। रहमत काका अथवा विशेषज्ञ बिना पढ़ब कठिन।

अभिराम उत्साहमे कहलक, “स्कैन कऽ पैटर्न—”

जयनारायण हँसलाह। “पहिने रहमत काका। यंत्र दोसर मत देत।”

माधवी पत्रक गाँठि देखली। बाँधनी मटमैला छल, नील नहि। तकरा खोलल नहि गेल; संरक्षण लेल अलग पुट्टी बनल।

आलमारीक पाछाँ एक पुरान फोटो-फ्रेम उलटल पड़ल छल। काँच टूटल। भीतर फोटो नहि, केवल गत्ता। गत्ता निकालला पर पाछाँ पेंसिलसँ लिखल—“कुसुमा—राहत शिविर, १९३४। रासबिहारी नाम लिखैत।” एहि बेर पूरा नाम स्पष्ट।

सभ चुप।

अभिराम जयनारायण दिस तकलक, मानो पूछैत हो—आब कहि सकैत छी?

जयनारायण धीमे कहलनि, “आब रासबिहारी।”

माधवीक भीतर किछु खुलल। नछत्तर-पोथीक अधूरा नाम पूरा भेल, मुदा नाम पूरा भेलासँ रहस्य घटल नहि; उलटे मनुष्य बनि सामने आयल। कुसुमा। रासबिहारी। १९३४। राहत शिविर।

फ्रेमक गत्ताक नीचा एक आओर पाँति छल—स्याही बहुत फीकी: “सात टोला नाम चढ़ल। सातम...” अन्तिम भाग काँचक नमीसँ मेटायल।

विनय कहलक, “एहि फोटो आ फ्रेमक सम्बन्ध जमीनक मुकदमा सँ सीधा हो सकैत।”

“हो सकैत,” जयनारायण। “एखन केवल शब्द भेटल।”

अरुण माथ पकड़ि पीढ़ा पर बैसि गेल। “वसुधा ई सभ खोजैत छलीह आ हमरा किछु पूरा नहि कहलीह।”

माधवी ओकरा देखली। “सम्भवतः कहबाक पहिने प्रमाण चाहैत छलीह।”

अरुणक स्वरमे चोट छल। “हम पति रही कि अदालत?”

जयनारायण सीधा उत्तर नहि देलनि। “जतऽ घर आ मुकदमा एके जमीन पर ठाढ़ हो, ओतऽ ककरा की कहब, कठिन होइत अछि।”

सासु दहलीज पर धीरे बैसि गेलीह। पहिल बेर हुनकर कठोरता ढील भेल। “हम वसुधा केँ चाभी देब नहि चाहैत रही। हमरा डर छल पुरान बात फेर घरमे झगड़ा आनत। ओ कहलक—‘माय, बात नुकेलासँ बीतल बदलत नहि।’ हम कहलियनि—‘बीतल नहि, घर बचैत अछि।’ ओ हँसल—‘जँ घर झूठ पर बचैत हो तँ?’”

हुनकर आँखि भीजि गेल। “हम ओहि दिन ओकरा बड्ड कठोर बात कहने रही।”

माधवी लग गेली, मुदा छुलनि नहि। शोकक किछु घड़ीमे स्पर्शो पूछिकऽ देबाक चाही। सासु अपने हाथ बढ़ा माधवीक कलाई पकड़लीह। “ओ तोरा किछु कहने छल?”

“पूरा नहि।”

“हमरा लगैत छल ओ परिवारक विरुद्ध लड़ैत। सम्भवतः ओ ककरो आओर लेल...”

वाक्य टूटि गेल।

कोठरीक खोज पूरा होइत दुपहर भऽ गेल। सूचीमे फोटो, फ्रेम, पत्रक गठरी, मैथिलाक्षरक कागज, नील धागाक अंश, आ किछु पुरान अभिलेख दर्ज भेल। मूल सभ आवश्यक विधिक संरक्षणमे गेल; परिवार केँ प्राप्ति-पर्ची देल गेल।

बाहर बरामदामे अभिराम फोटो केँ उच्च गुणमे देखलक। वर्तमान कचहरीक वेंटिलेटरक छविसँ तुलना कएलक। आकार, तिरछा पत्ती, बीचक गोल—अत्यन्त निकट। सूत्र

संरचनात्मक मिलान उच्च देखेलक, मुदा साथे चेतावनी—पुरान भवनमे समान नमूना प्रचलित हो सकैत।

“ई वही कचहरी?” माधवी पुछली।

“सम्भावना अछि,” अभिराम कहलक। “पक्का नहि। भवनक निर्माण-अभिलेख चाही।”

जयनारायण सन्तुष्ट भेलाह। “आब तोहर भाषा सुधरि रहल अछि।”

अभिराम हँसल। “ककर—हमर कि सूत्रक?”

“दुनूक।”

माधवी फोटोमे लाल रंग चढ़ाओल ओढ़नी देखैत रहली। सपनाक पोखरि फोटोमे नहि छल। पायल नहि। मुदा लाल ओढ़नी छल, देवालक जाली छल। संयोग? दिनमे सुने किछु पुरान कथा जे मोन रातिमे रंगि देलक? ओ वसुधाक मेज पर कखनो एहि फोटो कातसँ गुजरल रहत? सम्भव। मनुष्य अपन देखल सभ चीज मोन नहि राखैत, मुदा आँखि किछु बचा लैत। ई उत्तर ओकरा तर्कसंगत लगल। तखनहुँ देहक सिहरन पूरा नहि गेल।

अभिराम ओकर चुप्पी बुझलक। “डर लगैत?”

“थोड़ेक।”

“फोटो सँ?”

“फोटो सँ कम। ई सोचि जे दीदी ई सभ हमसभ सँ पहिने देखलीह, आ ओ बुझि रहल छलीह किछु बहुत पुरान बात आइक मुकदमा मे जीवित अछि।”

“पुरान कागज जीवित नहि होइत।”

माधवी ओकरा देखली।

अभिराम तुरन्त जोड़लक, “ठीक, काका कहताह आदति जीवित रहैत। कागज परिणाम देत।”

“आ स्मृति?”

“स्मृति...” ओ कने रुकल। “स्मृति डेटा नहि, मुदा डेटा पर असर करैत अछि।”

“ई प्रेमक उत्तर जकाँ अधूरा अछि।”

अभिराम मुस्कुरायल। “तोरा सभ बात प्रेम पर आनबाक आदति बनि रहल छह।”

“आदति साक्ष्य होइत अछि ने?”

“काका सँ पूछ।”

दूर ठाढ़ जयनारायण हुनकर बात सुनि हँसैत छलाह।

साँझ धरि भवन-अभिलेख सँ पहिल पुष्टि आयल। वर्तमान पुरान कचहरीक एक पंख १९२०क दशकमे जिला कार्यालयक भण्डार छल; १९३४ भूकम्पक बाद किछु महीना राहत-लेखा आ अस्थायी शिविर कार्यालय रूपमे उपयोग भेल। वेंटिलेटरक मूल लोहेक जाली एखनो बदलल नहि—मरम्मत केवल बाहरी चौखटमे।

माधवी फोटो फेर देखली। पाछाँक भवन अब केवल ‘एके जकाँ’ नहि, लगभग ओही ठाम बनि रहल छल जतऽ वसुधा मरी भेटलीह।

जयनारायण टेबल पर उँगुरी रखि समय-रेखा बनौलनि। “१९३४—भूकम्प। राहत शिविर। कुसुमा। रासबिहारी। सात टोला नाम चढ़बाक संकेत। २०२६—वसुधा ओही जमीनक मुकदमा, ओही पुरान भवनमे पुरान नकल खोजैत। बीचमे नब्बे बर्ख। हमरा एखन कथा नहि चाही; अभिलेख चाही।”

विनय कहलक, “रहमत काका पुरान पत्र पढ़ि सकैत छथि?”

माधवी उत्तर देली, “ओ कागज बान्हैत-बान्हैत आध शहरक लिखावट चिन्हैत छथि।”

“कल्हि हुनका बजाउ।”

माधवी फोटो पाछाँक “कुसुमा” नाम पर नजर टिकौने रहल। ओकरा अकारण लगल जे नाम पढ़ला मात्र सँ तरुण स्त्रीक चेहरा चित्रसँ कने स्पष्ट भऽ गेल। ई भ्रम छल कि ध्यान—कहब कठिन।

घर घुरबाक पहिने सासु माधवी केँ अलग बजेलनि। हाथमे एक छोट कपड़ाक पुड़िया। “ई कोठरीक आलमारीक कोनमे छल। पुलिसक सूचीमे गेल कि नहि, देखू।”

माधवी पुड़िया नहि खोलली। विनय केँ देली। खुलला पर भीतर एक पुरान चाभी आ कागजक अति छोट पत्ती। पत्ती पर केवल दू शब्द—“देवालक पेट।”

सभक चेहरा बदलल।

जयनारायण कागज दूरहिसँ देखलनि। “लिखावट?”

माधवी साँस रोकि कहली, “दीदीक नहि।”

“पुरान?”

“लगैत।”

अभिराम छवि पैघ कएलक। स्याही फिक्की, कागज रेशेदार। सूत्र तत्काल किछु कहि नहि सकल।

जयनारायण मुस्कुरेलाह नहि। केवल कहलनि, “एखन एहि दू शब्द केँ ओकरहि जगह रहय दिअ। देवाल बहुत अछि। पेट ककर, बादमे।”

माधवी बाहर निकलली। साँझक आकाशमे बादर फेर जुटि रहल छल। लाल ओढ़नी पहिरने कुसुमा, नाम लिखैत रासबिहारी, पुरान कचहरीक वेंटिलेटर, सात टोला, नील धागा, आ 'देवालक पेट'—सभ एक संग मनमे घुमड़ल।

आ राति, बहुत दिन बाद, ओकरा सपना नहि आयल। मुदा भोर उठिते पहिल नाम जे मोनमे छल, से वसुधा नहि—कुसुमा छल।

अध्याय १३ — भूकम्पक बर्ख

माघ १९९० साल। धरती थरथरा कऽ थमि गेल छल, मुदा लोकक देह भीतरक कम्पन कई दिन धरि नहि थमल। गामक गाम माटि, खरही आ ईटक ढेरी बनल पड़ल छल। पोखरिक पानि किनार छोड़ि ऊपर चढ़ि आयल, कूपक पानि मटमैला, आ जे बाट काल्हि धरि बैलगाड़ी चलबाक योग्य छल, ओतऽ कतहु चौड़ा चीरा, कतहु धँसल माटि। लोक घरक टूटल देवालसँ बेसी अपन भीतरक टूटन सँ डेराइत छल।

जिला-कचहरीक पाछाँक पुरान भण्डार-भवन राहत-लेखा आ अस्थायी शिविरक काज लेल खोलल गेल। काठक आलमारी बाहर खिसकाओल, बोरा बिछाओल, बाँसक टाट टाँगल, आ बरामदामे नाम लिखबाक दू टेबुल राखल गेल। भवनक ऊपर छोट आयताकार वेंटिलेटर छल—चारि तिरछा लोहेक पत्ती, बीचमे गोल जोड़। बरखा नहि छल, तखनहुँ भीतर सीलनक गन्ध। देवालक कतेको भागमे महीन दरार साँपक सूत जकाँ पसरल।

कुसुमा पहिल दिन ओतऽ अपन माय संग अएलीह। घरसँ निकलैत काल हुनकर दादी कहने छलीह, “राहत देबाक काज अछि तँ देब, मुदा नाम-धामक कागजमे घुसबाक प्रयोजन नहि।” कुसुमा उत्तर नहि देने छलीह। घरक बूढ़ लोकनि बुझैत छलाह जे पढ़ल बेटी परोपकारमे हाथ बँटा देत तऽ घरक मान बढ़त; मुदा पढ़ल आँखि जँ प्रश्न पूछए, तखन ओही विद्या पर संशय शुरू भऽ जाइत।

कुसुमा बीस बर्खक छलीह। अक्षर नीक, हिसाब तेज, आ बोलबामे एहन संयम जे सोझाँक लोक कतेको बेर बुझि नहि पबैत जे ओ सहमत छथि कि प्रश्न बचा कऽ राखने छथि। घर जमींदारीक पुरान शाखा सँ जुड़ल छल। जमीन एतेक नहि बचल छल जे पुरखाक कथा जकाँ सुनाइत, मुदा नाम एखनहुँ लोकक बोलीमे वजन रखैत छल।

राहत-शिविरमे हुनका पहिल काज देल गेल—अन्न लेनिहार परिवारक नाम, गाम, टोला आ लोक-संख्या लिखब। सूची बनौनिहार युवक टेबुलक दोसर कात बैसल छल। दुबला देह, साँवला रंग, माथ पर सधल केश, दहिना हाथक बीचमा उँगुरी पर स्याहीक स्थायी दाग। नाम रासबिहारी। कचहरीमे नकल करबाक काज सीखैत छलाह; भूकम्पक बाद अतिरिक्त हाथक जरूरत भेल तऽ हुनका राहत-लेखामे लगा देल गेल।

पहिल भेटमे दुनू एक-दोसराक नामो ठीक सँ नहि सुनलनि। बरामदा भरि लोकक आवाज छल—ककरो बच्चा कानैत, केओ अनाजक माप पर झगड़ैत, केओ अपन गामक नाम फेर-फेर कहैत। एक बूढ़ि स्त्री अएलीह। पूछल गेल—“टोला?”

ओ कहलीह, “बड़की मुसहरीक पच्छिम, पीपर तर।”

लिखनिहार एक बाबू झुँझला कऽ बजलाह, “एना कोना लिखब? मौजा कहू।”

बूढ़ि स्त्री चुप। हुनका मौजाक नाम नहि बूझल छल। अपना घर धरि पहुँचबाक बाट ओ पीपर, पोखरि, मठ, माटिक दूह आ लोकक घरसँ चिन्हैत छलीह; कागजक मौजा हुनकर जीवनमे कतहु नहि छल।

रासबिहारी माथ उठौलनि। “अहाँक टोला लग कोन पोखरि?”

“सरौंजा।”

“सरौंजाक पच्छिम?”

“हँ।”

कुसुमा सूचीमे पहिने लिखल एक नाम देखलीह। “ई ‘हरिपुर उत्तर’क अन्तर्गत पड़ैत हएत?”

रासबिहारी हुनका दिस तकलनि। “हँ, मुदा ई लोक अपन टोला केँ हरिपुर नहि कहैत।”

“तखन दुनू लिखू।”

रासबिहारीक कलम एक क्षण ठमकल। “कागजमे जगह कम अछि।”

कुसुमा पहिल बेर मुस्कुरेलीह। “लोकक घरसँ कागजक जगह पैघ भेल?”

रासबिहारी सेहो हँसलाह। “कागज बनौनिहार सँ ई प्रश्न पूछू। हम तऽ जे जगह देल गेल, ताहिमे लोक केँ समेटैत छी।”

ओ दिन सँ सूचीमे दू नाम लिखल जाए लागल—सरकारी मौजा आ लोकक चलित टोला। छोट परिवर्तन छल, मुदा कुसुमा देखलीह जे कतेको बूढ़ लोक अपन टोला कागज पर देखिते आँखि फेर पढ़बाबय चाहैत। मानो नाम लिखला सँ टूटल घर एक क्षण लेल फेर ठाढ़ भऽ जाइत हो।

दुपहरक बाद एकटा बालक अपन माय लेल चिउड़ा लऽ जाइत ठोकर खा गेल। बाँसक माप उलटि गेल। कुसुमा उठि अनाज बटोरए लगलीह। घरसँ संग आयल दासी फुसफुसाइत रोकलक, “अहाँ हाथ किएक लगबैत छी? हम छी ने।”

कुसुमा ओकरा देखलीह। “अनाज माटिमे पड़ल अछि, कुल-नाम नहि।”

रासबिहारी सुनि लेलनि, मुदा किछु कहलनि नहि। साँझमे सूची समेटैत काल ओ केवल एतबे पुछलनि, “अहाँ सभ दिन एतऽ आएब?”

“जतऽ धरि घरक लोक नहि रोकत।”

“रोकत किएक?”

“कारण खोजबाक काज घरक पैघ लोक नीक सँ करैत छथि।”

रासबिहारीक हँसी दबि गेल। “तखन कारण भेटलाक पहिने काज बेसी कऽ लिअ।”

कुसुमा घुरि देखलीह। युवकक स्वर हलुक छल, मुदा आँखिमे विनोदसँ बेसी समझदारी। ओहि साँझ घर लौटैत हुनका पहिल बेर मोन पड़ल जे नाम-नकल करनिहार युवकक उँगुरी पर स्याहीक दाग छल।

अगिला कतेको दिन राहत-शिविर लोकक अस्थायी संसार बनि गेल। केओ तीन दिन बाद अपन परिवारक सदस्य खोजि पबैत, केओ नाम लिखबैत काल चुप भऽ जाइत—जे नाम आब ककरो उत्तर नहि देत। कुसुमा सूची लिखैत-लिखैत बुझलीह जे आपदामे सभक दुख एक रंगक नहि होइत। पक्का मकान खसल तऽ धनीक सेहो छत गेल; मुदा जमीन, नगद, नातेदारी आ बाहरक आसरा ओकरा फेर उठबाक अलग बल दैत। जमीनहीन लोकक झोपड़ी खसल तऽ संगहि ओकर ठामक प्रमाणो बहि जाइत।

शिविरक एक कोनमे माटिक बरतन बनौनिहार भोला कुम्हार अपन दू बच्चा संग बैसल रहैत। ओकर घरक चाक मलबामे दबि गेल छल। राहतमे भेटल पीतल कटोरी हाथमे घुमबैत कहलक, “ई कटोरी खायब लेल नीक, मुदा हमर हाथ चाक बिना कोना रहत?” कुसुमा पहिने बुझि नहि सकलीह। बादमे रासबिहारी कहलक, “लोक केँ केवल अनाज नहि, अपन काजक औजारो चाही। पेट बचल तऽ जीवन बचल मानि लेब अधूरा हिसाब अछि।”

अगिला दिन कुसुमा घरसँ पुरान लकड़ीक एक गोल तख्ता आ लोहार लग सँ लोहाक कील मँगबा लेलनि। पूरा चाक नहि बनल, मुदा भोला ओकरा देखि एतेक प्रसन्न भेल जे तख्ताक किनार हथेली सँ फेरैत रहल। “चलत,” ओ कहलक, “पहिने छोट दीया बनायब। लोकक घर टूटल, तखनहुँ साँझ होएत तऽ दीया चाही।”

रासबिहारी ई दृश्य दूर सँ देखलनि। “अहाँ राहतमे नब विभाग खोलि देलहुँ—मन बचाउ विभाग।”

कुसुमा कहलनि, “अहाँ हर बातक नाम किएक रखैत छी?”

“नाम बिना कचहरीमे किछु टिकैत नहि।”

“तखन प्रेमक नाम की?” प्रश्न मुँह धरि आयल, मुदा कुसुमा निगलि गेलीह। एखन ओ प्रश्न हुनको भीतर नामहीन छल।

एक दोसर परिवारक स्त्री, जनकबत्ती, अपन पति केँ भूकम्पमे गमा देने छलीह। ओ राहत-सूचीमे पति नाम कटेबाक समय काँपि उठलीह। “नाम काटू नहि,” ओ कहलीह, “ओ घरक मालिक छलाह।” बाबू झुँझलायल—“मरल लोकक हिस्सा अलग लिखल जाएत।” जनकबत्ती रोइ नहि, केवल पन्ना पकड़ि लेलनि। कुसुमा बुझलीह जे सरकारी पाँतिमे नाम काटब कतेक बेर मनुष्यक जीवनसँ दोसर बेर ककरो हटेब जकाँ होइत अछि। रासबिहारी पन्ना नहि फाड़लनि; नया टिप्पणीमे लिखलनि—“मृत, परिवारक पूर्व मुखिया”—आ जनकबत्तीक नाम अगिला पाँतिमे चढ़ौलनि।

“स्त्रीक नाम पहिने किएक नहि?” कुसुमा पुछलीह।

रासबिहारी कलम धोइत कहलक, “किएक तँ कागज बनौनिहार लोक घर केँ पुरुषक नामसँ चिन्हैत अछि।”

“आ घर चलौनिहार?”

“ओ प्रश्न कागज कम पूछैत अछि।”

कुसुमा ओहि दिन अपन नोटमे लिखलीह—‘जे प्रश्न कागज नहि पूछए, ओ प्रश्नो इतिहासमे रहैत अछि।’ बादमे ई पाँति हुनका अपनहि साहस जकाँ लगत।

एक दिन सात अलग-अलग टोला सँ लोक आएल। सभक बात एके जकाँ—भूकम्पक बाद पुरान बस्ती रहबाक योग्य नहि, तें नदीसँ कने ऊँच जमीन पर अस्थायी छप्पर बनौने छथि। मुदा ओ जमीन पर दू घरानाक दावा। राहतक बाँस खड़ा करिते रोक-टोक।

“हमरा सभ केँ कहल गेल जे ई जमीन मालिकक अछि,” एक मल्लाह बजलाह।

दोसर वृद्ध कहलनि, “हमर दादा कहैत छलाह, बरखा-बाढ़िक बखत एतऽ सभ टोला मवेशी बाँधैत। साझा ऊँच ठाम छल।”

कुसुमा नाम सुनलीह—डोमाही, नावटोली, कमारपट्टी, मुसहरी, धोबियाही, कहारटोली, आ छोट मल्लाह टोला। सात नाम।

रासबिहारी पुरान नक्शाक नकल मँगौलनि। कागज पर रेखा अस्पष्ट छल। सीमाक एक चिन्ह—“पुरान पीपर”—भूकम्पमे आध जड़सँ उखड़ि गेल छल। दोसर चिन्ह—“कच्चा पोखरि”—माटि भरि स्वरूप बदलि चुकल।

“जमीन ककर?” कुसुमा पुछलीह।

रासबिहारी उत्तर देबाक पहिने चारू कात देखलनि। “कागज कहैत अछि एक बात, उपयोग दोसर। आ पुरान नकल पूरा नहि।”

“पूरा नकल कतऽ?”

“कचहरीक भीतरक पुरान बस्ता। भूकम्पमे आलमारी खसल। किछु कागज भीजल। खोज चलि रहल अछि।”

“हम देखब?”

रासबिहारी हुनका एना देखलनि मानो प्रश्न सुनलनि जरूर, मुदा उत्तर देब खतरनाक हो। “अहाँ राहतक स्वयंसेविका छी। अभिलेखक कोठरी स्वयंसेविकाक ठाम नहि।”

“आ जमीनक प्रश्न राहतक ठाम अछि कि नहि?”

ओ चुप रहलाह। फेर धीरे कहलनि, “अहाँ सभ प्रश्न सीधा किएक पूछैत छी?”

“टेढ़ प्रश्नक उत्तर लोक टेढ़ दैत अछि।”

“सीधा प्रश्नक उत्तर लोक चुप रहि कऽ दैत अछि।”

दुनू एक क्षण एक-दोसराक आँखि देखलनि। बरामदा पर कोनो बच्चा हँसल। बाहर धूरि उड़ल। कुसुमा केँ अनचिन्हार ढंगसँ लगल जे ई बातचीत सूचीक काजसँ कने आगाँ बढ़ि गेल अछि।

ओहि साँझ रासबिहारी हुनका एक पुरान नकल देखौलनि—बाहर नहि, बरामदाक अन्तिम टेबुल पर, सभक सामने। कागजक किनार भीजल, अक्षर किछु मेटायल। ओतऽ “सामुदायिक चरनोत्थान” सन कोनो पुरान पद स्पष्ट नहि छल; मुदा “सर्वसाधारण उपयोग” आ सात बस्तीमे सँ तीनक पुरान नाम पढ़ाईत छल।

कुसुमा पुछलीह, “एतबे सँ ओ लोक रहि सकत?”

“नहि।”

“तखन?”

“गवाही, पुरान लगान-रसीद, सीमाक प्रमाण, उपयोगक साक्षी, आ जे नकल गायब अछि से। कागज अकेले लोक केँ घर नहि दैत। कागजक संग लोक चाही।”

“लोक बिना कागज?”

रासबिहारी कागज मोड़लनि नहि; दू पातक बीच सीधा राखलनि। “लोक बिना कागज कतेको पीढ़ी रहि लैत अछि। मुदा जखन ककरो हटेबाक मन हो, तखन सभसँ पहिने कागज पूछल जाइत अछि।”

ई वाक्य कुसुमाक भीतर टिकि गेल।

राति घरमे भोजनक समय पिता राहत-शिविरक चर्चा पुछलनि। कुसुमा सात टोला बात कहब चाहलीह, मुदा दुआरि लग बैसल काकाक चेहरा देखिते रुकि गेलीह। काका ओही ऊँच जमीनक एक भाग पर घरानाक दावा देखैत छलाह।

“शिविरमे नाम लिखू, औषधि बाँटू,” काका कहलनि, “जमीनक नाप-जोख सरकारी लोकक काज। गरीब लोक आपदाक बखत जेठाम छप्पर गाड़ि दे, ओ जमीन ओकर नहि भऽ जाइत।”

कुसुमा चुपचाप भात मसलैत रहलीह। पिता हुनकर मौन देखलनि। “की सोचैत छह?”

“किछु नहि।”

दादी दूर सँ बजलीह, “ई छोड़ी जखन ‘किछु नहि’ कहैत अछि, तखन ओकरे भीतर बेसी किछु चलैत अछि।”

सभ हँसल। कुसुमा सेहो। मुदा राति अपन कोठरीमे गेलीह तऽ ओ सात टोला नाम कागज पर फेर लिखलीह। एक-एक नामक आगाँ राहत-शिविरमे भेटल लोकक चेहरा मोन पाइलीह।

फेर सबसे नीचा एकटा नाम लिखलीह—रासबिहारी।

लिखिते लाज लागल। कागज मोड़ि दीपकक लौ लग नेलीह, मुदा जरौलनि नहि। संदूकक भीतर पोथीक पाछाँ राखि देलीह।

भूकम्प घरक देवाल फोड़ने छल; कुसुमाक भीतर एकटा एहन महीन दरार पड़ि चुकल छल जेकर आवाज एखन केवल ओ स्वयं सुनि सकैत छलीह।

अध्याय १४ — मनाहीक नेह

भूकम्पक एक मास बादो धरती बेराबेरी हलुक काँपि उठैत छल। कखनहुँ सचमुच, कखनहुँ लोकक देह पहिने काँपैत आ बादमे बुझाइत जे जमीन स्थिर अछि। राहत-शिविरक भीड़ घटल, मुदा नामक सूची बढ़ैत गेल। टूटल घरक जगह छप्पर उठल, रोगक डर घटल, आ लोक फेर अपन पुरान झगड़ा मोन पाड़ए लगल। आपदा सभ भेद मेटा नहि दैत; कई बेर केवल किछु दिन लेल ओकरा धूरिमे झाँपि दैत अछि।

कुसुमाक घरमे आब शिविर जाएब पर प्रश्न बढ़ि गेल। काका स्पष्ट कहि देलनि, “रोज-रोज कचहरीमे बैसल ठीक नहि। राहतक पहिल आपात बीति गेल। घरक कनियाँ-बेटीक मर्यादा अलग होइत अछि।”

कुसुमा बजलीह, “हम कनियाँ नहि, बेटी छी।”

“बेटी काल्हि कनियाँ होएत।”

“तखन काल्हिक मर्यादा आइ सँ किएक?”

काका तमतमौलाह। पिता बीचमे पड़लाह। “बहुत तर्क नहि। सप्ताहमे दू दिन जा सकैत छह।”

कुसुमा सिर झुका लेलनि। दू दिन अनुमति छल; बाकी पाँच दिनक उपाय सोचबाक समय सेहो।

घरक पुरान पुस्तक-कोठरीमे हुनकर दादीक नछत्तर-बही छल। दादी जन्मक तिथि, विवाह, यात्रा, रोग आ घरक महत्त्वपूर्ण घटना नछत्तरक नामक संग लिखैत छलीह। कुसुमा बचपनसँ बही खोलि चित्र-जकाँ अक्षर देखैत छलीह। दादी भविष्य कहबाक दम्भ नहि करैत छलीह; कहैत, “आकाशक नाम मोन राखबाक गाँठि अछि। घटना मनुष्य करैत अछि।”

एक साँझ दादी बही खोजैत कुसुमा केँ पकड़लीह। “की ताकैत छह?”

“रोहिणी कखन?”

दादी चशमाक ऊपर सँ देखलनि। “एकाएक आकाशमे रुचि?”

कुसुमाक कान गरम भऽ गेल। “शिविरक एक स्त्री अपन बेटी लेल पूछने छलीह।”

“झूठ बजैत काल तोहर बामा भाँह कने ऊपर उठैत अछि।”

कुसुमा चुप।

दादी बही बन्द कएलनि। “जकर नाम नहि कहबाक हो, ओकरा नाम नहि कह। मुदा अपन मोन सँ झूठ नहि बजा।”

“अहाँ हमरा रोकब नहि?”

“हम एखन किछु जानिते नहि छी, रोकब की?” दादीक आँखिमे हँसी छल। “मुदा जे बाट घरक लोकसँ नुकाकऽ चलए पड़य, ओहि बाटमे काँटा बेसी होइत अछि। पयर देखैत चलिह।”

कुसुमा बही सँ नछत्तरक क्रम कागज पर उतारि लेलनि। ओहि सँ एक खेल जन्मल।

रासबिहारी सँ सीधा पत्र देब कठिन छल। राहत-शिविरमे सभ आँखि रहैत। कुसुमा पहिल पचीं एक पुरान राहत-सूचीक नकल भीतर राखि देलीह—“रेवतीक बादक दिन, पीपरक पाछाँ, सूची तीन।” रासबिहारी पहिने बुझलाह नहि। दोसर दिन सूची तीनक बीच उत्तर भेटल—“मृगशिरा। तेसर पहर। नकल नहि, मूल प्रश्न।”

ओहि दिन सँ नछत्तर हुनकर गुप्त संकेत बनि गेल। नामसँ अधिक समय आ ठाम बतबैत। “रोहिणी” माने पुस्तक-कोठरी लगक पुरान कुआँ, “मघा” माने कचहरीक पाछाँ पीपर, “रेवती” माने पत्र पहुँचल, “आर्द्रा” माने सावधान—घरक लोक लग अछि। ई आकाशक विद्या नहि, दू तरुण मनक गुप्त भाषा छल।

पहिल बेर कुसुमा रासबिहारी सँ शिविरक बाहर कचहरी पाछाँक पीपर तर भेटलीह। दिनक उजास छल, लोक आ-जा रहल, तँ भेटमे अपराधक भाव कम छल। रासबिहारी हाथमे तीन कागज लेने छलाह।

“सात टोला विषय?” कुसुमा पुछलीह।

“हँ। मुदा पहिने एक बात। अहाँक घरक नाम एक पुरान दावामे अछि।”

कुसुमा ठमकि गेलीह। “जानैत छी।”

“पूरा?”

“काका दावा करैत छथि। कतेक पुरान, कोन आधार—नहि।”

रासबिहारी पहिल कागज देखौलनि। “ई भूकम्पसँ पहिनेक नापी-नक्शाक नकल। दोसर एक पुरान लगान-रसीदक उल्लेख। तेसर राहत-लेखामे सात टोला परिवारक अस्थायी बसोबास। मुदा मुख्य बस्ता नहि भेटल।”

“ककरा लग रहत?”

“कचहरीक पुरान अभिलेखमे हएत। वा ककरो घरमे नकल।”

“हमर घरमे?”

“हो सकैत अछि।”

कुसुमा हुनकर चेहरा देखलीह। “अहाँ हमरा एहि लेल भेटैत छी जे हमर घरक कागज चाही?”

रासबिहारीक रंग बदलल। “अहाँ ई बुझली?”

“प्रश्न अछि।”

“तखन उत्तर सुनू। सात टोला कागज लेल हम अहाँक सहायता चाहैत छी। मुदा अहाँ सँ भेटबाक कारण केवल कागज रहित, तऽ हम नछत्तरक नाम सीखबाक झंझट नहि करितहुँ।”

कुसुमा चाहितो हँसी रोकि नहि सकलीह। “अहाँ सीखलहुँ कहाँ? दू बेर संकेत उलटा पढ़लहुँ।”

“तैं कहैत छी—झंझट।”

ओहि क्षणक हलुक हँसी दुनूक बीचक डर कने पिघला देलक। मुदा डर गेल नहि।

रासबिहारीक अपन जीवन सेहो कचहरीक टेबुलसँ बाहर अलग रूप धरैत छल। शहरक किनार एक भाड़ाक कोठरीमे माय, छोट बहिन आ ओ रहैत छलाह। पिता बीमार भऽ गाममे काकाक संग रहि रहल छलाह। रासबिहारी बिहान कचहरी जाएसँ पहिने बहिन केँ पढ़बैत, राति लौटि माय लेल बजारसँ सस्ता साग लबैत। कुसुमा ई सभ बहुत बाद जानलीह, मुदा एक दिन शिविरमे हुनकर डिबिया खुलिते देखलीह—दू सूखल रोटी, थोड़ा गुड़, आ हरियर मिरचाड़।

“एतबे?” कुसुमा अनायास पुछलीह।

रासबिहारी डिबिया बन्द कऽ देलनि। “एतबे मे पेट मानि जाइत अछि।”

“हमर घरसँ भोजन आनल अछि।”

“हम भिखारी नहि।” स्वर पहिल बेर कड़ा भेल।

कुसुमा चोट खा गेलीह। “हम एना नहि कहलहुँ।”

रासबिहारी तुरन्त पछतौलनि। “माफ करब। गरीबीमे लोक कतेको बेर दया देखिते अपमान सुनि लैत अछि, भले सोझाँक लोक ओ बात बजल नहि हो।”

कुसुमा अपन पोटरी खोललीह। “तखन दया नहि। अदला-बदली। हमर तरकारी अहाँक गुड़।”

रासबिहारी मुस्कुरौलनि। “हिसाब बराबर?”

“नहि। गुड़ बेसी मीठ।”

ओहि दिन दुनू एके पीपरक छाँहमे अलग-अलग पत्तल पर भोजन कएलनि। कोनो प्रण नहि, कोनो प्रेमक उद्घोष नहि। मुदा कुसुमा घर लौटि बहुत देर धरि अपन अँगुरीमे गुड़क मीठास मोन करैत रहलीह। नेह कखन पैघ वाक्यसँ नहि, एहन छोट अदला-बदलीसँ बनैत अछि—ई बात हुनका तखन शब्दमे नहि बुझाईत छल।

रासबिहारी नकलनवीस परिवारक छलाह। हुनकर पिता कचहरीमे अर्जीनवीसक सहायक रहि चुकल छलाह। घरमे धन कम, शिक्षा पर जोर बेसी। जातिक हिसाबसँ कुसुमाक घर हुनका बराबरीक वैवाहिक सम्बन्ध मानबाक कल्पनो नहि करित। धनक भेद अलग। घरानाक मान, खानदान, जमीन, कुल-गौरव—ई सभ शब्द कुसुमा बचपनसँ सुनैत आयल छलीह। ओहि दिन पहिल बेर हुनका ई शब्द देवाल जकाँ देखायल।

“अहाँ बुझैत छी ने,” कुसुमा धीरे कहलीह, “ई बात घर धरि गेल तऽ?”

“बुझैत छी।”

“अहाँक काज जा सकैत अछि।”

“अहाँक घर?”

कुसुमा उत्तर देबामे देर कएलनि। “घर रहत। मुदा हम ओहिमे रहब कि नहि, से कहब कठिन।”

रासबिहारी तुरन्त बजलाह, “हम अहाँ केँ घर छोड़बाक कोनो बात नहि कहि रहल छी।”

“अहाँ किछु कहियो नहि रहल छी। बस सूची, कागज, नछतर।”

“तखन आइ कहि दैत छी।”

पीपरक पात हवा सँ खड़खड़ायल। दूर गाड़ीवान बैल केँ हाँकलक। रासबिहारीक स्वर बहुत नीच छल। “अहाँ जे दिन बूढ़ि स्त्रीक टोला नाम कागज पर लिखबेलहुँ, ओ दिन सँ हमरा लगल जे अहाँ लोकक बात सुनैत छी। बादमे बुझलहुँ जे अहाँ हमर बातो सुनैत छी। हम अहाँक बाट जोहैत छी। ई काजक कारणसँ बेसी अछि।”

कुसुमाक हृदय जोर सँ धड़कए लागल। ओ जमीन दिस तकलीह। “ई वाक्य लिखिते नीक रहित।”

“किएक?”

“मुँह सँ सुनला पर उत्तर सेहो मुँह देब पड़त।”

“तखन कागज देब?”

“नहि।”

रासबिहारीक चेहरा एकदम उतरि गेल।

कुसुमा कने मुस्कुरेलीह। “उत्तर एखन देब नहि चाहैत छी। ई ‘नहि’ पत्रक नहि, समयक अछि।”

रासबिहारी साँस छोड़लनि। “अहाँ वकील बनब योग्य छी।”

“घरमे ई कहब, तऽ हमर विवाह दू मास भीतर करा देत।”

“तखन नहि कहब।”

ओहि दिनक बाद हुनकर पत्र बढ़ल, मुदा शब्द बहुत नापि कऽ। प्रेमक पर्चीमे सेहो जमीन, राहत, लोकक नाम घुसि जाइत। कुसुमा एक बेर लिखलीह—“तोहर स्याही हाथमे रहैत अछि, मुदा ओकर दाग कागजसँ बेसी मोन पर किएक पड़ैत?” रासबिहारी उत्तर देलनि—“कागज धोएल जा सकैत अछि, मोनक नकल कतऽ बनत?”

दोसर पत्रमे ओ लिखलनि—“रोहिणी सुरक्षित नहि। आर्द्रा।” कुसुमा बुझलीह जे घरक केओ निगाह राखि रहल अछि।

सचमुच, काका केँ संशय भऽ गेल छल। एक दिन कुसुमा शिविर सँ घुरलीह तऽ दुआरि पर काका ठाढ़। “कचहरीमे रासबिहारी नामक केओ युवक अछि?”

कुसुमाक देह भीतर सँ सिंह गेल, मुदा चेहरा स्थिर। “अछि। नाम लिखैत छथि।”

“तोरा सँ बात करैत अछि?”

“जकर संग एक टेबुल पर काज, ओ बात नहि करत?”

“काजक बात?”

“अधिकांश।”

काका ‘अधिकांश’ पकड़ि लेलनि। “बाकी?”

कुसुमा दादीक बात मोन पाड़लीह—अपन मोन सँ झूठ नहि बजा। “गरीब परिवारक जमीनक बात। पढ़ाइ। पुस्तक।”

काका हँसलाह नहि। “अपन सीमा बुझ। नाम लिखनिहार सभ लोक घरक बराबर नहि होइत।”

कुसुमा पहिल बेर सीधा पुछलीह, “बराबर के तय करैत अछि?”

“समाज।”

“समाजमे हम नहि छी?”

काकाक आवाज कठोर भेल। “बहुत पढ़ाइ छौड़ी केँ घरक बात बिसरा दैत अछि।”

पिता ओही समय भीतर अएलाह। विवाद पूरा सुनलनि नहि, मुदा हवा बुझि गेलाह। राति कुसुमा केँ बजा कऽ कहलनि, “हम तोरा पढ़ेलहुँ कारण तूँ बुझदार बनिहें, घरक विरुद्ध नहि।”

“जँ घर गलत हो?”

पिता आँखि बन्द कऽ कने देर बैसलाह। “घर गलत हो सकैत अछि। मुदा घर छोड़ि सही ठाम कतऽ भेटत, ई जीवन भरि खोजैत रहब।”

कुसुमाक क्रोध कने नरम भेल। “हम घर छोड़ब नहि चाहैत छी।”

“तखन घरक आगि नहि बन।”

“आ जँ आगि पहिनेसँ हो?”

पिता उत्तर नहि देलनि।

ओहि राति कुसुमा पहिल बेर रासबिहारीक पत्र छाती लग राखि कानलीह। नेह केवल मधुरता नहि; नेह ओहि समय भय बनैत अछि जखन मनुष्य बुझैत अछि जे अपन प्रिय केँ अपन संसारमे जगह देब सहज नहि।

दू दिन बाद हुनका एक पर्ची भेटल। केवल नछत्तरक एक नाम—“अनुराधा”—आ नीचा एक पाँति: “सात टोला कागज लेल तीन बूढ़ साक्षी भेटल। अहाँक गवाही बिना कड़ी अधूरी।”

कुसुमा पर्ची कई बेर पढ़लीह। प्रेमक प्रश्न आ जमीनक प्रश्न फेर एक कागज पर आबि ठाढ़ भेल छल।

ओ उत्तर लिखलीह—“रेवती। हम आएब। मुदा एहि बेर प्रेमक बात नहि। पहिने लोकक घर।”

रासबिहारीक उत्तर अगिला दिन भेटल—“लोकक घर पहिने। सम्भवतः एहि कारण नेह अछि।”

कुसुमा पर्ची मोड़ि नील सूतक पातळ टुकड़ा सँ बान्हलीह। लाल धागा घरक पूजा-पेटीमे सहज भेटैत; नील सूत हुनकर कढ़ाइक डिबियामे छल। ओ नील रंग केँ अपन गुप्त चिह्न बना लेलनि—नछत्तर समय बताओत, नील गाँठि कहत जे पत्र निजी अछि।

दादी ओहि दिन कुसुमाक कढ़ाइ देखैत कहलीह, “नील सूत बड्ड खर्च होइत छह?”

कुसुमा चौंकि गेलीह।

दादी मुस्कुरेलीह। “हम बूढ़ छी, अन्हर नहि।”

“अहाँ ककरो कहब?”

“जतऽ धरि तोहर पयर काँटा पर पड़ि रक्त नहि बहए, हम बाट नहि रोकब। मुदा मोन राख—नेह अपन सत्य माँगैत अछि। आध झूठ पर नेह अधिक दिन नहि टिकैत।”

कुसुमा हुनकर गोड़ लग बैसि गेलीह। बाहर साँझ उतरि रहल छल। आकाशमे सचमुच कोन नछत्तर छल, कुसुमा नहि जानैत छलीह। हुनका लेल ओ राति आकाशसँ बेसी स्पष्ट दू चीज छल—रासबिहारीक लिखावट, आ सात टोला लोकक घरक प्रश्न।

दुनू बाट आब एके ठाम भेटए जा रहल छल।

अध्याय १५ — सात टोला

फागुनक आरम्भमे सात टोला लोक राहत-शिविरक पाछाँक मैदानमे जुटल। भूकम्पक तुरन्त बादक भय आब रोजक चिन्तामे बदलि चुकल छल। छप्पर ठाढ़ छल, मुदा प्रश्न ई जे ओ छप्पर कतेक दिन ठाढ़ रहत। जमीन पर दावा करनिहार घरानाक कारिन्दा दू बेर बाँस उखाड़ि चुकल छल। तेसर बेर स्त्री सभ बाँस पकड़ि ठाढ़ रहलीह। मारि-पीटि टरल, मुदा साफ भऽ गेल—कागज बिना बरखा आबए पहिने लोक फेर उजड़ि सकैत अछि।

रासबिहारी सात टोला सँ दू-दू प्रतिनिधि बजौलनि। कुसुमा खुल्लमखुल्ला नहि, अपन माय संग राहत बाँटबाक बहाना सँ अएलीह। ओ दूर सँ बैसल बैठक सुनैत छलीह। माटि पर चटाइ, बीचमे पुरान नक्शा, दूर रसीद, राहत-सूची, आ गामक वृद्ध लोकक कथन।

“सभक बात एक कागजमे किएक?” एक वृद्ध धोबी पुछलनि। “हमर टोला अलग, हुनकर अलग।”

रासबिहारी कहलनि, “किएक तँ जमीनक ऊँच पट्टी साझा उपयोगमे छल। अलग-अलग दावा करब तऽ सात कमजोर कागज बनत। एक संग करब तऽ पुरान उपयोगक एक कथा बनत।”

मल्लाहिन सीता देवी बजलीह, “कथा नहि, सच।”

“हँ, सच। मुदा कचहरी सच केँ कागजक रूपमे पूछत।”

कुसुमा दूर सँ सुनि रहल छलीह। हुनका मोन पड़ल—लोक बिना कागज कतेको पीढ़ी रहि लैत अछि; हटेबाक समय कागज पूछल जाइत अछि।

दस्तावेज बनबाक काज तीन दिन चलल। पहिल दिन परिवारक नाम आ पुरान बसोबास। दोसर दिन सीमाक चिन्ह। तेसर दिन पुरान उपयोगक साक्ष्य। प्रत्येक बात पर मतभेद। केओ कहैत पीपर सीमा छल, केओ कहैत पीपरक दू गाछ छल। पोखरिक पुरान धार किधर? चरवाहा मवेशी कतऽ बाँधैत? विवाह-ब्याहक समय सामूहिक चूल्हा कतऽ जरैत? नदी पुरान साल कतऽ काटने छल? रासबिहारी सभ लिखैत, फेर बेराबेरी पढ़ि सुनबैत।

सात टोला प्रतिनिधि सभक अपन-अपन चिन्ता छल। डोमाहीक रामसखी केँ डर छल जे कागज बनलाक बादो ऊँच जातिक लोक हुनका टोला सँ दूर धकेलत। नावटोलीक जगरनाथ

कहैत छलाह, “हम नदीक लोक छी, मुदा बच्चा सभ केँ विद्यालय धरि सुख्खा बाट चाही।”
कमारपट्टीक फुलेश्वर लोहारक प्रश्न अलग—नया ठाम लोहारखाना जरत तऽ धुआँ लेल जगह
देल जाएत कि फेर शिकायत? मुसहरीक फेकनी देवी कहलनि, “हमरा नाम सूचीमे रहत, ई
पहिने देखाउ; जमीन बादमे।”

रासबिहारी प्रत्येक माँग अलग पन्ना पर लिखलनि। कुसुमा पुछलीह, “ई सभ मुख्य
दस्तावेजमे जाएत?”

“सभ नहि। मुदा बैठकक लेखा रहत। काल्हि केओ कहत जे केवल जमीन माँगल गेल,
तऽ ई पन्ना कहत जे लोक जीवनक जगह माँगैत छल।”

सीता देवी बीचमे हँसि कहलीह, “बाबू, कागजमे हमर बकरीक नामो लिखि दिअ, ओकरो
घास चाही।”

सभा हँसि पड़ल। तनाव कने हलुक भेल। रासबिहारी उत्तर देलनि, “बकरीक नाम अलग
परिशिष्टमे।”

कुसुमा देखि रहल छलीह—कागज बनब केवल कानूनक काज नहि; लोक केँ अपन बात
स्पष्ट कहब सिखेबो काज अछि। जे स्त्री पहिल दिन नाम कहबामे काँपैत छलीह, तेसर दिन
सीमा पर प्रश्न उठा रहल छलीह। जे वृद्ध पहिने ‘बाबू जे लिखत’ कहैत छलाह, आब पढ़ि
सुनबैत काल एक शब्दो गलत भेटला पर रोकैत छलाह। दस्तावेज हुनकर आवाजक प्रतिलिपि
बनि रहल छल, दान नहि।

कुसुमा एक बात पर चौंकलीह। हुनकर घरक पुरान कारिन्दा महेन्द्र झा सेहो साक्षी देब
आएल छलाह। उम्र सत्तर लग। ओ कहलनि, “हम बालक रही तखन ई पट्टी पर बाढ़िक समय
सभ जातिक मवेशी बान्हल देखल। मालिक लोक रोकैत नहि छल।”

“मालिक ककरा कहैत छी?” रासबिहारी पुछलनि।

महेन्द्र झा कुसुमाक दिस देखलनि। हुनका पहिचानलनि। फेर कहलक, “जमीनक नाम
कागजमे ठाकुरबाड़ीक पुरान खातासँ जुड़ल छल, मुदा उपयोग साझा।”

कुसुमाक काका जँ ई सुनथि तऽ आगि भऽ जाएताह।

रासबिहारी प्रश्न कएलनि, “ई बात लिखि हस्ताक्षर देब?”

बूढ़क हाथ काँपल। “हम नाम लिखि नहि सकैत।”

“अँगूठा।”

ओ चुप। “घरक लोक सुनत।”

सीता देवी तीख स्वरमे बजलीह, “हमर घर उजड़त, तकरा लोक सुनत नहि?”

महेन्द्र झाक चेहरा लजा गेल। कुसुमा उठि हुनका लग गेलीह। “काका, अहाँ जे देखलहुँ से कहू। बाकी डर सभकेँ अछि।”

बूढ़ हुनका देखलनि। “बिटिया, तोहर घरक बात अछि।”

“तैं हम सुनि रहल छी।”

ओहि क्षण सभक नजर कुसुमा पर पड़ल। हुनका बुझाइट छल जे एक बेर बोलल शब्द फेर घरक चौखट भीतर चुपचाप नहि घुसत; ओ पाछाँ प्रश्न लऽ जाएत।

महेन्द्र झा अन्ततः अँगूठा देलनि।

दस्तावेजक प्रारूप बनल। शीर्ष पर सरकारी भाषा कठोर, नीचा सात टोला नाम। बीचमे भूकम्पक बादक अस्थायी पुनर्वासक विवरण आ पुरान साझा उपयोगक साक्षी। रासबिहारी दस्तावेजक संग प्रमाण सभक अलग सूची बनौलनि।

पहिल—पुरान नापी-नक्शाक नकल।

दोसर—लगान-रसीदमे साझा बाटक उल्लेख।

तेसर—राहत-सूचीमे सात टोला परिवारक नाम।

चारिम—तीन बूढ़ लोकक कथन।

पाँचम—भूकम्प पहिनेक एक विवाह-लेखामे सामूहिक चूल्हा-ठामक उल्लेख, जे रहमत नामक तत्कालीन पुस्तक-बँधनिहारक पिता सँ भेटल पुरान बहीमे छल।

छठम—मवेशी बाँधबाक साझा ठामक कारिन्दा महेन्द्र झाक अँगूठा।

रासबिहारी सातम पाँति खाली छोड़लनि।

कुसुमा पुछलीह, “ई खाली किएक?”

“जमीनक घराना दिससँ केओ लिखित स्वीकार चाही जे उपयोग साझा रहल।”

“के देत?”

रासबिहारी हुनका दिस नहि तकलनि। “सम्भवतः केओ नहि।”

कुसुमा बुझि गेलीह।

ओहि साँझ घरमे काका असामान्य रूप सँ शान्त छलाह। एहि शान्तिमे क्रोधक बीज छल। भोजन बाद ओ कुसुमा केँ बैठकमे बजौलनि। पिता, दादी आ माय सेहो। मेज पर रासबिहारीक बनाओल प्रारूपक एक नकल पड़ल छल।

कुसुमाक छाती धक् कऽ भेल।

काका पुछलनि, “ई कागज चिन्हैत छह?”

“हैं।”

“तोरा लग कोना आयल?”

“शिविरमे बनल।”

“ओ युवक बना रहल अछि। रासबिहारी।”

कुसुमा चुप।

“ओ तोरा फँसा रहल अछि। घरक बेटी सँ घरक विरुद्ध गवाही लेत, तखन सात टोला लोक जमीन पर कब्जा मजबूत करत।”

“जँ उपयोग सचमे साझा रहल?”

“कागजमे मालिकाना घरक अछि।”

“मालिकाना आ लोकक पुरान अधिकार एके बात अछि?”

काका मेज पर हाथ मारलनि। “कानून पढ़ल छह?”

“नहि। तँ पूछैत छी।”

पिता कठोर स्वरमे कहलनि, “कुसुमा।”

ओ चुप भेलीह।

काका प्रारूप उठौलनि। “एहि कागज पर घरक केओ नाम नहि जाएत। तोहरो नहि। शिविर जाएब काल्हिसँ बन्द।”

माय रोहटि आवाजमे कहलीह, “भैया, छौड़ी केवल राहतमे हाथ बँटा रहल अछि।”

“राहत नहि, राजनीति।”

दादी एखन धरि चुप छलीह। ओ धीरे पुछलीह, “जमीन पर ओ लोक पहिने मवेशी बाँधैत छल कि नहि?”

काका झुँझलौलाह। “माय, पुरान रीति सँ मालिकाना तय नहि होइत।”

“हम मालिकाना नहि पूछलहुँ। घटना पूछलहुँ।”

काका उत्तर नहि देलनि।

दादी कुसुमा दिस तकलीह। ओ नजर छोट छल, मुदा अर्थ पैघ—अपन मोन सँ झूठ नहि बजा।

कुसुमा राति भरि नहि सूतलीह। एक कात घर। एहि घरमे जन्म, माय, पिता, दादी, आँगनक आम, पुस्तक-कोठरी, बालपन। दोसर कात सात टोला, जाहि लोकक नाम कागज पर चढ़ल भरिसँ आँखिमे उजास आयल छल। बीचमे रासबिहारी—जकर प्रति नेह निर्णय केँ सरल करबाक बदला कठिन बना रहल छल।

ओ अपने आप सँ पुछलीह—जँ रासबिहारी नहि रहिताह तऽ की हम गवाही देब चाहितहुँ?

बहुत देर बाद उत्तर आयल—हँ।

ई उत्तर भेटिते मोन कने स्थिर भेल।

भोरमे दादी हुनकर कोठरीमे अएलीह। हाथमे नछत्तर-बही नहि, एक छोट टिनक डिबिया।
“तोहर परदादीक कागज अछि।”

भीतर पुरान कपड़ामे लपेटल दू रसीद आ एक पत्र। पत्रमे घरक पूर्वज एक स्थानीय अधिकारी केँ लिखने छलाह जे बाढ़िक समय ऊँच पट्टी “गामक लोकक अस्थायी बचाव” लेल खुलल राखल जाए। मालिकाना छोड़बाक बात नहि, मुदा साझा उपयोगक स्वीकार स्पष्ट।

कुसुमा आश्चर्य सँ दादी केँ देखलीह। “ई काका जानैत छथि?”

“जानैत हएत कि नहि, नहि कहि सकैत छी। पुरान संदूकमे छल।”

“अहाँ हमरा किएक देलहुँ?”

दादीक स्वर शान्त। “कागज सत्य नहि बनबैत, मुदा सत्य नुकेबाक औजारो नहि बनबाक चाही।”

“हम ई बाहर लऽ जाऊँ?”

“मूल नहि। नकल बनाउ। मूल हमर लग रहत।”

कुसुमा दादीक गोड़ पकड़ि लेलनि। बूढ़ि हाथ माथ पर राखलनि। “एखन रोअ नहि। कठिन काज पहिने कर।”

कुसुमा घरसँ सीधा कचहरी नहि गेलीह। पहिने एक परिचित शिक्षक लग रसीद आ पत्रक नकल बनौलनि। तकर बाद कपड़ामे नकल लपेटि राहत-शिविर पहुँचल। रासबिहारी हुनका देखिते उठि गेलाह।

“अहाँ केँ रोकल गेल छल।”

“रोकल गेल अछि।”

“तखन?”

“हम रुकल नहि।”

ओ नकल टेबुल पर रखलीह। रासबिहारी पढ़ैत-पढ़ैत चेहरा उठौलनि। “ई भेटल कतऽ?”

“घरमे।”

“अहाँ बुझैत छी एहि सँ की हो सकैत?”

“सातम पाँति भरि सकैत?”

रासबिहारीक आँखि चमकल, मुदा तुरन्त संयत भेलाह। “ई घरक लिखित स्वीकारक पुरान आधार अछि। सत्यापन चाही, मूल देखबाक पड़त, लिखावट आ मुहर मिलत। मुदा हँ— ई बहुत महत्त्वपूर्ण।”

कुसुमा कहलनि, “मूल एखन बाहर नहि आएत।”

“ठीक। बिना मालिकक अनुमति हम नहि माँगब।”

“मालिक?” कुसुमा हलुक हँसी हँसलीह। “दादी।”

रासबिहारी सेहो मुस्कुरौलनि। “तखन सभसँ मजबूत मालिक।”

दस्तावेजक सातम प्रमाणक पाँति भरल गेल—पुरान घराना-पत्रमे आपदा-समय सामुदायिक उपयोगक स्वीकार। तकर नीचा रासबिहारी एक छोट चिन्ह देलनि, केवल क्रम मिलान लेल। कुसुमा पुछलीह, “ई गोलक भीतर सात बिन्दु किएक?”

“सात प्रमाण। बस्ता अलग भऽ गेल तऽ पहचान रहत।”

“नाम?”

“नामक जरूरत की?”

कुसुमा ठट्ठामे कहलनि, “सात टोला, सात प्रमाण—सातम साक्षी लिखि दिअ।”

रासबिहारी कलम रोकि हुनका देखलनि। “कागज साक्षी?”

“मनुष्य झूठ बजैत अछि। कागज कम सँ कम जे लिखल अछि से नहि बदलैत।”

रासबिहारीक चेहरा गम्भीर भेल। “कागजो बदलल जाइत अछि, कुसुमा। पन्ना गायब, स्याही खुरचल, नकल फेर बनल। तँ एक साक्षी पर भरोसा नहि। सात चिन्ह एहि लेल।”

“तखन लिखू—सातम साक्षी।”

ओ मुस्कुरौलनि। दस्तावेज पर नहि, अपन कार्य-पर्ची पर छोट अक्षरमे लिखलनि—
“सातम साक्षी—घराना-पत्र।”

कुसुमा नील सूतक एक अति छोट टुकड़ा अपन कढ़ाइक डिबिया सँ निकालि पर्चीक कोनमे बाँध देलीह। “ई हमर चिन्ह।”

“सरकारी कागज पर धागा?”

“सरकारी नहि। अहाँक कार्य-पर्ची।”

“आ जँ केओ पूछत?”

“कहब सूत अँटकि गेल।”

“अहाँ झूठ नीक बजा लैत छी।”

“बामा भाँह देखू।”

दुनू हँसि पड़ल।

मुदा अगिला काज हँसीक नहि छल। दस्तावेज पर कुसुमाक लिखित कथन चाही छल— ओ अपन घरमे पुरान पत्र देखलनि, नकल प्रस्तुत कएलनि, आ साझा उपयोगक पारिवारिक स्मृति दादी सँ सुनलनि। रासबिहारी कहलनि, “अहाँ पर दबाव पड़त। नहि चाही तऽ हम दोसर बाट खोजब।”

कुसुमा कलम हाथमे लेलनि। “दोसर बाट सत्य बदलत?”

“नहि।”

“तखन।”

ओ अपन नाम लिखलीह—“कुसुमा।” घरानाक पूरा उपनाम लिखबाक ठाम एक क्षण रुकलीह, फेर पूरा लिखि देलीह।

हस्ताक्षर भेला पर विचित्र निस्तब्धता। सात टोला लोकमे सँ केओ ताली नहि बजेलक। सभ बुझैत छल जे कागज बनल अछि, जीत नहि। जीत तऽ बहुत दूर। मुदा सीता देवी आगे बढ़ि कुसुमाक माथ छूलीह। “बिटिया, तोहर घर तोरा पर राग करत।”

कुसुमा कहलीह, “हो सकैत अछि।”

“डर नहि?”

“अछि।”

“तखन लिखलह किएक?”

कुसुमा उत्तर खोजि रहल छलीह। अन्तमे कहलीह, “डर नहि होइत तऽ ई गवाही नहि, सुविधा होइत।”

रासबिहारी दूर सँ हुनका देखैत रहलाह। ओहि नजरमे प्रेम छल, गर्व छल, आ भय सेहो।

साँझ ढलला पर दस्तावेज तीन प्रतिमे तैयार कएल गेल—एक राहत-अभिलेख लेल, एक न्यायालयमे प्रस्तुत करबाक लेल, एक सुरक्षित नकल। प्रमाणक सूची अलग। नकल सभक क्रमांक मिलाओल गेल। रासबिहारी प्रत्येक पन्ना बेराबेरी गनलनि।

कुसुमा पुछलीह, “एतेक सावधानी?”

“जकरा गायब करबाक लाभ हो, ओकर कागजक पयर होइत अछि।”

“कागज चलैत अछि?”

“मनुष्य चलबैत अछि।”

बाहर अन्हार घेरि रहल छल। पुरान भण्डार-भवनक वेंटिलेटर सँ अन्तिम उजास भीतर पड़ैत छल। कुसुमा एक बेर ओ गोलक बीचक जाली दिस तकलीह। हुनका नहि मालूम छल

जे नब्बे बर्ख बाद ई बनावट फेर एक मृत स्त्रीक कोठरीक पाछाँ ठाढ़ भेटत। हुनका केवल एतबे मालूम छल जे आइ एक कागज बनल अछि, जाहि पर सात टोला लोकक घरक आशा टिकल अछि।

रासबिहारी दस्तावेज बाँधैत कुसुमा केँ एक छोट पर्ची देलनि। नछत्तरक कोनो नाम नहि। केवल एक पाँति—“आइ प्रेमक बात नहि कहलहुँ, मुदा अहाँक हस्ताक्षर देखि जे मोन भेल, से प्रेमसँ कम नहि।”

कुसुमा पर्ची पढ़ि आँखि नीचा कएलनि। फेर कलम माँगि पाछाँ लिखलीह—“आइ हम घरक विरुद्ध नहि, झूठक विरुद्ध लिखलहुँ। जँ अहाँ हमरा प्रेम करैत छी, ई भेद मोन राखब।”

रासबिहारी पर्ची पढ़लनि। माथ झुकौलनि। “राखब।”

ओहि राति कुसुमा घर घुरलीह तऽ मुख्य दुआरि खुलल छल, मुदा आँगन असामान्य रूप सँ निस्तब्ध। काका बैठकमे बैसल छलाह। हुनकर आगाँ एक आदमी कचहरीक कपड़ा पहिने। मेज पर कुसुमाक हस्ताक्षर कएल दस्तावेजक खबर पहिने पहुँचि चुकल छल।

काका केवल एतबे कहलनि, “काल्हिसँ तूँ बाहर नहि जाएब।”

कुसुमा दहलीज पर ठाढ़ रहल। भीतर दादीक कोठरीक दीपक जरि रहल छल। बाहर दूर कतहु कुकुर भुकल।

ओ बुझि गेलीह—सात टोला कागज पर चढ़ि गेल अछि; आब ओकर अपन नाम घरक भीतर कटबाक तैयारीमे अछि।

अध्याय १६ — गायब दस्तावेज

भोर होइतहि कुसुमाक घरक मुख्य दुआरि पर भीतरसँ मोट साँकल चढ़ा देल गेल। ई दुआरि पहिनहूँ रातिमे बन्द होइत छल, मुदा आइ ओकर ध्वनि अलग छल। लोहेक छड़ि खाँचामे पड़ल तऽ कुसुमा केँ बुझाइ गेल जे साँकल घरक सुरक्षा लेल नहि, हुनकर चालि रोकबाक लेल चढ़ल अछि।

आँगनमे तुलसीक चौरा लग माय दीप जरबैत छलीह। धुआँ सीधा ऊपर उठबाक बदला बरखाक भारी हवामे झुकि-झुकि जाइत छल। कुसुमा बरामदा पर अएलीह तऽ माय नजर उठा फेर तुरन्त नीचा कऽ लेलनि। पिछली रातिक बैठकक बाद घरमे सभ बोलैत छल, मुदा कुसुमासँ कम। मौनहुकेँ अपन व्याकरण होइत अछि—केओ रागसँ चुप, केओ भय सँ, केओ प्रेम सँ।

काका भोजनक पहिने पिता केँ बजा कऽ स्पष्ट कहने छलाह—“छौड़ी बाहर नहि जाएत। राहत-शिविर, कचहरी, पोखरि—कतहु नहि।” पिता प्रतिवाद नहि कएलनि। राति माय कुसुमाक कोठरीमे अएलीह, माथ सहला कऽ केवल एतबे कहलीह, “किछु दिन चुप रह। घरक आगि पहिने शान्त होअय।”

कुसुमा पूछने छलीह, “झूठ शान्त भऽ जाएत?”

माय उत्तर नहि देलनि।

एखन कुसुमा दादीक कोठरी दिस गेलीह। दादी खाट पर बैसल पुरान कपड़ाक किनारि मोड़ि रहल छलीह। टिनक ओहि डिबियाक ठाम खाली छल जाहिमे पुरान रसीद आ पत्र राखल छल। कुसुमाक नजर ओतऽ पड़िते दादी कहलनि, “मूल सुरक्षित अछि। ओकर चिन्ता नहि कर।”

“काका खोजलनि?”

“खोजथि। घरमे पुरखा बहुत, संदूक बहुत, आ बूढ़ि स्त्रीक जिद ओकरो सँ बेसी।”

कुसुमाक मुँह पर क्षण भरि हँसी आयल, मुदा टिकि नहि सकल। “रासबिहारी आइ कागज न्यायालय लऽ जाएताह।”

दादी सूत मोड़ैत-मोड़ैत रुकलीह। “तैं तोहर मोन बाहर उड़ि रहल अछि।”

“सात टोला लोक सभ प्रतीक्षा करैत होएत।”

“तोहर जाएब जरूरी अछि?”

कुसुमा किछु कहए चाहलीह, फेर चुप भेलीह। जरूरी की छल—कागजक रक्षा, अपन हस्ताक्षरक जिम्मा, कि रासबिहारी केँ देखब? तीनू बात एक-दोसरामे एतेक घुलि गेल छल जे अलग करब कठिन।

दादी हुनकर चेहरा पढ़ि लेलनि। “जे बात नाम नहि लेइत अछि, से समाप्त नहि होइत। मुदा एखन धीरज राख।”

ओहि समय कचहरीक पुरान नकल-कोठरीमे रासबिहारी पन्ना गनि रहल छलाह। प्रस्तुतिकरण-बस्ता लाल कपड़ामे बान्हल छल। भीतर मुख्य अर्जीक मूल हस्ताक्षरक प्रति, सात टोला प्रतिनिधिक अँगूठा-छाप, प्रमाणक सूची, पुरान नक्शाक सत्यापित नकल, राहत-सूचीक नकल, महेन्द्र झाक कथन, आ कुसुमाक लिखित गवाही। राहत-शिविर लेल बनल दोसर प्रति आ सुरक्षित नकल अलग छल, मुदा न्यायालयमे तत्काल काम देबाक मूल अँगूठा-छाप आ सत्यापन एहि बस्तामे छल।

रासबिहारी अपन सहकर्मी नन्दलाल केँ कहलनि, “बेराबेरी गनू।”

नन्दलाल हँसलाह। “काल्हि तीन बेर गनलहुँ, राति अहाँ दू बेर। कागज बढ़त नहि।”

“घटि सकैत अछि।”

“एतेक डर?”

रासबिहारीक चेहरा गम्भीर छल। “जकरा एहि कागज सँ हानि अछि, ओकरा लेल एक पन्ना गायब होयब हजार बीघाक बराबर लाभ हो सकैत अछि।”

नन्दलाल हँसी छोड़ि देलनि। दुनू फेर गनलनि। सभ ठीक। लाल कपड़ाक गाँठि पर रासबिहारी अपन छोट सील लगौलनि। बस्ता न्यायालयक दाखिल-खिड़की धरि पहुँचायब छल, मुदा पहिने तहसील अभिलेखक एक सत्यापन लिखब आवश्यक छल। ओहि लेल बस्ता आध घंटा नकल-कोठरीक लोहेक आलमारीमे राखल गेल।

आलमारीक दू चाबी छल। एक रासबिहारी लग, दोसर प्रधान नकलनवीस लग। ई व्यवस्था पुरान छल। सभकेँ मालूम। आ सम्भवतः एही कारणे सुरक्षित बुझाइत छल।

रासबिहारी सत्यापन लेल पाछाँक भवन गेलाह। ओतऽ कतार छल। भूकम्पक बाद जमीन, राहत, मृत्यु, उत्तराधिकार—सभ कागज एक संग उमड़ल छल। केओ अपन पिता जीवित सिद्ध करैत, केओ मृत; केओ घर गिरल कहैत, केओ कहैत जे घर छलहि नहि। सरकारी मेज पर मनुष्यक जीवन दू-तीन पाँतिक बयान बनि जाइत छल।

एक घंटाक बाद रासबिहारी घुरलाह। आलमारीक बाहरी ताला जकाँक-तहाँ। चाबी लगौलनि। दरबज्जा खुलल। भीतर लाल बस्ता नहि छल।

पहिल क्षण हुनका लगल जे नन्दलाल निकालि लेने होएताह। दोसर क्षण मोन कहलक— नहि। तेसर क्षण देह पहिले बुझि गेल; पेटक भीतर एकाएक खालीपन, हथेलीमे पसीना, कानमे दूरक आवाज धुँधला।

“नन्दलाल!”

नन्दलाल अगिला कोठरीसँ दौड़ल आएलाह। “की भेल?”

“बस्ता?”

“अहाँ रखलहुँ।”

“निकाललहुँ?”

“नहि।”

दुनू आलमारीक सभ खाना खँगाललनि। पुरान नापी, लगान-रजिस्टर, मुहरक डिबिया, फाटल कपड़ा—सभ छल। लाल बस्ता नहि।

प्रधान नकलनवीस बजाओल गेलाह। हुनकर दोसर चाबी कमरक गुच्छामे छल। ओ सपथ खा कऽ कहलनि जे भोरसँ चाबी निकालल नहि। मुदा चाबी रहब आ उपयोग नहि होयब एके बात नहि। रासबिहारी ई प्रश्न मुँह पर नहि अनलनि।

“ताला टूटल?”

“नहि।”

“खिड़की?”

“लोहेक छड़ि।”

“वेंटिलेटर?”

सभक नजर ऊपर उठल। छोट चौकोर वेंटिलेटर, धूरि भरल जाली। ककरो हाथ भीतर पहुँचब कठिन।

नन्दलाल धीरे कहलाह, “चाबी सँ खुलल।”

प्रधान नकलनवीसक चेहरा तमतमा गेल। “ई कहबाक साहस?”

रासबिहारी बीचमे पड़लाह। “एखन दोष नहि। पहिने सूचना लिखाउ।”

सूचना लिखाएल। ओहि सूचना लिखबाक संग घटना सरकारी भऽ गेल, आ सरकारी भेलाक संग प्रश्न मनुष्यक हाथसँ निकलि कागजक हाथमे चलि गेल। के रखलक, के देखलक, के आखिरी बेर आलमारी लग छल—बेराबेरी नाम लिखल गेल।

दुपहर धरि सात टोला सँ पाँच लोक कचहरी पहुँचल। सीता देवी सभसँ आगाँ। “दाखिल भेल?”

रासबिहारी हुनका अलग लऽ गेलाह। “बस्ता गायब अछि।”

सीता देवी किछु क्षण निश्चेष्ट। फेर बजलीह, “गायब? कागज अपन पयर पर चलि गेल?”

रासबिहारी केँ पिछली साँझक अपन बात मोन पड़ल—जकरा गायब करबाक लाभ हो, ओकर कागजक पयर होइत अछि। आब ओ वाक्य ठट्टा नहि रहल।

“खोज चलि रहल अछि।”

“नकल?”

“अछि। मुदा मूल अँगूठा आ किछु सत्यापन बस्तामे छल। नकल सँ लड़ाइ जारी रहत, मुदा एखन दाखिला अटकत।”

राससखी दाँत भीँचि कहलीह, “हम कहने रही—हमर नाम कागजमे चढ़ाओ। नाम चढ़ल, कागज उतरि गेल।”

रासबिहारी हुनका नजर मिला कऽ कहलनि, “नाम फेर चढ़त। एहि बेर एहन ठाम जे उतारब कठिन होयत।”

मुदा हुनकर अपन विश्वास एहि वाक्य जतेक मजबूत नहि छल।

साँझ पड़ए पहिने कचहरीमे दोसर खबर पसरल—बस्ता रासबिहारी स्वयं हटौने छथि। कारण? सात टोला सँ रुपैया माँगल, नहि भेटल तऽ कागज रोकि देल। तेसर रूप—कुसुमाक घरसँ निजी बैर; घरक बदनामी लेल दस्तावेज बनौलनि, फेर प्रमाण कमजोर बुझि स्वयं गायब कऽ देलनि। चारिम रूप—कुसुमासँ नेह; कागज बहाना मात्र। अफवाहक पयर कागजसँ बेसी तेज निकलल।

देर साँझ थाना सँ दू सिपाही आएल। शिकायत छल—सरकारी अभिलेखक चोरी आ नष्ट करबाक शंका। शिकायतकर्ता नाम कागज पर लिखल छल, मुदा रासबिहारी केँ नाम पढ़बाक जरूरत नहि पड़ल। ओ घराना दिसक एक कारिन्दा छल, जे कहैत छल जे “जाली कागज” बनाओल गेल आ आब ओकर निशान मेटाओल जा रहल अछि।

“हम शिकायत करनिहार छी,” रासबिहारी कहलनि।

सिपाही कहल, “तँ पूछताछमे चलू। अहाँ आखिरी जिम्मेदार हाथ छलहुँ।”

रासबिहारी मेजक कोन पर बान्हल नील सूतक छोट टुकड़ा दिस तकलनि। कुसुमा पिछली साँझ कार्य-पर्चीमे बाँधने छलीह। मुख्य पर्ची बस्तामे गेल छल; मुदा धागाक बचल छोर हुनकर कढ़ाई-जकाँ मोनमे अँटकल छल।

“चलैत छी,” ओ कहलनि।

थानामे प्रश्न बारम्बार एके वृत्त बनबैत रहल। चाबी ककरा लग? बस्ता कतऽ? कुसुमासँ सम्बन्ध की? सात टोला लोक सँ रुपैया लेल? घराना-पत्रक मूल कतऽ? रासबिहारी प्रत्येक प्रश्नक उत्तर देलनि। जखन कुसुमाक नाम आयल तऽ ओ ठहरि गेलाह।

“ओ गवाही देलीह। एतबे।”

दरोगा हँसल। “बस?”

रासबिहारी सीधा तकलनि। “कागजक जाँच कागज सँ करू। स्त्रीक नाम सँ तमाशा नहि।”

एहि उत्तर सँ दरोगाक स्वर कठोर भेल। हुनकर झोला, मेज, रहबाक कोठरी सभ खोजल गेल। किछु नहि भेटल। मुदा आरोप मिटि नहि गेल। प्रमाण नहि भेटब कखनो-कखनो शंका घटेबाक बदला बढ़ा दैत अछि—विशेषतः जखन समाज पहिनहिसँ कथा चुनि चुकल हो।

घरमे कुसुमा एहि सभसँ अनजान छलीह। साँझ एक काम करनिहार छोड़ा दूध देबाक बहाना सँ पिछला फाटक लग आयल। दादी ओकर हाथक लोटा लेलनि। लोटाक तलीमे मोड़ल पातळ कागज चिपकल छल। दादी बिना शब्द कुसुमा केँ देलनि।

कागज नन्दलालक लिखल—“न्यायालय जाएवला बस्ता आलमारीसँ गायब। रासबिहारी बाबू पर चोरीक आरोप। थाना पूछताछ। अहाँ घरसँ नहि निकलू; बाहर नजर अछि।”

कुसुमाक हाथ काँपए लागल। एक क्षण हुनका लगल जे अपन हस्ताक्षरसँ ओ रासबिहारी केँ फँसा देलीह। जँ ओ गवाही नहि देतीह, जँ पुरान पत्र नहि निकालतीह, जँ सातम पाँति खाली रहए दैत—की ई सभ नहि होइत?

दादी पुछलनि, “की लिखल?”

कुसुमा पर्ची देलनि। दादी पढ़ि नहि सकैत छलीह; कुसुमा पढ़ि सुनौलनि।

दादी बहुत देर चुप। फेर कहलीह, “तोरा लगैत अछि दोष तोहर?”

“हम नहि गेल रहितहुँ तऽ...”

“तऽ सात टोला कागज बिना रहित। जे कागज चोरलक, दोष ओकर। सत्य बाजनिहार अपन मुँह पर चोरक दोष किएक लेत?”

“मुदा रासबिहारी...”

“ओ अपन काज बुझि कऽ कएलनि। प्रेम होअय कि नहि, ओ बालक नहि छथि।”

कुसुमा पहिल बेर दादीक मुँहसँ “प्रेम” सुनि चौकलीह। बूढ़ि स्त्री मुस्कुरेलीह नहि। “हम बूढ़ि छी, अन्हर नहि।”

राति घरमे काका देर सँ घुरलाह। बैठकमे पिता संग नीच स्वरमे गप्प। कुसुमा अपन कोठरीक किवाड़ लग कान नहि देलीह; उलटि ओ खिड़की लग बैसि बरखाक पहिल मोट बूँद सुनैत रहल। मुदा एक वाक्य स्पष्ट आयल—“कागज अब न्यायालय नहि पहुँचत।”

कुसुमाक देह सिहरि गेल। वाक्य काका बजलाह कि संग आएल कारिन्दा, स्पष्ट नहि। ओ फेर सुनए चाहलीह, मुदा स्वर धीमा भऽ गेल।

भोरमे एक अप्रत्याशित बात भेल। राहत-शिविरक लेखा-बही लऽ कऽ सरकारी निरीक्षक आएल, आ संग नन्दलाल। घरक पुरुष बैठकमे छलाह। कुसुमा भीतर। नन्दलाल दादीक पयर छूबाक बहाना सँ ओतऽ धरि पहुँचि गेलाह जतऽ कुसुमा परदा पाछाँ ठाढ़ छलीह। ओ बोलि नहि सकैत छलाह। हाथ जोड़ैत समय हथेलीमे छोट कागज छोड़ि देलनि।

ओहि पर्ची पर रासबिहारीक अक्षर छल—“कागज नहि अछि, मुदा क्रमांक बचल अछि। तीन प्रतिक लेखा, साक्षीक नाम, आ सातम चिन्ह सभ मोनमे अछि। डरि कऽ अपन कथन बदलू नहि। हमरा दोष लगल अछि; सत्य बदलल नहि।”

नीचा एक पाँति आ—“नील सूत अहाँक चिन्ह छल; ओकर एक छोर हमर मेज पर एखनहुँ अछि।”

कुसुमा पर्ची मुट्ठीमे बन्द कऽ लेलनि। बाहर बैठकमे पुरुष सभ जमीन, मान, घरानाक प्रतिष्ठा आ कानून पर बोलि रहल छल। भीतर हुनकर मोन एकदम शान्त नहि, मुदा पहिने जकाँ बिखरलो नहि।

दस्तावेज गायब छल। आरोप रासबिहारी पर छल। ओ स्वयं घरमे बन्द छलीह। तीनू बात अलग-अलग दीवार जकाँ सामने ठाढ़ छल।

कुसुमा पर्चीक पाछाँ केवल दू शब्द लिखलनि—“कथन नहि।” अर्थात् अपन कथन नहि बदलतीह।

ओ पर्ची नन्दलाल धरि घुरा देलीह।

दुपहर बाद काका कुसुमाक कोठरीक बाहर ठाढ़ भऽ कहलनि, “एहि घरक नाम बचेबाक एके बाट अछि। लिखि दे जे तोरा बहका कऽ हस्ताक्षर लेल गेल।”

कुसुमा भीतरसँ पुछलीह, “आ जँ ई झूठ हो?”

“घर सत्यसँ पैघ होइत अछि।”

कुसुमा दुआरि दिस तकैत रहलीह। लकड़ीक ओहि पार हुनकर अपन रक्तक लोक छलाह। एहि पार ओ अकेली। तखन दादीक वाक्य मोन पड़ल—कागज सत्य नहि बनबैत, मुदा सत्य नुकेबाक औजारो नहि बनबाक चाही।

ओ धीरे उत्तर देलीह, “हम लिखब नहि।”

बाहर किछु क्षण निस्तब्धता रहल। फेर काकाक डेग दूर गेल। साँकल फेर खनकल।

कुसुमा बुझि गेलीह—गायब दस्तावेजक खोज आब केवल कचहरीमे नहि, एहि घरक भीतर सेहो चलत। आ हुनकर देह, हुनकर नाम, हुनकर नेह—तीनू एहि खोजक साक्ष्य बनि चुकल अछि।

अध्याय १७ — लाल ओढ़नीक राति

आषाढक पहिल भारी बरखा ओहि बर्ख एहन आयल जे दिन आ रातिक भेद मेटि गेल। आकाश धूसर, आँगनमे पानि, छप्परक धार एकटक। गामक कच्चा बाट पाँकमे बदलि गेल। नदी दूर छल, मुदा ओकर गर्जन हवा मे सुनाइत छल। लोक कहैत—भूकम्प धरती केँ फोड़ि गेल, आब मेघ ओकर घाव धोइत अछि।

कुसुमा चारि दिनसँ घरक भीतर बन्द छलीह। “बन्द” शब्द किवाड़क साँकल मात्र नहि छल। भोजन कोठरीमे, आँगनमे जाएब पर नजर, दादी लग बैसबो समय करनिहार स्त्री बाहर। माय हुनका बचाबए चाहैत छलीह, मुदा माय स्वयं घरक अनुशासनमे बान्हल छलीह। पिता कम बोलैत छलाह। काका अधिक।

रासबिहारीक आरोपक बात गाममे फैलि चुकल छल। हुनका तत्काल बन्दी नहि बनाओल गेल, मुदा थाना आ कचहरीक बीच बेराबेरी हाजिरी देब पड़ैत छल। नकल-कोठरीक काजसँ कने दूर राखल गेल। सात टोला दस्तावेजक नकलक आधार पर नव आवेदन देबाक विचार चलि रहल छल, मुदा मूल अँगूठा-छाप आ प्रमाणक क्रम गायब भेला सँ बात कमजोर पड़ल।

काका एहि कमजोरी केँ जीत मानैत छलाह। एक राति भोजन पर कहलनि, “देखलह? कागजक जोर एतबे। घरक पुरान रीति कागजसँ नहि बदलैत।”

दादी पुछलीह, “तँ कागज गायब किएक भेल?”

काका थमकलाह। “हम गायब केलहुँ?”

“हम ई नहि कहलहुँ।”

मेज पर चम्मचक ध्वनि बन्द। माय कुसुमा दिस नहि तकलीह। पिता पानी पीबए लगलाह। कुसुमा बुझि रहल छलीह जे एहि घरमे प्रश्न उत्तरसँ बेसी खतरनाक भऽ गेल अछि।

ओहि राति माय हुनकर कोठरीमे अएलीह। हाथमे लाल ओढ़नी। कुसुमाक पुरान, जे दादी फागुनमे देलनि छल।

“ई किएक?” कुसुमा पुछलीह।

माय ओढ़नी खाट पर रखलीह। “काल्हि भोर तोरा मामा घर पठाओल जाएत। किछु मास ओतऽ रह। बात शान्त होअय।”

“हमरा पुछल गेल?”

माय चुप।

“रासबिहारी पर चोरीक आरोप अछि। सात टोला लोकक कागज गायब अछि। हम अपन कथन फेर नहि लिखलहुँ। एखन हमरा दूर पठा देब—ई शान्ति?”

मायक आँखि भरि आयल। “हम की करूँ? घरमे तोहर नाम लऽ कऽ जे बाजल जाइत अछि, सुनि नहि सकैत छी। अहाँ दुनूक...” ओ रुकलीह। “लोक नेह केँ अपराध बना देत। तूँ एतऽ रहब तऽ बात बढ़त।”

कुसुमा पहिल बेर मायक हाथ पकड़लनि। “माय, जँ हम चलि जाऊँ तऽ बात घटत कि हमर आवाज?”

माय उत्तर खोजि नहि सकलीह। अन्तमे केवल कहलीह, “जीवित रहब पहिने। सत्य बादमे।”

ई वाक्य कुसुमाक भीतर गड़ि गेल—जीवित रहब पहिने। की हुनकर जीवन पर सचमुच संकट अछि? एखन धरि ओ अपमान, बन्धन आ विवाहक दबाव सोचने छलीह; प्राणक भय नहि।

राति दादी अएलीह। माय जा चुकलीह। बरखा तेज। बिजली चमकल तऽ दादीक चेहरा एक क्षण उज्जर, फेर अन्हार।

“मामा घरक बात सुनलहुँ?”

“हँ।”

“जाएब?”

कुसुमा दादीक आँखिमे देखलीह। “अहाँ की चाहैत छी?”

“हम चाहैत छी तूँ अपन निर्णय अपने कर। मुदा निर्णयक मूल्य पहिने बुझि लऽ।”

दादी अपन कमरक चाबीक गुच्छा खोलि एक पातळ चाबी अलग कएलनि। “पुस्तक-कोठरीक पिछला दुआरिक। ओतऽ सँ बारीमे निकलबाक बाट अछि।”

कुसुमा स्तब्ध। “अहाँ हमरा भागए कहैत छी?”

“नहि। बाट देखबैत छी। जाएब कि नहि, तोहर।”

“आ जँ हम जाएब?”

“तँ कतऽ जाएब से हम नहि पूछब। जतेक कम लोक जानत, ततेक कम झूठ बाजए पड़त।”

दादी चाबी रखि उठलीह, फेर लौटि कहलनि, “लाल ओढ़नी पहिरब नहि। दूरसँ देखाइत अछि।”

कुसुमा खाट पर पड़ल ओढ़नी दिस तकलीह। लाल रंग एकाएक चेतावनी जकाँ लगल।

मध्यराति धरि ओ निर्णय नहि कऽ सकलीह। बाहर पानि, भीतर धकधक। रासबिहारीक पर्ची तकियाक नीचा छल—“सत्य बदलल नहि।” हुनका मोन पड़ल जे सुरक्षित नकलक ठाम रासबिहारी केवल दू लोक केँ कहने छलाह—नन्दलाल आ कुसुमा। राहत-शिविरक पाछाँ पुरान भण्डार-भवनमे एक लोहेक पेटी। मुख्य दस्तावेज गायब भेल, मुदा सुरक्षित नकल यदि ओतऽ अछि तऽ सात टोला लोक पूर्णतः खाली हाथ नहि।

कुसुमा कतेक दिनसँ एक आशंका दबौने छलीह—जँ कचहरीक बस्ता गायब करनिहार घराना दिसक लोक अछि, सुरक्षित नकलक खबर सेहो पहुँचि सकैत अछि। नन्दलाल पर नजर। रासबिहारी पर थाना। ओ स्वयं बन्द। पेटी कतऽ अछि, ई जानकारी जँ ककरो हाथ लगल तऽ दोसर कागजो जाएत।

ओ भोर धरि प्रतीक्षा करथि? भोरमे मामा घर पठाओल जाएत। तखन किछु नहि करि सकतीह।

ओ उठलीह। लाल ओढ़नी पहिरबाक बदला साधारण गाढ़ धोतीक चादर लेलनि। फेर रुकलीह। मायक लाल ओढ़नी खाट पर छल। एहि ओढ़नीमे हुनकर घरक गन्ध, मायक हाथ, दादीक दान—सभ। कुसुमा ओकरा छोड़ि नहि सकलीह। ओ लाल ओढ़नी केँ देह पर नहि, कपड़ाक गठरी भीतर राखि लेलनि।

पुस्तक-कोठरीक पिछला दुआरि चाबी सँ खुलल। दुआरि खुलिते नम माटिक गन्ध भीतर भरि गेल। बारीमे पानि घुटना धरि नहि, मुदा टखना ऊपर। आमक पात पर बरखाक चोट। कुसुमा एक बेर पाछाँ तकलीह। घरक भीतर कतहु दीपक नहि। दादी जागल छलीह कि नहि—ओ नहि जानलीह।

ओ निकलि गेलीह।

एहि क्षण धरि कुसुमाक कथा केँ कागज सँ पकड़ल जा सकैत अछि। दादीक बादक एक नोटमे लिखल भेटैत अछि—“आषाढ़ कृष्ण पक्ष, भारी बरखा; कुसुमा राति कोठरीमे नहि।” पुस्तक-कोठरीक ताला भोरमे खुलल भेटल। पिछला बाटमे छोट पयरक निशान बरखासँ आध मेटल। एतऽ धरि तथ्य अछि। तकर पाछाँ कथा अनेक दिश भागैत अछि।

एक कथा कहैत अछि जे कुसुमा सीधा राहत-शिविर गेलीह। ओतऽ चौकीदार आध राति बाद एक स्त्री केँ बरामदा लग देखलक, जे भण्डार-भवनक चाबी पूछैत छल। मुदा चौकीदारक बयान दस बख बाद लिखल गेल; ओ स्त्री कुसुमा छलीह कि नहि, प्रमाण नहि।

दोसर कथा—गामक तेली हरिपत कहलनि जे लाल ओढ़नीमे देखल युवती पुरान पोखरिक बाट पकड़ने छल। विरोध ई जे कुसुमा लाल ओढ़नी पहिरने नहि, गठरीमे राखने छलीह—ई बात केवल दादी जानैत छलीह। फेर हरिपत लाल रंग कोना देखलक? हो सकैत अछि बिजलीक चमकमे गठरी खुलल हो? कि ओ दोसर केओ छल? कि बादक लोक-कथा पहिने सँ लाल ओढ़नी जोड़ि देलक?

तेसर कथा नदीक मल्लाह सभक। कहैत छलाह, ओहि राति एक युवती नाव माँगलक। नदी चढ़ल छल, नाव नहि देल गेल। ओ किनारि-किनारि दक्षिण गेलीह। मुदा मल्लाहक नाम बेराबेरी बदलैत अछि—कखनहुँ जगरनाथ, कखनहुँ ओकर भाई, कखनहुँ “एक बूढ़ मल्लाह।”

चारिम कथा सभसँ प्रिय बनल—कुसुमा रासबिहारी संग भागि गेलीह। एहि कथाक एक समस्या छल: ओहि राति रासबिहारी थाना-हाजिरी बाद जिला-अधिकारीक विश्रामगृहमे निगरानीमे छलाह; प्रवेश-बहीमे हुनकर नाम, दू कर्मचारीक हस्ताक्षर, आ भोरक उपस्थिति दर्ज छल। मुदा लोक-कथा केँ अभिलेखक संकोच नहि होइत। प्रेमी-प्रेमिका अलग ठाम छलाह तऽ कथा ओकरा मिला दैत अछि।

पाँचम कथा डरावनी। घरानाक लोक कुसुमा केँ पकड़ि पुरान हवेलीमे बन्द कऽ देलक; ओतऽ हुनकर मृत्यु भेल; देवालमे नाम खरौंचल; रातिमे पायल बाजैत अछि। एहि कथाक जन्म कखन भेल, केओ नहि जानैत। पुरान हवेली घरानाक पहिल निवास छल, भूकम्पमे एक हिस्सा फाटल, बादमे छोड़ल गेल। बच्चा सभ साँझ बाद ओतऽ नहि जाइत। जेकरा जे ध्वनि सुनाइत—चमगादड़, ढीला कड़ी, हावाक सीटी—सभ पायल बनि जाइत।

मुदा ओहि रातिक तत्काल खोजक विवरण किछु स्पष्ट अछि। भोरमे मामा घर भेजबाक बेला कुसुमा नहि भेटलीह। घरमे हाहाकार नहि, पहिने गोपनीय खोज। काका चारि आदमी पठौलनि—पोखरि, शिविर, कचहरीक बाट, रासबिहारीक रहबाक ठाम। दुपहर धरि परिणाम नहि। तखन थाना सूचना। सूचनामे कुसुमाक उमेर, कद, वस्त्रक विवरण छल, मुदा लाल ओढ़नीक उल्लेख नहि। “गाढ़ रंगक चादर” लिखल छल।

दादी पुलिसक प्रश्न पर एके बात कहलनि, “ओ अपन पयर सँ गेलीह।”

“कतऽ?”

“नहि जानैत छी।”

“ककरा भेटए?”

“नहि जानैत छी।”

“चाबी के देलक?”

दादी उत्तर देलनि, “पुरान घरमे चाबी सभक ठाम बदलैत रहैत अछि।”

ई हुनकर सच छल कि नातिनक रक्षा लेल आधा सच, तय नहि भेल।

रासबिहारी केँ कुसुमा गायब भेल खबर दुपहर बाद भेटल। थाना अधिकारी हुनकर चेहरा देखैत रहल—सम्भवतः प्रतिक्रिया पढ़बाक इच्छा सँ। रासबिहारी पहिने विश्वास नहि कएलनि। फेर केवल एक प्रश्न—“घरक पिछला दुआरि खुलल छल?”

“अहाँ केँ कोना मालूम जे पिछला दुआरि अछि?”

रासबिहारी चुप भऽ गेलाह। प्रश्नक गलत समय पर सही उत्तर सेहो दोष बनि सकैत अछि।

हुनका फेर पूछताछ भेल। कुसुमाक संग पत्राचार, राहत-शिविर, दस्तावेज, गायब बस्ता—सभ एक गाँठिमे बाँधल गेल। रासबिहारी अपन सब पर्ची देबाक प्रस्ताव कएलनि, मुदा कुसुमाक निजी पर्ची सभ नहि। “ओ निजी अछि,” कहलनि। अधिकारी हँसल—“गायब युवतीक निजी बात आब निजी नहि।”

रासबिहारी उत्तर देलनि, “अपराध सिद्ध करू, प्रेम जप्त नहि।”

ई वाक्य बादमे लोक बीच बहुत बदलल रूपमे फैलल। केओ कहल—रासबिहारी स्वीकार कएलक जे प्रेम छल। केओ कहल—ओ कुसुमा केँ भगा देलक। वास्तविक प्रश्नोत्तर-बहीमे केवल एतबे लिखल रहल: “व्यक्तिगत पत्र प्रस्तुत करबाक विषयमे अनिच्छा।”

साँझ धरि बरखा थमल नहि। पोखरिक घाट पर कुसुमाक कोनो देह नहि, कोनो जूता नहि, कोनो पायल नहि। केवल कादोमे लाल सूतक दू-तीन रेशा भेटल कहबाक कथा अछि; तत्काल सूचीमे ओकर उल्लेख नहि। बहुत बादक स्मृतिमे ई रेशा प्रकट होइत अछि।

तेसरा दिन पुरान भण्डार-भवनक लोहेक पेटी खोलल गेल। भीतर राहत-सूची, सूखा कागज, पुरान रसीद—मुदा सात टोला दस्तावेजक सुरक्षित नकल नहि। पेटीक ताला टूटल नहि छल। चाबी ककरा लग छल? नन्दलाल कहैत रहलाह—एक हुनका लग, एक रासबिहारी लग छल, मुदा रासबिहारीक चाबी थाना-जाँचमे जमा छल।

एहि दोसर गायब भेला सँ कुसुमाक गुम होयब आ कागजक गुम होयब एकहि कथा बनि गेल। केओ कहलक कुसुमा नकल लऽ गेलीह। केओ कहलक ओ नकल बचाबए गेलीह आ ककरो हाथ पड़ि गेलीह। केओ कहलक कागजक लोभे हुनकर प्राण लेलक।

दादी एहि सभ कथामे कोनो पर विश्वास घोषित नहि कएलनि। ओ रोज साँझ कुसुमाक कोठरीक दीप जरबैत रहलीह। माय लाल ओढ़नीक दोसर जोड़ी संदूकमे राखि देलीह। पिता धीरे-धीरे चुप मनुष्य भऽ गेलाह। काका सात टोला विषयमे नाम सुनिते राग करैत रहलाह, मुदा कुसुमाक नाम पर हुनकर स्वर बदलि जाइत—राग, अपराध-बोध कि दुःख, केओ बुझि नहि सकल।

एक मास बाद रासबिहारी पर कागज-चोरीक आरोप प्रमाणक अभावमे आगे नहि बढ़ल, मुदा हुनकर काजक ठाम बदलि देल गेल। ओ गाम छोड़बाक पहिने दादी सँ भेटए चाहलनि। घरक पुरुष अनुमति नहि देलनि। दादी स्वयं मन्दिर जाएबाक बहाना सँ बाहर अएलीह। दुनू बीच की बात भेल, ओकर लिखित लेखा नहि। केवल एतबे बादमे कहल जाइत रहल जे दादी हुनका एक नील सूतक टुकड़ा देलनि आ कहलनि—“जे कागज पर भरोसा छल, से नहि अछि। जे मनुष्य पर भरोसा छल, ओकरा मरए नहि दिअ।”

रासबिहारी ओ धागा लेलनि कि नहि, ईहो निश्चित नहि।

कुसुमाक नछत्तर-पोथीमे ओहि बर्खक पन्ना एतऽ आ कऽ एकाएक खाली भऽ जाइत अछि। पहिने प्रत्येक सप्ताह छोट टिप्पणी—बरखा, राहत, जन्म, मृत्यु, चन्द्रमा, घरक बात। आषाढ़क ओ राति बाद तीन पन्ना कोरा। चारिम पन्ना पर दादीक हाथक केवल एक वाक्य—“जकर बाट नहि भेटल, ओकर दिशा नछत्तर सँ नहि पूछब।”

वर्ष बीतल। सात टोला लोक फेर बिखरल, फेर बसल, फेर मुकदमा चलौलनि। कुसुमाक कथा घरक भीतर निषिद्ध नाम, बाहर लोकक कथा बनल। लाल ओढ़नी धीरे-धीरे वास्तविक वस्त्र नहि, चिन्ह बनि गेल—घर छोड़बाक, प्रेमक, विद्रोहक, मृत्यु अथवा बचि निकलबाक; जे कथा कहनिहार चाहय, ओहि अर्थक।

आ पुरान हवेली? ओकर एक देवाल भूकम्पक बाद मरम्मत भेल छल। चूनक नया तह पर केओ कखन एक नाम खरौंचलक, केओ नहि लिखलक। हवेली धीरे-धीरे खाली भेल। पवन चलैत तऽ भीतर कखनहुँ धातु-जकाँ झनकार उठैत। लोक कहल—कुसुमाक पायल।

कागज कहैत अछि—कुसुमा ओहि राति घरसँ बाहर गेलीह, फेर आधिकारिक रूपसँ नहि भेटलीह।

लोक कहैत अछि—ओ एखनहुँ लौटैत छथि।

सत्य, एहि दू वाक्यक बीच कतहु, बरखाक ओहि राति जकाँ घनघोर अन्हारमे रहि गेल।

अध्याय १८ — देवालक पेट

माधवीक नींद पायलक ध्वनि सँ टूटल।

इन... इन... फेर दू क्षण चुप्पी, फेर एक लघु इनकार।

ओ आँखि खोलि अन्हारमे छत दिस तकैत रहल। कमराक खिड़की बन्द छल। बाहर भोरक पहिल पखेरू एखन नहि बाजल छल। मायक साँस अगिला कोठरीसँ धीमे सुनाइत छल। माधवी अपन पयर हिलौलनि—पायल ओ पहिरैत नहि। ध्वनि फेर नहि आयल।

सपना एखनहुँ देहमे अँटकल छल। पोखरिक पानि सीढ़ी चढ़ि रहल। लाल ओढ़नी भीजल। पुरान हवेलीक एक देवाल पर चून फूटल, आ ओकर भीतर सँ ककरो हाथ नहि—केवल नील धागाक एक छोर बाहर। पायल देवालक पाछाँ बाजैत। ओ धागा खींचए चाहैत अछि, मुदा हथेली पर फेर उज्जर धूरि लागि जाइत अछि।

भोर होइतहि माधवी नछत्तर-पोथी खोललक। पिछली राति ओ १९३४क पन्ना पढ़ने छल—आषाढ़ बाद तीन कोरा पन्ना, फेर ओ वाक्य: “जकर बाट नहि भेटल, ओकर दिशा नछत्तर सँ नहि पूछब।” ओकरा निद्रा सँ पहिने लाल ओढ़नीक कथा मालूम छल, मुदा देवाल भीतर नील धागा? पोथीमे एहन वर्णन नहि।

ओ अपनहि पर झुँझलायल। मोन देखल बात, सुनल कथा, डर आ इच्छा केँ मिला कऽ नवा दृश्य बना लैत अछि। जयनारायण कहने छलाह—सपना साक्ष्य नहि। अभिराम तऽ कहबे करत—“मस्तिष्कक नमूना-जोड़।”

तखन ओकरा सपना नहि, फोटो मोन पड़ल—वसुधाक घरक बन्द कनियाँक कोठरीमे भेटल १९३४क राहत-शिविरक छवि। पाछाँ जे जालीदार आकृति छल, वेंटिलेटर जकाँ। फोटो पर एक कात चूनक फाटल देवाल। अभिराम ओ फोटो विस्तार कऽ देखौने छल। माधवी ओहि समय लाल ओढ़नीक युवती पर अटकि गेल छल; देवाल पर ध्यान नहि।

सात बजे ओ अभिराम केँ संदेश भेजलक—“फोटो आ पुरान हवेलीक नक्शा लऽ कऽ दस बजे अभिलेख-कक्षमे भेट।”

उत्तर तुरन्त—“किएक?”

माधवी लिखलक—“देवाल देखबाक अछि।”

“कुन देवाल?”

“जे एखन धरि हमरा सभ नहि देखलहुँ।”

किछु देर बाद अभिरामक उत्तर—“ई वाक्य जयनारायण बाबूक संग रहि-रहि अहाँ सीखि रहल छी?”

माधवी मुस्कराए बिना नहि रहि सकल।

दस बजे अभिराम दू नक्सा, फोटो-क प्रतिलिपि आ पटरी लऽ कऽ आयल। “हम सोचने रही अहाँ फेर सपना सुनाएब।”

“सुनाएबो।”

“पहिने देवाल?”

“पहिने तथ्य।”

अभिराम भौंह उठा देलक। “प्रगति।”

दुनू पुरान हवेलीक अभिलेख खोललक। भवन आब अर्ध-परित्यक्त छल; मालिकाना वसुधाक मायका परिवारक दूरक शाखा आ एक न्यासक बीच विवादित, मुदा बाहरी भाग नगरपालिका द्वारा असुरक्षित घोषित। भीतर जाएब बिना अनुमति ठीक नहि। माधवी वसुधाक माय केँ दूरभाष कएलक। कारण पूरा नहि, केवल पुरान फोटो आ अभिलेखक मिलान कहलक। अनुमति भेटल, शर्त—घरक पुरान सेवक गोपाल संग रहत।

जयनारायण केँ खबर देल गेल। ओ साफ कहलनि, “देवाल तोड़ब नहि। जे देखू, फोटो लिअ। किछु असामान्य भेटय तऽ हमरा बजाउ। वसुधाक मृत्यु-जाँच चलि रहल अछि; पुरान कागज जँ ओकर मुकदमासँ जुड़ल निकलल तऽ साक्ष्यक क्रम बिगाड़ नहि।”

अभिराम दूरभाष राखि माधवी दिस तकलक। “ई कारणे हम हुनका पसन्द करैत छी। उत्सुकता सँ पहिने प्रक्रिया।”

माधवी कहलक, “आ हम सोचैत रही अहाँ हुनका केवल एहि लेल पसन्द नहि करैत छी जे ओ सूत्र पर भरोसा कम करैत छथि।”

“ओ सूत्र पर कम, हमरा पर सेहो आधा भरोसा करैत छथि।”

“आधा बहुत अछि।”

पुरान हवेली शहरक किनारि पर छल, जहिना नवा सड़क पुरान बस्ती केँ काटैत निकलल। बाहरी फाटक टेढ़, आँगनमे जंगली घास। भूकम्पक दरार मरम्मत कएल भागक चून दोसर रंगक। गोपाल लगभग सत्तर बर्खक, दुब्बर, मुदा चालि तेज। ओ कहलक, “एहि घरमे आब

चोरक लेल सेहो किछु नहि। अहाँ लोक कागज खोजैत छी तऽ दीमक पहिने पढ़ि चुकल होएत।”

माधवी पुछलक, “पायल बाजैत अछि?”

गोपाल ठमकि ओकरा देखलक। “के कहल?”

अभिराम तुरन्त माधवी दिस—एक नजर जाहिमे ‘देखलहुँ?’ आ ‘एखन शुरू भेल’ दुनू।

गोपाल हँसल। “पुरान घर अछि। हवा जखन पछुआ होइत अछि तऽ कड़ी झनझनाइत। बच्चा सभ पायल कहैत।”

“कुन देवाल लग?” माधवी पुछलक।

“पाछाँक कनियाँ-कोठरी। मुदा ओ भाग बन्द अछि।”

माधवीक पिठक रोम ठाढ़ भऽ गेल। अभिरामक चेहरा एखन गंभीर। “फोटो देखाउ,” ओ कहलक।

१९३४क फोटो गोपालक आगाँ राखल गेल। ओ आँखि सिकोड़ि देखलक। “ई तऽ राहत-भोजनक समयक आँगन। पाछाँ जे देवाल अछि, ओ कनियाँ-कोठरीक बाहरी भाग।”

“एखन?”

“एखन भीतर सँ मोट भेल अछि। भूकम्प बाद दोहर देवाल उठल कहैत छलाह पुरान लोक।”

अभिराम तुरन्त नक्सा खोललक। पुरान माप आ बादक नगरपालिका माप मिलाएल। एक कोठरीक भीतरी लम्बाइ बाहरी माप सँ अपेक्षा सँ लगभग सवा हाथ कम। ओ पटरी पर आँकड़ा लिखलक। “देवालक मोटाइ एतेक होएबाक कारण नहि। बीचमे खोखर हो सकैत अछि।”

माधवी कहलक, “सपना ई कहने छल।”

“नक्सा सेहो। नक्सा केँ पहिने श्रेय।”

“ठीक अछि, महाशय आँकड़ा।”

“धन्यवाद, देवी सपना।”

गोपाल दुनू केँ देखित हँसि देलक। “झगड़ा बादमे। भीतर चलू।”

कनियाँ-कोठरीक दुआरि जाम छल। बहुत प्रयत्न बाद खुलल। भीतर सीलनक गन्ध, मकड़ीक जाल, पुरान चौकी आ खाली संदूक। देवाल पर चूनक अनेक तह। फोटोमे देखल वेंटिलेटरक भीतरी चौखट एखन आध बन्द। माधवी धीरे-धीरे कोठरीक चारू कात देखलक।

सपनाक दृश्य ठीक ओहिना नहि। वास्तविकता सदिखन सपना सँ छोट आ बेसी धूरि-भरल होइत अछि।

अभिराम मोबाइलक प्रकाश देवाल पर तिरछा कएलक। तिरछा उजासँ उभार स्पष्ट भेल। एक ठाम चूनक सतह चौकोर। “एतऽ बादमे बन्द कएल गेल।”

माधवी हथेली देवाल लग नहि लगेलक। जयनारायणक निर्देश मोन छल। ओ फोटो खींचलक। गोपाल कहलक, “ई ठाम पहिने एक छोट आले जकाँ छल, हमर बाबा कहैत छलाह। फेर ककरो समय चुनवा देल गेल।”

“ककर समय?”

“हम जन्मलहुँ तखन बन्दे छल।”

अभिराम बाहरी भाग नापलक, फेर भीतर। “खाली जगह लगभग नौ इंच गहिर, दू फुट चौड़ा, तीन फुटक आसपास ऊँच। पुरान आले अथवा दस्तावेज राखबाक खोखर।”

माधवीक कान एकाएक तनल। “चुप।”

तीनू चुप। बाहर हवा उठल। वेंटिलेटरक जाली कम्पित। फेर—झन। बहुत हलुक।

गोपाल मुस्कराएल। “पायल।”

अभिराम जाली जाँचलक। “ढीला लोहा। हवा लगैत अछि।”

माधवी देवाल दिस तकैत रहल। “ध्वनि ओतऽ सँ आबि रहल छल।”

“प्रतिध्वनि। खोखर हो तऽ ध्वनि घूमि सकैत अछि।”

“हम सपना मे एहि ठाम किएक देखलहुँ?”

“अहाँ फोटो देखलहुँ, कथा पढ़लहुँ, मस्तिष्क जोड़लक।”

“नील धागा?”

अभिराम उत्तर देबाक पहिने रुकल। “ओ एखन भेटल कतऽ अछि?”

माधवी सेहो चुप। सही बात—एखन तक कतहु नहि।

जयनारायण आएल तखन दोपहर ढलि रहल छल। संग एक फोटोग्राफर आ स्थानीय थाना कर्मचारी। हुनका सब विवरण देखाओल गेल। ओ देवालक चौकोर भाग पर नजर राखि कहलनि, “ई वसुधाक हत्या-स्थल नहि, मुदा वसुधा एहि इतिहासक कागज खोजैत छलीह। जे किछु भेटत, ओकर लेखा जरूरी।”

स्थानीय मिस्त्री बजाओल गेल, मुदा काम शुरू करबाक पहिने देवालक चारू कात फोटो, माप, समय, उपस्थित लोकक नाम लिखल गेल। माधवीक अधीरता बढ़ि रहल छल। अभिराम ओकरा धीरे कहलक, “एहि पाँच मिनटक लेखा बादमे पाँच बर्खक विवाद बचा सकैत अछि।”

“हम बुझैत छी।”

“तखन पयर किएक हिला रहल छी?”

माधवी नीचे देखलक। सचमे ओकर दहिना पयर बेराबेरी हिलि रहल छल। “आदति।”

अभिराम हलुक मुस्कुराएल। “जयनारायण बाबू कहताह—आदति साक्ष्य होइत अछि।”

चूनक चौकोर तह किनारिसँ काटल गेल। भीतर पहिने ईट, तकर पाछाँ खाली आवाज। एक-एक ईट निकालल गेल। अन्हार खोखर खुलल। हवा नहि, केवल बासल सीलन। प्रकाश भीतर देल गेल।

खोखर लगभग अभिरामक अनुमान जतेक। भीतर एक छोट टिनक डिबिया, आध जड़ायल कपड़ा, आ दू-तीन सुखायल पात। दस्तावेजक गठरी नहि।

माधवीक हृदय धक् कऽ भेल। “खाली?”

जयनारायण कहलनि, “जे देखैत छी, ओतबे कहू।”

डिबिया बाहर निकालबाक पहिने फोटो। फेर दस्ताना पहिरल कर्मचारी ओकरा उठौलक। ढक्कन जंग लागल, मुदा खुलल। भीतर मोड़ल एक कागजक आध टुकड़ा आ नील रंगक सूतक पतला गाँठि।

माधवी बोलि नहि सकल। सपना मोन पड़िते हथेली ठंढ भऽ गेल। अभिराम पहिले धागा नहि, कागज देखलक। “नील रंग पुरान हो सकैत अछि, मुदा रंग देखिकेँ काल तय नहि।” ओकर स्वर जानि-बुझि सपाट।

जयनारायण माधवीक चेहरा देखलनि। “सपना?”

माधवी माथ हिलेलक।

“मोनमे राखू। लिखित बयानमे सपना अलग, भेटल वस्तु अलग।”

कागज खोलल नहि गेल; पहिने बाहरी फोटो। कागजक किनारि साफ फाटल नहि, पुरान टूटल। एक कात स्याहीक अक्षर देखाइत—मैथिली मिश्रित पुरान लेखन, किछु शब्द अस्पष्ट। सुरक्षित आवरणमे रखलाक बाद फोटोक आधार पर पढ़बाक प्रयास भेल।

दृश्य भागमे एतबे बुझायल—“...कागज न्यायालय धरि नहि पहुँचल तऽ...” तकर पाछाँ दू पाँति धुँधला। फेर—“...पहिल छह चिन्ह जतेक जरूरी...” आ पन्ना ओहि ठाम टूटल। अगिला अंश गायब।

माधवी साँस रोकि पढ़लक। “पहिल छह चिन्ह।”

अभिराम कहलक, “तँ सातम कोनो अगिला बात हो सकैत अछि। मुदा अनुमान।”

जयनारायणक आँखि चमकल, मुदा ओ सहमत होएबाक बदला कहलनि, “अनुमान लिखू नहि। एखन आधा पत्र अछि। जे आधा नहि अछि, ओकरा अपन बुद्धि सँ भरब सभसँ खतरनाक काज।”

माधवी कै ई वाक्य सीधा अपन ऊपर लागल। सपना सभ खाली जगह भरि रहल छल। सूत्र आँकड़ाक खाली जगह संभावना सँ भरैत छल। मनुष्य कथा सँ। दुनूकें सीमा चाही।

“धागा?” ओ पुछलक।

जयनारायण कहलक, “अलग पैक होएत। फाइबर, रंग, उमेर—जतेक जाँच सम्भव। मुदा ई मानि नहि लिअ जे १९३४क अछि केवल एहि लेल जे हमरा सभ ओही कथा खोजैत छी।”

अभिराम माधवी दिस तकलक। एहि बेर ओकर नजरमे विजयी तर्क नहि, सावधानी छल। “सूत्रक डेटाबेसमे पुरान दस्तावेज-बँधनीक नमूना कम अछि। ई चीज देखाकऽ ओ बहुत आत्मविश्वास सँ किछु कहत तऽ हम पहिने ओकर आत्मविश्वास पर प्रश्न करब।”

माधवी हँसि देलक। “आइ अहाँ मनुष्य जकाँ बाजलहुँ।”

“आ अहाँ आइ आँकड़ा जकाँ।”

“बराबरी?”

“एखन लेल।”

गोपाल खोखर दिस तकैत छल। “हमर बाबा कहैत छलाह, एहि देवालमे घरक स्त्री सभ चिट्ठी नुका कऽ रखैत छलीह। हम ठट्ठा बुझैत रही।”

जयनारायण पुछलनि, “बाबाक नाम? जेना याद अछि, तिथि?”

गोपाल हँसल। “देखलहुँ? कथा कहिते कागज माँगि लेलनि।”

“कथा कै अपमान नहि। ओकर पयर कतऽ अछि, से देखैत छी।”

बाहर साँझक उजास पात पर पड़ि रहल छल। खोखर खुलल रहितो भीतरक बहुत किछु बन्दे। दस्तावेज नहि। कुसुमाक ठोस भाग्य नहि। केवल आधा पत्र आ नील धागा—दू एहन वस्तु जे उत्तर देबाक बदला प्रश्न बढ़बैत छल।

माधवी बाहर आँगनमे आयल। अभिराम पाछाँ। किछु क्षण दुनू चुप। हवा बरखा पहिनेक गन्ध लऽ कऽ चलि रहल छल।

“अहाँ सचमे सपना मे नील धागा देखलहुँ?” अभिराम पुछलक।

“हँ।”

“पहिने कतहु देखल रहब?”

“हो सकैत अछि। पोथीक जिल्दमे, ककरो कपड़ामे, बचपनमे। मोन सभ संग्रह करैत अछि।”

“अहाँ हमरा सँ ई उत्तर अपेक्षा नहि कएने रही।”

“हम स्वयं सँ सेहो नहि।”

अभिराम किछु कहए चाहलक, फेर चुप। ओकर हाथ माधवीक हाथ लग लगभग पहुँचल, मुदा छुअल नहि। माधवी एहि अधूरा दूरी केँ अनुभव कएलक। रहस्य दुनूकेँ नजदीक आनैत, फेर सावधान करैत।

एकाएक भीतर सँ जयनारायण बजौलनि, “अभिराम! सूत्रमे पुरान भवनक मरम्मत-अभिलेख खोजू। कोन बर्ख ई खोखर बन्द भेल, ओ भेटल तऽ पत्रक समय-सीमा कने घटत।”

अभिराम उत्तर देलक, “एखन।” फेर माधवी केँ धीरे कहलक, “देखलहुँ? रोमांसक समय हुनका लग सदिखन अभिलेख आबि जाइत अछि।”

माधवीक गाल गरम भऽ गेल। “कुन रोमांस?”

“ठीक अछि, अभिलेख।”

ओ भीतर दौड़ि गेल। माधवी मुस्कुराइत पाछाँ चललीह।

ओहि राति “सूत्र”क पहिल मिलान आयल—हवेलीक पश्चिम देवालक मरम्मत १९३५ सँ १९३७ बीच दर्ज, मुदा ठेकेदारक पूरा बही अनुपलब्ध। प्रणाली तीन सम्भावित तिथि देलक, आत्मविश्वास मध्यम। अभिराम परिणामक ऊपर मोट अक्षरमे लिखलक—“ई काल-सीमा अछि, प्रमाणित तिथि नहि।”

जयनारायण पढ़ि सन्तोष सँ माथ हिलौलनि। “एखन मशीन शिष्ट भऽ रहल अछि।”

अभिराम कहलक, “मशीन नहि, परिचालक डरि रहल अछि।”

“डर कखनो-कखनो बुद्धिक पहिल सीढ़ी।”

माधवी आधा पत्रक डिजिटल छवि देखैत रहल। “पहिल छह चिन्ह जतेक जरूरी...” वाक्य ओहि ठाम कटैत छल जतऽ सम्भवतः सभसँ जरूरी शब्द शुरू होएत। नील धागा अलग पारदर्शी थैलीमे, छोट, साधारण, लगभग तुच्छ। मुदा हुनका लग ओ रातिक सपनाक एक टुकड़ा जकाँ छल।

ओ अपने आप केँ रोकलक—सपना अलग, वस्तु अलग।

तखन स्क्रीनक कोनमे “सूत्र”क एक स्वतः टिप्पणी उभरल—“अधूरा पाठक आधार पर ‘सातम’ सम्बन्धी निष्कर्षक विश्वसनीयता अत्यल्प।”

माधवी पढ़ि हँसल। “एहि बेर हम सहमत छी।”

जयनारायण दूर सँ पुछलनि, “ककरा संग?”

“सूत्र संग।”

“तँ ई दिनो देखबाक छल।”

तीनू हँसल। मुदा हँसी समाप्त भेलाक बाद कोठरीमे आधा पत्रक छवि रहि गेल। शब्द आधा, इतिहास आधा, नेह आधा, साक्ष्य आधा।

आ पुरान हवेलीक खुलल देवालक भीतर, जतऽ डिबिया नब्बे बर्ख अन्हारमे रहल हो सकैत छल, हवा पहिल बेर सीधा लागल। वेंटिलेटरक ढीला लोहा दूर सँ एक बेर फेर झनकल।

अभिराम कहलक, “हवा।”

माधवी एहि बेर विरोध नहि कएलक।

मुदा ओकर हथेली अपने आप बन्द भऽ गेल—जकाँ नील धागाक एक अदृश्य छोर एखनहुँ ओ पकड़ने हो।

अध्याय १९ — हथेली पर दू रेखा

देवालक खोखरसँ भेटल नील धागा जाँचघर पठाओल गेल, आधा पत्र सुरक्षित आवरणमे राखल गेल, आ हवेलीक कोठरी फेर मोहरबन्द भऽ गेल। मुदा माधवीक मोन मोहरबन्द नहि भेल। राति ओकरा नींद आबि गेल छल, सपना नहि आयल; तइयो भोरमे उठिते पहिल नजर अपन हथेली पर गेल।

उज्जर धूरि नहि छल। केवल पुरान रेखा सभ—एक-दोसरासँ कटैत, मुड़ैत, फेर कतहु जा कऽ ओझराइत। ओ अपने आप हँसल। “आब हाथो पूछत?”

माय सिलाइक मशीन लग बैसल छलीह। धागा सुईमे पिरोइत कहलखिन, “हाथ जँ किछु पूछैत हो तऽ अंबिका काकी लग जा। हमरा लग तऽ एखन तीनटा ब्लाउज आ दूटा पेटीकोट पूछैत अछि जे कखन बनब।”

माधवी हुनका देखलक। “अहाँ सेहो मानैत छी?”

“की?”

“हथेली, नछत्तर, संकेत।”

माय चश्मा माथ पर चढ़ौलनि। “हम मानैत छी जे अंबिका काकी लोकक मुँह देखिकऽ आध बात बुझि जाइत छथि। बाकी आध हाथ पर लिखल अछि कि लोक अपने कहि दैत अछि—से हम नहि जानैत छी।”

ई उत्तर माधवी केँ नीक लागल। न पूरा विश्वास, न पूरा उपहास। ओहि बीच दूरभाष बजल। अभिराम छल।

“जाँचघर सँ एखन किछु नहि आयल,” ओ कहलक, “मुदा जयनारायण बाबू कहने छथि जे काल्हिक भेटल वस्तु पर एखन अनुमान नहि बढ़ाउ। अहाँ एखन कतऽ छी?”

“घर।”

“आइ अभिलेख-कक्ष नहि आएब?” अभिराम पुछलक।

“पहिने अंबिका काकी लग जाएब।”

दोसर कात एक क्षण चुप्पी। “किएक?”

“हथेली देखेबाक।”

अभिरामक हँसी दबल रहितो माधवी सुनि लेलक। “अहाँ हँसलहुँ?”

“नहि। खाँसी छल।”

“खाँसीमे एतेक आनन्द?”

“हमरो संग लऽ चलू। हम वैज्ञानिक ढंगसँ खाँसब।”

माधवी दूरभाष काटि देलक, मुदा मुँह पर हँसी आबि गेल। आध घड़ी बाद अभिराम सचमुच ओकर घरक गलीमे मोटरसाइकिल नहि, पुरान साइकिल धकेलैत ठाढ़ छल। बरखाक बाद बाटमे एतेक कीचड़ जे सवारी सँ बेसी पयर भरोसेमन्द।

अंबिका काकीक घर पोखरिक पूरब कात, बाँसक झुरमुट पाछाँ छल। दुआरि पर तुलसीक चौरा, काठक पुरान पीढ़ी, आ ओसारामे धूपमे सुखाइत मखानक छिलका। अंबिका काकी एकटा किशोरीक माथमे तेल मलैत छलीह। माधवी केँ देखिते कहलखिन, “पोथी पढ़ि कऽ आँखि लाल कऽ लेलहुँ, आब हथेली पढ़ेबाक?”

अभिराम धीरे फुसफुसायल, “सूचना पहिने पहुँचि गेल।”

माधवी ओकरा कोहनी मारलक। अंबिका काकी देखलनि, मुदा किछु नहि कहलनि। किशोरी गेलापर ओ दुनू केँ पीढ़ी पर बैसौलनि।

“पहिने कहू,” काकी माधवीक हथेली पकड़बाक बदला ओकर चेहरा देखैत पुछलखिन, “हाथ किएक देखेबाक अछि?”

“मात्र... जानबाक।”

“की जानबाक?”

“जे सपना सभ... आ ई जे किछु भऽ रहल अछि...”

“सपना हाथमे लिखल होइत तऽ तकिया बेचारा बेकार भऽ जाइत।” अंबिका काकी हँसलखिन। अभिराम मुँह घुमा लेलक। माधवी ओकरा घूरलक।

काकी आब हथेली लेलनि। हुनकर उँगुरी ठंढी नहि, गरम छल। ओ रेखा सभ पर नख नहि चलौलनि; केवल हथेली खोलि प्रकाश दिश झुकौलनि। “एहि हाथमे मृत्यु खोजि रहल छी?”

माधवी चौकल। “हम कहलहुँ?”

“नहि। मुदा जे छोड़ी तीन बेर अपन कलाईक नस दिस तकैत आ फेर हमरा दिस, ओकर प्रश्न सामान्यतः विवाहक तिथि नहि होइत।”

अभिरामक हँसी एहि बेर सचमुच छुटि गेल। “काकी, ई तऽ आँकड़ा-आधारित—”

“चुप रहू।” माधवी तीख स्वरमे कहलक।

अंबिका काकी अभिराम दिस तकलखिन। “अहाँक हथेली बादमे। पहिने मुँहक रेखा सीधा करू।”

अभिराम चुप भऽ गेल।

काकी माधवीक हथेली पर दू रेखा लग उँगुरी रोकलनि। “ई देखू। लोक कहत—एकटा जीवन, एकटा भाग्य। हम एना नहि कहैत छी। हमरा लेल ई दू बाट अछि। दुनू एक ठाम नजदीक, फेर अलग, फेर आगाँ जा कऽ काटैत। अहाँक एखनक हालत हमरा एहि जकाँ बुझाईत अछि—दू सत्यक बीच फँसल नेह।”

“नेह?” माधवी हाथ खींचबाक जकाँ भेल।

अभिराम फेर खखारलक।

“अहाँ बाहर जा कऽ खाँसू,” माधवी कहलक।

अंबिका काकी हाथ नहि छोड़लनि। “नेह शब्द सुनिते एतेक क्रोध किएक? नेह केवल छौड़ा-छौड़ीक नहि होइत। गुरु सँ नेह, मृतक सँ नेह, न्याय सँ नेह, अपन धारणासँ नेह। कखनहुँ हम सत्यसँ बेसी अपन मानल सत्य केँ चाहैत छी।”

माधवीक क्रोध कने ढील भेल। ओकर मोन वसुधा दिस गेल—ओ विश्वास जे वसुधा आत्महत्या कऽए नहि सकैत छलीह। ई विश्वास प्रेम छल कि साक्ष्य? फेर अभिराम दिस—ओ सदिखन आँकड़ाक पक्ष लेत, ई मान्यता सेहो की ओकर बनाओल कथा नहि?

“दू सत्य?” ओ धीरे पुछलक।

“एकटा जे आँखि देखैत अछि। दोसर जे मोन पहिने सँ मानि बैसल अछि। दुनूक बीच नेह फँसि जाए तऽ मनुष्य हाथ नहि, निर्णय पढ़बैत अछि।”

अभिराम आब हँसि नहि रहल छल। “काकी, ई हथेलीसँ बुझलहुँ कि माधवीक गप्पसँ?”

अंबिका काकी ओकरा सीधा देखलनि। “अहाँ जँ एकटा संगणक केँ दस हजार लोकक चलन देब, ओ अगिला चलनक अनुमान करत। हम सत्तर बर्ख सँ लोकक मुँह, घर, जनम, मरन, झगड़ा, मेल-मिलाप देखैत छी। हमर गलती सेहो होइत अछि। मुदा अनुभव केँ जादू कहि उपहास करब, आ आँकड़ा केँ विज्ञान कहि पूजा करब—दुनू मूर्खता।”

अभिरामक चेहरा गम्भीर भेल। “ई बात हम लिखि सकैत छी।”

“लिखू नहि। पहिने बुझू।”

ओसारामे एक क्षण मौन पसरल। बाँसक पात एक-दोसरासँ रगड़ाइत छल।

माधवी पुछलक, “नील धागा बारे अहाँ किछु मोन कऽ सकैत छी? पुरान घरमे चिट्ठी बाँधबाक रीति?”

अंबिका काकीक आँखि क्षण भर दूर गेल। “नील धागा अनेक काजमे। पोथी बाँधब, बच्चाक कलाई, मवेशीक चिन्ह, कपड़ाक गठरी। रंग मात्रसँ कथा नहि बनाउ। रहमत सँ पूछू; पुरान जिल्द ओकर हाथ बेसी चिन्हैत अछि।”

“कुसुमा?”

काकी तत्काल उत्तर नहि देलनि। “नाम सुनने छी। कथा अनेक सुनने छी। मुदा कथा आ अभिलेख अलग राखू। जखन उचित समय होएत, जे मोन अछि कहब।”

अभिराम फुसफुसायल, “फेर उचित समय।”

“अहाँकें सभ बात तुरन्त चाही?” अंबिका काकी पुछलखिन। “यंत्रक संग रहैत-रहैत प्रतीक्षा विसरि गेलहुँ?”

अभिराम मुस्करायल। “सम्भव।”

माधवी अपन हाथ घुमा कऽ देखलक। ओहि दू रेखामे ओकरा एखन किछु अद्भुत नहि देखाइत छल। मुदा काकीक “दू सत्यक बीच फँसल नेह” कानमे अटकले रहल।

बाहर निकलिते अभिराम कहलक, “हम तऽ केवल एतेक कहब जे हथेली पर रेखा बहुते अछि; जतेक कथा चाही, बनि सकैत अछि।”

माधवी रुकि गेल। “अहाँ भीतर किएक चुप भऽ गेल छलहुँ?”

“कखन?”

“जखन काकी कहलीह अनुभवक आँकड़ा।”

“किएक तँ ओ गलत नहि छलीह।”

“तखन हँसलहुँ किएक?”

अभिराम साइकिलक हैंडल पर हाथ राखि चुप। “अहाँ ‘हथेली देखेबाक’ कहलहुँ तऽ हमरा लगल अहाँ काल्हिक नील धागा केँ अलौकिक सिद्ध करबाक बाट खोजि रहल छी। हम... हो सकैत अछि—”

माधवी तुरन्त टोकलक, “हो सकैत अछि अहाँ पहिने सँ निर्णय कऽ लेने रही।”

अभिराम हँसल। “ठीक। हो सकैत अछि हम पहिने सँ निर्णय कऽ लेने रही।”

“सूत्र जकाँ?”

“एखन धरि सूत्र हमरा सँ ई दोष नहि सीखल अछि।”

“निश्चिन्त रहू, सीखत।”

दुनू चलि पड़ल। पोखरि किनारि पर एक ठाम कीचड़ बेसी छल। माधवीक पयर फिसलल; अभिराम ओकर कलाई पकड़ि लेलक। क्षण बड्ड छोट, मुदा हाथ छुटबाक पहिने दुनू

एक-दोसराक आँखिमे तकल। अंबिका काकीक वाक्य अनचाहे मोन पड़ल। माधवी तुरन्त हाथ छुड़ा लेलक।

“हम स्वयं चलि सकैत छी।”

“हम केवल गिरबासँ बचौलहुँ।”

“हम गिरैत नहि रही।”

“आँकड़ा कहैत अछि—”

“आँकड़ा केँ पोखरिमे फेकि दिअ।”

अभिराम हँसि पड़ल। एहि बेर माधवी सेहो हँसल, मुदा भीतर कतहु हलुक असहजता रहल।

अभिलेख-कक्ष पहुँचलापर जयनारायण पहिने सँ छलाह। मेज पर नील धागाक जाँच-पर्ची, आधा पत्रक उच्च-गुणवत्ताक छवि आ वसुधाक मुकदमाक सात टोला सूची। ओ दुनू केँ देखिते पुछलनि, “हथेली की कहलक?”

माधवी ठमकि गेल। “अहाँकेँ के कहल?”

“अंबिका हमरा सँ पहिने दूरभाष पर रहमतक नम्बर माँगने छलीह। कारण पूछलहुँ, तऽ कहलीह ‘छौड़ी सभ इतिहास छोड़ि हथेली पर पहुँचि गेल अछि।’”

अभिराम जोर सँ हँसल। माधवी कुर्सी खींचि बैसि गेल। “सभ षड्यन्त्र हमरा विरुद्ध।”

जयनारायण मुस्कुरौलनि, फेर गंभीर भऽ कऽ कागज आगाँ बढ़ौलनि। “ठीक समय पर आबि गेलहुँ। सूत्र नवा सम्बन्ध निकालने अछि। दुलारीक नामसँ जुड़ल नगद निकासी, एक साझा दूरभाषक चलन, आ नदी-पारिक दू स्थान। प्रणाली ओकरा मुख्य संदिग्धक श्रेणीमे ऊपर उठा देने अछि।”

माधवीक हँसी तुरन्त थमि गेल। “दुलारी?”

अभिराम स्क्रीन दिस बढ़ल। “हम एखन पूरा नहि देखलहुँ।”

जयनारायण ओकरा रोकलनि। “पहिने ई मोन राखू—रेखा हथेली पर हो वा स्क्रीन पर, ओकर अर्थ अपने आप नहि निकलैत। संदर्भ बिना दुनू धोखा दऽ सकैत अछि।”

अंबिका काकीक ओसारा, दू रेखा, अभिरामक हँसी—सभ एक क्षणमे दूर भऽ गेल। स्क्रीन पर लाल संकेत चमकि रहल छल।

‘प्राथमिक संदिग्ध: दुलारी सदाय।’

माधवीक हथेली अनायास बन्द भऽ गेल। एहि बेर ओकरा नील धागा नहि, दुलारीक भयभीत चेहरा मोन पड़ल।

अध्याय २० — सूत्रक पहिल भूल

अभिराम स्क्रीनक आगाँ बैसल, मुदा तुरन्त परिणाम खोलि नहि पढ़लक। ओकर आदति छल—पहिने कच्चा आँकड़ा, फेर प्रणालीक निष्कर्ष। जयनारायण एहि आदति केँ पसन्द करैत छलाह। आइक परिणाम गंभीर छल। “मुख्य संदिग्ध” शब्द ककरो जीवनक दिशा बदलि सकैत अछि।

सूत्रक सार चारि बिन्दुमे छल। वसुधाक मृत्यु पहिनेक दू दिनमे दुलारीक बैंक खातासँ तीन बेर नगद निकासी। वसुधाक अभिलेख-कक्ष लग सक्रिय रहल एक दूरभाष-संख्या, जे दुलारीक विधिक-सहायता फॉर्ममे सम्पर्क-संख्या रूपेँ लिखल। ओहि संख्याक राति साढ़े दस बजे शहरक दक्षिण टावर, भोरक समय नदीक पश्चिम किनारिक टावर, आ दोसर दिन नदी-पारि समूहमे उपस्थिति। तेसर, वसुधाक मृत्यु पहिने दुलारीक मजदूरी खातामे एक अनजान खातासँ छोट रकम आयल। चौठ, दुलारी गायब।

प्रणाली एहि सभ केँ जोड़ि सम्भावना अंक बढ़ा देने छल।

माधवी स्क्रीन देखैत कहलक, “तीन बेर नगद निकालब अपराध अछि?”

अभिराम कहलक, “नहि। मुदा गायब होएबाक पहिने असामान्य लेन-देन मॉडलमे जोखिम बढ़बैत अछि।”

“असामान्य ककर लेल?” जयनारायण पुछलनि।

अभिराम उत्तर देबाक पहिने रुकल। “दुलारीक पिछला छह महिनाक ढाँचा लेल।”

“ओ छह महिना ओकर जीवनक सामान्य ढाँचा अछि?”

“उपलब्ध आँकड़ा ओतबे।”

“तँ ‘उपलब्ध’ कहू। ‘सामान्य’ नहि।”

अभिराम माथ हिलेलक। प्रणालीक पटल पर टिप्पणी जोड़लक—‘आधार-अवधि सीमित।’

जयनारायण पहिल निकासी पर उँगुरी राखलनि। “स्थान?”

“बस-अड्डा लगक ग्राहक-सेवा केन्द्र।”

“दुलारी स्वयं गेल?”

“लेन-देन ओकर खातासँ।”

“प्रश्न दोसर छल।”

अभिराम चुप।

जयनारायण विनय ठाकुर केँ दूरभाष कएलनि। “दुलारीक बैंक निकासी केन्द्रक संचालक सँ पूछताछ भेल?”

विनय कहलक, “सूचीमे अछि। आइ—”

“आइ।” जयनारायण सहज सुधारलनि। “हम स्वयं जा रहल छी। पुलिसक लोक सेहो पठाउ, मुदा एहि बेर मशीनक निष्कर्ष पहिने मत कहब। पहिने ओकर स्मृति सुनब।”

तीनू बस-अड्डा पहुँचल। ग्राहक-सेवा केन्द्र नामक छोट कोठरी पानक दोकान आ औषधालयक बीच दबायल छल। भीतर हरिनारायण महतो लैपटॉप, जैवमितीय यंत्र आ नोटक छोट बक्सा संग बैसल छलाह। जयनारायण सामान्य ढंगसँ तिथि कहलनि।

हरिनारायण भौंह सिकोड़लनि। “दुलारी? हँ, ओकर खाता एतऽ चलैत अछि। मुदा तीन बेर निकासी सुनि कऽ गड़बड़ बुझाईत अछि। एकटा दिन ओकर माय आयल छलीह।”

“माय अपन बेटी खातासँ?” माधवी पुछलक।

“दुलारी संग छल पहिल बेर। पाँच हजार निकाललक। तकर दू घंटा बाद फेर आयल— माय कहलीह औषधि-दोकानदार पूरा रकम नगद माँगलक, जे बचल छल ओ कम पड़ि गेल। दुलारी एतऽ छल कि नहि...” ओ माथ खुजलौलनि। “दोसर बेर हो सकैत अछि पड़ोसिन संग। मशीनमे अंगूठा तऽ खाताधारकक चाही। हँ, दुलारी आयल हएत, मुदा पइसा माय लेल छल।”

“तेसर?”

“तेसर निकासी छोट—आठ सय। ओहि दिन कतेको लोकक भुगतान अटकल छल। सम्भव जे दुलारीक मजदूरी आयल आ निकाललक।”

अभिराम पुछलक, “अहाँ रसीद रखैत छी?”

“डिजिटल अभिलेख अछि। कैमरा सेहो, मुदा तीस दिन बाद आपे मिटि जाइत अछि। तिथि पुरान अछि?”

तिथि सुनि ओ निराशा सँ माथ हिलेलनि। दृश्य-अभिलेख जा चुकल छल। मुदा निकासी ‘असामान्य’ छल, ई धारणा कमजोर भऽ गेल। गरीब घरमे एक खाताक रकम ककर औषधि, ककर भोजन, ककर कर्जमे गेल—बैंक पंक्ति नहि कहैत।

बाहर आबि जयनारायण कहलक, “एखन दूरभाष।”

विधिक-सहायता फॉर्मक संख्या रहिमा खातूनक नाम पर निकलल। रहिमा दुलारीक बस्तीमे दू घर छोड़ि रहैत छलीह। हुनकर घर पहुँचला पर बुझायल मोबाइल एके घरक नहि, गलीक छोट साझा साधन जकाँ छल। रहिमाक पति परदेश, बेटा स्कूल, बहू सिलाइ-काज, आ पास-पड़ोसक चारि परिवार आपातकालमे ओहि संख्या देइत।

रहिमा कहलीह, “दुलारीक अपन मोबाइल कतऽ? कखनहुँ हमर सँ लऽ कऽ वसुधा दीदी केँ बजबैत। रातिक पाठशालाक फॉर्ममे सेहो हमर नम्बर लिखने छल।”

“हत्या राति मोबाइल ककरा लग छल?” जयनारायण पुछलनि।

रहिमा बेटा शमशेर केँ बजौलनि। सत्रह बर्खक छौड़ा आयल। “ओ राति हम फुटबॉल देखए घाट-पारिक चचेरा भाय लग गेल रही,” ओ कहलक। “मोबाइल हमर जेबमे छल। राति देर भेल तऽ ओतहि सुतलहुँ।”

अभिरामक चेहरा बदलल। “नदी-पारिक टावर...”

शमशेर कहलक, “भोरमे नाव नहि चलल, बरखा छल। हम पश्चिम कात घूमि पुल सँ आएलहुँ।”

टावर-क्रम स्क्रीनक लाल रेखा जकाँ अभिरामक मोनमे फेर बनि गेल—शहर, पश्चिम किनार, नदी-पार। प्रणाली एहि चलन केँ दुलारीक यात्रा मानि लेने छल, कारण संख्या दुलारीक फॉर्ममे छल। वास्तविकता—मोबाइल शमशेरक जेबमे।

माधवीक स्वरमे रोष छल। “तखन सूत्र झूठ कहल?”

अभिराम तुरन्त कहलक, “झूठ नहि। गलत सम्बन्ध जोड़लक। ओकरा जे पहचान-नियम देल गेल, ओ संख्या केँ व्यक्ति संग बेसी मजबूती सँ बाँधैत अछि।”

जयनारायण कहलक, “मशीन झूठ बोलबाक इच्छा नहि रखैत। मुदा गलत धारणा परिणाममे ओतबे हानि कऽ सकैत अछि जतेक मनुष्यक झूठ।”

“हमरा ई नियम बदलबाक पड़त,” अभिराम बुदबुदायल।

“पहिने लिखू—एहि परिणाम पर भरोसा किएक घटल। गलती लुकाबू नहि।”

अभिराम माथ हिलेलक। ओकरा अपन प्रणाली पर गर्व छल; एखन पहिल बेर ओ गर्व चोट खा रहल छल। माधवी ओकर चेहरा देखलक। काल्हि अंबिका काकीक घर ओ हथेली पर हँसल छल; आइ स्क्रीनक रेखा ओकरा स्वयं चुप करा देने छल। माधवी चाहितो व्यंग्य नहि कएलक।

तेसर बिन्दु—अनजान खातासँ छोट रकम—जाँचला पर ओहो अलग अर्थ लएलक। रकम बारह सय रुपैया छल। प्रेषक नाम संक्षिप्त, मॉडल ओकरा अपरिचित कहने छल। बैंक शाखा

सँ पुष्टि भेल जे ओ सात टोला विधिक सहायता समिति द्वारा साक्षी सभक यात्रा आ दस्तावेज नकल व्यय लेल देल छोट सहायता छल। दुलारी एकल नहि; ओहि सप्ताह नौ लोक केँ समान रकम गेल छल।

अभिराम कार्यालय लौटि सूत्रक पटल खोललक। “हमरा प्रणालीक एक दोष स्पष्ट अछि। ई ‘एक व्यक्ति—एक दूरभाष—एक आर्थिक ढाँचा’ मानि कऽ चलैत अछि। साझा साधन, नगद जीवन, परिवारक संयुक्त खर्च—ई सभ कम प्रतिनिधित्वित।”

जयनारायण कुर्सीमे पाछाँ झुकलनि। “गरीबीक जीवन कागज पर बेसी खाली जगह छोड़ैत अछि। जकर जीवनमे प्रत्येक काजक रसीद अछि, ओकरा यंत्र सहज पढ़ैत अछि। जे एक मोबाइल पाँच घर बाँटैत, जे नगदमे मजदूरी लैत, जे पड़ोसीक खातासँ टिकट कटबैत—ओकर जीवन यंत्रक नजरमे संदिग्ध बनि सकैत अछि, जँ नियम सावधान नहि।”

माधवी कहलक, “मनुष्य सेहो तऽ एहेन करैत अछि। दुलारी गायब, गरीब, राति वसुधा लग गेल—सभ तुरन्त दोषी मानि लेलनि।”

“ठीक,” जयनारायण कहलनि। “एहि कारण मशीनक गलती देखिकऽ मनुष्य अपनाकेँ निर्दोष नहि मानय। पूर्वग्रह दू ठाम रहि सकैत अछि—कोडमे आ माथमे।”

अभिराम नवा टिप्पणी लिखलक: ‘संदिग्धता अंक पुनर्मूल्यांकन। दूरभाष-स्वामित्व अस्थिर। नगद निकासी पारिवारिक प्रयोजन। सहायता रकम वैध।’ लाल संकेत पीयर भेल, फेर दुलारी मुख्य संदिग्ध सूचीसँ नीचाँ सरकल।

“एहि परिवर्तनक इतिहास बचत?” जयनारायण पुछलनि।

“पूरा। पुरान परिणाम मिटत नहि। किएक बदलल, से सेहो।”

“तखन उपयोगी।”

अभिराम कने राहतक साँस लेल। “सूत्र गलती मानि सकैत अछि।”

माधवी कहलक, “सूत्र कि अहाँ?”

“दुनू।”

माधवी स्वयं हँसल। “नीक। अंबिका काकी सुनतीह तऽ कहतीह हथेली सुधरि रहल अछि।”

अभिराम मुँह बनौलक। “फेर हथेली!”

ओहि क्षण कमली देवी चाय लऽ कऽ आयलीह। जयनारायण चीनी बिना, माधवी आध चमच, अभिराम दू चमच। कमली बिना पूछने तीनू कप सही हाथमे दऽ देलनि।

जयनारायण कप देखैत मुस्कुरौलनि। “देखलहुँ? कमलीक डेटाबेस।”

कमली पुछलखिन, “की?”

“किछु नहि। अहाँ हमरा सभक आदति याद रखैत छी।”

“ईमे की बड़ बात? रोज देखैत छी।”

अभिराम कप हाथमे रोकि गेल। “रोज देखैत छी”—अंबिका काकी सेहो लगभग एहेन कहने छलीह।

कमली चलि गेलापर अभिराम पुछलक, “जयनारायण बाबू, जँ आदति एतेक महत्त्वपूर्ण अछि, तऽ दुलारीक कोनो आदति?”

“एहि प्रश्न पर हम काल्हिसँ काज कऽ रहल छी। दुलारी रातिक पाठशाला सँ घर लौटैत कखनहुँ मुख्य सड़क नहि लैत—कारण बजारक दू लड़का ओकरा छेड़ैत छल। ओ पोखरिक पाछाँ सँ घुरि जाइत। वसुधा लग जखन राति जाइत, प्रायः ककरो संग लौटैत। हत्या राति ओ एकली गेल। ई आदतिक टूटन अछि। मुदा कारण भय सेहो हो सकैत, बाध्यता सेहो।”

माधवी पुछलक, “ओ लौटली?”

“एखन प्रश्न सएह।”

अभिराम स्क्रीन पर रातिक सम्भावित बाट खोललक। “जँ रहिमाक मोबाइल दुलारी संग नहि छल, तऽ हमारे लग ओकर गति शून्य अछि।”

“शून्य नहि,” जयनारायण कहलक। “अनजान।”

अभिराम फेर टिप्पणी बदललक। ‘स्थानः अज्ञात।’

जयनारायण सन्तोष सँ कहलनि, “अनजान लिखब सेहो ज्ञानक भाग अछि।”

दुपहर ढलि रहल छल। माधवी नछत्तर-पोथीक प्रतिलिपि समेटलक। “तखन एखन दुलारीक बारे हमरा सभ की जानैत छी?”

जयनारायण एक-एक शब्द तौलि कहलनि, “ओ वसुधासँ भेटए आयल। ओकर बाद गायब। ओकर अपन दूरभाष नहि। ओकरा डर छल। आ एखन धरि एहन कोनो ठोस साक्ष्य नहि जे ओ हत्या केलक।”

“आ एहन कोनो साक्ष्य नहि जे ओ जीवित अछि,” माधवी धीरे कहलक।

कोठरी चुप भऽ गेल।

अभिरामक सामने स्क्रीन पर नवा परिणाम आवि रहल छल—दुलारीक पुरान सहायता फॉर्म, रातिक पाठशाला उपस्थिति, कचहरीक प्रवेश-पुस्तिका, सात टोला मुकदमाक साक्षी-सूची। एकाएक प्रणाली एक पुरान टिप्पणी उजागर केलक। वसुधा दुलारीक नामक सामने अपन हाथे लिखने छलीह—“सम्पर्क सुरक्षित नहि। बात केवल आमने-सामने।”

माधवीक देहमे सिहरन दौड़ल। “दीदी केँ पहिने सँ ज्ञात छल।”

जयनारायण पर्ची केँ देखलनि। “कम सँ कम एतेक ज्ञात छल जे दुलारीक सम्पर्क माध्यम भरोसेमन्द नहि।”

अभिराम निराश स्वरमे कहलक, “ई टिप्पणी जँ पहिने संरचित आँकड़ामे रहित...”

“रहित तऽ गलती कम होइत,” जयनारायण कहलनि। “मुदा जीवन पहिने सँ संरचित नहि होइत। अन्वेषणक काज ओकरा बुझब, बलजोरी चौखटामे ठेलब नहि।”

साँझ होएबाक कने पहिने माधवी घर जाए लेल उठल। ओहि समय ओकर दूरभाष काँपल। अज्ञात संख्या। पहिले एक खाली संदेश, तकर तुरन्त बाद एक ध्वनि-अंश। अवधि—सात सेकण्ड।

माधवीक हाथ ठमकि गेल। “केओ आवाज भेजने अछि।”

अभिराम ओकर लग आबि गेल। जयनारायण उठि ठाढ़ भेलाह।

माधवी ध्वनि चलौलनि। पहिने हवा, दूर पानिक थपकी, फेर ककरो दबल साँस। तकर बाद एक युवतीक काँपत स्वर—

“हम भागल नहि छी...”

आ ध्वनि कटि गेल।

माधवीक चेहरा पीयर पड़ि गेल। “ई दुलारी अछि।”

अध्याय २१ — दुलारीक आवाज

सात सेकण्डक ध्वनि फेर चलल।

हवा। पानिक हलुक थप-थप। दबल साँस। फेर—“हम भागल नहि छी...”

माधवी केँ दुलारीक स्वर चिन्हबामे कणमात्र सन्देह नहि छल। वसुधाक कार्यालयमे ओ कतेको बेर सुनने छल—धीमा, कने नासिक, वाक्यक अन्तमे आवाज नीच पड़ैत। मुदा जयनारायण तुरन्त कहलनि, “चिन्हलहुँ, ई अलग बात। प्रमाणित करब अलग।”

माधवी व्यग्र भऽ उठल। “हम दुलारी केँ चिन्हैत छी।”

“हम अहाँ पर सन्देह नहि करैत छी। हम क्रम बचा रहल छी। मूल संदेश ककर यंत्रमे आयल, समय, संख्या, ध्वनि-अंश—सभ सुरक्षित करू।”

अभिराम माधवी केँ दूरभाष बन्द नहि करबाक कहलक। “सन्देश अग्रेषित नहि करू। स्क्रीनक छवि, समय-चिह्न लैत छी। पुलिस केँ मूल यंत्र देखेबाक पड़ैत।”

विनय ठाकुर पन्द्रह मिनटमे पहुँचि गेलाह। अज्ञात संख्या पर तुरन्त दूरभाष कएल गेल—बन्द। संदेश साधारण दूरसंचार नहि, एक इंटरनेट-आधारित सन्देश-सेवा सँ आयल छल। विनय विधिक प्रक्रिया अनुसार सेवा-प्रदाता आ दूरसंचार संस्था केँ अनुरोध पठेबाक व्यवस्था कएलनि।

“एखन धरि ई मानू जे कोनो अज्ञात व्यक्ति दुलारीक आवाज जकाँ ध्वनि पठौलक,” ओ कहलनि। “न तऽ हम तुरन्त नदी-पारि दौड़ि जाउ, न ई मानि लिअ जे ठट्ठा अछि।”

माधवी बेचैन। “जँ ओ संकटमे अछि?”

जयनारायण ओकर कन्धा पर हाथ रखलनि। “एहि कारण देर नहि करब। मुदा गलत ठाम दौड़लासँ सही ठाम देर होइत अछि।”

अभिराम ध्वनि-अंश केँ प्रतिलिपि पर चलौललक, मूल नहि छुलक। पृष्ठभूमिक ध्वनि अलग करबाक साधारण विश्लेषण कएलक। “हवा तेज। पानिक सतह लग। एकटा धातुक टक-टक सेहो अछि—नावक जंजीर हो सकैत, मुदा अनुमान।”

जयनारायण कहलक, “अनुमान लिखू। निष्कर्ष नहि।”

“हँ।”

माधवी आँखि मुनि फेर सुनलक। “पाछाँ ककरो आवाज?”

अभिराम ध्वनि धीमा कऽ चलौललक। अन्तिम आध सेकण्डमे सचमुच कोनो अस्पष्ट ध्वनि छल—मानवीय कि पखेरू, स्पष्ट नहि। सूत्रक ध्वनि-मिलान चलाओल गेल, मुदा परिणाम कमजोर।

‘वक्ता-पहचान: अपर्याप्त नमूना।’

माधवी स्क्रीन पढ़ि कहलक, “कम सँ कम एहि बेर ई निश्चित नहि बनि रहल अछि।”

अभिराम फीकी हँसी हँसल। “हम ओकर आत्मविश्वास सीमा घटा देने छी।”

“गलतीक लाभ।” जयनारायण कहलनि।

राति नौ बजे पहिल नेटवर्क सूचना आयल। अज्ञात संख्या नब सक्रिय प्रीपेड परिचय पर, दू दिन पहिने चालू। पंजीकरणक कागज वैध कि चोरीक, एखन जाँच बाकी। संदेश भेजबाक समय यंत्र एक नदी-पारि टावर-समूहमे सक्रिय छल। टावरक दायरा पैघ—कतेको गाम, दियारा, घाट आ खेत समेटैत।

अभिराम नक्शा खोललक। नदी नील पट्टी जकाँ बीचमे। पश्चिम कात शहर; पूरब-दक्षिण दिश तीन टावरक त्रिकोण। सम्भावित क्षेत्र लाल नहि, हलुक पीयर वलयमे देखाओल गेल।

“ई ठोस स्थान नहि,” ओ स्वयं पहिने कहलक। “केवल मोट क्षेत्र।”

जयनारायण सन्तोष सँ माथ हिलौलनि। “सीखि रहल छी।”

विनय कहलक, “रातिमे नाव बन्द। पुल सँ घुमि जाएब तऽ तीन घड़ी। पुलिसक एक दल सड़क सँ निकलि रहल अछि। भोरमे घाट सँ दोसर दल।”

माधवी तुरन्त बजली, “हम जाएब।”

“नहि,” विनय कहलक।

“दुलारी हमरा चिन्हैत अछि। पुलिस देखि छिपि सकैत अछि।”

“अहाँ विद्यार्थी छी, जाँच-दल नहि।”

माधवीक स्वर कठोर भेल। “ओ हमरा वसुधा दीदीक संग देखैत छल। जँ ओ डरल अछि तऽ परिचित चेहरा आवश्यक।”

जयनारायण बीचमे बजलनि, “राति नहि। भोरमे स्थिति देखब। नदीक बाट सुरक्षित भेल तऽ सोचब।”

माधवी विरोध करए चाहलक, मुदा जयनारायणक ‘सोचब’ पूर्ण मनाही नहि छल। ओ चुप भऽ गेल।

ओहि राति घर जा कऽ माधवी केँ नींद नहि आयल। सात सेकण्ड बेराबेरी कानमे बजैत। “हम भागल नहि छी।” एहि पाँति भीतर कतेक आरोप छल! सभ लोक जे बिना सुनने मानि लेल दुलारी भागल, सभ पर। माधवी पर सेहो—ओ स्वयं कतेक बेर ‘ओ कतऽ भागल?’ सोचने छल, ‘ओ कतऽ गेल?’ नहि। शब्दो पूर्वग्रह ढोइत अछि।

माय पुछलखिन, “किछु भेटल?”

माधवी केवल कहलक, “दुलारी जीवित हो सकैत अछि।”

माय सिलाइक कपड़ा समेटैत हाथ रोकलनि। “तखन ओकर माय केँ खबर?”

“पुलिस देत। एखन निश्चित नहि।”

“निश्चित होएबा धरि मायक राति कोना कटत?”

माधवीक उत्तर नहि छल। अन्वेषणक सावधानी आ घरक व्यथा अलग घड़ी पर चलैत अछि। एकटा प्रमाण माँगैत, दोसर एक शब्द।

भोर चारि बजे विनयक संदेश आयल—अज्ञात संख्या फेर एक क्षण लेल सक्रिय, एहि बेर नदी-पारि दक्षिण टावरक नजदीक। कोनो नवा संदेश नहि। सड़क-दल एक गाम जाँचि चुकल, किछु नहि। घाट पर पानी तेज, मुदा दिन चढ़िते नाव चलबाक सम्भावना।

माधवी पाँच बजे कचहरीक चाय-दोकान पहुँचल। कमली देवी चूल्हि सुलगा रहल छलीह। “एतेक भोर?”

“नींद नहि आयल।”

कमली बिना पूछने चाय चढ़ौलनि। “नींद नहि आए तऽ खाली पेट रहब आरो खराब। ई लिअ।”

जयनारायण कने देर बाद पहुँचलाह। हुनकर हाथमे कागजक नक्सा छल, मोबाइल नहि। “स्क्रीन नदीक गन्ध नहि बतबैत,” ओ कहि नक्शा खोललनि।

अभिराम दौड़ैत आयल। आँखिक नीचे कारी घेरा। “सूत्र तीनटा सम्भावित बाट देलक अछि—मुख्य घाट, पुरान बालू-घाट, आ दक्षिणक छोट चरवाही नाव-पथ। मुदा रातिक हवा आ धारा जोड़ला पर...”

“धारा कतऽ सँ लेल?” जयनारायण पुछलनि।

“जल-संसाधन मापक आ स्थानीय नाविकक काल्हिक सूचना।”

“नीक। स्थानीय नाविकक बात अलग देखाउ; सरकारी मापक अलग। दुनू मिला कऽ एक संख्या मत बनाउ।”

अभिराम हँसल। “आब अहाँ हमरा मॉडल लिखबा देब कि नहि?”

“गलती कम करत तऽ सोचब।”

कमली देवी चाय रखैत पुछलखिन, “नदी पारि जा रहल छी?”

माधवी चौकल। “अहाँ कोना—”

“भोरमे पुलिसक दू आदमी चाय पीबैत ई गप्प करैत छल। कचहरीमे रहस्य दीवाल नहि, छननी अछि।”

जयनारायण पुछलनि, “दुलारी नदी-पारि ककरा चिन्हैत अछि, किछु मोन?”

कमली कने सोचलखिन। “ओकर मौसी मल्लाह टोला दिश छल कि? नहि, मौसी नहि... ओकर माय कहने छलीह जे बच्चपनमे बाढ़िक समय किछु महिना नदी-पारि रहलीह। एक बूढ़ि ‘फुलमति’ नाम सुनने छी।”

माधवी तुरन्त पुछलक, “कुन गाम?”

“नाम मोन नहि। दुलारी चाय लैत कखनहुँ कहैत छल—‘फुलमति दादीक हाथक माछ जकाँ स्वाद कतहु नहि।’”

अभिराम नोट कएलक। “ई डेटा कतहु नहि छल।”

कमली हँसलखिन। “माछक स्वादो डेटा होइत अछि?”

जयनारायण कहलक, “आइ सँ होइत अछि।”

दुलारीक माय केँ पुलिस संग भेटबाक निर्णय भेल। ओ राति भरि रोएने छलीह। माधवी जखन पहुँचल तऽ स्त्री पहिने ओकर हाथ पकड़ि केवल पुछलखिन, “आवाज ओकरे छल?”

माधवी सत्यक सीमा नहि तोड़लक। “हमरा ओकरे जकाँ लागल। जाँच चलि रहल अछि।”

“ओ कहलक भागल नहि?”

माधवी स्तब्ध। “अहाँकेँ के कहल?”

“बस्तीमे बात पहुँचि गेल।”

फेर सएह छननी। गोपनीयता गरीब बस्तीमे अलग प्रकारेँ कठिन—कान नजदीक, घरक देवाल पातळ, भय साझा।

दुलारीक माय फुलमतिक नाम सुनिते माथ हिलौलनि। “हँ। फुलमति नैहरक दूर सम्बन्ध। बाढ़ि बर्ख दुलारी छोट छल, ओतऽ रहली। गाम—बरैला दियारा। मुदा फुलमति जिबैत छथि कि नहि, कतेक बर्ख सँ खबर नहि।”

अभिराम नक्शा देखलक। बरैला दियारा ओही टावर-त्रिकोण भीतर पड़ैत छल।

जयनारायण तुरन्त सावधान कएलनि। “मिलान भेटल, मुदा एहि कारणेँ मानि नहि लिअ जे दुलारी ओतहि अछि। टावर-क्षेत्र पैघ अछि।”

माधवी कहलक, “मुदा खोजबाक एक बाट तऽ भेटल।”

“हँ।”

दोपहर धरि पुलिस सड़क-दल बरैला पहुँचबाक प्रयासमे छल, मुदा कच्चा सड़क रातिक बरखासँ कटि गेल। नदीक मुख्य घाट पर नाव चलल, पर तेज हवा। स्थानीय नाविक कहलक साँझ पहिने पारि जा सकैत, फेर आँधीक आशंका। विनय माधवी केँ संग जाएबाक अनुमति नहि देब चाहैत छल, मुदा दुलारीक माय स्वयं कहलखिन, “माधवी जाएत तऽ दुलारी सामने आएत। पुलिस देखि ओ फेर नुकाएत।”

अन्ततः व्यवस्था भेल—एक पुलिसक महिला सिपाही, स्थानीय नाविक, जयनारायण, माधवी आ अभिराम। विनय सड़क बाट सँ समन्वय करत। जयनारायण स्पष्ट शर्त रखलनि: “कोनो अलग साहस नहि। जे कहब, से मानब।”

माधवी तुरन्त “हँ” कहलक। अभिराम कने देर बाद।

“अहाँ किएक सोचि रहल छलहुँ?” माधवी पुछलक।

“अहाँ ‘अलग साहस’ शब्द सुनि हमरा दिस देखलहुँ।”

“किएक तँ अहाँ स्क्रीन देखि नावक धारा नापए लगब।”

“आ अहाँ सपना देखि नदीमे कूदि पड़ब।”

जयनारायण दुनू केँ घूरलनि। “आबहि सँ?”

दुनू चुप।

साँझक पहिने घाट पहुँचलापर नदी धूसर छल। आकाशमे दूर कारी मेघ जमा। नाविक भोला सहनी रस्सी कसैत कहलक, “एखन पारि जा सकब। घण्टा-डेढ़ घण्टा बाद हवा उलटि सकैत अछि।”

अभिराम दूरभाषक नक्शा देखलक। अज्ञात संख्या अंतिम बेर दू घड़ी पहिने सक्रिय—बरैला सँ उत्तरक टावर-खण्ड। फेर बन्द।

माधवी नावमे पयर रखबाक पहिने नदी दिस तकलक। सपनाक पोखरि एहि विशाल पानिसँ भिन्न छल, मुदा लाल ओढ़नी, पायल, नील धागा सभ मोनक कोनमे एक संग हिलल। ओ अपने आप केँ कहलक—सपना अलग, तथ्य अलग।

तखन अभिरामक हाथ आगाँ आयल। “पाटी फिसलन अछि।”

माधवी एक क्षण ओकर हाथ देखलक, फेर पकड़ि नावमे चढ़ि गेल।

अभिराम मुस्कुरायल नहि। केवल हाथ छोड़ि देलक।

नाव किनारि छोड़लक। शहरक आवाज पाछाँ छूटए लागल। आगाँ दियारा, लमहर घास, धूसर पानी आ कारी मेघ। दुलारीक सात सेकण्डक स्वर माधवीक भीतर फेर बजल—“हम भागल नहि छी।”

जयनारायण नदीक धार दिस तकैत छलाह। अभिराम नक्शा बन्द कऽ जेबमे राखलक।

भोला सहनी आकाश देखलक आ धीरे कहलक, “जल्दी पहुँचब तऽ नीक। मेघक चाल ठीक नहि।”

नाव बीच धार दिस बढ़ैत गेल।

अध्याय २२ — नाव पर राति

नाव बीच धारमे पहुँचते हवा अपन चाल बदलि देलक। भोला सहनी पहिने आकाश देखलक, फेर पानी। अभिराम मोबाइल खोलए लागल तऽ ओ हाथसँ रोकि देलक—“पहिने नदी देखू, बाबू। नक्शा बादमे।”

अभिराम मोबाइल जेबमे राखि देलक। माधवीक मुँह पर अनचाहे हँसी आयल। जयनारायण सुनि लेलनि। “आइ सभ शिक्षक अभिरामहि केँ भेटि रहल छथि।”

“हम विरोध दर्ज करैत छी,” अभिराम कहलक।

“कागज पर करू,” जयनारायण उत्तर देलनि।

ठट्ठाक ओ छोट क्षण तुरन्त समाप्त भेल। पूरब दिस कारी मेघ नीचा झुकि आएल। नदीक सतह पर पहिने छोट-छोट तरंग, फेर लम्बा कारी पट्टी दौड़ल। भोला इंजनक गति घटेलक। महिला सिपाही नावक बीचमे राखल रस्सी अपना लग खींचि लेलनि।

“बरैला सीधा जाएब?” माधवी पुछलक।

भोला माथ हिलेलक। “एखन सीधा बाटे बेसी खराब। धारा दहिना काटि रहल अछि। पहिले बालूचरक आड़ि लैत छी।”

माधवी अधीर भेली। “दुलारी ओतऽ हो सकैत अछि।”

जयनारायण हुनका देखलनि। “जँ हम सभ पानीमे फँसि गेलहुँ तऽ दुलारी धरि के पहुँचत?”

माधवी चुप। ओ जानैत छलीह जे बात सही अछि, मुदा सही बात कखनहुँ मन केँ तुरन्त शान्त नहि करैत अछि। सात सेकण्डक आवाज फेर भीतर बजल—“हम भागल नहि छी।”

पहिल मोट बूँद अभिरामक गाल पर पड़ल। दोसर माधवीक हाथ पर। एक मिनट भीतर पानीक परदा तनल। नावक छोट छाजन बरखा रोकबाक बदला बरखाक ध्वनि केँ एके ठाम जमा कऽ देने छल। भोला सहनी अगिला भागमे झुकि पतवार सँ दिशा सम्हारैत छल। इंजन खखारि उठल।

अभिराम तुरन्त पाछाँ झुकल। “की भेल?”

“काँसक जड़ कि जलकुंभी फँसल होएत।” भोला इंजन बन्द कऽ देलक। “चिन्ता नहि। धारा एखन हमरा बालूचर दिसे लऽ जा रहल अछि। बस नाव तिरछा नहि होअय।”

‘चिन्ता नहि’ शब्द सुनितो माधवीक अँगुरी नावक पाटी कसि पकड़ि लेलक। पानी एकाएक पैघ बुझाइट अछि जखन मनुष्यक गति अपन हाथमे नहि रहय। शहरक घाट एखन पाछाँ धुँधला; आगाँ दियारा अन्हार।

अभिराम ओकर हाथ देखलक। “डर लगैत अछि?”

“नहि।”

“अँगुरी पाटीमे गड़ि गेल अछि।”

माधवी हाथ ढीला कएलनि। “अहाँ अपन डेटा देखू।”

“एखन डेटा सेहो भीजि रहल अछि।”

एक तेज झोंका नावक छाजन उठा देलक। अभिराम हाथ बढ़ा बाँसक डंडा पकड़लक। माधवीक ओढ़नी उड़ि ओकर मुँह पर आयल। ओ सम्हारए लगलीह, नाव एक बेर बाम कात झुकल, आ हुनकर देह अभिरामक कन्धासँ टकरा गेल। अभिराम स्वाभाविक रूपेँ हुनकर बाँहि पकड़ि लेलक। एहि बेर माधवी तुरन्त हाथ नहि छोड़ौलनि।

भोला जोर सँ कहलक, “सभ नीचा बैसू!”

नावक तलमे सभ झुकि गेल। बरखा, इंजनक खाँस, पानीक थपेड़ा—सभ मिलि एकटा एहन ध्वनि बनबैत छल जाहिमे एक-दोसराक साँस तक सुनाइत नहि। मुदा माधवी केँ अपन कलाई पर अभिरामक पकड़ साफ बुझाइट छल। पकड़ कठोर नहि, केवल स्थिर। नाव सम्हरलापर ओ हाथ धीरे हटि गेल।

“हम गिरैत नहि रही,” माधवी कहली।

अभिराम मुस्करायल। “ई वाक्य हम पहिनहुँ सुनने छी।”

“एहि बेरो सत्य छल।”

“दू सत्यक बीच?”

माधवी ओकरा घूरली, मुदा बरखाक बीचो चेहरा गरम भऽ गेल। अंबिका काकीक वाक्य नदीमे सेहो पीछा कऽ रहल छल।

करीब बीस मिनट बाद नाव बालूचरक कम गहिर पानीमे अटकले जकाँ थमल। भोला उतरि घुटना धरि पानीमे गेल, इंजनक पंखामे फँसल काँस निकाललक। आकाश एतेक अन्हार भऽ गेल जे साँझ समयसँ पहिने राति जकाँ उतरि आयल।

“एखन बरैला धकेलब ठीक नहि,” भोला कहलक। “आगाँ एकटा पुरान माछमारक छान अछि। बालूचर पार कऽ ओतऽ घड़ी-दू घड़ी रुकू। हवा थमल तऽ जाएब।”

महिला सिपाही विनय कैं फोन करबाक प्रयास कएलनि। संकेत बेर-बेर टूटैत। अन्ततः छोट संदेश गेल—दल सुरक्षित, बालूचर पर रुकल।

सभ नाव सँ उतरि बालू, कीचड़ आ काँसक बीच चलल। छान असलमे बाँसक चारि खम्भा, टिनक टेढ़ छप्पर आ एक कात खरक देवाल। भीतर पुरान जाल, दू माटिक घड़ा, टूटल चौकी। मुदा बरखा सँ बचबाक लेल महलसँ कम नहि।

जयनारायण प्रवेश करिते चारू कात नजर दौड़ौलनि। “कोनो लोक हालमे रहल जकाँ?”

भोला एक कोनमे राखल आध जड़ल लकड़ी देखलक। “मल्लाह लोक दिनमे रुकैत। राति कम।”

माधवीक नजर तुरन्त एकटा छोट राखक ढेरी पर गेल। “कागज जड़ल?”

जयनारायण घुटना मोड़ि देखलनि। “पहिने छुड़ब नहि।”

अभिराम मोबाइलक प्रकाश नीचा कएलक। राखमे माछक काँटा, बीड़ीक टुकड़ी, कागजक कारी किनारी। जयनारायण देखिते कहलनि, “ई कचहरीक कागज मानि लेब उचित नहि। माछ लपेटबाक अखबारो हो सकैत अछि।”

माधवी हँसली नहि। वसुधाक मृत्यु बाद हुनकर मोन प्रत्येक जड़ल कागजमे कथा खोजए लगैत छल। जयनारायण ओही बात पढ़ि लेने छलाह।

“सब किछु संकेत नहि,” ओ नरम स्वरमे कहलनि। “कखनहुँ राख केवल राख होइत अछि।”

बरखा तेजे रहल। हवा छप्परक टिन उठाबए चाहैत। भोला रस्सीसँ बाँस कसए बाहर गेल। जयनारायण आ महिला सिपाही प्रवेश लग बैसि बाहरी बाट देखैत रहलाह। माधवी आ अभिराम पाछाँक देवाल लग। बीचमे जालक ढेर।

मोबाइलक बत्ती बचाबए सभ यंत्र बन्द। अन्हार पूर्ण नहि—बिजली चमकैत तऽ छानक प्रत्येक बाँस, जाल, चेहरा एक क्षण लेल उज्जर, फेर गायब।

माधवी धीरे पुछली, “अहाँकें सचमुच पानी सँ डर नहि लगैत?”

अभिराम कने देर चुप रहल। “लगैत अछि।”

माधवी ओकरा दिस घुरली। “अहाँ तऽ एतेक देर—”

“डेटा देखब आ डर नहि लगब एके बात नहि। हम गहिर पानीमे तैरब नीक जकाँ नहि जानैत छी।”

“तखन नावमे आबि गेलहुँ?”

“अहाँ आबि रहल छलहुँ।”

वाक्य छोट छल। बाहरक बरखा एतेक तेज जे जँ माधवी चाहिती तऽ कहि सकैत छलीह—ठीक सँ सुनल नहि। मुदा ओ सुनलीह।

अभिराम तुरन्त जोड़लक, “आ जाँचक काज छल।”

माधवी हलुक स्वरमे कहली, “दोसरा वाक्य पहिलकें बचाबए आयल?”

“सम्भवतः।”

“फेर हिन्दी-छाप शब्द।”

“ठीक—हो सकैत अछि।”

दुनू हँसि पड़ल। जयनारायण पाछाँ घुरि देखलनि। “आँधीमे सेहो कक्षा चलि रहल अछि?”

“भाषा-कक्षा,” माधवी कहली।

जयनारायण मुस्कराइ फेर बाहर तकए लगलाह।

कने देर बाद अन्हारमे अभिराम स्वयं बजल, “अंबिका काकीक बात पर हम हँसलहुँ, एहि लेल क्षमा।”

माधवी उत्तर नहि देली।

“हमरा अनिश्चित बात असहज करैत अछि,” ओ आगे कहलक। “जकर माप नहि, ओकरा हम ठट्टामे टारि दैत छी। ई ठीक नहि।”

माधवी टिन पर पड़ैत पानी सुनैत रहलि। “हम उलटा करैत छी। जकर अर्थ नहि भेटैत, ओकरा मनमे अर्थ दऽ दैत छी। सपना, धागा, पायल। हो सकैत अछि—” ओ स्वयं रुकली। “हो सकैत अछि एहि लेल जे दीदीक मृत्यु अर्थहीन नहि बुझाइ।”

“अर्थ आ कारण अलग होइत अछि,” अभिराम कहलक।

“जानैत छी।”

“मुदा...” ओ रुकल। “जँ अहाँ सपना पर विश्वास करैत छी, तऽ हम अहाँ पर हँसबाक अधिकार नहि रखैत छी। प्रश्न करबाक रखैत छी।”

माधवी धीरे कहली, “आ हम अहाँक स्क्रीन पर राग करैत छी, तइयो स्क्रीन देखब बन्द नहि करबाक चाही।”

“समझौता?”

“नहि। शर्त।”

“की?”

“अहाँ हमरा मूर्ख नहि मानब। हम अहाँकेँ पत्थर नहि मानब।”

बिजली चमकल। एक क्षण दुनू चेहरा साफ। अभिरामक आँखिमे हँसी नहि छल।
“मान्य।”

माधवी हाथ आगाँ बढ़ौलनि। अभिराम हँसि हाथ मिलेलक। मुदा हाथ मिलान अपेक्षासँ एक साँस बेसी टिकि गेल। दुनू एके बेर छोड़लक।

ओहि क्षण मोबाइलमे सूक्ष्म ध्वनि भेल। अभिराम तुरन्त खोललक। अज्ञात संख्या तीन मिनट पहिने सक्रिय भेल छल—बरैला उत्तरक टावर-पट्टी। कोनो संदेश नहि।

“विनय केँ भेजू,” जयनारायण कहलनि। “आ एतऽ सँ कोनो पीछा नहि। राति, आँधी, अनजान बालूचर—एहि तीनू पर वीरता मूर्खता बनि जाइत अछि।”

माधवी विरोध नहि कएलनि। ओ अब बुझि रहल छलीह जे दुलारीक खोज केवल दौड़ब नहि; जीवित पहुँचबो जरूरी।

राति लम्बा भेल। बरखा कखन कम, कखन तेज। भोला बीच-बीचमे बाहर जा रस्सी जाँचैत। महिला सिपाही प्रवेश लग टॉर्च हाथमे ऊँघैत, मुदा प्रत्येक ध्वनि पर आँखि खोलि लैत। जयनारायण चौकीक आध भाग पर पीठ देवालसँ लगौने चुप। हुनका नींद आयल कि नहि, केओ बुझि नहि सकल।

माधवी आँखि मुनली, मुदा नींद दूर। छानक टिन पर प्रत्येक धातुक ठक् ओकरा सपनाक पायल जकाँ लगैत। एक बेर ओ सचमुच चौंकि उठली।

“की भेल?” अभिराम फुसफुसायल।

“किछु नहि।”

“पायल?”

माधवी ओकरा दिस देखली। “अहाँ ठट्ठा करैत छी?”

“नहि। अहाँक चेहरा बुझा देलक।”

“टिन छल।”

“हँ।”

“हम जानैत छी।”

“हँ।”

एहि ‘हँ’मे उपहास नहि छल। माधवीक भीतरक तनाव कने ढीला भेल।

भोरक पहिल उजास बरखा थमबाक पहिने आयल। आकाश एखनहुँ धूसर, मुदा हवा कम। भोला इंजन खोलि फेर साफ कएलक। सात बजे दल बरैला दियारा दिश बढ़ल। एहि बेर नाव किनारिक कम गहिर पट्टी लैत गेल।

बरैला स्थायी गाम नहि, मौसमक संग फैलैत-सिकुड़ैत बसावट। बाँसक खम्भा पर उठाओल घर, जाल, माछ सुखेबाक टाट, बालू पर बच्चाक नाडर पयर। पुलिस देखिते लोक पहिने दूर ठाढ़। माधवी फुलमतिक नाम पुछली।

एक बूढ़ मल्लाह कहलक, “फुलमति? बूढ़ि एखन उत्तर चर पर बेटी लग रहैत अछि। बरखा चढ़ल तऽ एतऽ नहि रहैत।”

“उत्तर चर कतऽ?”

ओ नदीक दू धार बीच दूर उज्जर बालू दिस देखौलक। “नाव बिना नहि। आ एखन जल बढ़ि रहल अछि।”

माधवी दुलारीक वर्णन देली। बूढ़ कने सोचलक। “दू दिन पहिने एक दुबरी छौड़ी आयल छल। सिर पर गमछा। फुलमतिक नाम पुछलक। हम उत्तर चर कहलियैक। ओ ककरो संग नहि छल।”

“किधर गेल?” जयनारायण पुछलनि।

“ई तऽ नहि देखल। साँझ छल। एक मल्लाह परिवारक औरत ओकरा पानी देलक। फेर हम जाल लऽ गेलहुँ।”

माधवीक हृदय तेज धड़कए लागल। विवरण पर्याप्त नहि, मुदा बाट संकुचित भेल।

अभिराम मोबाइल निकालि प्रश्न करए लगल—समय, स्थान, ककर घर, नावक नाम। जयनारायण ओकरा एक बेर देखलनि, मुदा रोकलनि नहि। एहि बेर प्रश्नक संग स्थानीय स्मृति चलि रहल छल।

फुलमतिक उत्तर चरक ठिकाना पक्का नहि। नदी चढ़ैत छल। विनयक निर्देश आयल—दल एखन लौटय; पुलिसक स्थानीय नाव-दल उत्तर चरक घर सभ अलग जाँचत। माधवीक चेहरा उतरि गेल।

“हम एतेक नजदीक आबि घुरि जाएब?”

जयनारायण कहलनि, “नजदीकक अनुमान जानलेवा हो सकैत अछि। पुलिसक नाव एतऽ अछि। दुलारी जँ ओहि पट्टीमे अछि तऽ आब क्षेत्र बहुत छोट अछि। हम फेर आबब।”

घुरबाक नाव पर माधवी आ अभिराम आमने-सामने बैसल। रातिक अन्हार हटि चुकल छल, मुदा दुनूक बीच जे बात रातिमे स्पष्ट भेल, ओ दिनक उजासमे फेर नामहीन।

अभिराम धीरे कहलक, “काल्हि राति अहाँ हमरा पत्थर नहि मानब कहने छलहुँ।”

“हँ।”

“आ हम अहाँकेँ मूर्ख नहि।”

“हँ।”

“ई शर्त एखनहुँ लागू अछि?”

माधवी नदी दिस तकैत कहली, “एखन तऽ आर बेसी।”

भोला सहनी नावक मुँह शहर दिस मोड़लक। पाछाँ बरैला, ओकरो पाछाँ उत्तर चर। दुलारी एखनहुँ भेटल नहि छल, मुदा पहिल बेर ओकर गायब होयबक चारू कात कोनो ठोस भूगोल बनि रहल छल।

आ माधवीक भीतर, भयक चारू कात सेहो एकटा नवा आकार बनल—नाम देबाक समय एखन नहि, मुदा ओकरा नकारब आब कठिन।

अध्याय २३ — ज्योतिषी नहि, स्मृतिकार

शहर घुरिते जयनारायण विश्रामक बात कहलनि, मुदा दुपहर होएबासँ पहिने अंबिका काकीक संदेश आबि गेल—“पोथी नहि, बही देखबाक हो तऽ आइ आऊ। काल्हि हम नातिनक घर जाएब।”

माधवी थाकल छलीह। आँखिमे रातिक अधूर नींद, कपड़ामे एखनहुँ नदीक नम गन्ध। तइयो संदेश पढ़िते उठि बैसली। अभिरामक उत्तर पहिने आयल—“हम पहुँचि रहल छी।”

माधवी लिखली—“अहाँकेँ के बजौलक?”

उत्तर—“डेटा।”

माधवी मोबाइल राखि हँसली। माय पुछलखिन, “नदी पारि दुलारी भेटली?”

“नहि। मुदा बाट छोट भेल।”

“बाट छोट भेल तऽ मन भारी किएक?”

माधवी उत्तर खोजि नहि सकली। दुलारीक चिन्ता अलग, रातिक छानमे अभिरामक वाक्य अलग। दुनू बात एके मनमे रहितो एक-दोसरासँ मिलैत नहि छल।

अंबिका काकीक ओसारा आइ खाली छल। मखानक छिलका समेटल। बीचमे पुरान लोहेक पेटी। काकी पेटीक ताला खोलैत कहलखिन, “हथेली पढ़ि कऽ अहाँ सभ बहुत हँसलहुँ। आब देखू, हमर असल बदनामी किएक भेल।”

पेटी भीतर पाँचटा मोट बही, किछु पातळ काँपी, पुरान पंचांग, लिफाफा आ धागासँ बान्हल पर्ची। बहीक किनारि घिसल, पन्ना पीयर, कतेको ठाम स्याही फैलल।

अभिरामक आँखि चमकल। “ई सभ कतेक बर्खक?”

“जे मोट बही अछि, पहिल पन्ना हमर बाबाक हाथक। बादमे माय लिखली। हम किशोरी भेला सँ लिखैत आएल छी। सभ एके ढंगक नहि।”

“की लिखल अछि?” माधवी पुछली।

अंबिका काकी पहिल बही खोललनि। “लोक हमरा जन्म-कुण्डली बनबए अबैत। जनमक दिन, घड़ी, ठाम लिखब पड़ैत। फेर दोसर बेर अबैत—विवाह भेल, बच्चा भेल, केओ मरल,

केओ परदेस गेल। हम सोचलहुँ जे जँ सभ बात कहिए रहल अछि तऽ लिखि किएक नहि राखी?”

पन्ना पर तिथि, नाम, गाम, सम्बन्ध, छोट टिप्पणी। कतहु—“पहिल बेटा; जनम समय भारी बरखा।” कतहु—“पति कलकत्ता; तीन बर्खसँ घर नहि।” कतहु—“खेत गिरवी; कार्तिकमे कर्ज चुकाबक वचन।” कतहु—“दू भाई अलग चूल्हा।”

माधवी पन्ना पलटैत थमकि गेली। “अहाँ झगड़ा लिखैत छलहुँ?”

“झगड़ा जँ परिवारक चाल बदलि दे, तऽ किएक नहि? ग्रह लिखब आ घरक आगि नहि लिखब—ई कतेक अधूर ज्योतिष?”

अभिराम हँसल नहि। ओ मोबाइल निकालि फोटो लेबाक पहिने अनुमति माँगलक। “हम पन्नाक क्रम सुरक्षित राखि डिजिटल नकल बना सकैत छी?”

“पहिने बुझू। कागजक छवि लऽ कऽ शब्द पढ़ब आसान; अर्थ नहि।”

जयनारायण सेहो पहुँचि गेलाह। काकी हुनका देखि कहली, “अहाँकें काल्हि सँ प्रतीक्षा छल।”

“हमरा?”

“ई युवक सभ हमरा ज्योतिषी मानि प्रश्न करैत अछि। अहाँ अपराधी खोजैत-खोजैत लोकक आदति पढ़ैत छी। अहाँ बुझब।”

जयनारायण बहीक एक पन्ना उठौलनि। प्रत्येक प्रविष्टिक बामा कात कखनहुँ गोल बिन्दु, कखनहुँ त्रिकोण, कखनहुँ छोट चौकोर। “ई चिन्ह?”

अंबिका काकी प्रसन्न भेली। “एहि लेल बजौने रही। गोल बिन्दु—हम स्वयं देखल वा उपस्थित। त्रिकोण—घरक दू वा बेसी लोक एके बात कहल। चौकोर—कागज देखल। केवल सीधी रेखा—एक लोकक कहल, पुष्टि नहि। जकरा पक्का नहि, ओकरा पक्का किएक लिखी?”

अभिराम स्तब्ध। “अहाँ स्रोत-वर्ग बनौने छी।”

“अहाँ जे नाम दिअ। हम तऽ बस झूठ-साँच अलग राखबाक उपाय कएलहुँ।”

जयनारायण मुस्कुरौलनि। “ई बही हमरा कतेको सरकारी रजिस्टरसँ बेसी ईमानदार लगैत अछि।”

“सरकारी रजिस्टर हमरा मुँह नहि बिचकौत,” अभिराम कहलक।

काकी ओकरा घूरलखिन। “बही सेहो बिचका सकैत अछि, जँ गलत पढ़ब।”

दोसरा बहीमे पलायनक पन्ना बेसी छल। सत्तर-अस्सीक दशकक गामसँ शहर, कलकत्ता, आसाम, पंजाब, नेपाल सीमा, दिल्ली। प्रत्येक नामक पाछाँ छोट कारण—काम, बाढ़ि, विवाह, कर्ज, झगड़ा। माधवी केँ एकाएक बुझायल जे नक्शामे केवल नदी आ सड़क नहि, लोकक दुख आ आशा सेहो बाट बनबैत अछि।

अंबिका काकी कहली, “नछत्तर पूछए लोक अबैत, मुदा हमरा बेसी उपयोग ई जानबमे भेल जे के घर कतऽ सँ आयल, के कतऽ गेल। एक बर्ख बाढ़ि आयल तऽ पूरा टोला सरकल। बीस बर्ख बाद बच्चा पूछैत—हमर नाना मूल कतऽक? कागज नहि, तऽ बही खोलू।”

अभिराम धीरे कहलक, “लोकइतिहास।”

“इतिहास पैघ लोकक नहि होइत?”

“नहि,” माधवी तुरन्त कहली। “सभक।”

काकी तृतीय बही खोललनि। पन्ना पर नामक भीड़ कम, पर टिप्पणी लमहर। “ई बाढ़िक बर्ख सभ। ई देखू—बरैला।”

माधवी आ अभिराम एके बेर झुकल।

प्रविष्टि—“फुलमति सहनी, मायकेँक सम्बन्ध पश्चिम पट्टी; बाढ़िक बाद बरैला दियारा। बादक बर्ख उत्तर चर पर मौसमी घर।” चिन्ह त्रिकोण। बामा कात दू नामक जोड़, एक पर टिप्पणी—“बच्ची दुलारी, किछु मास रहली; माछक ज्वर भेल।”

माधवीक साँस अटकले जकाँ भेल। “दुलारी?”

काकी आँखि सिकोड़ि पढ़लखिन। “ई बहुत पुरान। दुलारी पाँच-छह बर्खक होएत, एहन अनुमान। ओकर माय हमरा लग ज्वरक दिन पूछए आयल छलीह। बच्ची नदी-पारि फुलमति लग रहली। तँ लिखल।”

अभिराम तुरन्त तिथि नोट कएलक, मुदा जयनारायण रोकलनि। “एहि प्रविष्टिक स्रोत त्रिकोण—दू लोकक कथन, सही?”

“हाँ। माय आ ओकर मौसी।”

“एखन फुलमति उत्तर चर पर रहैत अछि—ई कखनक?”

काकी पन्नाक बादक किनारी देखलखिन। “छह बर्ख पहिने अद्यतन। एखन बदलि सकैत अछि।”

“ठीक।” जयनारायण कहलक। “पुरान बही बाट देखबैत अछि; वर्तमान सत्यापन अलग।”

माधवीक मनमे काल्हिक बूढ़ मल्लाहक बात मिलि गेल। दू स्वतंत्र स्मृति एक दिशा।
दुलारीक बालपनक सुरक्षित ठाम—फुलमति।

अभिराम कहलक, “सूत्रमे एहि सम्बन्धक कोनो अभिलेख नहि। सरकारी परिवार-सूचीमे
फुलमति अलग घर, दुलारीक नाम नहि।”

काकी पुछलखिन, “पाँच मास ककरो घर रहला सँ सरकारी परिवार बनि जाइत?”
“नहि।”

“तखन जीवनक बहुत सम्बन्ध सरकारी कागज बाहर रहत।”

जयनारायण अभिराम दिस देखलनि। “अनजान लिखब याद अछि?”

अभिराम मुस्कुरायल। “एखन ‘अनलिखल सम्बन्ध’ नामक नवा क्षेत्र बनत।”

बहीक दोसर लाभ अप्रत्याशित छल। सात टोला सम्बन्धी प्रविष्टि अलग नामसँ नहि,
विवाह आ कर्जक सम्बन्धसँ छितरायल छल। काकी एक-एक परिवारक पुरान बसावट बतबैत
गेली। “ई लोक पहिने पश्चिम पट्टी। भूकम्प बाद दक्षिण। फेर बाढ़ि। ई परिवारक बेटी ओहि
टोला। ई घरक दामाद न्यायालयक गवाही देलक।”

अभिराम नक्शा बनबए चाहलक, मुदा जयनारायण कहलक, “पहिने मूल क्रम सुरक्षित।
नक्सा बादमे।”

माधवी एक पन्ना पर वसुधाक नाम देखि रुकली। प्रविष्टि मात्र तीन बर्ख पुरान। “वसुधा
कर्ण—पुरान पुनर्वास परिवारक मौखिक सूची पूछलनि; जमीन मुकदमा।” चिन्ह गोल बिन्दु।

“दीदी एतऽ आयल छलीह?”

अंबिका काकी हँकार भरलनि। “दू बेर। पहिल बेर सात टोला लोकक मूल घर पूछए।
दोसर बेर कुसुमाक कथा।”

माधवीक देह तनल। “कुसुमा बारे की पुछलनि?”

“ई जे लोकक कथा कखन सँ शुरू भेल। लाल ओढ़नी, पायल, हवेली। हम कहने रही—
कथा केर तिथि खोजब कठिन, मुदा जे बूढ़ लोक बचल छल, हुनकर कहल अलग-अलग
लिखल अछि।”

काकी पातळ काँपी निकाललनि। मुखपृष्ठ पर केवल—“सुनल बात—पक्का नहि।”

“एहि मे?”

“अफवाह नहि, स्मृति। फर्क अछि। अफवाह आगे बढ़ए चाहैत; स्मृति पाछाँ देखैत।”

एक पन्ना पर तीन अलग कथन। पहिल—“कुसुमा राति शिविर दिस गेल।” दोसर—“लाल ओढ़नी पोखरि बाट।” तेसर—“पुरान हवेलीमे नाम छोड़ल।” तेसरक आगे सीधी रेखा—एक लोकक कथन, पुष्टि नहि।

माधवी उँगुरी रोकली। “नाम छोड़ल?”

“एहि बातक स्रोत हमर माय छल, मुदा हुनको अपन आँखिसँ देखल नहि। हुनकर एक बुआ कहने छलीह जे हवेलीक चून पर कुसुमाक नाम खरौंचल छल। बादमे चून फेर चढ़ल।”

“पूरा नाम?”

अंबिका काकी माथ हिलौलनि। “मोन नहि। हम कखनहुँ देखल नहि। वसुधा सेहो ई पुछने छलीह।”

“दीदी हवेली गेल छलीह?”

“हमरा कहने छलीह जे जाएत। बादमे की भेटल, नहि कहलनि।”

अभिराम किछु बजए चाहैत छल, मुदा माधवीक चेहरा देखि चुप रहल।

जयनारायण पातळ काँपीक पन्ना बन्द नहि कएलनि। “काकी, अहाँ वसुधाक दोसर भेटक तिथि लिखने छी?”

“हँ।”

तिथि वसुधाक मृत्यु सँ एक मास पहिने। जयनारायण नोट कएलनि। “एहि पन्नाक सत्यापित नकल चाही। मूल अहाँ लग। पुलिसक औपचारिक सूचीमे जोड़ाएब।”

काकी सहज स्वरमे कहली, “ले जाउ नकल। मुदा हमरा ज्योतिषी कहि अदालतमे हँसाएब नहि।”

जयनारायण हँसलाह। “अहाँ ज्योतिषी छी कि नहि, ई अदालतक विषय नहि। एहि बहीमे स्रोत-चिन्ह, तिथि आ निरन्तर लेखा अछि—ओकर मूल्य अलग।”

अंबिका काकी पहिल बेर कने गर्व सँ सीधी बैसली। “हम ग्रह देखैत छी, ई झूठ नहि। मुदा लोक हमरा केवल ओतबे बुझैत अछि। हमरा सभक गामक आध इतिहास एहि पेटीमे अछि, से केओ नहि पूछैत।”

माधवी धीरे कहली, “एखन पूछब।”

साँझ धरि पन्ना सभक छवि लेल गेल। अभिराम प्रत्येक छविक संग बही क्रमांक, पन्ना संख्या, स्रोत-चिन्ह आ तिथि लिखलक। एको शब्द तत्काल सूत्रमे निष्कर्ष बनि नहि गेल। पहिने ‘अप्रमाणित लोक-अभिलेख’ रूपेँ अलग भंडार।

बाहर निकलिते अभिराम कहलक, “अंबिका काकी हमरा सभसँ पहिने डेटा-गुणवत्ता बुझने रहली।”

माधवी कहली, “फेर डेटा?”

“ठीक। स्मृति-गुणवत्ता।”

“ई नीक।”

जयनारायण पाछाँ सँ बजलनि, “शब्द बदललासँ आदर नहि अबैत। व्यवहार बदलू।”

अभिराम हँसि देलक।

माधवीक मोन मुदा हवेली पर अटकले रहल—“पुरान हवेलीमे नाम छोड़ल।” पुरान फोटो ओकरा याद छल। कुसुमा लाल ओढ़नीमे, पाछाँ वेंटिलेटर-जकाँ आकृति। चूनक देवाल। की फोटोमे कोनो खरौंच छल? ओ कतेको बेर देखल, मुदा नाम नहि मोन।

घर पहुँचि ओ सीधा फोटो-प्रतिलिपि खोलली। छवि बढ़ौलनि। देवालक एक हिस्सा धुँधला, प्रकाश तिरछा। कोनो स्पष्ट अक्षर नहि।

अभिरामक संदेश आयल—“काल्हि हवेली जाएब तऽ पुलिस अनुमति लेल बिना नहि।”

माधवी चौंकली। “हम कहियो कहलहुँ जे जाएब?”

उत्तर तुरन्त—“अहाँक चेहरा।”

माधवी लिखली—“अंबिका काकीक संग बेसी समय बितौलहुँ।”

“सीखि रहल छी।”

माधवी मोबाइल बन्द कएलनि। फोटोमे देवाल मौन छल। मुदा अंबिका काकीक बही एक नवा प्रश्न खोलि देने छल—लोकक स्मृति जँ नामक बात एतेक बर्ख सँ ढोइत आएल, तऽ नाम कतऽ गेल?

आ किएक वसुधा मृत्यु सँ एक मास पहिने ओही प्रश्न पूछए अएलीह?

अध्याय २४ — आध रातिक पायल

अगिला दिन हवेली जाएबाक अनुमति सहज नहि भेटल। देवालक खोखरसँ भेटल आधा पत्र आ नील धागा जाँच-सूचीमे चढ़ि चुकल छल; कोठरीक ओ हिस्सा मोहरबन्द। माधवी केवल फोटो तुलना करबाक बात कहलनि। विनय ठाकुर पहिने मना कएलनि, फेर जयनारायणक कहला पर सीमित अनुमति देलनि—बाहरी बरामदा आ ओ देवाल जतऽ पहिने निरीक्षण भऽ चुकल, पुलिसक उपस्थिति मे। किछु छुड़ब नहि, किछु खुरचब नहि।

“आ राति नहि,” विनय विशेष रूपेँ कहलनि।

माधवी तुरन्त हँकार भरली।

जयनारायण हुनका धूरलनि। “एतेक तुरन्त ‘हँ’ सुनि हमरा शंका बढ़ल।”

“हम नियम तोड़ैत नहि छी।”

अभिराम बगलमे कहलक, “सपना जँ आध राति बुलौलक तऽ?”

माधवी ओकरा कोहनी मारए बढ़ली, मुदा जयनारायण बीचमे छलाह। “दुनू बच्चा जकाँ नहि।”

दुपहर बाद दल हवेली पहुँचल। एहि बेर संग एक पुलिसक सिपाही, स्थानीय अभिलेख कर्मचारी आ फोटोग्राफर। देवालक खोखरक आसपास माप, फोटो, पुरान चून्क तह, नव मरम्मतक निशान—सभ व्यवस्थित रूपेँ दर्ज कएल गेल। माधवी अपन पुरान फोटो-प्रतिलिपि अलग पकड़े छलीह।

“नाम कतऽ?” अभिराम धीरे पुछलक।

“एखन नहि देखाइत।”

“हो सकैत अछि लोकक कथा गलत।”

“हो सकैत अछि।” माधवी बिना राग उत्तर देली।

अभिराम हुनका देखलक। “नाव पर रातिक असर?”

“अंबिका काकीक बहीक असर।”

फोटोमे देवालक प्रकाश बाम कात सँ छल। वर्तमानमे खिड़कीक दिशा बदलल जकाँ बुझाइत। १९३४क भूकम्प बाद मरम्मतमे एक भाग भरल, बादमे वेंटिलेटर छोट। फोटोग्राफर

तिरछा प्रकाश दऽ देवालक सतहक उभार देखलक। कतेको खरौंच, कतेको बादक बच्चाक नाम, तिथि, कोनो प्रेमी जोड़ीक आद्यक्षर। मुदा कुसुमा स्पष्ट नहि।

साँझ पाँच बजे अभिलेख कर्मचारी कहलक, “आइ एतबे। बाहरी उजास घटि रहल अछि।”

माधवी निराश भेली, मुदा विरोध नहि कएलनि। सभ सामग्री समेटल गेल। जयनारायण केँ जिला कार्यालय जाएब छल; अभिराम केँ डिजिटल प्रतिलिपि जमा करबाक। माधवी सेहो निकलए लगली, तखन फोटोग्राफर कहलक—“एकटा तिरछा प्रकाशमे लेल छवि लैपटॉपमे स्पष्ट हो सकैत। एहि ठाम नहि।”

ओ सभ शहर घुरल।

राति आठ बजे अभिरामक संदेश—“तिरछा प्रकाशमे लेल छविमे देवालक नीचा कात अक्षर-जकाँ तीन रेखा। पूरा नहि। काल्हि फेर देखब।”

माधवी फोटो खोलली। सचमुच—चूनक उभार बीच ‘कु’ जकाँ किछु? कि आँखिक भ्रम? ओ छवि पाँच बेर देखली, फेर मोबाइल बन्द कऽ देली।

दस बजे बरखा शुरू भेल। छोट, नियमित। माय सूति गेली। माधवीक टेबुल पर वसुधाक नोट, अंबिका काकीक बहीक प्रतिलिपि, पुरान फोटो। ओ तुलनाक काज करैत-करैत एक विसंगति पर अटकली। पुरान फोटोमे जे देवाल भाग कुसुमाक पाछाँ छल, वर्तमान निरीक्षणमे ओकर ठीक सामने नव चूनक पातळ पट्टी। खोखरक भागसँ डेढ़ हाथ दहिना। दिनमे सभक ध्यान खोखर पर छल, एहि पट्टी पर नहि।

ओ अभिराम केँ संदेश लिखली—“फोटो देखू। दहिना पट्टी अलग अछि।”

उत्तर नहि। सम्भवतः ओ सूति गेल।

माधवी सेहो सूतए गेली, मुदा नींद नहि। पायल? नाम? वसुधा एक मास पहिने हवेली आएबाक विचार? प्रश्न फेर-फेर घुमैत। राति एगारह बजि बीस मिनट पर अभिरामक उत्तर आयल—“देखलहुँ। हो सकैत अछि बादक चून। काल्हि जाँचब। एखन कतहु नहि जाएब।”

माधवी हँसली। “हम घरमे छी।”

“प्रमाण?”

ओ माय सिलाइक मशीनक फोटो पठा देली।

“स्वीकार।”

राति ग्यारह बजि चालीस पर एकाएक माय जागि कहलखिन, “बरामदाक छत टपकैत अछि। बाल्टी राखि दे।” माधवी बाल्टी रखली। ओहि क्षण बाहर गलीमे मोटरसाइकिल

रुकल। पुलिसक एक सिपाही छल, जे विनयक छोट पर्ची लऽ कऽ आयल—हवेलीक बाहरी ओसारामे पानी घुसल, दिनमे राखल फोटो-मापक कागजक एक बक्सा भीतर रहि गेल; अभिलेख कर्मचारीक चाबी माधवी लग नहि, मुदा फोटोग्राफर दिनमे गलती सँ एक डिजिटल मेमोरी कार्ड माधवीक फाइलमे छोड़ि गेल छल। पुलिस केँ ओ कार्ड तत्काल चाही छल, कारण भोरमे जाँच प्रतिलिपि पठाएब।

माधवी फाइल जाँचली। कार्ड सचमुच छल। सिपाही कहलक, “हम हवेली पहरादार लग जा रहल छी। कार्ड दे दी।”

माधवी देबए जा रहल छली, फेर पुछली, “ओसारा मे पानी घुसल?”

“हँ। पहरादार अकेले सामान उठा रहल अछि। थाना सँ आदमी पहुँचि रहल।”

माधवीक मोनमे दहिना चूनक पट्टी चमकल। मुदा विनयक ‘राति नहि’ आदेश सेहो। ओ कार्ड सिपाही केँ देली। “हम नहि जाएब।”

सिपाही चलि गेल।

पाँच मिनट बाद अभिरामक फोन आयल। “विनय बाबू हमरा सेहो बजौने छथि। हवेलीक बाहरी ओसाराक एक प्लगबोर्ड भीजल, बिजली बन्द कराओल जा रहल। अहाँ घरमे रहू।”

“हम घरमे छी।”

“नीक।”

फोन कटि गेल।

माधवी खिड़की लग ठाढ़ बरखा देखैत रहल। ओकरा अपनहि ऊपर राग भेल—किएक एतेक बेचैनी? काल्हि भोरमे देवाल ओतहि रहत। नाम जँ अछि तऽ भागत नहि।

बारह बजए मे पाँच मिनट बाकी, फोन फेर बजल। एहि बेर अभिराम। आवाज तेज। “माधवी, दिनक फाइलमे जे पुरान फोटो अहाँ लेने छलहुँ, ओकर मूल उच्च-गुणवत्ताक छवि अहाँ लग अछि?”

“लैपटॉपमे।”

“हवेलीमे प्रकाश डालि तुलना करैत छी। अहाँ नहि, केवल छवि चाही। पठा सकैत छी?”

“अहाँ हवेलीमे छी?”

“हँ। पुलिस अछि। जयनारायण बाबू सेहो आबि रहल छथि। पानी खोखरक देवाल लग नहि पहुँचल, मुदा ओसाराक सामान हटाओल जा रहल।”

माधवी छवि पठा देली। दस मिनट बाद अभिरामक नवा संदेश—“दहिना पट्टी पर सचमुच पुरान तह अलग। मुदा एखन छुड़ब नहि। भोरमे विशेषज्ञ।”

माधवी उत्तर लिखए लगली, तखन बिजली गेल। घर अन्हार। बाहर बरखा कम। मौनमे एकाएक दूर कतहु धातुक सूक्ष्म झनकार भेल। एक, दू, फेर तीन छोट ध्वनि—छन... छन... छन।

माधवी जमि गेली। ध्वनि घर भीतर नहि, गली दिश। फेर बुझायल—पड़ोसीक बकरीक गला-घंटी। ओ अपने आप पर हँसली।

एही समय अभिरामक फोन। “एक समस्या भेल अछि।”

“की?”

“जयनारायण बाबू पहुँचबाक बाटमे गाड़ी फँसल। पुलिसक एक दल बाहर ओसारामे। हम भीतरक बरामदामे फोटो मिलान करैत छी। दहिना पट्टीक सामने दिनमे खींचल छविमे जे रेखा छल, एखन प्रकाश बदलला पर गायब जकाँ।”

“गायब?”

“अर्थात् प्रकाशक भ्रम हो सकैत। अहाँक मूल छवि बिना दिशा मिलान कठिन। मोबाइल पर संपीडित छवि अछि।”

माधवी चुप।

अभिराम तुरन्त कहलक, “अहाँ नहि आएब। हम काल्हि करब।”

“हम किछु कहियो नहि कहलहुँ।”

“अहाँक चुप्पी चिन्हैत छी।”

माधवी फोन काटि देली।

पन्द्रह मिनट बाद जयनारायणक फोन आयल। “अहाँ घरमे छी?”

“हँ।”

“रहू। हम हवेली पहुँचि रहल छी। अभिराम भीतर अछि, पुलिस बाहर। कोनो आपात नहि।”

माधवी ‘हँ’ कहली।

बारह बजि पन्द्रह मिनट। बरखा थमल। बिजली नहि। माय फेर सूति गेली। माधवी टेबुल पर बैसल, मुदा मन हवेलीमे। जयनारायण स्वयं कहने छथि—कोनो आपात नहि। तखन किएक भीतर किछु खोंचारैत?

बारह बजि बीस पर अभिरामक संदेश आयल नहि, बल्कि एक फोटो। दहिना चूनक पट्टी पर तिरछा टॉर्च। तीन रेखा स्पष्ट—‘कु...’ जकाँ। नीचे किछु।

माधवी स्क्रीन नजदीक आनली। पुरान उच्च-गुणवत्ताक फोटो खोलि संग राखली। ओहि पुरान फोटोमे कुसुमा देवालक सामने। जकरा वर्तमान पट्टी मानल जा रहल, ओकर एक अंश हुनकर ओढ़नी पाछाँ नुकायल। जे भाग खुलल, ओतऽ हलुक खरोंच? संपीडित प्रतिमे न देखायल छल।

माधवी जयनारायण केँ फोन कएलनि। संकेत नहि। अभिरामक फोन बजल, उठल नहि।

मोन फेर भागए लागल। पाँच मिनट बाद अभिराम स्वयं फोन कएलक। “हम बाहर आबि गेलहुँ। पुलिस भीतरी हिस्सा फेर बन्द कऽ रहल अछि। भोरमे जाँच। बस।”

“फोटोमे अक्षर अछि।”

“हो सकैत अछि। एखन निष्कर्ष नहि।”

“कुसुमा?”

“माधवी—”

“ठीक। काल्हि।”

फोन कटि गेल।

माधवी सूतए गेली।

भोर साढ़े चारि बजे जयनारायणक संदेश आयल—“सात बजे हवेली। अनुमति मिलल। दहिना पट्टी देखब।”

सात बजे दल फेर हवेली पहुँचल। विशेषज्ञ चूनक सतह पर स्पर्शरहित तिरछा प्रकाश, छाया-फोटोग्राफी आ माप कएलक। दहिना पट्टी वास्तवमे दू अलग समयक चून। ऊपरक पतला तह अपेक्षाकृत नब, नीचाँ पुरान खरोंच। कोनो परत हटाओल नहि गेल; प्रकाशक कोण बदलिते अक्षर क्रमशः उभरए लागल।

पहिल—“कु”। फेर “सु”। फेर “मा”।

माधवीक हृदय धक्।

नीचाँ छोट अक्षर: “देवी”। ओकर पाछाँ आंशिक—“रा...लो... चौ...”। विशेषज्ञ कहलक, “पूरा पढ़ब एखन उचित नहि। डिजिटल प्रकाश-संयोजन करब।”

अभिराम धीरे कहलक, “कुसुमा देवी... रामलोचन चौधरीक—हो सकैत अछि।”

जयनारायण तुरन्त रोकलनि। “हो सकैत अछि। एखन घोषित नहि।”

दुपहर धरि छवि प्रसंस्करण भेल। अक्षर पूर्ण उभरल—“कुसुमा देवी — रामलोचन चौधरीक बेटी।” तकर नीचा अत्यन्त हलुक, मानू नख वा धातुक कोनासँ—“हम एतऽ रही।”

माधवीक देह सिहरि गेल। ई मृत्यु-सन्देश नहि। ई उपस्थिति। ‘हम एतऽ रही।’

अभिराम चुप छल।

“अंबिका काकीक स्मृति गलत नहि छल,” माधवी कहली।

“कम सँ कम नामक बातमे नहि,” अभिराम उत्तर देलक। “मुदा ई कखन खरौंचल, कुसुमा स्वयं खरौंचली कि दोसर केओ—एखन अज्ञात।”

“फोटो?” माधवी पुछली। “पुरान फोटोमे ई किएक नहि?”

अभिराम उच्च-गुणवत्ताक पुरान छवि स्क्रीन पर रखलक। कुसुमाक देह नामक आध भाग ढाँकि रहल; बाकी भाग पर प्रकाश समतल, खरौंचक छाया नहि। “हो सकैत अछि फोटो खींचला बाद खरौंचल। वा ऊपर पतला चून रहि बादमे घिसल। वा प्रकाशमे न देखायल।”

माधवी धीरे कहली, “तखन ई प्रमाण नहि जे ओ एहि हवेलीमे गायब राति अएलीह।”

जयनारायण सन्तोष सँ हुनका देखलनि। “ठीक।”

ई उत्तर कहब माधवी लेल आसान नहि छल। भीतरक आध भाग कहैत—नाम अछि, कथा सही। दोसर भाग कहैत—नाम समय नहि कहैत। नावक रातिक शर्त मोन पड़ल: अहाँ हमरा मूर्ख नहि मानब; हम अहाँकेँ पत्थर नहि मानब। ओ अपनहि मनसँ ई शर्त दोहरौलनि।

दिनक काज समाप्त भेला पर जयनारायण थाना चलि गेलाह। अभिराम फोटो सभ संग अभिलेख-कक्ष। माधवी कने देर हवेलीक बाहरी आँगनमे रहि गेली, पुलिसक सिपाही दुआरि लग। सूर्य ढलल नहि छल। ओ देवाल दिस पाछाँ तकली—नाम एखन आँखिसँ नहि, केवल प्रकाशक विशेष कोणमे देखाइत।

राति ओ घरमे सूति गेली। लगभग आध राति नींद खुलल—फोनक कम्पन। अभिरामक संदेश: “पुरान फोटोमे नाम नहि देखाइत। पिक्सेल जाँचमे खरौंचक स्पष्ट छाया शून्य। ई बादमे बनल हो सकैत अछि।”

माधवी उत्तर देबाक पहिने एहन ध्वनि सुनली जे बकरीक घंटी नहि छल।

छन... छन...

बहुत धीमा। मानू पायल दूर बरामदामे।

ओ उठि बैसली। घरक दरबज्जा बन्द। माय बगलक कोठरीमे। फेर—छन...

माधवी टॉर्च लऽ बाहर अएली। ध्वनि गलीक अन्त दिश। बरखा नहि। हवा बहुत हलुक। ओ दू डेग आगाँ गेली, फेर रुकली। रातिक मध्य अकेले गलीमे पीछा करब मूर्खता। ओ घरक दुआरि सँ बाहर नहि गेली।

तखन फोन बजल। अभिराम।

“जागल छी?”

“हँ।”

“हम एक बात कहब। दिनमे जखन हम हवेली भीतर तिरछा प्रकाश लगा रहल रही, एक बेर पायल-जकाँ ध्वनि सुनलहुँ।”

माधवीक हाथ ठमकल। “अहाँ?”

“हँ। हम सोचलहुँ बाहरी सिपाहीक चाबी। बाहर पुछलहुँ—ओहि समय केओ हिलल नहि छल।”

माधवी चुप।

अभिराम कहलक, “ई प्रमाण नहि।”

“हम जानैत छी।”

“मुदा ई बात अहाँसँ नुकाएबो नहि चाहैत रही।”

“किएक?”

“किएक तँ काल्हि नाव पर शर्त मानने रही।”

माधवीक मुँह पर अन्हारमे हँसी आयल। “नीक।”

“अहाँ किछु सुनलहुँ?”

माधवी गली दिश तकली। एखन मौन। “हो सकैत अछि।”

“की?”

“पायल-जकाँ।”

फोनक दोसर कात अभिरामक साँस क्षण भरि थमल। फेर ओ कहलक, “घरमे रहू।”

“रहि रहल छी।”

“भोरमे देखब।”

“हँ।”

फोन कटि गेल।

माधवी भीतर घुरली। टेबुल पर आइक छवि खुलल छल—‘कुसुमा देवी — रामलोचन चौधरीक बेटी। हम एतऽ रही।’ पुरान फोटोमे खरोंच नहि देखाइत। वर्तमानमे नाम अछि। बीचक समय अज्ञात।

तर्क एतबे कहैत छल।

मुदा आध रातिक ओ तीन झनकार तर्कक पन्ना पर कतहु लिखल नहि छल। माधवी ओकरा प्रमाण नहि मानली। विसरलो नहि।

अध्याय २५ — दुलारी भेटल

भोरक पायल-जकाँ झनकारक बात दिन चढ़िते फेर पाछाँ सरकि गेल। सात बजि पैतालीस मिनट पर विनय ठाकुरक दूरभाष आयल। उत्तर चर पर भेजल स्थानीय नाव-दल एक परिवार लग एहन युवती देखलक जे दुलारीक वर्णनसँ मेल खाइत छल। नाम पूछलापर ओ पहिने चुप रहल, फेर कहल—“माधवी दीदी आबथि, तखन बजब।”

माधवीक हाथसँ चायक कप लगभग छूटि गेल। माय मालती सिलाइ-मशीन लग बैसल छलीह। बेटी चेहरा देखिते मशीन रोकि देलखिन।

“भेटि गेल?”

“हो सकैत अछि।”

मालतीक आँखि बन्द भऽ गेल। “पहिने ओकरा जीवित देखि लिअ, तखन प्रश्न पुछिह।”

माधवी माथ हिलौली। वसुधाक मृत्यु बाद घरक साधारण वाक्य सभ ओकरा कखनो-कखनो अदालतक आदेशसँ बेसी भारी लगैत छल।

घाट पर जयनारायण पहिनेसँ छलाह। अभिराम हाथमे जलरोधक थैला, विनय संग महिला सिपाही सरोज देवी। भोला सहनी नावक रस्सी खोलैत छल। रातिक आँधी उतरि गेल छल, मुदा नदी फुलायल। पानीक रंग माटि-जकाँ गाढ़, धार भीतर-भीतर तेज।

“आइ कोनो वीरता नहि,” जयनारायण नाव चढ़िते कहलनि।

अभिराम माधवी दिस देखलक। “ई आदेश हमरा दुनू लेल?”

“जकरा लागू बुझाइत हो, ओ अपन नाम लिखि लिअ।”

भोला हँसि देलक। रातिक डरक बाद ई हँसी कने अस्वाभाविक लगल, मुदा नीक सेहो।

उत्तर चर धरि पहुँचबा मे एक घड़ी लगल। बीच-बीचमे नाव उथला बालू छूबैत, भोला बाँसक लम्बा डंडासँ धकेलैत। मोबाइल संकेत कखन आबैत, कखन गायब। अभिराम फेर नक्शा खोलए लगल तऽ भोला पाछाँ सँ बजल—“एहि मोड़ पर नदी पढ़ू, बाबू। नक्शा पिछला बरखक अछि।”

अभिराम बिना विरोध मोबाइल बन्द कऽ देलक। माधवी मुस्कुरौली।

चर पर घर नहि, घरक अस्थायी रूप सभ छल—बाँसक मचान, टाट, पुआलक छाजन, जाल सुखेबाक खम्भा, माछक गन्ध, धुँआ आ बालू पर दौड़ैत नाडर पएर बच्चा। पुलिसक नाव देखि किछु लोक दूर ठाढ़ भऽ गेल। सरोज देवी पहिने एक बूढ़ि लग गेलीह। बूढ़ि माथ पर उज्जर गमछा बाँधने छलीह। भोला फुसफुसायल—“फुलमति।”

फुलमति आँखि छोट कऽ माधवी केँ देखलखिन। “अहीं माधवी?”

“हँ।”

“तखन चलू। पुलिस सभ पाछाँ रहथि।”

विनय एतराज करए चाहलनि, मुदा सरोज देवी हाथ उठा रोकलखिन। “हम संग रहब।”

फुलमति हुनका घरक पाछाँ लऽ गेलीह। एक छोट छाजन नीचाँ दू स्त्री जालक फाटल भाग गाँथि रहल छलीह। एक फुलमतिक बेटी चुनकी, दोसरक चेहरा गमछासँ आध ढँकल। माधवीक डेग थमि गेल।

“दुलारी।”

गमछा धीरे नीचा भेल। दुलारीक आँखि गहिरी, राति-राति जागल जकाँ। गाल सुखायल। मुदा जीवित। माधवीक भीतर जे पाथर दू दिनसँ अँटकल छल, ओ एकाएक ढीला पड़ि गेल। ओ दौड़ि गले लगाबए चाहली, मुदा दुलारी अपनहि उठि आगाँ आयल आ हुनका कसि पकड़ि लेलक।

“दीदी...”

एक्केटा शब्द। तकर बाद दुलारीक देह काँपए लागल। ओ रोयल नहि; बस साँस टूटि-टूटि निकलैत। माधवी ओकर पीठ सहारैत रहलि।

“हम जानैत छलहुँ अहाँ खोजब,” दुलारी कने देर बाद कहली।

माधवीक आँखि भरि आयल। “तूँ संदेश पठेलह, तखन किएक ठाम नहि कहलह?”

दुलारी सरोज देवी दिस तकली, फेर दूर नाव लग ठाढ़ विनय आ जयनारायण दिस।

“ठाम कहितहुँ तऽ पहिने के पहुँचैत?”

प्रश्नक उत्तर सहज नहि छल। माधवी चुप भेली।

फुलमति माटिक चूल्हिसँ चाय उतारि सभकेँ देलीह। दुलारी कप पकड़ल, मुदा पीबली नहि। ओकर नखक भीतर जालक नील सूत अँटकल छल। माधवी एक क्षण ठिठकली—नील धागा। फेर अपनहि केँ रोकली। एहि चर पर माछक जाल नील सूतसँ भरल। सभ नील चीज कुसुमाक संकेत नहि।

जयनारायण धीरे-धीरे नजदीक अएलाह। “हम एतऽ प्रश्न पुछब, मुदा जतेक तूँ चाहह। पहिने एतबे—कोनो चोट?”

“नहि।”

“केओ पीछा करैत आयल?”

“पहिल राति हमरा लगैत छल। पक्का नहि।”

“तूँ एतऽ किएक अएलह?”

दुलारी कप नीचे राखि देली। “कारण हम जे देखलहुँ, तकर बाद घर लौटब सुरक्षित नहि बुझायल। आ भोरमे जखन दीदीक मृत्यु सुनलहुँ, तखन बुझि गेलहुँ—सभ पहिने हमर नाम लेत।”

जयनारायणक चेहरा बदलल नहि। “की देखलह?”

दुलारी चारूकात तकली। चरक हवा खुला छल, मुदा ओकर स्वर स्वतः नीचा भऽ गेल। “कचहरीक पछिला बरामदामे कागज जरैत।”

माधवीक देह तनल। अभिराम नजदीक आ गेल। विनय तुरन्त नोटबुक खोललनि।

“कखन?”

“राति दसक बाद। पूरा समय नहि मोन। हम दीदी लगसँ निकललहुँ। बुच्चन काका फाटक कात नहि छलाह; बरखा तेज छल। पछिला छज्जा नीचे सँ निकलबाक सोचलहुँ, कारण मुख्य बाटमे पानि भरल छल। ओतऽ लोहेक पुरान ड्रम लग आगिक छोट लपट देखलहुँ।”

“के?” विनयक प्रश्न तेज छल।

दुलारीक होंठ कसि गेल। “चेहरा पूरा नहि देखलहुँ।”

“लोक केहन?”

“पुरुष। मध्यम देह। कचहरीक लोक जकाँ कपड़ा। हाथमे फाइलक फाइल पन्ना। ओ पन्ना मोड़ि-मोड़ि आगिमे दऽ रहल छल।”

“चिन्हलह?”

दुलारी जयनारायण दिस देखली। “लोक चिन्हल जकाँ लागल। मुदा हम झूठ नाम नहि कहब।”

जयनारायण तुरन्त कहलनि, “ठीक। जे देखलह सएह। जे अनुमान, ओकरा अनुमान कह।”

दुलारीक चेहरा कने ढीला पड़ल। “हम ओकर बामा पएरक चाल मोन राखने छी। डेग रखैत कने बाहर घुमैत। आ दहिना हाथमे चाभीक गुच्छा छल—पीतल रंगक पैघ गोल छल्ला। आगिक उजासमे चमकल।”

विनय लिखलनि। “आवाज?”

“एक बेर खाँसल। सूखल खाँसी। फेर पाछाँ देखलक। हम देवालक कोन पाछाँ सटि गेलहुँ। चेहरा आध देखल, मुदा एतऽ कहि नहि सकैत छी जे फलाँए छल।”

“तोरा देखलक?”

“पता नहि। हमरा लगल देखलक। तकर बाद हम दौड़लहुँ।”

माधवी पुछली, “दीदी तखन भीतर छलीह?”

दुलारीक आँखि तुरन्त ओकरा पर। “हँ। हम निकलैत बेर हुनका बोलैत सुनने छलहुँ। फोन पर ककरोसँ कहैत छलीह—‘नकल हमरा लग नहि रहत।’ तकर किछु मिनट बाद हम बाहर छलहुँ।”

अभिरामक नजर जयनारायणक नजरसँ मिलल। ई बात समय-रेखामे महत्वपूर्ण छल।

जयनारायण पुछलनि, “वसुधा तोरा किछु देलखिन?”

दुलारी फेर चुप। फुलमति बेटी चुनकी दिस तकलखिन। चुनकी उठि छाजनक कोना सँ एक पुरान कपड़ाक गठरी आनली। दुलारी गठरी खोलली। भीतर कपड़ा, एक कापी, दू सूखल रोटी, आ तेल-कागजमे लपेटल एक मोड़ल पन्ना।

विनय तुरन्त हाथ रोकलनि। “एखन छुड़ब नहि।”

सरोज देवी साफ प्लास्टिक थैली मँगौलनि। दुलारी स्वयं तेल-कागज बाहरक कात सँ पकड़ि मेज-जकाँ राखल उलटल टोकरा पर रखली।

“ई दीदी देलखिन,” ओ कहली। “कहलीह—‘मूल नहि, छाया-नकल अछि। घरमे खुलल ठाम नहि रखिह। जँ हमरा किछु होअय तऽ माधवी धरि पहुँचाबिह।’ हम हँसलहुँ—‘अहाँ केँ की होएत?’ ओ राग कऽ कहलीह—‘जे कहैत छी, से करू।’”

माधवीक आँखि फेर भरि आयल।

“कागजमे की?” विनय पुछलनि।

“हम पूरा नहि पढ़लहुँ। ऊपर सात टोला, पुरान नाम, किछु गोला-जकाँ छाप। एक कोनमे ‘खण्ड ७’ लिखल। हम बस एतबे।”

अभिराम श्वास रोकि पन्ना दिस देखैत रहल। पेटी ४७/खक गायब सातम पन्ना? कि ओकर छाया-नकल? एखन कहब जल्दी छल।

“तूँ घर नहि गेलह, सीधा नदी?” जयनारायण पुछलनि।

“पहिने रातिक पाठशालाक पिछला छप्पर लग आध घड़ी नुकायल रही। फेर एक दूध बेचिनिहारक ठेला जाएत छल, ओकरा संग घाट धरि। भोरसँ पहिने छोट नाव भेटल। हम फुलमति दादीक नाम जानैत रही। हमर बाबू पहिले एहि लोक संग माछक कारोबार करैत छलाह। सोचलहुँ—पानी पारि रहब, तखन दुई दिन सोचब।”

“वसुधाक मृत्युक खबर कखन?”

“भोरमे। एक नाविक बजलक—कचहरीमे वकीलनी मरल। फेर दोसर कहलक—‘ओहि राति जे छौड़ी गेल छल, से गायब।’ हम बुझि गेलहुँ हमर नाम चलि गेल।”

माधवी धीरे कहली, “तूँ पुलिसक लग जा सकैत छलह।”

दुलारी ओकरा एना देखली जे वाक्यक भीतर पूरा समाज देखाइत हो। “दीदी, हमरा गाममे पिछला साल महाजनक घरसँ चाँदीक कटोरा हरायल छल। पहिल बेर पुलिस ककर झोपड़ी गेल छल, मोन अछि? हमर। कटोरा महाजनक पोता जुआमे बेचने छल। तखन धरि माय तीन राति थाना घुमल। जे गरीबक बात पहिने मानल जाइत हो, तखन हमो सीधा थाना जाइतहुँ।”

माधवीक पास कोनो उत्तर नहि।

जयनारायण धीरे कहलनि, “तोहर डर तर्कहीन नहि। मुदा एखन तोहर बयान जरूरी। आ तोहर सुरक्षा सेहो।”

दुलारीक चेहरा कठोर भेल। “सुरक्षा नाम पर बन्द करब?”

विनय तुरन्त कहलक, “नहि। एखन तूँ साक्षी। तोरा महिला पुलिस संग सुरक्षित ठाम राखल जाएत, बयान लेल जाएत। तोहर इच्छा बिना कोनो कागज पर हस्ताक्षर नहि। पढ़ि लिअ, फेर।”

दुलारी सरोज देवी दिस तकली। “अहाँ संग रहब?”

“हँ,” सरोज कहलीह। “जतेक समय प्रक्रिया चलत।”

दुलारी तेल-कागज दिस देखली। “ई कागज हम स्वयं देब। लिखू जे हम देलहुँ। बादमे केओ नहि कहय जे पुलिस हमर गठरीसँ ‘भेटलक’।”

जयनारायणक आँखि चमकल। “ई बात स्वयं कहब ठीक कएलह।”

विनय स्वीकार-पत्र बनबेलनि। दुलारी पढ़ए लगली। दू ठाम रोकि शब्द बदलौली। “एतऽ ‘बरामद’ लिखल अछि। लिखू—‘दुलारी सदाय स्वयं प्रस्तुत कएलनि।’”

विनय एक क्षण ओकरा देखलनि, फेर बदलि देलनि।

माधवीक मनमे वसुधाक बात उठल—“पहिने ई पढ़त, तखन अहाँ सभक कागज पढ़त।”
दुलारी सचमुच कागज पढ़ि रहल छल। केवल अपन लेल नहि, अपन विरुद्ध बनि सकैत
वाक्यसँ बचबाक लेल।

फुलमति दुलारीक माथ पर हाथ फेरलखिन। “जा। डरि कऽ फेर नदी पारि नहि भागिह।
डर लगत तऽ नाम लिखिह, आवाज बचा कऽ रखिह।”

दुलारी मुस्कराइ नहि सकली, मुदा माथ हिलौली।

घुरबाक नावमे ओ माधवी लग बैसल। अभिराम सोझाँ। जयनारायणक नजर नदी पर,
मुदा कान सभ बात पर।

“तूँ हमरा संदेश कतेक उपायसँ पठेलह?” माधवी पुछली।

दुलारी कहली, “चुनकीक देवरक पुरान फोन। नम्बर बदलल। आवाज सात सेकण्डसँ
बेसी नहि—ओ कहलक बेसी भेल तऽ फाइल भारी।”

अभिराम अनायास हँसल। “सात सेकण्ड। फेर सात।”

दुलारी भौं उठौली। “एहि सातसँ हमरा किछु लेना-देना नहि। फोन खराब छल।”

माधवी सेहो हँसली। रहस्यक बीच ई साधारण कारण नीक लगल। सभ ‘सात’ रहस्यमय
नहि।

घाट नजदीक अएलापर दुलारीक देह फेर कड़ा भऽ गेल। किनार पर पुलिसक गाड़ी, दू
स्थानीय संवाददाता, आ दूर कतेको जिज्ञासु चेहरा। जयनारायण ओहि भीड़क दिशा देखिते
विनयसँ कहलनि, “साक्षीक चेहरा तमाशा नहि बनाउ।”

सरोज देवी दुलारीक माथ पर गमछा ठीक कएलखिन। गाड़ी नजदीक आनल गेल।

दुलारी उतरबाक पहिने विनयक आँखिमे देखली। “एक बात साफ कहलियौ। हम गवाही
देबए जा रहल छी कि आरोपी बनि?”

विनय कने थमकलाह। “एखन तूँ साक्षी।”

दुलारी उत्तर सुनली। फेर धीरे कहली—“‘एखन’ शब्द हम मोन रखब।”

जयनारायणक चेहरा पर क्षण भरि चिन्ताक छाया आयल। नदीक धार पाछाँ बहैत रहल।
किनार पर जमीन स्थिर बुझाइत छल, मुदा दुलारी जानि गेल छल—स्थिर जमीन सेहो
अचानक सरकि सकैत अछि।

अध्याय २६ — गिरफ्तारी

थाना पहुँचि दुलारीक पहिल माँग चाय नहि, कागज छल। “हम जे कहब, लिखला बाद हमरा पढ़ए दिअ।” सरोज देवी हुनका महिला सहायता-कक्षमे बैसौलखिन। भीजल गमछा बदलए लेल साफ चादर देलखिन, भोजन आनल गेल। दुलारी दू कौर खा रोकि देली।

“भूख नहि?” सरोज पुछलखिन।

“भूख अछि। पेट मानि नहि रहल।”

सरोज बिना जोर देलखिन थारी ढाँकि रखि देलखिन।

बाहरी बरामदामे माधवी, अभिराम आ जयनारायण बैसल छलाह। विनय तेल-कागजमे लपेटल पन्नाक प्रारम्भिक छवि उतरबैत छलाह। पन्ना पुरान कागज नहि, अपेक्षाकृत नब छाया-नकल छल; मुदा जे दस्तावेजक छवि ओहि पर छल, तकर पन्ना-सज्जा पेटी ४७/खक सूचीक संग मेल खाइत। बामा किनार पर छओ गोल प्रमाण-चिह्नक अंश, सातम ठाम तह पड़ल। लिखावट धुँधल।

अभिराम स्क्रीन पैघ कएलक। “ई मूल नहि। कागजक तन्तु नब अछि। छवि सम्भवतः मूलक फोटो अथवा छाया-नकल।”

विनय कहलक, “मुदा मूल पन्ना गायब अछि। आ एहि नकल दुलारी लग।”

माधवी तुरन्त कहली, “वसुधा दीदी देलखिन—दुलारी कहने अछि।”

“कहल बयान अछि,” विनय शान्त रहलाह। “पुष्टि चाही।”

जयनारायण बीचमे किछु नहि बजलनि। ओ पन्नाक मोड़ देखैत रहलाह। “तेल-कागज ककर?”

“घरक?” माधवी अनुमान लगौली।

जयनारायण हुनका देखलनि। माधवी स्वयं सुधारली—“पता नहि। अनुमान।”

“नीक।”

दुलारीक बयान तीन घड़ी चलल। सरोज भीतर रहलीह। विनय प्रश्न करैत, एक लिपिक लिखैत, दुलारी बेराबेरी रोकि शब्द बदलाबैत।

“एतऽ ‘भागि गेली’ लिखल अछि,” ओ कहली। “हम कहने छी ‘घर नहि घुरलहुँ’।
भागल शब्द निकालू।”

लिपिक खीझल चेहरा बनौलक। “अर्थ तऽ—”

“अर्थ हम कहब। लिखब अहाँ।”

सरोजक होंठ पर क्षीण हँसी आयल। विनय लिपिक केँ देखलनि। शब्द बदलल गेल।

“कागज जरबैत व्यक्ति केँ चिन्हैत छलहुँ?”

“चिन्हल जकाँ लागल। पक्का नहि।”

“नाम?”

“नहि।”

“कचहरीक कर्मचारी?”

“हो सकैत अछि।”

“अधिवक्ता?”

“पता नहि।”

“जमीन-समूहक लोक?”

“चेहरा साफ नहि।”

विनय प्रश्न बदललनि। “वसुधा कर्ण तोरा नकल किएक देलखिन?”

“कहलीह, ‘जँ कागज फेर गायब होअय।’”

माधवी बरामदा सँ ई वाक्य सुनि काँपि गेल। वसुधाक अधलिखल पाँति—“जँ ई कागज
फेर गायब भेल...”।

दुपहर लग दुलारीक माय फूलो सदाय पहुँचलखिन। केओ हुनका खबर देलने छल। ओ
थाना फाटक पर आते रोय लागलीह, मुदा दुलारी भेटिते उलटा भेल।

“माय, कानब बन्द कर,” दुलारी कहली। “हम जीवित छी। पहिने खाइ लिअ।”

फूलो बेटी केँ छातीसँ लगा लेलखिन। “तौँ हमरा बतौने बिना नदी पारि—”

“बतबैत तऽ अहाँ रोकितहुँ।”

“रोकितहुँ!”

“तौँ नहि बतौलहुँ।”

दुनूक बीच एक क्षण एहन झगड़ा भेल जाहिमे प्रेमक मात्रा भय सँ बेसी छल।
जयनारायण दूर सँ देखैत रहलाह। साधारण घरक साहस कखनो भाषण नहि; कखनहुँ माय
बेटी केँ डाँटैत अछि कारण ओ जीवित भेटल।

दुपहर दू बजे जिला कार्यालयसँ विशेष संदेश आयल। प्रकरणक प्रगति-प्रतिवेदन तुरन्त चाही। मृत अधिवक्ताक मामला, जमीनक सामूहिक मुकदमा, लोकक दबाव—ऊपरक अधिकारी सभक नजर आबि गेल। विनयक चेहरा ओ संदेश पढ़िते कठोर भेल।

“की?” जयनारायण पुछलनि।

विनय उत्तर देबासँ पहिने अभिरामक लैपटॉप दिस तकलनि। “पहिल ‘सूत्र’ प्रतिवेदन केस-डायरीमे संलग्न भऽ चुकल अछि।”

अभिराम सीधा भऽ गेल। “कौन प्रतिवेदन?”

“दुलारीक संदिग्धता बढ़बैत प्रारम्भिक प्रतिवेदन।”

“ओ प्रतिवेदन सुधारल गेल। दूरभाष ओकर नहि, नगद निकासी पारिवारिक, बारह सय विधिक सहायता।”

“सुधारो अछि। मुदा पहिल प्रतिलिपि सेहो फाइलमे अछि।”

अभिरामक स्वर कड़ा भेल। “पुरान परिणामक ऊपर स्पष्ट ‘अमान्य/पुनर्मूल्यांकित’ लिखल अछि।”

विनय थकानसँ आँखि मललनि। “कागज पर जे छपि गेल, ओकर अपन जीवन होइत अछि, अभिराम बाबू।”

जयनारायण धीरे कहलनि, “यंत्र परिणाम बदलि देलक, कार्यालयक स्मृति नहि।”

माधवी केँ ई वाक्य भयावह लगल।

तीन बजे एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी आएलाह। नाम नरेश चौबे। ओ सभ कागज देखलनि, दुलारीक बयान पढ़लनि, पन्नाक छवि देखलनि। हुनकर प्रश्न छोट, स्वर अधीर।

“अन्तिम बेर मृतक संग?”

“दुलारी।”

“मृत्यु बाद गायब?”

“हँ, मुदा—” विनय कहए चाहलनि।

“मूल दस्तावेज गायब, ओकर नकल एहि लग?”

“नकल ओ स्वयं देलक, दावा वसुधा देलखिन।”

“दावा। बैंक निकासी?”

अभिराम बोलल, “स्पष्टीकरण सत्यापित—”

चौबे हाथ उठा रोकलनि। “हम मशीन सँ नहि, पुलिससँ बात करैत छी।”

अभिरामक मुँह कड़ा भऽ गेल। जयनारायण ओकर बाँहि पर हलुक हाथ रखलनि। एखन राग उपयोगी नहि।

चौबे दुलारीक बयानक ओ अंश पढ़लनि जतऽ ओ कागज जरबैत लोक देखबाक बात कहने छल। “नाम नहि। चेहरा नहि। ई बादमे बनाओल कथा सेहो भऽ सकैत अछि।”

माधवीक भीतर आगि उठल। “किएक? कारण ओ गरीब अछि?”

चौबे ओकरा देखलनि। “अहाँ के?”

“वसुधाक सहायिका।”

“तखन भावुकता अलग राखू।”

जयनारायण बीचमे आएलाह। “भावुकता अलग राखब ठीक। पुरान प्रतिवेदनक सुधार सेहो अलग नहि राखू।”

चौबे हुनका चिन्हैत छलाह। स्वर कने सँभलल। “जयनारायण बाबू, हमरा दबाव नहि, तथ्य चाही। तथ्य ई जे दुलारी गायब छल, मृतकक संग अन्तिम भेटल, गायब मूलक नकल ओकर लग, आ प्रारम्भिक विश्लेषण ओकर गतिविधि संदिग्ध कहने अछि।”

“आ सुधारल विश्लेषण?”

“जाँचत।”

“कखन?”

“जाँच चलि रहल अछि।”

ई उत्तर जयनारायण केँ पसन्द नहि पड़ल, मुदा ओ चुप रहलाह।

सायंकाल पाँच बजबाक पहिने दुलारी केँ कहल गेल जे सुरक्षाक व्यवस्था बदलि रहल अछि; ओ एखन थाना छोड़ि नहि सकत। सरोज देवी स्वयं खबर देलखिन। दुलारी एकटक हुनकर चेहरा देखली।

“साक्षी?”

सरोज उत्तर देबाक पहिने रुकलीह। “एखन औपचारिक निर्णय नहि।”

दुलारीक मुँह पर कटु हँसी आयल। “हम ‘एखन’ शब्द मोन रखलहुँ।”

माधवी भीतर जाए चाहली, मुदा अनुमति नहि। जयनारायण विनयसँ कहलनि, “वकील एखनहि बजाउ।”

जिला विधिक सहायता कार्यालयसँ अधिवक्ता रचना मंडल पहुँचलखिन। उमेर करिब अड़तीस, कद छोट, आवाज नीच, हाथमे कागजक पातळ फाइल। ओ पहिने पुलिससँ नहि,

दुलारीसँ भेटलीह। पन्द्रह मिनट बाद बाहर आबि विनयसँ पहिल प्रश्न कएलखिन—“ई युवती स्वेच्छासँ एतऽ छथि कि हिरासतमे?”

विनय कहलक, “आधिकारिक गिरफ्तारी एखन नहि।”

“तखन ओ जा सकैत छथि?”

मौन।

रचना फेर पुछलखिन, “जाए सकैत अछि?”

वरिष्ठ अधिकारी चौबे बजलाह, “जाँचक प्रयोजनसँ रोकल गेल अछि।”

“तखन कानूनक भाषा स्पष्ट करू। सुरक्षाक नाम पर अनिश्चित रोक नहि चलत।”

जयनारायणक आँखिमे सन्तोषक क्षीण छाया।

करीब छह बजे निर्णय कएल गेल—दुलारी केँ औपचारिक रूपसँ गिरफ्तार कएल जाएत। आरोपक रूपमे वसुधाक मृत्युसँ जुड़ल हत्या-षड्यन्त्रक संदेह, सार्वजनिक अभिलेखक मूल पन्ना चोरी/नुकायब, आ प्रमाण नष्ट करबाक सम्भावना लिखल गेल। विनय ई वाक्य पढ़िते असहज भेलाह।

“प्रमाण नष्ट?” ओ चौबेसँ पुछलनि। “कागज जरबैत देखनिहार ई स्वयं कहि रहल अछि।”

“ओ कहि रहल अछि।”

“ओहि व्यक्ति नाम नहि।”

“ठीक। जाँचमे स्पष्ट होएत।”

अभिराम फुसफुसायल, “माने जे बोलल, सएह ओकर विरुद्ध?”

जयनारायण उत्तर देलनि, “कखनहुँ व्यवस्था प्रश्नक उत्तरसँ पहिने उत्तर देनिहारक ठाम देखैत अछि।”

गिरफ्तारी महिला सिपाहीक उपस्थितिमे दिन ढलय सँ पहिने दर्ज कएल गेल। कारण लिखित रूपेँ दुलारी केँ पढ़ि सुनाओल गेल; रचना मंडल प्रतिलिपि लेलखिन। परिवारक सूचना फूलो केँ देल गेल। दुलारीक स्वास्थ्य-जाँचक व्यवस्था भेल। कागज पर हस्ताक्षर करबाक समय ओ फेर पढ़ली।

“एतऽ लिखल अछि ‘गिरफ्तारीक समय आरोप बुझाओल’। बुझलहुँ, मुदा स्वीकार नहि कएलहुँ। ई जोड़ू।”

लिपिक फेर खीझल। रचना शांत स्वरमे कहलीह, “जोड़ू।”

जोड़ल गेल।

माधवी दुआरि लग ठाढ़ दुलारीक चेहरा देखैत छलीह। ओ रोयल नहि। फूलो रोइत छलीह। दुलारी माय दिस घुरि कहली—“घर जा। शैलाबहिन लग हमर रातिक कापी अछि, सुरक्षित रखिह। छोटकाक स्कूल नहि छुटय।”

फूलो कहलीह, “तौं जेल जइबह आ तोरा स्कूलक चिन्ता?”

“तखन की करब? स्कूल हमरा जेल लग आबत?”

एहि वाक्य पर सरोज देवीक आँखि सेहो भीजल जकाँ भेल, मुदा ओ चेहरा फेरि लेलखिन।

अभिराम रचना मंडल केँ अपन प्रणालीक संशोधन-अभिलेख देखबय चाहलक। “पहिल परिणाम गलत सम्बन्ध पर आधारित छल। पूरा परिवर्तन-इतिहास अछि।”

रचना तुरन्त पुछलीह, “पुरान परिणाम मिटाओल नहि गेल?”

“नहि। पारदर्शिता लेल सभ संस्करण बचैत अछि।”

“तखन आब ओहि पारदर्शिताक बचाव करबाक पड़त। अदालतमे पुरान पन्ना देखाओत, हम बदलल कारण देखाएब।”

अभिरामक चेहरा उदास। “हमरा लगल इतिहास बचाएब सुरक्षा अछि।”

“अछि,” रचना कहलीह, “मुदा इतिहासक आध पन्ना हथियार बनि सकैत अछि। पूरा पन्ना लऽ जाउ।”

दुलारी केँ ओहि राति न्यायालयक आदेश बिना लमहर पुलिस-पुछताछमे नहि राखल गेल। अगिला भोर न्यायिक दण्डाधिकारी सोझाँ प्रस्तुत कएल गेल। अभियोजन छोट अवधि लेल हिरासत माँगलक; रचना विरोध कएलखिन। न्यायालय विस्तृत तथ्य सुनबाक बदला तत्काल प्रक्रिया देखलक, दुलारीक स्वास्थ्य, महिला पुलिसक उपस्थिति, वकीलसँ भेटक पुष्टि कएलक, आ अल्प अवधि लेल न्यायिक अभिरक्षा देत जमानत-अर्जी शीघ्र सत्र न्यायालयमे सुनबाक अनुमति देलक।

न्यायालय भवनसँ बाहर निकलैत दुलारीक हाथमे हथकड़ी नहि छल; महिला पुलिस दुनू कात। तइयो भीड़ ओकरा एना देखैत छल जे फैसला भऽ चुकल। ककरो मुँहसँ फुसफुसाहट उठल—“ओही छौड़ी।” दोसर—“वकीलनीक कागज...”

माधवीक पयर ठमकि गेल। ओ घुरि बजए चाहली। दुलारी दूरसँ नजर मिला सिर हिलौली—नहि।

गाड़ी चलि गेल।

जयनारायण बरामदाक सीढ़ी पर बैसि गेलाह। अभिराम लग ठाढ़।

“सूत्रक पहिल भूल,” अभिराम धीरे कहलक, “हम सुधारि देने रही। तइयो ओ फेर लौटि आयल।”

जयनारायण कहलनि, “गलती केवल परिणाम नहि, समयो होइत अछि। गलत वाक्य जँ सही वाक्यसँ पहिने लोकक माथमे बसि जाए, तऽ बादक सुधार दरबज्जा खटखटबैत रहि जाइत अछि।”

माधवीक मुठ्ठी कसि गेल। “तखन दरबज्जा तोड़ब।”

जयनारायण हुनका देखलनि। “अदालतमे दरबज्जा नहि तोड़ल जाइत, माधवी। कड़ी-कड़ी खोलल जाइत अछि।”

दूर कचहरीक घड़ी पाँच बजौलक। ओहि ध्वनिमे पहिल बेर ‘अदालतक साँस’ सचमुच सुनाइ पड़ल—धीमा, भारी, आ एहन जे एक मनुष्यक जीवनक बीच चलैत कागज केँ अपना भीतर खींचि सकैत अछि।

अध्याय २७ — जमानतक बहस

सत्र न्यायालयक ओ कोठरी बाहरसँ साधारण बुझाइत छल—फीका पीयर देवाल, लोहेक पुरान खिड़की, पंखाक एकरूप घूम, दीवाल पर तारीखक सूची। मुदा भीतर बैसल प्रत्येक परिवार लेल ओ कोठरीक हवा अलग वजन राखैत छल। ककरो जमीन, ककरो देह, ककरो स्वाधीनता, ककरो प्रतिष्ठा ओहि हवा मे टाँगल रहैत। आइ दुलारीक स्वाधीनता।

रचना मंडल भोरहि सँ तैयार छलीह। हुनकर फाइल पातळ, मुदा रंग-बिरंग छोट पर्ची सभसँ भरल। एक पर्ची—दुलारीक स्वैच्छिक प्रस्तुत कएल नकल। दोसर—रहिमाक साझा दूरभाषक सत्यापन। तेसर—बैंक निकासीक कारण। चौठ—बारह सय रुपैयाक विधिक सहायता भुगतान। पाँचम—सूत्रक संस्करण-इतिहास।

“बहस कथा नहि,” ओ माधवी केँ कहलखिन। “जमानतमे एखन पूरा हत्या सुलझेबाक नहि। बस ई देखेबाक जे जेलमे राखबक ठोस कारण अछि कि नहि।”

माधवी पुछली, “दुलारी जे कागज जरबैत लोक देखलक—ओ बात?”

“राखब। मुदा सावधानीसँ। जँ एखन बेसी जोर देब तऽ अभियोजन कहत ओ अपन बचाव लेल कथा बना रहल। हम देखाएब जे ओकर बयान जाँच योग्य अछि, आ पुलिस ओ जाँच पूरा नहि कएलक।”

अभिराम लैपटॉप खोलने छल। “संस्करण-इतिहास पूरा तैयार। प्रारम्भिक परिणाम 20 तारीख 11:12, सुधार 20 तारीख 16:48। कारण अलग-अलग चिह्नित।”

रचना पुछलीह, “अदालत जँ पुछय—सूत्रक निष्कर्ष ककर? अहाँक?”

अभिराम थमकल। “प्रणालीक गणना।”

“प्रणाली अदालतमे शपथ लऽ सकैत अछि?”

“नहि।”

“तखन कच्चा आँकड़ा ककरा सँ आयल?”

“बैंक अभिलेख, दूरभाष मीनार, सहायता फॉर्म, कचहरी प्रवेश—अलग-अलग स्रोत।”

“नियम ककर बनाओल?”

“परियोजना दल। किछु बाहरी नमूना, किछु स्थानीय समायोजन।”

“गलत सम्बन्ध ककर?”

अभिराम मुँह नीचे कएलक। “नियमक। आ पर्याप्त स्थानीय सन्दर्भ नहि देबाक।”

रचना सिर हिलेलखिन। “ठीक। अदालतमे गलती केँ बचाउ नहि। गलती मानब। तखन सुधार विश्वसनीय होएत।”

जयनारायण, जे खिड़की लग चुप छलाह, कहलनि, “सत्यक बचाव लेल पहिने अपन गलतीक बचाव छोड़बाक पड़ैत अछि।”

अभिराम कने मुस्करायल। “आइ सभ हमरा शिक्षा देबए जुटल छी।”

माधवी कहली, “नाव पर भोला काका सँ शुरू भेल छल।”

तनाव बीच हँसीक छोट लहर उठल, फेर तुरन्त थमि गेल। दुलारी केँ भीतर आनबाक समय भऽ गेल छल।

ओ महिला पुलिसक संग आयली। राति ठीक नींद नहि भेल छल, आँखिक नीचे कारी घेरा। मुदा हाथमे एक कापी छल—रचना जेल भेटमे ओकर रातिक पाठशालाक कापी मँगवा देने छलीह।

“एतऽ कापी किएक?” माधवी धीरे पुछली।

दुलारी कहली, “बाट जोहैत खाली बैसि की करब? काल्हिक पाठ छल—‘आवेदन लिखनाइ।’”

माधवीक गला भरि आयल, मुदा ओ हँसली। “अहाँ अदालतमे बैसल आवेदन सीख रहल छी?”

“जेकर जीवन कागज पर अँटकल हो, ओकरा कागज लिखब सीखबे करए पड़त।”

न्यायालयक पुकार भेल। सभ भीतर गेल। न्यायाधीश मध्यम उमेरक स्त्री छलीह—सत्र न्यायाधीश इरा सिन्हा। आवाज न बड्ड तेज, न नरम। ओ फाइल खोलि पहिने गिरफ्तारीक आधार देखलखिन।

अभियोजनक अधिवक्ता उठलाह। “आरोपी मृतका संग अन्तिम बेर देखल गेली। घटना तुरन्त बाद गायब। मृतका द्वारा खोजल जा रहल गायब अभिलेखक छाया-नकल आरोपीक कब्जासँ भेटल। प्रारम्भिक तकनीकी विश्लेषणमे असामान्य बैंक निकासी, दूरभाष गति आ आर्थिक प्राप्ति दर्ज। आरोपी एक कथित अज्ञात व्यक्ति द्वारा कागज जराबक बात कहैत छथि, मुदा नाम नहि दैत। जाँच प्रारम्भिक चरणमे अछि; छोड़ला पर साक्ष्य प्रभावित करबाक आ फरार होयबाक आशंका।”

‘कब्जासँ भेटल’ शब्द सुनिते दुलारीक आँखि तेज भेल। रचना नोट कएलखिन।

न्यायाधीश पुछलखिन, “पन्ना तलाशीमे भेटल कि आरोपी स्वयं देलखिन?”

अभियोजन एक क्षण रुकल। “पुलिसक उपस्थितिमे प्रस्तुत—”

“प्रश्न सीधा अछि।”

विनय, जे केस-अधिकारीक रूपमे उपस्थित छलाह, उठि कहलनि, “दुलारी सदाय स्वयं पन्ना प्रस्तुत कएलनि। स्वीकार-पत्रमे एही भाषा अछि।”

न्यायाधीश फाइलमे पन्ना खोजलखिन। “ठीक।”

रचना उठलीह। हुनकर बहस चिल्लाहट नहि, एक-एक गाँठि खोलब छल।

“माननीय न्यायालय, अभियोजन चारि बात एक वाक्यमे जोड़ि रहल अछि—अन्तिम भेट, अनुपस्थिति, नकल, तकनीकी निष्कर्ष। हम निवेदन करैत छी जे चारू बात अलग-अलग देखल जाए।”

ओ पहिल पर्ची राखलीह। “अन्तिम भेटक बात आरोपी नकारैत नहि। उलटा समय, बातचीत आ वसुधा कर्णक जीवित रहबाक अन्तिम श्रव्य संकेत स्वयं बतौने छथि। ई बयान जाँच योग्य अछि।”

दोसर। “गायब—अभियोजनक शब्द। आरोपी कहैत छथि जे कागज जरबैत व्यक्ति देखलापर भयमे घर नहि घुसली। नदी-पारि मल्लाह परिवार लग रहली। ओ देश छोड़ि नहि गेली, नाम बदलि काज नहि शुरू कएलनि, पैसा लऽ नहि भागली। माधवी केँ आवाज भेजि स्वयं सम्पर्क कएलनि—‘हम भागल नहि छी।’ पुलिस पहुँचला पर प्रतिरोध नहि।”

अभियोजन बीचमे उठल—“सन्देश ठाम नुकौने छल।”

रचना तुरन्त कहलीह, “भयक कारण, जेकर परीक्षण होएत। मुदा जमानत लेल ई देखब जरूरी जे गिरफ्तारी पहिने ओ स्वयं जीवित उपस्थिति सूचित कएने छथि।”

तेसर पर्ची। “अभिलेखक पन्ना। ई मूल नहि, नब कागज पर छाया-नकल अछि। फॉरेसिक प्रारम्भिक निरीक्षण स्वयं एतबे कहैत अछि। आरोपी एहि नकल नुकौने नहि रखलीह; पुलिसक पहिल औपचारिक भेटमे स्वयं प्रस्तुत कएलनि। अभियोजन कहैत अछि मूल चोरी—मूल कतऽ? आरोपी लग नहि।”

न्यायाधीश अभियोजन दिस देखलखिन। “मूल बरामद?”

“नहि।”

“चोरीक प्रत्यक्ष साक्ष्य?”

“जाँच चलि रहल अछि।”

रचना चौठ पर्ची उठीली। “आब तकनीकी विश्लेषण। अभियोजन ‘प्रारम्भिक’ शब्द कहलक, मुदा किएक प्रारम्भिक, से नहि कहलक। हम प्रणालीक संस्करण-इतिहास प्रस्तुत करैत छी।”

अभिरामक हृदय तेज धड़कए लागल। ओकर बनाओल साधन एखन अदालतक टेबुल पर कागज बनि राखल छल।

रचना पढ़लीह—“पहिल निष्कर्षमे दूरभाष संख्या आरोपीक मानल गेल। सत्यापनमे नम्बर रहिमा खातूनक, उपयोग शमशेरक। पहिल निष्कर्षमे तीन नगद निकासी ‘असामान्य’ कहल। सत्यापनमे मायकेँ औषधि, मजदूरी आ परिवारक खर्च। बारह सय रुपैयाक ‘अनजान’ प्राप्ति—सात टोला विधिक सहायता समिति द्वारा नौ लोक केँ समान यात्रा-सहायता।”

न्यायाधीश पुछलखिन, “ई सुधार कखन?”

“गिरफ्तारीसँ पहिने,” रचना कहलीह।

कोठरीमे हलचल।

अभियोजन उठल। “मुदा प्रारम्भिक रिपोर्ट जांचक एक इनपुट—”

न्यायाधीश रोकलखिन। “सुधारल प्रतिवेदन केस-डायरीमे छल?”

विनय उठलनि। “हँ, माननीय। दूनू संस्करण छल।”

“तखन गिरफ्तारी प्रस्तावमे केवल पहिल संस्करणक उल्लेख किएक प्रमुख?”

विनय चुप। वरिष्ठ अधिकारी चौबे आइ उपस्थित नहि छलाह। किछु क्षण बाद ओ कहलनि, “निर्णय उच्च समीक्षा बाद भेल। हम एतबे कहि सकैत छी जे सुधार संलग्न छल।”

न्यायाधीश नोट कएलखिन।

अभियोजन स्वर सँभालि कहलक, “तकनीकी बिन्दु अलग होएत, मुदा आरोपी अन्तिम साक्षी, फरार, गायब दस्तावेजक नकल संग—गम्भीर अपराधमे जमानत उचित नहि।”

रचना कहलीह, “गम्भीर आरोपक अर्थ ई नहि जे कमजोर कड़ी स्वतः मजबूत भऽ जाए। अभियोजनक कर्तव्य जाँच, दण्ड पहिने नहि।”

न्यायाधीश हुनका रोकलखिन। “उपदेश नहि, तथ्य।”

रचना तुरन्त सिर झुकेलखिन। “जी। तथ्य—उन्नीस बर्ख; स्थायी परिवार; रातिक पाठशालाक छात्रा; कोनो पूर्व आपराधिक अभिलेख नहि; पुलिसक समक्ष स्वैच्छिक दस्तावेज-प्रस्तुति; संशोधित तकनीकी विश्लेषणमे मुख्य संदिग्धता घटल; मूल अभिलेख बरामद नहि; प्रत्यक्ष हिंसात्मक साक्ष्य नहि; गवाही देबाक कारण स्वयं खतरा सम्भव। कठोर शर्त पर जमानत पर्याप्त।”

न्यायाधीश दुलारी दिस देखलखिन। “अहाँ कागज जरबैत व्यक्ति केँ देखलहुँ?”

दुलारी उठली। “हँ, मुदा चेहरा पूरा नहि।”

“नाम जानैत छी?”

“अनुमान अछि। पक्का नहि। झूठ नाम नहि कहब।”

“अहाँ घर नहि घुरली, पुलिस केँ तुरन्त खबर नहि देलहुँ। किएक?”

दुलारीक गला सूखल। रचना ओकरा देखलीह, मुदा उत्तर नहि सिखौलखिन।

“किएक तँ हमरा भरोसा नहि छल जे पहिने हमर बात सुनल जाएत। हमरा लगल पहिने हमरा पकड़ल जाएत।”

न्यायालयक हवा कने भारी भऽ गेल। दुलारी जोड़ली—“आ से भेलो।”

अभियोजन आपत्ति करए उठल, मुदा न्यायाधीश हाथ उठा रोकलखिन। “उत्तर दर्ज।”

फेर न्यायाधीशक नजर अभिराम पर पड़ल। “ई ‘सूत्र’क परिचालक के?”

अभिराम उठल। “हम स्थानीय परिचालक दलमे छी।”

“प्रणालीक निष्कर्ष केँ अहाँ साक्ष्य कहैत छी?”

अभिराम एक क्षण जयनारायण दिस देखलक। बूढ़ पुरुषक चेहरा निश्चल।

“नहि, माननीय। हम ओकरा विश्लेषण कहैत छी—स्रोत-आँकड़ा आ नियमक आधार पर। कच्चा स्रोत अलग सत्यापित होएबाक चाही।”

“प्रणाली गलती कएलक?”

“गलत सम्बन्ध जोड़लक, कारण साझा दूरभाष आ पारिवारिक नगद व्यवहारक स्थानीय सन्दर्भ उपलब्ध नहि छल।”

“तखन पहिल प्रतिशत अथवा संदिग्धता अंक केँ अदालत की मानय?”

अभिरामक होंठ सूखल। “एहि प्रकरणमे—अधूरा सन्दर्भ पर बनल पुरान परिणाम। ओकर सुधारल संस्करण देखल जाए।”

अभियोजन कहलक, “ई विशेषज्ञ साक्ष्यक औपचारिक चरण नहि।”

न्यायाधीश कहलीह, “ठीक। आइ हम एकर स्वीकार्यता पर अन्तिम मत नहि दऽ रहल छी। मुदा जखन राज्य ककरो स्वाधीनता रोकबाक समर्थनमे एहि विश्लेषणक उल्लेख करैत अछि, तखन ओकर सीमा देखब जरूरी अछि।”

ओ कने रुकलीह। “आ एक प्रश्न बादक चरण लेल बचल—एहन निष्कर्षक जिम्मेदारी ककर? आँकड़ा देनिहार संस्थाक, नियम बनौनिहारक, परिचालकक, कि केवल ‘यंत्र’ कहि

कऽ सभ मुक्त? ई प्रश्न आइक जमानत आदेशमे तय नहि होएत। मुदा अभिलेख-संरक्षण आवश्यक।”

अभिरामक देहमे सिहरन दौड़ल। न्यायालयक ओ प्रश्न अभिरामक भीतर अँटक गेल— मुदा एहि क्षण दुलारीक श्वास अधिक महत्त्वपूर्ण छल।

न्यायाधीश आदेश लिखबाए लगलीह। पंखा घुमैत रहल। कागजक खरखराहट। बाहरी बरामदामे नाम पुकारबाक आवाज। माधवी केँ समय असामान्य रूपसँ धीमा लागल।

अन्ततः इरा सिन्हा माथ उठौलखिन। “आरोप गम्भीर अछि, मुदा जमानत चरण पर प्रस्तुत सामग्रीमे आरोपी केँ निरन्तर कारागारमे राखबाक आधार एखन पर्याप्त दृढ़ नहि देखाइत। विशेषतः तकनीकी प्रारम्भिक निष्कर्षक महत्त्वपूर्ण अंश गिरफ्तारी पहिने पुनर्मूल्यांकित भऽ चुकल; दस्तावेजक मूल आरोपी लगसँ बरामद नहि; प्रस्तुत नकल स्वयं सुपुर्द कएल गेल; आरोपीक स्थानीय जड़ आ आयु ध्यानमे लेल जाएत।”

माधवीक साँस छूटल।

“दुलारी सदाय केँ शर्तसहित जमानत देल जाइत अछि—जाँचमे उपस्थित रहब, जिला छोड़बाक पहिने अनुमति, साक्ष्य नष्ट अथवा साक्षी प्रभावित नहि करब, उपलब्ध सम्पर्क जानकारी सत्य रखब। राज्य आरोपीक सुरक्षा-आशंकाक परीक्षण अलग करय। ‘सूत्र’क सभ संस्करण, कच्चा स्रोत-सन्दर्भ आ परिवर्तन-अभिलेख सुरक्षित रखल जाए।”

अभियोजन कुछ कहए उठल, मुदा आदेश भऽ चुकल छल।

दुलारी कुर्सी पकड़ि बैसि गेली। आँखिमे नोर छल, मुदा ओ रोयल नहि। रचना झुकि कहलीह, “एखन बाहर जाएबमे किछु समय लगत। कागज पूरा होएत।”

दुलारी पुछली, “हम घर जा सकैत छी?”

“शर्त पूरा कऽ, हँ।”

“रातिक पाठशाला?”

रचना पहिल बेर खुलि कऽ मुस्कुरेलखिन। “अदालत रोकने नहि अछि। सुरक्षा बुझि जइह।”

माधवी लग अएलापर दुलारीक पहिल वाक्य छल—“हमर कापी खोली देखू, आवेदन सही लिखल अछि?”

माधवी हँसैत-हँसैत रोय पड़ली। “तूँ पहिने बाहर चल।”

अभिराम दूरी पर ठाढ़ छल। दुलारी ओकरा देखली। “तोहर यंत्र हमरा जेल भेजलक?”

अभिराम चेहरा नीचा कएलक। “अधूरा आँकड़ा गलत दिश देलक। जिम्मेदारी हमर दलक सेहो।”

दुलारी कने देर ओकरा निहारि कहली, “तखन अगिला बेर यंत्र कैं कहिह—गरीब लोकक एक फोन पाँच हाथमे रहैत अछि।”

“कहि देलहुँ। नियम बदलि रहल अछि।”

“नियम बदललासँ पहिने जे दिन जेलमे बीतल, ओकर की?”

अभिरामक पास उत्तर नहि।

जयनारायण पाछाँ सँ कहलनि, “ओहि प्रश्नक उत्तर प्रणाली नहि देत। मनुष्यकें देब पड़त।”

दुपहर बाद दुलारी अदालतसँ बाहर अएली। फाटक लग फेर लोक, कैमरा, फुसफुसाहट। मुदा एहि बेर रचना हुनका एक कात, सरोज देवी दोसर कात। फूलो आगाँ।

एक संवाददाता आवाज देलक, “दुलारी, अहाँ निर्दोष छी?”

दुलारी ठमकि गेली। रचना रोकए चाहलीह, मुदा ओ हाथ उठा संकेत कएलक।

“निर्दोष कि दोषी अदालत कहत,” ओ साफ स्वरमे बजली। “हम एतबे कहैत छी—हम जे देखलहुँ से कहब। जे नहि देखलहुँ, ओकर नाम नहि बनायब।”

फेर ओ चलि गेली।

जयनारायण एहि एक वाक्यक पाछाँ तकैत रहलाह। हुनका लगा, साक्षीक पहिल शर्त सम्भवतः साहस नहि, सीमा जानब अछि—जे देखल, ओ कहू; जे नहि देखल, ओकरा खाली छोड़ू।

अदालतक बरामदामे अभिराम लैपटॉप बन्द करैत छल। रचना ओकरा रोकलीह। “बन्द करू, मुदा प्रतिलिपि तीन ठाम बचाउ। अगिला सुनवाईमे न्यायालय पूछत—ई निष्कर्ष आखिर ककर आवाज अछि।”

अभिराम पुछलक, “अहाँक उत्तर की?”

रचना फाइल बन्द कएलखिन। “हमर उत्तर एखन नहि। पहिने प्रश्न कैं पूरा सुनब।”

बाहर सूर्य बादल फोड़ि निकलि रहल छल। दुलारी जमानत पर मुक्त छल, मुदा मुकदमा, हत्या, गायब मूल दस्तावेज, आगिमे जड़ल पन्ना आ ‘सूत्र’क जिम्मेदारी—सभ एखन खुलल।

स्वाधीनता एक दिन लेल घुरल छल। सत्य एखनहुँ अदालतक बाट पर छल।

अध्याय २८ — साक्ष्यक मालिक के

जमानतक आदेशक तीन दिन बाद सत्र न्यायालयमे फेर ओही प्रश्न लौटि आयल जे इरा सिन्हा पिछला सुनवाईमे अधूरा छोड़ने छलीह—“एहन निष्कर्षक उत्तरदायित्व ककर?” एहि बेर दुलारी कटघरामे नहि छली। ओ रचना मंडलक पाछाँक बेंच पर बैसल छलीह, फूलो हुनकर कात। जमानत भेटलासँ देह बाहर आबि गेल छल, मुदा हिरासतक दू राति हुनकर आँखिक नीचा कारी घेरा छोड़ि गेल छल।

न्यायालयक सामने आइ मुद्दा दुलारीक दोष-अदोष नहि, “सूत्र” सँ बनल तकनीकी प्रतिवेदनक प्रकृति छल। अभियोजन ओकरा जाँचक सहायक सामग्री कहैत छल; रचना चाहैत छलीह जे जँ राज्य ओकर एको पाँति ककरो विरुद्ध उपयोग करत तँ मूल आँकड़ा, परिवर्तन-अभिलेख, गणना-नियम आ मनुष्यक हस्तक्षेप सभ न्यायालयक सामने सुरक्षित रहय।

अभिराम आइ पहिने सँ बेसी चुप छल। ओकर लैपटॉप बन्द। मेज पर केवल तीन छपल पुलिन्दा—पहिल निष्कर्ष, सुधारल निष्कर्ष, आ दुनूक बीच बदलल स्रोतक सूची। माधवी ओकर पाछाँ बैसल छलीह। ओ धीरे पूछली, “घबराइत छह?”

अभिराम मुस्कुरेबाक प्रयास कएलक। “यंत्र चलबैत समय नहि। यंत्रक बात मनुष्यक सामने बुझबैत समय।”

“ठीक अछि। आइ यंत्र नहि, तोहर ईमानदारी जाँचल जाएत।”

अभिराम ओकरा देखलक। तीन दिनक थकानक बीच ई एक पाँति ओकरा सहारा जकाँ लगल।

न्यायाधीश इरा सिन्हा फाइल खोलि कहलीह, “पिछला आदेशमे तकनीकी सामग्री सुरक्षित रखबाक निर्देश छल। प्रतिलिपि जमा भेल?”

अभियोजनक अधिवक्ता उठलाह। “हँ, माननीय। जिला अभिलेख डिजिटाइज्ड परियोजनासँ मूल स्रोतक प्रतिलिपि, प्रणालीक परिवर्तन-इतिहास आ स्थानीय परिचालकक विवरण जमा अछि। राज्यक निवेदन अछि जे ई सामग्री अनुसंधानक सहायक साधन मात्र अछि, स्वतंत्र साक्षी नहि।”

रचना तुरन्त उठलीह। “तखन पिछला सुनवाईमे आरोपीक कथित जोखिम देखेबाक लेल ओकर प्रतिशत किएक पढ़ल गेल?”

“जाँचक परिस्थिति बुझेबाक लेल।”

“जाँचक परिस्थिति ककरा बनौलक—मनुष्य कि प्रणाली?”

अधिवक्ता उत्तर देबए लगलाह, मुदा न्यायाधीश बीचमे कहलीह, “ई प्रश्नक उत्तर प्रतिवेदनक संरचना सँ दी। पहिने ई बताउ—प्रतिवेदन पर हस्ताक्षर ककर?”

फाइल पलटल गेल। “स्थानीय परियोजना समन्वयकक।”

“ओ निष्कर्ष स्वयं निकाललखिन?”

“नहि। प्रणाली बनौलक।”

“प्रणाली अदालतमे उपस्थित भऽ शपथ लऽ सकैत अछि?”

कोठरीमे बहुत हल्का हँसी उठल, तुरन्त थमि गेल। अभियोजन स्वयं मुस्कुराए बिना नहि रहि सकल। “नहि, माननीय।”

“तखन प्रतिवेदनक प्रत्येक पाँतिक अर्थ बुझेनिहार मनुष्य चाही। परिचालक केँ बजाउ।”

अभिराम उठि सामने गेल। शपथक औपचारिकता पूरा भेल। रचना ओकरा एना देखलीह जेना ई पहिल बेर परिचित युवक नहि, एक तकनीकी साक्षी हो।

“अहाँक काज?”

“पुरान अभिलेखक अंकीय प्रतिलिपि, स्रोत-चिह्नन, आ ‘सूत्र’क स्थानीय उपयोगक देखरेख।”

“‘सूत्र’ की करैत अछि?”

“अलग-अलग अभिलेखक समय, स्थान, नाम, दस्तावेज क्रम, दूरभाष-संकेत, प्रवेश-समय आ आर्थिक गतिविधिक बीच सम्बन्ध खोजैत अछि। ओ सम्भावना देखबैत अछि; घटना देखैत नहि।”

“सम्भावना के बनबैत अछि?”

“गणना-नियम, उपलब्ध आँकड़ा, आ मनुष्य द्वारा चुनल प्रश्न।”

रचना कने रुकलीह। “अर्थात् प्रश्न मनुष्य चुनैत अछि?”

“हँ।”

“स्रोत मनुष्य जोड़ैत अछि?”

“हँ, बहुत स्रोत स्वचालित रूपसँ अबैत अछि, मुदा कुन स्रोत एहि प्रकरणमे प्रासंगिक मानल जाए, ओ मनुष्यक निर्णयसँ सेहो प्रभावित होइत अछि।”

“नियम के बनौलक?”

“परियोजना दल; किछु पूर्वनिर्धारित, किछु स्थानीय परिमार्जन।”

“पहिल परिणाममे दुलारीक साझा दूरभाष केँ व्यक्तिगत दूरभाष मानल गेल?”

“हाँ।”

“किएक?”

“सिम पंजीयन आ उपयोगक सामाजिक अन्तरक पर्याप्त स्थानीय सूचना नहि छल।”

“तखन प्रणाली एक गरीब परिवारक साझा वस्तु केँ एक व्यक्तिक निजी व्यवहार बुझि लेलक?”

अभिरामक आवाज नीच, मुदा स्पष्ट। “हाँ। ओ त्रुटि छल।”

“ककर त्रुटि?”

प्रश्न पर कोठरी चुप। अभिराम एक क्षण सोचलक। “केवल यंत्रक कहब ठीक नहि। स्रोतक संरचना, नियमक अपूर्णता आ स्थानीय सन्दर्भ नहि जोड़ल गेल—तीनू कारण। एहि कारण परिचालक दलक दायित्व सेहो अछि।”

रचना पाछाँ हटलीह। “माननीय, हमर मुख्य बात एतबे अछि। जँ यंत्रक निष्कर्ष ककरो स्वाधीनता पर असर करत, तँ ‘यंत्र कहल’ कहि कऽ दायित्व हवा मे नहि छोड़ल जा सकैत।”

अभियोजन उठलाह। “परन्तु माननीय, मानवीय साक्षियो त्रुटिपूर्ण होइत अछि। एहि कारण सभ तकनीकी साधन अस्वीकार नहि कएल जा सकैत।”

जयनारायण पाछाँक बेंच पर बैसल छलाह। ई बात सुनि हुनकर होंठ पर कने मुस्की आयल। विनय ठाकुर हुनका देखलनि। जयनारायण फुसफुसौलनि, “सही बात। मनुष्य झूठ बजैत अछि, स्मृति भूलैत अछि। तँ मनुष्यक बयानक जिरह होइत अछि। आँकड़ाक सेहो जिरह चाही।”

न्यायाधीश अभिराम सँ पूछलीह, “प्रणालीक पहिल आत्महत्या-सम्बन्धी निष्कर्ष बादमे बदलल?”

“हाँ।”

“कुन नब तथ्य पर?”

“बन्द कक्ष पूर्ण बन्द नहि रहबाक वास्तु-तथ्य; वसुधा जीक आदतिक स्वतंत्र बयान; साझा दूरभाषक सामाजिक उपयोग; दुलारीक नदी-पारि उपस्थितिक पुष्टि; आ किछु स्रोतक समय-त्रुटि।”

“समय-त्रुटि?”

अभिराम पुलिन्दा खोललक। “पुरान भवनक दीवाल-घड़ी चारि बजि सतरह मिनट पर रुकल, मुदा ओ मृत्यु-समयक स्वतंत्र प्रमाण नहि। स्थानीय समय-संकेतक ओहि घड़ीसँ जुड़ल छल, ताहि कारण पहिल गणनामे ओकर वजन अधिक पड़ल। बादमे बुझायल जे संकेत टूटब घड़ीक यांत्रिक रुकावट सेहो भऽ सकैत अछि।”

“अर्थात् एक वस्तुक त्रुटि अनेक आँकड़ामे एके बेर पसारि सकैत अछि?”

“हँ।”

न्यायाधीश नोट कएलखिन। “ई महत्त्वपूर्ण।”

रचना दोसर पुलिन्दा उठौलखिन। “एहि परिवर्तन-अभिलेखमे चारि बजि नौ मिनट सँ चारि बजि बाइस मिनट धरि किछु स्रोत अनुपलब्ध देखाइत अछि। किएक?”

अभिराम पन्ना देखलक। “पुरान भवनक निचला भागमे विद्युत उतार-चढ़ाव छल। प्रवेश-संवेदकक स्थानीय जाल टूटल। बादमे आंशिक आँकड़ा फेर जुड़ल।”

“ओहि तेरह मिनटमे प्रणाली की मानलक?”

“जे उपलब्ध नहि, ओकरा घटना नहि मानल।”

रचना तुरन्त घुरलीह। “एही ठाम समस्या अछि। ‘दर्ज नहि’ आ ‘भेल नहि’ एक बात नहि।”

जयनारायणक आँखि अभिराम पर गेल। कतेको अध्याय पहिने ओ कहलने छलाह—यंत्र नम्बर चिन्हैत, हाथ नहि; ताला खुलल दर्ज भेल माने मनुष्यक पूरा कथा नहि। अभिराम एखन ओ पाठ न्यायालयमे अपन मुँह सँ बजा रहल छल।

अभियोजन जिरहमे पूछलक, “अहाँ कहैत छी प्रणाली उपयोगी अछि?”

“हँ।”

“विरोधाभास पकड़ैत अछि?”

“हँ।”

“मानवीय जाँचक सहायता करैत अछि?”

“हँ।”

“तखन बचाव पक्ष जेना देखबैत अछि, ओना ई अविश्वसनीय खेलौना नहि?”

अभिराम उत्तर देलक, “नहि। मुदा उपयोगी होयब आ अन्तिम सत्य होयब अलग बात अछि।”

इरा सिन्हा माथ उठौलखिन। “ठीक ओतऽ न्यायालयक रुचि अछि।”

तकर बाद परियोजना कार्यालयक एक तकनीकी अधिकारीक छोट बयान भेल। ओ स्पष्ट कएलनि जे कच्चा स्रोत अलग-अलग संस्थासँ अबैत अछि; किछु मूल अभिलेख, किछु अंकीय प्रतिलिपि, किछु स्वचालित समय-चिह्न। प्रत्येक स्रोतक विश्वसनीयता एकरूप नहि। परिवर्तनक प्रत्येक चरण सुरक्षित राखल जा सकैत अछि, मुदा यदि परिचालक केवल अन्तिम परिणाम छापि देत तँ बीचक अनिश्चितता पाठकक आँखिसँ ओझराइ सकैत अछि।

न्यायाधीश एहि वाक्य पर कलम रोकलीह। “अन्तिम परिणाम चमकैत अछि, अनिश्चितता पाछाँ छूटैत अछि—ई तकनीकी समस्या मात्र नहि, न्यायिक समस्या सेहो अछि।”

माधवी पाछाँ बैसल सुनैत रहल। ओकरा बुझाइत छल जे अदालतमे आइ कृत्रिम-बुद्धिक परीक्षा नहि, मनुष्यक आलसक परीक्षा अछि। लोक केँ एकटा साफ अंक पसिन पड़ैत—अड़सठ प्रतिशत, बावन प्रतिशत, ‘उच्च सम्भावना’। साफ अंक मनक गोंध कम करैत अछि। मुदा साफ अंकक भीतर कतेक धुँध अछि, से पढ़बाक धैर्य कम लोकमे।

दुलारी रचनाक कान लग धीरे कहली, “हमर जीवन केँ प्रतिशत बनौने छल?”

रचना पाछाँ घुरि हुनकर हाथ दबौलनि। “आइ प्रतिशतक नीचे लिखल बातो पढ़ल जा रहल अछि।”

दुपहरक बाद न्यायालय आदेश सुनौलक। “तकनीकी विश्लेषणक सामग्री केँ एहि चरणमे स्वतंत्र प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि मानल जाएत। जँ पक्षकार एकर उपयोग करए चाहत, तँ मूल स्रोतक प्रामाणिकता, संरक्षण-क्रम, गणना-विधि, परिवर्तन-अभिलेख आ परिणाम बुझैनिहार सक्षम मानवीय साक्षी प्रस्तुत करए पड़त। ‘यंत्रक कथन’ कहि कऽ जिरहसँ बचल नहि जा सकैत। प्रणालीक निष्कर्ष केवल ओतबे वजन पाओत जतबे ओकर सत्यापित स्रोत आ स्पष्ट विधि सहि सकत।”

कोठरीमे कागजक खरखराहट उठल। अभिरामक काँध ढीला भेल। ओ हारल नहि, जीतलो नहि। ओकरा एना लगल जे ‘सूत्र’ केँ पहिल बेर ठीक ठाम भेटल—न्यायाधीशक आसन पर नहि, टेबुल पर एक औजारक रूपमे।

न्यायाधीश फेर कहलीह, “सभ संस्करण सुरक्षित रहत। ककरो द्वारा पुरान परिणाम मेटाओल वा बदलाओल नहि जाए। चारि बजि नौ सँ बाइस मिनटक स्रोत-विच्छेदक कारण अलग तकनीकी प्रतिवेदनमे देल जाए।”

सुनवाई समाप्त भेल। बाहर बरामदामे बरखा नहि छल, मुदा हवा मे भीजल माटिक गन्ध। माधवी अभिराम संग सीढ़ी उतरैत कहली, “आब तौ अपन यंत्र सँ नाराज छह?”

“नहि। अपन पहिल विश्वास सँ कने लाज अछि।”

“विश्वास बदललासँ लाज किएक?”

“कारण हम सोचैत छलहुँ, आँकड़ा निष्पक्ष अछि।”

“आब?”

“आँकड़ा चुप अछि। ओकरा कोना चुनल, कोना पढ़ल, कोन रिक्त जगह भरल—ओतऽ मनुष्य फेर आबि जाइत अछि।”

जयनारायण पाछाँ सँ बजलाह, “आ मनुष्यक संग आदति।”

ओ सभ कमली देवीक दोकान लग पहुँचि गेल छल। कमली चूल्हि पर केतली चढ़ौने छलीह। जयनारायण बिना चीनीक चाय माँगलनि। कमली कप भरैत अचानक हुनकर चेहरा निहारि ठमकि गेलीह।

“बाबू,” ओ धीमे कहलीह, “ओ रातिक एक बात हमरा एखन ठीक-ठीक मोन पड़ल अछि। हम पहिने समय गलत जोड़ने छलहुँ।”

जयनारायण कप टेबुल पर रखि देलनि। “कुन बात?”

कमलीक आँखि पुरान भवनक घड़ी दिस गेल। “चारि बजि दस मिनट। एक परिचित लोक चाय लेने छल। दू चमच चीनी।”

जयनारायणक हाथ कपसँ हटि गेल। वसुधा चीनी नहि लैत छलीह।

आ दीवाल-घड़ी सात मिनट बाद रुकल छल।

अध्याय २९ — कमली देवीक चारि बजिया चाय

कमली देवी समय घड़ी देखिकऽ नहि, आदति देखिकऽ मोन राखैत छलीह। चूल्हि कखन जरल, दूध देनिहार कखन पीतल डब्बा रखलक, पहिल बसक सीटी कखन सुनायल, सफाइक झाड़ू बरामदामे कखन घिसल—एहि सभक बीच हुनकर भोरक घड़ी बनैत छल। तँ “चारि बजि दस मिनट” कहला पर विनय ठाकुर पहिल प्रश्न कएलनि, “घड़ी देखलहुँ?”

कमली बिना घबराए उत्तर देलखिन, “नहि। घड़ीसँ बेसी पक्का बात अछि।”

विनयक भौं चढ़ल। “कोना?”

“हम चारि बजिते दूध चढ़बैत छी। चारि बजि पाँचक आसपास रामअवतार दूध देत। ओकरा गेलाक बाद हम पहिल केतलीमे अदरक कुटैत छी। ओहि दिन रामअवतार बरखाक कारण पाँच मिनट देरीसँ आयल छल—ओ अपनहि कहैत गेल जे मस्जिदक घड़ी चारि बजि पाँच बजा चुकल। ओकरा गेलाक तुरन्त बाद ओ लोक आयल। चाय बनबैत तीन-चारि मिनट। तखन चारि दस सँ बहुत दूर नहि।”

जयनारायण पूछलनि, “पहिने किएक नहि कहलहुँ?”

कमलीक चेहरा कस्सल। “पहिने अहाँ रातिक दस बजियाक दू कप पूछलहुँ। हमर मोन ओतहि अँटकि गेल। फेर पुलिस, भीड़, मृत्यु... भोरक बाद के कोन चाय लेल, ई हम अलग घटना बुझने छलहुँ। तकर बाद जखन सुनलहुँ घड़ी चारि सतरह पर रुकल, मोनमे बात उठल; मुदा हम सोचलहुँ—कचहरीक चाय, ककरो हो सकैत अछि। आइ अदालतमे सब लोक ‘चारि नौ सँ चारि बाइस’ कहैत निकलल, तखन जोड़ बैठल।”

विनय कहलक, “नाम?”

कमली चूल्हिक आँच कम कएलखिन। आसपास दू मुक्किल ठाढ़ छल। ओ हुनका चाय दऽ कऽ दूर पठौलनि, फेर टाटी कने खींचि देलखिन। “नाम खुल्लमखुल्ला नहि कहब। बयानमे कहब। लोक घर धरि पहुँचि जाइत अछि।”

जयनारायण सिर हिलौलनि। “ठीक। एखन हमरा लोकक परिचयक सीमा बताउ। कचहरीक रोजक आदमी?”

“रोजक नहि। चेहरा परिचित। वसुधा बेटी लग दू-तीन बेर देखने छी। एक बेर हुनका संग झगड़ैत नहि, मुदा तेज बात करैत।”

माधवीक देह तनल। “घरक लोक?”

कमली माधवी दिस देखलखिन, मुदा उत्तर नहि देलखिन। “हम बयान विनय बाबू केँ देब। अहाँ सभ नाम सुनि अपन-अपन कथा बनायब। पहिने पुलिस पूछय।”

जयनारायण मुस्कुरौलनि। “कमली देवी, अहाँ हमरा काज सिखा रहल छी।”

“अहाँ सभ कखनो-कखनो भूलि जाइत छी जे चाय बेचबोमे जिरह होइत अछि।”

रचना सेहो ओतऽ पहुँचि गेलीह। दुलारी घर गेल छली; फूलो हुनका एक दिन आराम करए दबाव देने छलीह। रचना कमलीक बात सुनि पहिने विनय केँ कहलखिन, “स्वतंत्र बयान लिअ। हमरा सभ बाहर रहब। बादमे जे विधिसम्मत हो से साझा करू।”

कमली महिला सिपाही सरोज देवी संग छोट कोठरीमे गेलीह। आध घड़ी बाद बयान पूरा भेल। विनय बाहर आबि कऽ केवल एतबे कहलनि, “नाम दर्ज भेल। एखन सार्वजनिक नहि। पहिचानक प्रक्रिया अलग कएल जाएत।”

माधवी पुछली, “चाय?”

“दू चमच चीनी। अपना लेल।”

“कप?” अभिराम पूछलक।

“कमलीक दोकानक मोट काँचक गिलास। ओही ठाम पीबि गेल। वापस देलक।”

जयनारायण धीरे कहलनि, “अर्थात् ई सफेद कपक चाय नहि।”

विनय सिर हिलौलनि। “राति दस बजे बुच्चनक बेटा दू कप पुरान भवनमे देने छल—नील बिना चीनी, सफेद दू चमच चीनी। भोर चारि दस पर ई अलग चाय अछि।”

दू मीठ चायक बात एके प्रकरणमे आबि कऽ अजीब समरूपता बना रहल छल। माधवी पुछली, “राति दस बजे मीठ चाय के पीने छल?”

“एखनहुँ निश्चित नहि,” विनय कहलक। “सफेद कप पर छाप अस्पष्ट। बरखा आ बादक छूअन बहुत। मुदा कपक भीतरक अवशेषमे चीनीक मात्रा कमलीक कथनसँ मेल खाइत।”

जयनारायण पुरान भवनक बरामदामे चलि गेलाह। ओतऽ सँ कमलीक दोकान देखाइत छल। दूरी पैघ नहि। चारि बजि दस पर चाय पीने लोक सात मिनटमे अभिलेख-कोठरी लग सहज पहुँचि सकैत छल। मुदा “पहुँचि सकैत” फेर ओही पुरान शब्द—सम्भावना, घटना नहि।

“चारि सतरहक घड़ी,” माधवी कहली, “जँ मृत्यु-समय नहि, तखन केओ ओहि समय किएक रोकत?”

जयनारायण उत्तर देलनि, “कथाक केन्द्र बनाबय लेल। लोक घड़ी देखत, समय पकड़त, बाकी बात ओहि समयक चारूकात जोड़त। बनाओल दृश्य मे एक चमकैत वस्तु राखू, आँखि ओतहि अटकैत अछि।”

अभिराम कहलक, “पहिल सूत्र सेहो अटकल।”

“मनुष्य पहिने अटकैत अछि, सूत्र बादमे ओकर संरचना दोहरबैत।”

ओ सभ घटनास्थलक जाँच-प्रतिवेदन फेर खोललनि। घड़ीक विद्युत-कोष ठीक छल, मुदा भीतरक एक सूक्ष्म दाँत वाँक। घड़ी जोर सँ धक्का खाइ रुकि सकैत छल; हाथसँ काँटा रोकि फेर चालू छोड़ल जाए तँ यांत्रिक दाँत अटकय सकैत। घड़ी पर स्पष्ट बाहरी चोट नहि।

विनय एक नब कागज निकाललनि। “चिकित्सकीय पूरक मत सेहो आयल अछि। प्रारम्भिक परीक्षणमे जे अस्पष्ट छल, ऊतक-जाँच बाद स्पष्ट भेल।”

माधवीक चेहरा पीयर पड़ल। वसुधाक देहक चर्चा सुनब ओकरा एखनहुँ असह्य लगैत छल। रचना ओकर कात ठाढ़ भेली।

विनय पढ़लनि, “माथक दहिना भागक चोट जीवनकालमे लागल। चोट एकटा कठोर किनार अथवा गिरलापर भऽ सकैत अछि। मृत्यु-कारण केवल एहि चोट केँ एखन निश्चित नहि कहल गेल; मुदा शरीरमे एहन विष मात्रा नहि भेटल जे स्वेच्छा मृत्यु सिद्ध करय। निद्रा-औषधिक अति सूक्ष्म अंश अछि, चिकित्सकीय मात्रा भीतर।”

जयनारायण पुछलनि, “ओ औषधि वसुधा लैत छलीह?”

माधवी कहली, “कखनहुँ-कखनहुँ निद्रा नहि आए तऽ चिकित्सक देने छल, मुदा ओ बहुत कम लैत छलीह।”

“घरक पर्ची?”

“मिलि सकैत।”

रचना कहली, “एहि पूरक मतसँ हत्या अपने सिद्ध नहि।”

“नहि,” जयनारायण सहमति देलनि। “मुदा आत्महत्याक सरल कथा कमजोर।”

विनय फाइलक दोसर पन्ना खोललनि। “नखक भीतर उज्जर कण—पुरान पलस्तर आ चूनक मिश्रण। घटनास्थलक देवालक दू स्थानसँ मेल, मुदा विशिष्टता एतेक नहि जे कुन ठाम कहि सकी। सुपारी-डिबियाक कारी लकीर—जड़ल कागजक राखसँ सामान्य रासायनिक मेल।”

माधवीक आँखि पैघ भेल। “डिबिया आग लगक छल?”

“कखन, से नहि कहि सकैत। मुदा कारी कण समान प्रकारक।”

जयनारायण धीरे-धीरे पाँच बिन्दु कागज पर लिखलनि—मीठ चाय; चारि दस; घड़ी चारि सतरह; माथक चोट; डिबियाक कालिख। तकर पाछाँ छठम—नील कप नालीमे।

“आ सातम?” अभिराम सहज प्रश्न कएलक, फेर स्वयं चुप भऽ गेल। ‘सातम’ शब्द एहि घर-गाममे एखन साधारण संख्या नहि रहल छल।

जयनारायण ओकरा देखलनि। “एखन छहटा पर्याप्त। संख्या पूरा करबाक लोभ जाँच बिगाड़ैत अछि।”

बरामदाक अन्तमे रामचरित चपरासी धीरे सफाइकर्मि कै दिशा देत छलाह। जयनारायण हुनका बजौलनि। “चारि बजिक आसपास पुरान भवनमे के-के रहैत?”

रामचरित माथ खुजलनि। “बरखाक राति? पहरा बुचन। सफाइक लोक भोरक चारि पैंतालीस बाद। अभिलेखक कोनो कर्मचारी राति ड्यूटी पर नहि। मुदा पुरान भवनक पछिला बरामदा सँ मुख्य फाटक बिना पार कए नब भवन दिस जा सकैत।”

“कबाड़क कोठरीक निरीक्षण-पट्टी के जानैत?”

रामचरित कने सोचलनि। “हम, पुरान अभिलेख-मुंशी, दू मिस्त्री... आ जे लोक मरम्मतक समय रहल। नब पीढ़ीक बहुत कम।”

विनय पुछलनि, “वसुधा जानैत छलीह?”

“नहि कहि सकैत।”

अभिराम लघु नक्शा खोललक। कबाड़क कोठरी सँ वायु-नली अभिलेख-कोठरीक वेंटिलेटर लग पुगैत। नली मनुष्य पार करबाक लायक नहि, मुदा पतला डोरी अथवा औजार चलाबक लायक किछु भाग खुलल। पुरान साँकल बाहरी दुआरि पर छल; कोठरी भीतरक बन्द दृश्य पूरा बनाबय लेल नलीक उपयोग भऽ सकैत—परिकल्पना एखन।

जयनारायण कहलक, “साँकलक प्रयोग फेर करब, एहि बेर नलीक निरीक्षण-पट्टी दिस सँ।”

विनय अनुमति लेल कागज बनबए लगल। “मूल स्थल पर नहि, प्रतिरूप पर पहिने।”

“ठीक।”

दुपहरमे पुलिस कार्यशालाक एक कोनमे दुआरि-साँकलक समान माप बनाओल गेल। पुरान नलीक मोड़ नक्शा अनुसार बाँस-पाइप सँ बनल। पतला मजबूत सूत, काँटा-जकाँ छोट तार, आ लमहर सरकनिहार डंडा। पहिल प्रयास विफल। दोसरमे डोरी अँटकल। तेसरमे

साँकल आध उठल, फेर खसल। पाँचम प्रयासमे छोट तार साँकलक छल्लामे फँसल; बाहरक लोक खीँचि दुआरि बन्दक बाद साँकल बैठा सकल।

अभिराम उत्साहित भेल, मुदा जयनारायण तुरन्त कहलक, “प्रतिरूप सम्भव देखेलक। घटनास्थल पर भेल—एखन नहि।”

विनय जोड़लनि, “आ ई तरीका जानबाक लेल नलीक बनावट जानब जरूरी।”

माधवीक मनमे प्रश्न उठल—के जानैत छल? रामचरित? अभिलेख-मुंशी? पुरान मिस्त्री? वसुधाक कागज खोजैत लोक? घरक केओ जे हुनकर काज बुझैत छल?

साँझ पड़िते कमलीक औपचारिक बयानक संक्षिप्त अंश रचना केँ देल गेल। नाम कारी स्याहीसँ ढँकल प्रतिलिपि, कारण पहिचान प्रक्रिया बाकी। मुदा एक पाँति खुलल छल—
“लोक वसुधा कर्णक पारिवारिक परिचित जकाँ पहिने देखल।”

माधवी ई पाँति पढ़ि साँस रोकली। ओकरा वसुधाक घरक पहिल दिन मोन पड़ल—पति अरुणक मापल शब्द, भाई प्रखरक कस्सल जबड़ा, परिवारक अलग-अलग झूठ। मुदा जयनारायण कागज ओकर हाथसँ धीरे वापस ले लेलनि।

“नाम मनमे बनाउ नहि,” ओ कहलक। “कमलीक आँखिक परीक्षा होएबाक बाकी अछि।”

“मुदा परिवारक—”

“परिवार परिचित होयब अपराध नहि।”

“चारि दस पर चाय?”

“असामान्य। मुदा असामान्य होयब अपराध नहि।”

माधवी खीझली। “अहाँ प्रत्येक धारदार बातक नोक कुंद कऽ दैत छी।”

“जाँचमे नोक हम नहि कुंद करैत छी। कमजोर नोक अदालतमे टूटि जायत, तँ पहिने परखैत छी।”

राति घर लौटैत माधवीक मनमे चारि बजि दस आ चारि बजि सतरह बेराबेरी घूमैत रहल। सात मिनट—एतेक छोट समयमे मनुष्य चाय पी सकैत, बरामदा पार कऽ सकैत, दुआरि लग पहुँचि सकैत, घड़ी रोकि सकैत, कागज जरा सकैत? अथवा ई सभ पहिने भऽ चुकल, चारि सतरह केवल दृश्यक अन्तिम बिन्दु?

अभिराम ओकरा संदेश भेजलक—“सूत्रमे नब समय-बिन्दु जोड़ल। परिणाम चलाउ?”

माधवी लिखली—“पहिने प्रश्न लिख। परिणाम बादमे।”

उत्तर आयल—“प्रश्नः चारि दसक चाय आ चारि सतरहक घड़ीक बीच सम्बन्ध अछि कि केवल निकटता?”

माधवीक होंठ पर मुस्की आयल। “एखन चलाउ।”

किछु देर बाद उत्तर आयल—“सम्बन्ध सिद्ध नहि जाँच योग्य।”

ओ लिखली—“आइ तोहर सूत्र समझदार भेल।”

अभिरामक उत्तर—“नहि। परिचालक कने कम मूर्ख।”

माधवी बहुत दिन बाद खुलि कऽ हँसली। मुदा हँसी थमिते वसुधाक अधलिखल पाँति फेर मोन पड़ल—“जँ ई कागज फेर गायब भेल...”

कागज गायब छल। कागजक राख छल। मीठ चाय छल। घड़ी रोकल छल।

आ चारि बजि दस पर वसुधाक परिचित एक मनुष्य जागल, चलैत, चाय पीबैत छल।

अध्याय ३० — बनाओल आत्महत्या

अगिला सप्ताह न्यायालयक सामने प्रश्न दुलारीक जमानतसँ आगाँ बढ़ि चुकल छल। वसुधाक मृत्यु जे पहिने “भीतर सँ बन्द कोठरीमे सम्भावित आत्महत्या” लिखल गेल छल, ओहि प्रारम्भिक वर्णन पर पुलिस स्वयं पुनर्विचारक आवेदन रखने छल। विनय ठाकुरक हस्ताक्षर कएल आवेदनमे हत्या शब्द एखन निर्णायक रूपसँ नहि, मुदा साफ लिखल छल—“मृत्यु-परिस्थिति जानि-बुझि कऽ बदलल होयबाक पर्याप्त संकेत।”

इरा सिन्हा आवेदन पढ़ि विनय सँ पूछलीह, “एहि निष्कर्ष धरि कोना पहुँचलहुँ?”

विनय कहलक, “एकल प्रमाणसँ नहि। भौतिक साक्ष्य, चिकित्सकीय पूरक मत, समय-रेखा, साक्षीक बयान आ मृतकक स्थापित आदति एक-दोसरासँ मेल खाइत अछि।”

“क्रममे कहू। अनुमान अलग रखू।”

रचना दुलारीक कात बैसल छलीह। अभियोजन स्वयं एहि बेर पुलिसक नब आवेदनक समर्थनमे छल, मुदा दुलारी विरुद्ध आरोप एखन हटाओल नहि गेल छल। एहि विरोधाभासक भार कोठरीमे साफ छल—हत्या-जाँच फेर खुलि रहल, मुदा हत्या अभियोग झेलैत गरीब युवतीक नाम एखन कागज पर रहि गेल।

विनय पहिल वस्तु रखलनि—घड़ी। “दीवाल-घड़ी चारि बजि सतरह मिनट पर रुकल। आरम्भमे ओ समय मृत्यु-संकेत मानल गेल। यांत्रिक जाँच कहैत अछि जे घड़ीक भीतरक दाँत बाहरी हस्तक्षेप अथवा जोरक झटकासँ अटकला पर रुकि सकैत अछि। मृत्यु-समयक स्वतंत्र चिकित्सकीय अनुमान एहि समयसँ मेल खाबय बाध्य नहि।”

दोसर—चाय। “राति दसक आसपास दू कप गेल—मृतका लेल बिना चीनीक नील कप, संगक व्यक्ति लेल मीठ सफेद कप। नील कप बादमे नालीमे भेटल; सफेद कप घटनास्थल पर। भोर चारि बजि दसक आसपास एक परिचित व्यक्ति कमली देवीक दोकान पर अलग मीठ चाय पीने अछि। पहचान प्रक्रिया चलि रहल अछि।”

तेसर—मृतकक आदति। “स्वतंत्र बयान अनुसार वसुधा कर्ण साँझक बाद सुपारी नहि लैत छलीह; डिबिया सदखन मेजक दहिना कोनमे; चाय बिना चीनी; लिखैत समय कुर्सी

सीधा; कलमक नोक दहिना। घटनास्थल पर डिबिया बामा जमीन पर, कुर्सी दहिना घुमल, मीठ चायक कप, कलम उलटा, आ नील निजी कप नालीमे।”

न्यायाधीश बीचमे पूछलीह, “आदति साक्ष्यक मूल्य सीमित अछि। मनुष्य रोज एके ढंग नहि करैत।”

जयनारायण, जे औपचारिक विशेषज्ञ साक्षी नहि छलाह मुदा अदालतक अनुमति सँ जाँच-सहायकक रूपमे उपस्थित, सिर झुका सहमति देलनि। विनय कहलक, “ठीक। एहि कारण पुलिस कोनो एक आदति पर निष्कर्ष नहि बना रहल। पाँच स्वतंत्र विसंगति संग भौतिक तथ्य जोड़ल गेल।”

चारिम—राख। “मेजक नीचा जड़ल कागजक सूक्ष्म राख; सुपारी-डिबियाक किनार पर समान प्रकृतिक कारी कण। दुलारी कहैत छथि ओ एक मनुष्य केँ कागज जरबैत देखली। मूल दस्तावेज एखन गायब।”

पाँचम—बन्द कोठरी। “पुरान वायु-नलीक निरीक्षण-पट्टी भेटल। मनुष्य ओहि नलीसँ पार नहि जा सकैत, मुदा प्रतिरूप-परीक्षणमे पतला डोरी आ छोट औजारसँ साँकल बैठाबक सम्भावना देखायल। वास्तविक घटनास्थल पर एहि उपयोगक निश्चित चिह्न एखन परीक्षणाधीन। ताहि कारण ‘भीतर सँ बन्द’ एखन आत्महत्याक निर्णायक आधार नहि।”

छठम—चिकित्सकीय मत। “माथक चोट जीवनकालमे लागल; आत्महत्या सिद्ध करए लायक विष नहि; निद्रा-औषधि चिकित्सकीय सीमा भीतर। मृत्यु दुर्घटनात्मक चोट, धक्का-पछाति गिरब, अथवा आन क्रिया—तीनू सम्भावना पूर्ण परीक्षण चाहैत अछि।”

इरा सिन्हा किछु क्षण चुप रहलीह। “एहि सभसँ हत्या सिद्ध?”

“नहि,” विनय कहलक। “मुदा आत्महत्याक दृश्य स्वाभाविक नहि देखाइत। दृश्य बदलल गेल होयबाक पर्याप्त आधार अछि। अतः अनुसंधान केँ हत्या-सन्देहक दिश औपचारिक रूपसँ विस्तृत करबाक निवेदन।”

रचना उठलीह। “हम एहि आवेदनक विरोध नहि करैत छी। मुदा एक बात जोड़ब—जँ पुलिस स्वयं मानैत अछि जे दृश्य बनाओल भऽ सकैत, तखन दुलारीक प्रारम्भिक गायब होयब आ ‘सूत्र’क त्रुटिपूर्ण परिणाम पर टिकल आरोपक पुनर्मूल्यांकन सेहो संगहि हो।”

अभियोजन कहलक, “जाँच खुलल अछि; आरोपीक भूमिका सेहो जाँचमे रहत।”

“भूमिका रहय,” रचना उत्तर देलखिन, “मुदा गरीब साक्षी केँ सुविधाजनक अपराधी बना कऽ जाँच बन्द नहि हो।”

दुलारीक चेहरा निर्विकार छल, मुदा ओकर उँगुरी कापीक किनार पकड़ने। माधवी पाछाँ सँ देखैत रहल। वसुधा जँ जीवित रहतीह तँ सम्भवतः एहि क्षण रचनाक संग खड़ी रहितीह। ई विचार ओकर छातीमे एक संग दुःख आ बल भरलक।

न्यायालय पुलिस आवेदन स्वीकार कएलक। आदेश छोट मुदा निर्णायक—मृत्यु-जाँचक प्रारम्भिक आत्महत्या-धारणा बाध्यकारी नहि; उपलब्ध सामग्रीक आधार पर सम्भावित हिंसक मृत्यु आ साक्ष्य-हेरफेरक कोण सँ पूर्ण जाँच; कच्चा तकनीकी आँकड़ा सुरक्षित; साक्षीक सुरक्षा; गायब मूल दस्तावेजक खोज; दृश्य पुनर्निर्माण विधिसम्मत पर्यवेक्षणमे।

बाहर आबिते पत्रकारक भीड़ फेर घेरलक। प्रश्न सभ तेज—“हत्या सिद्ध?” “दुलारी मुक्त?” “परिवार पर शंका?” विनय केवल एक वाक्य कहलक, “जाँच फेर खुलल अछि; अपराधी घोषित ककरो नहि।”

जयनारायण भीड़सँ बाँचि कमलीक दोकानक पाछाँक सँकरा बाट धरलनि। माधवी आ अभिराम संग। ओकरा सभक लेल आदेश जितब नहि, अगिला कठिन चरणक दुआरि खुलब छल। आत्महत्याक सरल कथा टूटल; आब हर झूठ, हर अनुपस्थिति, हर पुरान दस्तावेजक अर्थ फेर पढ़ए पड़त।

पुरान अभिलेख-कोठरी एहि दिन फेर सीमित जाँच लेल खोलल गेल। विनय स्वयं मोहर जाँचलनि। भीतर पसिते माधवीक नाकमे वही सीलन, पुरान कागज आ धातुक गन्ध। वसुधाक देह नहि, मुदा कोठरी एखनहुँ हुनकर अनुपस्थिति सँ भरल।

जयनारायण घटनास्थलक पुरान छवि देवाल पर क्रमसँ लगा देलनि—पहिल भोर; कप; डिबिया; घड़ी; मेज; नालीमे नील कप; कबाड़क कोठरीक लोहेक पट्टी। “हम एकटा कथा बनाबय नहि आयल छी,” ओ कहलक। “हम देखब जे कतेक अलग तथ्य एके कथा सहैत अछि।”

अभिराम ‘सूत्र’ खोललक, मुदा एहि बेर पर्दा पर प्रतिशत नहि। केवल समय-रेखा।

राति ८:३० — माधवी प्रस्थान।

राति ९ पश्चात् — दुलारी प्रवेश।

राति लगभग १० — दू कप चाय पुरान भवनमे।

राति १०:३०-१०:४५ — विद्युत झपक।

आध राति बाद — तेज बरखा; फाटक पहराक विश्वसनीयता घटल।

भोर ४:१० आसपास — परिचित व्यक्ति कमलीक दोकान पर मीठ चाय।

भोर ४:१७ — दीवाल-घड़ी रुकल; स्थानीय समय-संकेत टूटल।

भोर ४:०९-४:२२ — किछु प्रवेश-स्रोत अनुपलब्ध।

भोर बाद — कक्ष भीतरसँ बन्द भेटल।

जयनारायण कागज पर उँगुरी रखलनि। “राति दसक मीठ चाय पीबनिहार आ भोर चारि दसक मीठ चाय पीबनिहार एके अछि—ई एखन नहि मानब।”

अभिराम सिर हिलेलक। “सूत्रो अलग घटना राखने अछि।”

माधवी पुछली, “दुलारी कखन निकलली?”

“ओकर बयान अनुसार,” विनय कहलक, “वसुधासँ बातक बाद कागज जरबैत छाया देखलक; भयमे पछिला बरामदा दिस गेल; पुरान गलियारा सँ बाहर निकलि नदीक बाट पकड़लक। ओ बाटक किछु अंश कैमरा-विहीन।”

“वसुधा तखन जीवित?”

विनय दुलारीक बयानक पन्ना खोललनि। “दुलारी कहैत छथि—ओ निकलैत समय वसुधाक आवाज नहि सुनली; कोठरीक भीतर फेर नहि गेली। ताहि कारण ओ पुष्टि नहि करैत छथि।”

जयनारायण कहलक, “सीमा ठीक। जे नहि देखल, नहि कहली।”

ओ मेजक पुरान छवि सामने ठाढ़ भेलाह। “बनाओल आत्महत्या किएक?”

माधवी कहली, “हत्या नुकाबय लेल।”

“सामान्य उत्तर। मुदा दृश्य बनौनिहार कोन कथा चाहैत छल?”

अभिराम कहलक, “वसुधा तनावमे छल, अकेले राति काम करैत, किछु लिखल—तखन स्वयं मृत्यु चुनलक।”

“आ दुलारी?”

“अन्तिम भेटनिहार, गायब—ओकरा पर चोरी वा अपराधक छाया।”

“ठीक। दृश्य केवल मृत्यु नहि, दोषक दिशा सेहो बनाबैत छल।”

माधवीक आँखि अधलिखल पाँति पर गेल—“जँ ई कागज फेर गायब भेल...” ई आत्मकथ्य नहि, चेतावनी छल। यदि ओकर बादक भाग जरा देल जाए, पाँति एक निराश मनुष्यक अधूरा वाक्य जकाँ देखाइ सकैत।

“ओ नोट,” माधवी अचानक कहली, “जँ पूरा वाक्य ‘जँ ई कागज फेर गायब भेल तँ हम फलाँ करब’ सन होइत? बादक भाग मेटा देला पर अर्थ बदलि गेल।”

जयनारायणक आँखि चमकल। “एही लेल राख महत्त्वपूर्ण।”

विनय कहलक, “जड़ल टुकड़ाक लेख पुनर्प्राप्ति प्रयोगशालामे चलि रहल। एखन स्पष्ट अक्षर नहि।”

अभिराम छविक उच्च-विरचना खोललक। राखक एक टुकड़ामे स्याहीक वक्र, मुदा शब्द नहि। “जँ किछु अक्षर निकलत, हम पुरान लेखन-नमूनासँ मिलान कऽ सकैत छी—मुदा मूल अर्थ अनुमान नहि करब।”

“ठीक,” जयनारायण कहलक। “रिक्त जगहमे कथा मत भरू।”

माधवीक मनमे अपन सपना आयल। लाल ओढ़नी, देवाल, नील धागा। मन सेहो रिक्त जगह भरैत अछि। जाँच आ सपना बीच अंतर सम्भवतः एतबे—जाँच भरल जगह केँ फेर खाली करबाक साहस राखैत अछि।

बाहर कबाड़क कोठरीमे प्रतिरूप-जाँचक दोसर चरण भेल। पुरान निरीक्षण-पट्टीक भीतर महीन धूल पर नब खरोचक तीन छवि पहिने लेल गेल छल। विशेषज्ञ एखन केवल कहि सकैत—खरोच बहुत पुरान जंगसँ बादक; तिथि नहि। नलीक भीतर एक महीन नील रेशा भेटल, मुदा रंग मात्र नील; कुसुमाक धागासँ सम्बन्ध कहबाक आधार नहि।

अभिराम नील रेशा देखिते उत्साहित भेल, फेर स्वयं रुकल। “नील रंग हजार वस्तुमे।”

जयनारायण मुस्कुरौलनि। “प्रगति।”

“की?”

“तौँ अपनहि अनुमान केँ पहिने रोकलह।”

माधवी हँसली। “अदालतक असर।”

ओही समय विनयक दूरभाष बाजल। कमली देवीक पहिचान प्रक्रिया पूरा भेल छल। ओ तीन स्वतंत्र छविमे एक चेहरा चिन्हने छलीह। विनय सुनैत-सुनैत चेहरा निर्विकार रखलनि। दूरभाष राखि जयनारायण दिस देखलनि।

“नाम?” माधवीक मुँहसँ निकलल।

विनय तुरन्त नहि कहलक। “पहिचान भेल। मुदा एक साक्षीक पहिचान पर गिरफ्तारी नहि। समय-रेखा, वाहन, दूरभाष, घरक बयान—सभ फेर जाँचब।”

“परिचित?”

“वसुधाक पारिवारिक घेराक लोक।”

माधवीक हृदय जोर सँ धड़कल। ओ नाम अनुमान करए चाहली, मुदा जयनारायणक पहिल चेतावनी मोन पड़ल—नाम मनमे बनाउ नहि।

विनय फेर कहलक, “आ एक बात। ओ व्यक्ति पहिने कहने छल जे भोर चारि बजे घरमे सूतल छल।”

एखन जयनारायणक चेहरा बदलल। बहुत कने, मुदा माधवी देखलक। “अर्थात् एक नब झूठ।”

“हँ।”

“झूठ हत्या नहि,” अभिराम कहलक।

जयनारायण ओकरा देखलनि, प्रसन्न। “आब तौ हमरा बात हमरा सँ पहिने कहैत छह।”

साँझक उजास वेंटिलेटर सँ तिरछा भीतर पड़ल। ओही पातळ हवा कैलेंडरक पन्ना हिला रहल छल, जे पहिल दिन जयनारायणक आँखि रोकने छल। बन्द कोठरी पहिने रहस्य छल; एखन ओकर भीतर बनाओल कथा देखाइ लगल। मुदा कथा बनौनिहारक चेहरा एखन अदालत योग्य प्रमाण चाहैत छल।

माधवी मेज लग ठाढ़ भऽ वसुधाक खाली कुर्सी देखली। ओकरा पहिल बेर लागल—मृत्यु केँ आत्महत्या बनाओल गेल हो, मुदा वसुधाक काज केँ नहि। कागजक राख, दुलारीक आवाज, कमलीक चाय, अभिरामक सुधरल आँकड़ा, जयनारायणक शंका—सभ हुनकर अधूरा वाक्यक बादक शब्द बनि रहल छल।

जयनारायण बाहर निकलैत कहलक, “एखन जाँच कठिन भेल।”

माधवी चौकली। “सरल कथा टूटल, तखन कठिन किएक?”

“किएक तँ आब हमरा मालूम अछि दृश्य झूठ बजैत छल। मुदा झूठक लेखक एकटा नहि सेहो भऽ सकैत अछि।”

अभिराम पुरान भवनक पाछाँक अन्हार गलियारा दिस तकलक। “माने दृश्य बनाबयमे सहायता?”

जयनारायण उत्तर नहि देलनि। केवल कहलनि, “जे लोक कोठरीक आदति जानैत छल, ओ वसुधाक आदति पूरा नहि जानैत छल। तँ गलती छोड़लक। आ जे लोक वायु-नली जानैत छल, ओ भवनक पुरान देह जानैत छल। दुनू ज्ञान एक मनुष्यमे होयब आवश्यक नहि।”

माधवीक देहमे सिहरन दौड़ल। हत्या-सन्देह अब एक चेहरासँ पैघ भऽ गेल छल।

पुरान भवनक फाटक बन्द भेल। बाहर साँझक कचहरी खाली होइत गेल। भीतर मोहर फेर लगल।

आ आत्महत्याक फाइल पर पहिल बेर मोट अक्षरमे लिखल गेल—“सन्दिग्ध हिंसक मृत्यु; दृश्य-परिवर्तनक जाँच जारी।”

अध्याय ३१ — जयनारायणक पक्षपात

हत्या-जाँच फेर खुललाक दोसर भोर जयनारायण बहुत जल्दी कचहरी पहुँचि गेलाह। रातिक बरखा थमि चुकल छल, मुदा पुरान बरामदाक ईंट एखनहुँ भीजल आ गाढ़ लाल देखाइत छल। कमली देवी चूल्हि जरौने छलीह। दूधक भगौना चढ़ल, अदरक सिलौट पर, आ टाटीक ओहि पारि भोरक पहिल मुक्किल सभ एखन नहि पहुँचल छल।

विनय ठाकुर पहिने सँ ओतऽ छलाह। हुनकर हाथमे तीन फोटो सँ बनल पहिचान-पत्रक प्रतिलिपि छल। कमली काल्हि जे चेहरा चुनने छलीह, ओकर नाम विनय राति ए जाँच-दल भीतर खोलि देने छलाह—अरुण कर्ण।

जयनारायण नाम सुनिते बहुत देर किछु नहि बजलाह। बस चाय बिना चीनीक माँगलनि। कमली कप आगाँ सरकौलनि। “हम जे देखलहुँ, से कहलहुँ। मुदा भोरक ओ बरखा, धुँधलका, छाता—सभ छल। मुँह साफ-साफ जेना एखन अहाँक देखैत छी, ओना नहि।”

विनय कहलनि, “पहिचान-पत्रमे अहाँ तीन स्वतंत्र छविमे अरुण केँ चुनलहुँ।”

“हँ। चाल, काँध, मुँहक काट—ओहि सन लगल।” कमली फेर जोड़लनि, “सन लगल। हम ‘ओहे छल’ कहि कऽ भगवानक कसम नहि खाएब।”

जयनारायण कप पर उँगुरी टिकलनि। हुनकर मन मुदा कमलीक सावधानी सँ तेज भागि रहल छल। पति। घरक झूठ। पत्नी संग दू दिन पहिने तकल। वसुधाक काजसँ असहमति। राति घरसँ गाड़ी बाहर। फेर भोरक चाय। कतेको बिन्दु एक दोसराक दिस झुकैत जकाँ।

“अरुण केँ एखन फेर नहि बजाउ,” ओ विनय केँ कहलनि। “पहिने ओकर रातिक सभ समय फेर जोड़ू। रूपाक आरोग्य-केन्द्रक बाद घर घुलल, तकर बाद भोर धरि। पड़ोसी, दोसर दूरभाष, घरक भीतरक काज—सभ।”

विनय हुनका कने देर तकलनि। “अहाँक मन बनि गेल?”

“मन बनल नहि। दिशा देखाइत अछि।”

“दिशा आ मनक निर्णय बीच दूरी रहय।”

जयनारायण उत्तर नहि देलनि। एहि वाक्यक अधिकार विनय केँ हुनके सँ भेटल छल; ताहि कारण सुनब आओर कठिन लगल।

डिजिटाइज़ कक्षमे अभिराम रातिसँ चलल समय-मिलान फेर खोलने छल। सूत्रक पर्दा पर अरुणक दूर दूरभाष, गाड़ी, सहजिनी आरोग्य-केन्द्र, घरक प्रवेश-दुआरि, पड़ोसक एक औषधि-दोकान आ कचहरीक दूरी अलग-अलग पाँतिमे छल। अभिराम जयनारायण केँ देखिते कहलक, “एक असंगति अछि।”

“एक?”

“एखन दू।”

माधवी ओतहि छलीह। ओ वसुधाक राखसँ पुनर्प्राप्त अक्षरक प्रयोगशाला-प्रतिवेदन पढ़ैत छलीह। जयनारायणक स्वर सुनि पन्ना बन्द कऽ देली।

अभिराम पहिल पाँति खोललक। “रूपा देवीक आरोग्य-केन्द्र सँ भोर तीन बजि छप्पन मिनट पर अरुणक छोट दूरभाष पर दृश्य-संवाद भेल। अवधि अठारह मिनट सात सेकंड।”

जयनारायण भौंह चढ़ौलनि। “दृश्य-संवादक अभिलेख केवल समय कहत। पर्दा सामने अरुण छल, से?”

“केन्द्र रोगिणीक अनुमति लऽ सुरक्षित रखल सेवा-अभिलेखमे एक छोट स्थिर छवि अछि—कारण परिचारिका संवादक बीच चिकित्सक केँ जोड़ने छलीह। छविमे अरुणक चेहरा साफ। पाछाँ ओकर घरक अध्ययन-कक्ष। समय तीन छप्पन सँ चारि चौदह।”

विनय पुछलक, “सेवा-अभिलेख मूल स्रोतसँ सुरक्षित?”

“हँ। एखन केवल सत्यापन-प्रतिलिपि देखबैत छी। विधिसम्मत माँग पठाओल गेल अछि।”

जयनारायण चुप। कमलीक दोकान घरसँ कतेक दूर? अभिराम नक्शा खोललक। बरखाक ओहि भोरमे मोटरसाइकिलसँ न्यूनतम बारह मिनट, पैदल बहुत बेसी। मुदा दृश्य-संवाद चारि चौदह धरि। कमली लगभग चारि दस कहैत छलीह। एके मनुष्य दुनू ठाम नहि भऽ सकैत।

“कमलीक समय पाँच-सात मिनट चूक सकैत,” जयनारायण कहलनि।

अभिराम माथ हिलेलक। “तँ दोसर बिन्दु।”

चारि बजि अठारह मिनट पर मोहल्लाक चिकित्सक डॉ. नीलिमा झा अरुणक घर पहुँचल छलीह। अरुणक माय केँ रातिसँ साँसक कष्ट बढ़ल छल। डॉक्टरक सहायक दुआरि पर औषधि-पेटी लऽ उतरल; पड़ोसी घरक बाहरी कैमरामे अरुण स्वयं फाटक खोलैत देखाइत छल। चारि अठारह। डॉक्टरक लिखल पर्ची चारि तेइस।

माधवी धीरे कहली, “चारि दसक चाय पीबनिहार अरुण नहि।”

जयनारायणक मुँह पर किछु कठोर भेल। “जँ कमलीक समय ठीक।”

अभिराम स्क्रीन पर दू बिन्दु जोड़लक—३:५६-४:१४ दृश्य-संवाद; ४:१८ घरक फाटक। फेर कमलीक दोकानक बिन्दु ४:१० ± पाँच मिनट। सूत्र लाल नहि, धूसर चेतावनी देलक—
“एके व्यक्ति हेतु स्थान-समय मेल अत्यन्त असम्भव।”

जयनारायणक आँखि ओहि पाँति पर अटकली। “अत्यन्त असम्भव” यंत्रक वाक्य छल, मुदा चोट मनुष्यक भीतर लागल।

विनय शान्त स्वरमे पूछलक, “एखन दिशा?”

जयनारायण कुर्सी खींचि बैसलाह। बहुत देर बाद कहलनि, “दिशा बदलत।”

माधवी हुनका ध्यान सँ देखली। जयनारायण गलत सिद्ध होइत छथि—ई नब बात नहि; ओ स्वयं बेराबेरी कहैत छलाह जे अनुमान बदलू। मुदा आइ हुनकर चेहरामे केवल जाँचक असफलता नहि, कोनो पुरान छाया छल।

“काका,” अभिराम धीरे कहलक, “सूत्र अरुण केँ निर्दोष घोषित नहि करैत अछि। केवल कमलीक भोरक पहिचानक संग समय नहि मिलैत।”

“हम बुझैत छी।”

“तखन—”

“हम बुझैत छी,” जयनारायण एहि बेर कने कड़ा स्वरमे दोहरौलनि। फेर तुरन्त नरम पड़लाह। “माफ कर। राग तोरा पर नहि।”

ओ उठि खिड़की लग गेलाह। बाहर कचहरीक आँगन धीरे-धीरे भरि रहल छल। एक रिक्शा, दू साइकिल, फाइलक गठरी लऽ एक मुंशी। साधारण भोर। हुनकर भीतर मुदा बहुत पुरान राति खुलि गेल।

सत्ताइस बर्ख पहिने बेलाहीक चन्द्रकला प्रकरण। नव विवाहिता स्त्री एक राति गायब। पति कहने—मायके गेल। घरक लोक कहने—पति बड्ड सज्जन। जयनारायण तखन युवा पदाधिकारी। हुनका पति पर शंका भेल, मुदा परिवारक प्रभाव आ अधूरा साक्ष्य बीच जाँच ढीला पड़ल। महीना बाद नदीक पाताल-कटानमे चन्द्रकलाक कंकाल भेटल; हाथक चूड़ी आ दाँतक उपचार सँ पहचान भेल। पति तखन विदेश निकलि चुकल। मुकदमा कखनो पूरा नहि भेल।

जयनारायण ओकर बाद सँ घरेलू झूठ केँ हलुक नहि लैत छलाह। हुनका लग “पति झूठ बजैत अछि” केवल एक तथ्य नहि, पुरान अपराधक घंटी छल। चन्द्रकलाक मायक चेहरा हुनका एखनो मोन छल—“अहाँ पहिने किएक नहि पकड़लियै?”

माधवी हुनकर पाछाँ आ ठाढ़ भेली। “ओ पुरान प्रकरण?”

जयनारायण चौकलाह। “तोरा कोना मालूम?”

“दीदी एक बेर कहलखिन। अहाँक जीवनक एक प्रकरण अछि जे अहाँ कोनो नब घरेलू हिंसाक फाइलमे मोन करैत छी।”

“वसुधा बहुत किछु कहैत छलीह।”

“ओ ईहो कहने छलीह—अधूरा अपराध मनुष्यक आँखि केँ तेजो करैत अछि, टेढ़ो।”

जयनारायणक मुँह पर दुःखक छोट रेखा आयल। “ओ हमरा मुँह पर कहने छलीह।”

“आ अहाँ राग कएने रही?”

“तीन दिन।”

अभिराम बीचमे मुस्कुरा देलक। “तखन वसुधा दीदी जीतल छलीह।”

“ओ बहसमे जीतबाक लेल तथ्यसँ बेसी धैर्य रखैत छलीह।”

थोड़े देरक मौन बाद जयनारायण फेर मेज लग अएलाह। “हम अरुणक झूठ केँ चन्द्रकलाक पतिक ओहन झूठ जकाँ पढ़ि रहल छलहुँ। जबकि अरुणक पहिल झूठक कारण रूपाक निजी दुख छल। फेर कमलीक पहिचान भेटिते हमर मन पुरान बाट पकड़ि लेलक। ई पुष्टि-पक्षपात अछि। लिखू।”

अभिराम सचमुच नोट करए लगल।

माधवी हँसली। “अपने ऊपर प्रतिवेदन?”

“जाँचक औजार जँ मनुष्य अछि तँ औजारक त्रुटियो अभिलेखमे रहबाक चाही।”

सूत्रक स्क्रीन पर अभिराम एक नब टिप्पणी जोड़लक—“मानवीय अनुमान संशोधित: अरुण-कमली पहचान समय-विरोधी। पुनर्पहिचान आवश्यक।”

जयनारायण कहलक, “नाम हटाउ। कमलीक अगिला पहिचानमे अरुणक फोटो फेर अलग रूपमे नहि देखाउ। समान उमेर, समान देह, बरखामे छाता धरने लोकक छवि—जतेक सम्भव निष्पक्ष। आ कमली केँ ‘पहिने अहाँ अरुण चुनने रही’ ई स्मरण नहि कराउ।”

विनय सहमति देलक। “ठीक।”

कमलीक दोकान पर फेर गेलापर जयनारायण एहि बेर किछु नहि पूछलनि। विनय प्रक्रिया बुझेलनि। कमली पाँच नब छवि देखली। कने देर बाद एक पर उँगुरी ठहरली, फेर हटि गेली। दोसर पर ठहरली। “ई चाल सन। मुदा मुँह? नहि कहि सकैत छी।”

“पहिचान निश्चित?”

“नहि।”

“तखन लिखल जाएत—निश्चित नहि।”

कमली निश्चित जकाँ साँस छोड़ली। “ई नीक। पहिने सभ लोक एना ताकैत छल जेना हमरा एकटा नाम देबाक पड़त। हम जे देखलहुँ, ओ बरखा बीच आध चेहरा छल।”

जयनारायण चुपचाप सुनलनि। हुनका बुझायल—मानवीय साक्षीक आदर ओकरा ‘पक्का’ बनाबयमे नहि, ओकर अनिश्चितता बचाबयमे अछि।

फेर अभिलेख-कक्षमे लौटि ओ सूत्रक स्क्रीन सामने ठाढ़ भेलाह। “आइ तौ हमरा बचेलह।”

अभिराम चौकल। “हम?”

“तोहर यंत्र।”

अभिराम मुस्करायल। “काल्हि अहाँ एकरा डाँटैत रही।”

“औजार केँ डाँटि सकैत छी; सीखो सकैत छी।”

माधवी कहली, “आ औजार मनुष्य केँ?”

जयनारायण पर्दा पर दू असम्भव समय-बिन्दु देखलनि। “जँ मनुष्य सुनए तैयार हो, तँ हँ।”

ओही समय सूत्रक नब खोज-सूचना ऊपर उभरल। पुरान नाम-सूचीक एक अस्पष्ट पाँति आधुनिक परिवार-अभिलेखसँ मिलल छल। नाम पूरा नहि, मुदा आरम्भ साफ—
“रासबिहारी...”

अभिरामक उँगुरी की-बोर्ड पर जमि गेल।

माधवी देखली। “की भेल?”

“किछु नहि,” अभिराम तुरन्त कहलक। “पुरान मिलान अछि।”

जयनारायण एखन अपन पक्षपातक चोट सँ गुजरि रहल छलाह; ओ अभिरामक मुँहक रंग बदलल नहि देखलनि। माधवी देखली—मुदा अर्थ नहि बुझली।

स्क्रीन पर रासबिहारीक अधूरा नाम चमकि कऽ फेर स्रोत-सूचीमे समा गेल।

आ अभिरामक मनमे घरक एक पुरान संदूक खुलि गेल, जकरा ओ बखौ सँ छूने नहि छल।

अध्याय ३२ — अभिरामक घरक कागज

अभिराम ओहि दिन साँझ कचहरीसँ सीधा घर गेल। सामान्य दिनमे ओ मोटरसाइकिल आँगनमे लगबैत पहिने माय केँ आवाज दैत—“जीवित छी?” आ भीतर सँ उत्तर अबैत—“एखन धरि।” आइ ओ किछु नहि बजल। मोटरसाइकिल बन्द कऽ बहुत देर तक ओसाराक अन्हारमे ठाढ़ रहल।

माय सिलौट पर मसाला पिसि रहल छलीह। ओ माथ उठाकऽ देखलीह। “ककरो संग झगड़ा भेल?”

“नहि।”

“तखन मुँह एना किएक जेना सूत्र तोरा नौकरीसँ निकालि देलक?”

अभिराम चाहियो कऽ हँसि नहि सकल। “माय, बाबाक पुरान संदूक कतऽ अछि?”

मायक हाथ रुकल। “कुन? काठक, जे दादाक छल?”

“हँ।”

“पछिला कोठरीक मचान पर। किएक?”

“पुरान कागज देखबाक अछि।”

माय ओकरा एक क्षण निहारलीह। “राति खेनाइ पहिने कि बाद?”

“एखन।”

“तखन साँप निकलल तँ अपन जिम्मा।”

“साँप नहि अछि।”

“पुरान परिवारक कागजमे साँपसँ खराब बात निकलैत अछि।” ओ हँसि देलीह, मुदा अभिराम हँसि नहि सकल। माय ई देखलीह, तखन प्रश्न छोड़ि देलीह। “सीढ़ी लऽ जा। धूरि बहुत अछि।”

पछिला कोठरी घरक सभसँ कम उपयोगक हिस्सा छल। मचान पर लोहेक बाल्टी, दादाक पुरान रेडियो, बाबाक विद्यालयक प्रमाणपत्रक टीन-पेटी, आ एक काठक संदूक। संदूकक ढक्कन पर पीतल पट्टी, आध जंग। चाभी मायक सिलाइ-पेटीक नीचा राखल रहैत छल—घरमे सबकेँ मालूम, मुदा केओ खोलैत नहि।

अभिराम संदूक नीचा उतारलक। धूरिक गन्धसँ छींक आयल। भीतर कपड़ाक दू गठरी, पीयर पड़ल पत्र, जमीनक लगान-रसीद, एक पुरान मैथिली पंचांग, बाबाक कॉलेजक फोटो, आ लाल कपड़ामे बान्हल कागजक पोटरी।

पोटरी खोलिते माय दुआरि लग आबि गेलीह। “ई दादाजी बड्ड सँभालि कऽ रखैत छलाह। कहैत—हमर बाबूजी नकलखानामे काज करैत छलाह। पुरान कागज फेकब पाप।”

अभिरामक हाथ थमल। “हमर परदादा नकलखानामे?”

“तोरा नहि मालूम?”

“नहि।”

“तोहर बाबा केँ मालूम छल। ओहि समय तौँ बच्चा। घरमे एहि बातक कोनो महत्त्व रहि गेल छल? नौकरी साधारण, वेतन साधारण। बादमे दादाजी विद्यालयमे पढ़बैत छलाह।”

“परदादाक नाम?”

“माधवेश्वर। माधवेश्वर झा। मुदा नकलक कागजमे ‘माधो झा’ सेहो लिखल भेटत।”

अभिरामक छाती भीतर किछु धँसल। सूत्रक अधूरा मिलान केवल “रासबिहारी...” पर अटकल छल, मुदा वसुधाक जमीन-मुकदमा, १९३४क राहत शिविर, पुरान नकलखाना—सभ एकाएक ओकर घरक मचान धरि आबि पहुँचल।

ओ पहिल गठरी खोललक। अधिकतर लगान, बँटवारा, ऋण-मुक्ति। तिथि १९५०क दशक। दोसर गठरीमे आओर पुरान कागज, किछु कपड़ामे चिपकल। प्रत्येक पन्ना सीधा हाथसँ छुड़ब ठीक नहि, ई ओकर प्रशिक्षण छल। ओ तुरन्त नाइट्राइल दास्ताना लऽ आयल, टेबुल साफ कएलक, मोबाइल पर केवल अभिलेखक स्थिति दर्ज करबाक छवि लेलक।

माय हँसलीह। “घरक कागजो अदालतक साक्ष्य भऽ गेल?”

“हो सकैत अछि।”

मायक हँसी थमल। “वसुधा दीदीक प्रकरण?”

अभिराम उत्तर देबामे देर कएलक। “सम्भवतः।”

एहि बेर माय कुर्सी खींचि बैसि गेलीह। “तखन हमरा जे मालूम अछि, से पहिने कहि दैत छी। ई पोटरी दादा मरबाक दू बर्ष पहिने बाबाक देलखिन। बाबा खोललखिन कि नहि, हमरा नहि मालूम। बाबा गेलापर हम सब एकठाम कऽ राखि देलहुँ। केओ एहि कागज लेल घर नहि आयल, केओ माँगल नहि।”

“दादा कखनो सात टोला, कुसुमा, रासबिहारी नाम कहने छलाह?”

माय बहुत देर सोचलीह। “रासबिहारी... नाम सुनल-जकाँ। दादा एकटा बूढ़ नकलनवीसक कथा कहैत छलाह—‘जकर लिखल नाम कागजसँ मेटल, मुदा लोकक मुँहसँ नहि।’ ई ओहि नामक छल कि दोसर, नहि कहि सकैत छी।”

अभिरामक धड़कन तेज भेल। “आ कुसुमा?”

“नहि।”

ओ पन्ना बेराबेरी प्रकाशक नीचा देखलक। एक जगह मोट पुरान कागजक मोड़ भीतर किछु अटकल छल। खोलला पर आध आकारक प्रमाणित नकल निकलल। ऊपर अंग्रेजी शासनकालक पुरान मुहरक धुँधल छाप, नीचे मैथिली-मिश्रित कैथी/देवनागरी हस्तलिखित टिप्पणी। कागजक मुख्य भाग बादक नकल छल, सम्भवतः १९५६ अथवा १९५७मे बनल। मूल आवेदनक तिथि—१९३५।

नाम: “रासबिहारी दास”—राहत-अभिलेख नकलक अस्थायी कामगार।

अभिरामक साँस अटकल।

आवेदनमे लिखल छल जे भूकम्प-पछाति पुनर्वास लेल सात बस्ती परिवारक नाम, सीमा आ साझा उपयोगक जमीनक सूची बनाओल गेल; मूल सूची न्यायालय पहुँचेबाक पहिने “अनुपलब्ध” भेल; आवेदनकर्ता अपने लग रहल मसौदाक आधार पर पुनर्नकलक निवेदन करैत अछि।

नीचाँ एक पाँति आध काटल—“मूल प्रतिमे सात पृथक प्रमाण-...” शेष कागजक किनार क्षतिग्रस्त।

अभिराम ओतहि रुकल। “सात प्रमाण”—वसुधाक नोट, नछत्तर-पोथी, आध पत्र। सब एक दोसरासँ कने नजदीक आयल, मुदा अभी अर्थ खुलल नहि।

कागजक पाछाँ लाल पेन्सिलक एक नब टिप्पणी छल—“सीमा-नक्शा संग तुलना बिना नकल निर्गत नहि।” तकर नीचा बहुत पातळ स्याहीमे हस्ताक्षर: “माधवेश्वर झा, नकल-सहायक।”

अभिराम कुर्सी पर जमि गेल।

माय पूछलीह, “नाम तोहर परदादाक?”

“हाँ।”

“तखन?”

“तखन ई कागज जाँचमे देबाक अछि।”

“दे।” माय सहज कहलीह।

अभिराम हुनका देखलक। “अहाँ डरैत नहि छी?”

“ककरा सँ?”

“जँ परदादा... जँ सीमा बदलाबयमे...”

माय बीचमे रोकलीह। “कागज पढ़ने बिना अपन पुरखा केँ चोर बनायब, ई कोन न्याय? आ जँ गलती कएने होथि तँ हम छिपा कऽ ठीक कऽ देब?”

अभिरामक गला सूखल। उत्तर साफ छल। मुदा मन साफ नहि। माधवीक चेहरा ओकरा मोन पड़ल—ओ नील धागा, कुसुमा, सात टोला सभकेँ अपन गुरु वसुधाक अधूरा काज जकाँ ढोइत छली। जँ अभिराम कहत जे ओकर अपन घरक संदूकमे रासबिहारीक आवेदन आ परदादाक हस्ताक्षर भेटल, माधवी की बुझतीह? जे ओ पहिने सँ जानैत छल? जे ओकर परिवार दस्तावेज गायब करनिहार घेरामे छल? जे सूत्रक परिचालक स्वयं स्रोत नुकौने रहल?

ओ अपनहि विचार पर लज्जित भेल। एखन धरि ओ किछु नुकौने नहि छल। बस भेटल छल। मुदा अगिला क्षणमे की करत, ओहि सँ सत्य बदलत।

माय खेनाइक थारी राखि देलीह। “पहिने खा, फेर पुलिस केँ फोन करा।”

“एखन राति भऽ गेल।”

“विनय बाबू रातिमे फोन नहि उठबैत?”

“उठबैत।”

“तखन?”

अभिराम कागज फेर देखलक। लाल पेन्सिल। परदादाक हस्ताक्षर। एक किनार पर पेंसिलक छोट संख्या—“७/क”। ई संख्या कतेक पुरान, के लिखलक, स्पष्ट नहि। ओकर प्रशिक्षित मन कहैत छल—स्रोत सुरक्षित कर, दस्ताना, छवि, सूची, तुरन्त सूचना। ओकर भय कहैत छल—पहिने पूरा बुझ।

ओ फोन उठेलक, विनयक नाम खोललक, फेर बन्द कऽ देलक।

माय देखलीह। “की भेल?”

“पहिने छवि बना लैत छी। काल्हि मूल संग देब। रातिमे कागज लऽ निकलनाइ ठीक नहि।”

ई आधा सच छल। माय सम्भवतः बुझलीह, सम्भवतः नहि। “ठीक। मुदा काल्हि।”

अभिराम उच्च-विरचना छवि बनौलक, कागजक माप, रंग, मोड़, क्षति सभ दर्ज कएलक। मूल पोर्टरी फेर अलग स्वच्छ लिफाफामे राखलक, संदूकमे नहि—टेबुलक बन्द दराजमे।

तकर बाद ओ सूत्रक स्थानीय प्रतिलिपि खोललक। नियम अनुसार निजी स्रोत बिना औपचारिक स्वीकृति मुख्य प्रकरणमे जोड़ब नहि चाही। ओ केवल अपन लैपटॉपक पृथक फोल्डरमे छवि रखलक। फाइलक नाम देलक—“पुरान_नकल_जाँचबाक।”

फेर ओकरा नाम खराब लगल। बदलि देलक—“रासबिहारी_१९३५_माधवेश्वर।”

पर्दा पर नाम स्पष्ट देखिते भय आ बढ़ल।

ओ आवेदनक शब्द पढ़लक। “सात बस्ती।” “मूल सूची अनुपलब्ध।” “सीमा-नक्शा।” “पुनर्नकल।” वसुधा जे जमीन-मुकदमा लड़ैत छली, ओकर मूल जड़ सम्भवतः एहि पन्नामे। यदि परदादाक हस्ताक्षर केवल सरकारी कामक अछि तँ डर व्यर्थ। यदि लाल पेन्सिलक सीमा-टिप्पणी हुनके हाथक अछि आ बादक नक्शा सरकल—तँ?

राति साढ़े एगारह पर माधवीक संदेश आयल—“राखक अक्षरमे ‘लौटा...’ जकाँ किछु भेटल। निश्चित नहि। काल्हि देखब।”

अभिराम संदेश पढ़ि उत्तर लिखलक—“ठीक।”

ओ लिखि सकैत छल—“हमरो घरमे किछु भेटल।” उँगुरी तीन बेर की-बोर्ड पर गेल, तीन बेर हटि गेल। अन्ततः केवल “ठीक” पठाओल।

आ ओही एक शब्द ओकर पहिल सचेत नुकाव बनि गेल।

अगिला भोर ओ विनय कें फोन करबाक निश्चय कऽ उठल, मुदा घरसँ निकलिते माय कहलीह, “कागज नहि बिसरिहऽ।”

“नहि।”

ओ दराज खोललक। मूल पन्ना सुरक्षित लिफाफामे। क्षण भरि हाथ बढ़ल, फेर ओ केवल अंकीय प्रतिलिपि राखल स्मृति-यंत्र लेलक। मूल घरमे छोड़ि देलक।

“मूल?” माय पूछलीह।

“पहिने प्रतिलिपि देखाएब। जँ जाँचक भेल तँ विधिवत् लेब।”

ई तर्क गलत नहि छल। मुदा पूरा सत्य ई छल जे अभिराम एखनहुँ एक घड़ी समय खरीदय चाहैत छल।

कचहरी पहुँचि ओ सीधे डिजिटाइज कक्षमे गेल। माधवी एखन नहि आएली। जयनारायण विनय संग बाहर। अवसर सरल छल। ओ प्रतिलिपि खोलि रासबिहारीक नाम मुख्य खोजमे डाललक, मुदा निजी कागज स्रोत रूपमे जोड़ल नहि। सूत्र सार्वजनिक अभिलेखसँ तीन नब मिलान निकाललक—१९३५ आवेदन-सूची, १९४१ भूमि-सीमांकन, १९५७ नकल-आवेदन।

१९५७क नकल-आवेदनक प्रतिलिपि जिला सूचीमे दर्ज छल, मुदा छवि अनुपलब्ध।
आवेदनकर्ता नाम घिसल। “माधवेश्वर” शब्दक केवल “माध...” बचल।

अभिरामक घरक कागज एहि रिक्त जगह केँ पूरा करैत छल।

“तूँ एतेक भोर?” पाछाँ सँ माधवीक आवाज आयल।

अभिराम चौंकि फाइल बन्द कएलक।

माधवी हँसली। “की? सूत्र संग गुप्त प्रेम?”

“नहि। पुरान मिलान देखैत छलहुँ।”

“रासबिहारी?”

अभिरामक चेहरा फेर बदलल। माधवी एहि बेर साफ देखली।

“हँ,” ओ कहलक। “किछु नब सूची भेटल।”

“देखाउ।”

“एखन कच्चा अछि। जयनारायण बाबू अएलापर संग देखब।”

माधवी कने रुकली। “ठीक।”

ओ विश्वास कऽ बैसि गेली। अभिरामक भीतर ई विश्वास काँटा जकाँ चुभल। ओ एखनहुँ
कहि सकैत छल। केवल एक वाक्य—हमर घरक संदूकमे एक नकल भेटल। मुदा
जयनारायणक काल्हिक पक्षपात मोन पड़ल; गलत नाम एक बेर मनमे बसल तऽ तथ्य ओकर
चारू कात सजए लगैत अछि। ओ अपनहि केँ बुझेलक—पहिने सत्यापन, फेर कहब।

ई तर्क सुंदर छल।

आ सुंदर तर्क बेराबेरी डरक सभसँ नीक ओढ़ना होइत अछि।

अध्याय ३३ — नेहमे दरार

दुपहर धरि अभिराम अपन घरक कागजक बात नहि कहलक। जयनारायण थाना गेल छलाह; विनय कमलीक पुनर्पहिचानक प्रतिवेदन लिखबैत छल। माधवी राखक छविमे अक्षर मिलाबैत। दुनू एके टेबुल पर, बीचमे सूत्रक पर्दा—पहिने जकाँ। मुदा अभिरामक मौन आइक मौन अलग छल।

माधवी दू बेर पूछली, “किछु भेल?”

दू बेर उत्तर—“नहि।”

तेसर बेर ओ पूछली नहि।

साँझ लग अभिरामक माय कचहरी अएलीह। हाथमे स्टीलक छोट डब्बा, ऊपर गमछा। ओ डिजिटाइज कक्षक दुआरि पर ठाढ़ भऽ कहलीह, “हमर बेटा भोरसँ खेनाइ बिना भागल। अहाँ सभ जाँच करैत-करैत एकरा खेनाइयो करा दियौ।”

माधवी तुरन्त उठि डब्बा लेलनि। “अहाँ भीतर आउ।”

अभिरामक चेहरा उड़ि गेल। “माय, अहाँ किएक आयल?”

“किएक माने? चाउर-दाल अपराध-साक्ष्य अछि?”

माधवी हँसि पड़ली। “बैसू ने।”

माय कुर्सी पर बैसलीह, माधवी केँ ध्यान सँ देखलीह। “अहाँ माधवी छी?”

“हँ।”

“घरमे नाम सुनैत छी।”

अभिराम खाँसलक। “माय।”

“हम की कहलहुँ? नाम सुनैत छी। नाम सुनब अपराध?” ओ डब्बा खोललीह। “ई तरुआ अहाँ सेहो खाउ। ई अकेले सभ खा जाएत।”

माधवीक गाल पर हलुक मुस्की आयल। अभिराम आँखि झुका लेलक। एक क्षण लेल कक्षमे जाँच, मृत्यु, दस्तावेज सभ पाछाँ हटि गेल; केवल एक माय, हुनकर बेटा, आ एक तरुणी जेकर नाम घरमे सुनल जाइत अछि।

माय खेनाइ परोसैत सहज स्वरमे पूछलीह, “काल्हि रातिक पुरान कागजक की भेल?”

अभिरामक हाथ थमल।

माधवीक मुस्की सेहो। “कुन कागज?”

माय अभिराम दिस देखलीह। “ओहि दादाक संदूकक। रासबिहारी नाम छल ने? ई कहैत छल जाँचमे देबाक अछि।”

कक्ष एकाएक बहुत चुप भऽ गेल। बाहर बरामदामे केओ फाइल पटकलक, दूर घंटी बजल, मुदा भीतर तीन मनुष्य एके वाक्यक अलग अर्थ सुनैत रहल।

अभिराम धीरे कहलक, “माय, हम—”

माधवी ओकरा रोकली। “रासबिहारी?”

“हँ।”

“तोहर घरमे?”

“काल्हि राति भेटल।”

“आ तूँ आइ भोर सँ हमरा संग बैसल छह।”

“हम पहिने जाँचि रहल छलहुँ।”

“हमरा कहि सकैत छलह—‘कागज भेटल, एखन जाँचि रहल छी।’”

माय दुनूक मुँह देखलीह। हुनका तुरन्त बुझायल जे ई केवल अभिलेखक बात नहि। ओ धीरे उठलीह। “हम सम्भवतः बेठाम बात कहि देलहुँ।”

माधवी तुरन्त नरम भेली। “नहि, काकी। अहाँ ठीक कएलहुँ। कागजक बात जाँचमे आबक चाही।”

माय अभिराम दिस देखलीह। “हम काल्हि कहने रही।”

अभिरामक मुँह नीचा।

“डब्बा एतहि रहत। साँझमे लऽ जाएब।” ओ निकलैत कहलखिन, “सत्यक काज करैत छह तँ घरक सत्य सँ पहिने डरब नहि।”

दुआरि बन्द भेल।

माधवी किछु क्षण अभिराम केँ नहि देखली। ओ तरुआक डब्बा ढाँकि देली, हाथ पोंछली, फेर बहुत समतल स्वरमे कहली, “देखाउ।”

अभिराम स्मृति-यंत्र लगौलक। छवि खुलल। १९३५क आवेदन, रासबिहारी दास, सात बस्ती, मूल सूची अनुपलब्ध, सीमा-नक्शा, पाछाँ माधवेश्वर झाक हस्ताक्षर।

माधवी एक-एक पाँति पढ़ली। ओकर आँखि तेज होइत गेल, मुदा आवाज नहि। अन्तमे पुछली, “माधवेश्वर?”

“हमर परदादा।”

“तोरा काल्हि रातिए मालूम भेल?”

“हँ।”

“मूल कागज?”

“घरमे सुरक्षित।”

“विनय बाबू कै?”

“एखन नहि।”

“जयनारायण बाबू कै?”

“नहि।”

“हमरा?”

अभिराम उत्तर नहि देलक। प्रश्नक उत्तर प्रश्नमे छल।

माधवी कुर्सी सँ उठली। “किएक?”

“कारण हम नहि जानैत छलहुँ ई कागजक अर्थ की। परदादाक हस्ताक्षर अछि। लाल पेन्सिलक सीमा-टिप्पणी अछि। जँ परिवारक नाम गलत ढंगसँ जुड़ि जाए—”

“गलत ढंगसँ जुड़ि जाए, ताहि लेल तथ्य नुकाएब?”

“नुकौने नहि छी। एक राति सत्यापन—”

“एक राति?” माधवीक स्वर पहिल बेर ऊँच भेल। “आइ भोर जखन हम रासबिहारी पूछलहुँ, तू कहने छलह ‘कच्चा मिलान।’ तखन कागज तोहर लैपटॉपमे छल। ई एक राति नहि, सचेत झूठ छल।”

अभिरामक चेहरा कसल। “हम ‘नहि’ नहि कहने छलहुँ।”

“ओह!” माधवी कटु हँसी हँसली। “शब्दक अदालत लगेलह? ‘नहि कहने छलहुँ’ तँ झूठ नहि?”

“हम डरि गेल रही।”

“हमरा सँ?”

अभिराम चुप।

“कह।”

“हँ। कने।”

ई उत्तर सुनिते माधवीक रागक नीचा दुख खुलि गेल। “हम की करितहुँ? तोहर परदादा पर आरोप लगा दैतहुँ?”

“तोहर लेल ई जमीनक कथा केवल फाइल नहि। वसुधा दीदी—”

“आ तोहर लेल?”

“हमर परिवार।”

“तैं?”

“तैं हम पहिने बुझए चाहैत छलहुँ।”

माधवी टेबुलक किनार पकड़ली। “नाव पर राति तौ की कहने छलह मोन अछि? अहाँ हमरा मूर्ख नहि मानब, हम अहाँकेँ पत्थर नहि मानब। हम तोहर परिवारक नाम सुनि तोरा अपराधी मानि लैतहुँ—ई तौ पहिने ठहरा लेलह। अर्थात् तौ हमरा ऊपर विश्वास नहि केलह।”

“ई विश्वासक बात नहि—”

“ठीक ओहिए अछि।”

अभिराम पाछाँ हटलक। “माधवी, जयनारायण बाबू काल्हि अपन पुरान प्रकरणक कारण अरुण पर अटकला। एक नाम मनमे बैसल, सभ तथ्य ओकर चारू कात सजए लगल। हम नहि चाहैत छलहुँ हमर परदादाक नाम सेहो एना—”

“जयनारायण बाबू अपन पक्षपात मानि लेलनि। तौ अपन डर नुकेलह।”

ई पाँति लगल। अभिराम किछु क्षण उत्तर नहि देलक।

“हँ,” अन्ततः कहलक। “हम नुकेलहुँ।”

माधवीक आँखि भरि आयल, मुदा ओ रोइली नहि। “धन्यवाद। एखन पहिल साफ वाक्य।”

अभिराम धीरे कहलक, “हमरा माफ कऽ दे।”

“माफी आ विश्वास एक दिनमे एके ठाम नहि घुरैत।”

ओ कक्षसँ निकलए लगली। अभिराम पुछलक, “कतऽ जा रहल छह?”

“विनय बाबू लग। कागजक सूचना देब।”

“हम संग चलब।”

माधवी घुरि कऽ देखली। “जाँचक लेल चल। हमर संग कहि कऽ नहि।”

दुनू बरामदामे समान दूरी पर चलल। पहिने एही बाट पर अभिराम छाता ओकर दिस झुका दैत छल, माधवी ओकर मोटरसाइकिलक गति पर झगड़ैत। आइ बरखा नहि, तइयो बीचमे अदृश्य छाता जकाँ दूरी छल।

विनय प्रतिलिपि देखिते पहिल प्रश्न कएलनि, “मूल कतऽ?”

“हमर घरमे,” अभिराम कहलक।

“कते बजे भेटल?”

“काल्हि राति करीब नौ।”

“सूचना एखन किएक?”

अभिराम एक क्षण माधवी दिस देखलक, फेर नहि। “हम गलत निर्णय लेलहुँ। पहिने सत्यापन करए चाहलहुँ। परिवारक नाम देखिकऽ डरि गेलहुँ।”

विनयक चेहरा कठोर भेल, मुदा आवाज समतल। “मूल कागज एहि बीच ककर पहुँचमे?”

“माय आ हम। दराज बन्द। माय घरमे।”

“केओ छूने?”

“हम दस्ताना पहिरि। माय बाहरी पोटरी छूने, पन्ना नहि।”

“ठीक। एखन पुलिसक दू कर्मी अहाँ संग जाएत। मूल जप्त नहि—पहिने स्वैच्छिक सुपुर्दगी सूची, फोटो, स्थिति, परिवारक कथन। जँ प्रकरणसँ सम्बन्ध पुष्ट, तखन विधिक संरक्षण।”

अभिराम सिर झुका देलक। “ठीक।”

जयनारायण ओतऽ पहुँचलाह तखन सभ बात दोहराओल गेल। ओ प्रतिलिपि बहुत देर देखलनि। परदादाक नाम पर नहि अटकलाह; पन्नाक तारीख, मुहर, काटल किनार, लाल पेन्सिल, आवेदन-संख्या देखलनि।

“माधवेश्वर झा तोहर पुरखा?”

“हाँ।”

“तौँ कागज नुकेलह?”

“एक राति।”

“किएक?”

“डर।”

जयनारायण ओकरा देखलनि। काल्हि अपन पक्षपात मानबाक बाद सम्भवतः ओ जल्दी दण्ड देबाक मनस्थितिमे नहि छलाह। “डर मनुष्यक अछि। स्रोत रोकब जाँचक दोष। दुनू अलग लिखू। तोहर डरक अपमान नहि करब, मुदा कागजक मार्ग साफ रहत।”

माधवी चुप।

जयनारायण फेर कहलक, “आ एक बात। परिवारक सम्बन्ध अपराधक सम्बन्ध नहि। कागज जे कहत, ओतबे।”

अभिराम “हँ” कहलक। ई वही बात छल जे ओकरा काल्हि सुनबाक चाही छल, मुदा ओ पूछलहि नहि।

घरक कागज विधिसम्मत रूपेँ लाओल गेल। अभिरामक माय पूरा घटना लिखित देलीह—संदूक कखन सँ, ककर, काल्हि के खोललक। ओ पुलिसक कर्मी केँ चायो देलीह। “कागज लऽ जाउ, मुदा लिफाफा मोड़ब नहि। पुरान अछि।”

एक कर्मी मुस्कुरायल। “नहि मोड़ब।”

माधवी सेहो संग गेल छलीह, मुदा अभिरामक घरक ओसारा पर ओकरा अजीब पीड़ा भेल। काल्हि जँ ओ एतऽ पहिल बेर अबितथि, सम्भवतः मायक संग हँसैत, रेडियो, बकरी, छोट बगिचा देखैत। आइ ओ साक्ष्य-सूचीक भाग जकाँ घर देखैत छली। नेहमे दरार केवल दू मनुष्यक बीच नहि पड़ैत; ओकर छाया स्थान पर सेहो पड़ैत अछि।

अभिरामक माय माधवी केँ अलग एक गिलास पानी देलीह। “हमर बेटा मूर्खता कएलक।”

माधवी असहज भेली। “काकी—”

“माय छी, तँ बचाबयब दरकार नहि। ओ डरलक। डरला पर चुप भेल। ई ओकर पुरान आदति अछि। बाबाक बीमारीक समयो तीन दिन हमरा नहि कहलक जे डॉक्टर की कहने छथि। सोचलक पहिने स्वयं सम्हारि लेत।”

माधवी धीरे पुछली, “ओ कखनो सीखत?”

माय मुस्कुरेलीह। “जँ ककरो गँवएबाक डर ओकरा चुप करैत अछि, तखन सम्भवतः ककरो गँवएबाक डरहि ओकरा बजब सीखाओत।”

माधवी उत्तर नहि देली।

कचहरी घुरलापर मूल कागज उच्च-विरचना स्कैन भेल। सूत्रक स्रोत-सूचीमे पहिल बेर स्पष्ट प्रविष्टि जोड़ल गेल—“निजी पारिवारिक अभिलेख; मूल स्वैच्छिक सुपुर्द; प्रमाणिकता परीक्षणाधीन।” कोनो रहस्यपूर्ण नाम नहि, कोनो स्रोत नुकायल नहि।

अभिराम स्वयं प्रविष्टि कएलक। ओकर हाथ काँपल नहि।

“चलाउ?” विनय पूछलक।

“चलाउ,” जयनारायण कहलक।

सूत्र रासबिहारीक १९३५ आवेदन, १९४१ भूमि-सीमांकन, १९५७ नकल-अनुरोध, वर्तमान सात टोला भू-अभिलेख आ पुरान राहत-शिविर नक्शा जोड़ल लगल। पर्दा पर रेखा बेराबेरी

उभरि मेटाइत। किछु मिनट बाद एक नब चेतावनी आयल—“सीमा-बिन्दु क्रममे दीर्घकालिक विस्थापन-संगति; विस्तृत नक्शा-मिलान आवश्यक।”

जयनारायण आगे झुकलाह। “ई की कहैत अछि?”

अभिराम उत्तर देलक, “एखन केवल ई जे अलग-अलग बर्खक नक्शामे सीमा एके दिशा मे सरकल देखाइत अछि। कतेक, कखन, ककर आदेशसँ—अगिला मिलान बिना नहि कहब।”

माधवी पहिल बेर ओकरा दिस देखली। उत्तर सावधान, ठीक। मुदा व्यक्तिगत विश्वासक दरार तकनीकी सावधानीसँ तुरन्त नहि भरैत।

अभिराम ओकर नजर पकड़लक। “माधवी—”

ओ धीरे कहली, “एखन काज करू।”

बस एतबे।

सूत्रक पर्दा पर पुरान नक्शा एक-दोसराक ऊपर चढ़ैत रहल। नील, धूसर, कारी रेखा। एक सीमा धीरे-धीरे पूब दिस सरकैत देखाइत छल।

आ दुनूक बीच जे रेखा आइ खिंचल, ओकरा मापबाक कोनो नक्शा नहि छल।

अध्याय ३४ — सूत्रक नव नक्सा

भोरक पहिल उजास खिड़की धरि पहुँचल तइयो अभिलेख-कक्षक पर्दा रातिक जकाँ चमकि रहल छल। काल्हि साँझक नील, धूसर आ कारी रेखा एखनहुँ एक-दोसराक ऊपर चढ़ल। केवल अभिरामक कुर्सी खाली छल।

माधवी भीतर अएली तऽ पहिने पर्दा देखली, फेर खाली कुर्सी। काल्हिक बात मनमे तुरन्त जागि गेल—“एखन काज करू।” ओहि चारि शब्दक बाद दुनू अलग-अलग बाट घुरल छल। राति भरि माधवी सोचैत रहली जे राग बेसी छल कि दुख। उत्तर एखनहुँ साफ नहि छल।

जयनारायण खिड़की लग ठाढ़ छलाह। हाथमे पुरान नक्शाक सत्यापित छवि। “नींद भेल?”

“कने।”

“काज अधिक, नींद कम—दुनू संग रहत तऽ मन अनुमान बेसी बनबैत अछि।”

माधवी मुस्कुरेबाक प्रयास कएलनि। “ई उपदेश हमरा लेल कि अपना लेल?”

“जकरा लागय, ओकरा लेल।”

विनय ठाकुर दू मोट संचिका लऽ कऽ भीतर अएलाह। “जिला अभिलेखागारसँ १९४१क सीमांकन-बही आ १९५७क नकल-अनुरोधक सत्यापित छवि आबि गेल। राहत-शिविरक १९३४क नक्शा पहिनहि अछि। वर्तमान भू-अभिलेखक माप-सूची सेहो भेटल।”

जयनारायण पुछलनि, “अभिराम?”

“भोरहि फोन कएने छल। घरक कागजक मूल जमा-सूची फेर देखैत अछि। अबैत होएत।”

माधवी किछु नहि बजली।

दस मिनट बाद अभिराम आयल। आँखिक नीचा हलुक कारी घेरा, हाथमे चाय नहि, केवल लैपटॉप आ एक गोल नलीमे लपेटल कागज। माधवी दिस ओकर नजर गेल, मुदा ओ “सुप्रभात” कहबाक साहस नहि जुटा सकल।

“ई १९३४क नक्शाक पूरा आकारक छपाइ,” ओ विनय केँ देलक। “सूत्र पुरान नक्शा अपने सँ वर्तमान निर्देशाङ्क पर ठीक-ठीक नहि बिठा सकैत। कागज सिकुड़ल, किनार फाटल, मापक पद्धति अलग। पहिने स्थिर बिन्दु मनुष्य केँ चुनबाक पड़त।”

जयनारायण तुरन्त कहलनि, “तँ पहिने ई लिखू। बादमे केओ नहि कहय जे यंत्र अपने सभ ठाम बिठा देलक।”

अभिराम माथ हिलौलक। स्रोत-पंजीमे नब पाँति जोड़लक—“प्रारम्भिक स्थिर-बिन्दु चयन मानवीय; प्रत्येक बिन्दु स्वतंत्र अभिलेखसँ सत्यापनाधीन।”

माधवी ओकर हाथ देखैत रहली। काल्हि तक स्रोत रोकने हाथ आइ स्रोतक सीमा पहिने लिखि रहल छल। विश्वास घुरल नहि, मुदा परिवर्तन देखाइत छल।

चारि स्थिर बिन्दु चुनल गेल—पुरान पोखरिक पश्चिम घाट, शिवमन्दिरक चबूतरा, नदीक पुरान बाँक जाहि पर १९३४क नक्शामे कटाव-चिह्न छल, आ कचहरीक उत्तर-पश्चिम कोन। सड़क केँ जानि-बुझि बिन्दु नहि बनाओल गेल; सड़क बादक निर्माण छल।

“वसुधा दीदी एही बात पर अटकल छलीह,” माधवी धीरे कहली। “पुरान सीमा ‘उत्तर पोखरि’ छल, नब नकलमे ‘उत्तर सड़क’। सड़क बादमे बनल।”

विनय पन्ना पलटलनि। “तिथि देखू। सड़कक पहिल निर्माण-अनुमति १९६८। १९४१क सीमांकनमे ‘सड़क’ लिखल अछि।”

जयनारायणक भौंह तनल। “तँ १९४१क नकलमे १९६८क वस्तु?”

“सम्भवतः बादक नकलमे शब्द बदलल,” अभिराम कहलक। “मूल १९४१ बहीक छवि आवश्यक अछि। एखन जे अछि, १९७२मे बनल प्रमाणित नकल।”

“ठीक,” जयनारायण कहलनि। “विसंगति अछि; छल कहबाक जल्दी नहि।”

सूत्रक काम शुरू भेल। पुरान नक्शाक रेखा एक-एक कऽ वर्तमान पर चढ़ल। पहिने आकार बेकायल। पोखरि मिलल तऽ मन्दिर हटि गेल; मन्दिर मिलल तऽ नदीक बाँक। अभिराम कागजक सम्भावित सिकुड़न प्रतिशत बदलैत रहल। प्रत्येक परिवर्तन पर्दाक कोनमे दर्ज होइत रहल।

माधवी ध्यानसँ देखैत छली। “ई खेल जकाँ लगैत अछि, मुदा एक प्रतिशत गलत भेल तऽ कतेक जमीन सरकि जाएत?”

“एहि माप पर लगभग तीस सँ पचास हाथ धरि,” अभिराम कहलक। “तँ सूत्रक एकटा नक्सा नहि, सम्भावित सीमा-पट्टी निकालब आवश्यक।”

“पट्टी?”

“एकदम पातर रेखा झूठा निश्चय देत। जे सीमा किछु हाथ एतऽ-ओतऽ हो सकैत अछि, ओकरा पट्टी रूपमे देखाउ।”

जयनारायण हलुक मुस्कुरौलनि। “काल्हि धरि यंत्र निश्चित बाजैत छल, आइ ‘हो सकैत’ सीखि गेल।”

अभिराम कहल, “काल्हि धरि परिचालको मूर्ख छल।”

माधवी अनायास ओकरा दिस देखली। अभिराम नजर नहि हटेलक, मुदा बात आगाँ नहि बढ़ौलक।

दू घंटाक बाद पहिल साफ चित्र बनल। सात टोला क्षेत्रक पुरान सीमा सात अलग रंगक पातर पट्टीमे, वर्तमान सीमा मोट कारी रेखामे। सबहक अन्तर एके दिशा—पूब-दखिन। दूरी एक समान नहि, मुदा क्रम एके। जे जमीन सात टोला सीमासँ घटल, ओकर बहुत हिस्सा लगक पुरान घराना-जमीनमे जुड़ल देखाइत छल।

सूत्रक टिप्पणी आयल—“सीमा-बिन्दु परिवर्तन यादृच्छिक मापन-त्रुटि सँ कम संगत; दिशा-समानता उच्च। कारण अथवा कर्ता निर्धारित नहि।”

जयनारायण पुछलनि, “सरल मैथिलीमे?”

अभिराम उत्तर देलक, “जँ केवल मापमे भूल होइत, कखनो पूब, कखनो पश्चिम, कखनो बेसी, कखनो कम होइत। एतऽ सातो क्षेत्रमे सीमा लगभग एके दिस सरकल अछि। ई संयोग हो सकैत अछि, मुदा सम्भावना कम।”

“जानि-बुझि?” माधवी पुछली।

“सूत्र एतेक नहि कहि सकैत।”

“तूँ?”

अभिराम रुकल। “हम कहब—ककरो निर्णयक सम्भावना मापन-दोषसँ बहुत बेसी अछि। मुदा ‘जानि-बुझि’ कहबाक लेल अभिलेखक क्रम देखब।”

विनय १९४१क सीमांकन-बही खोललनि। सात टोला प्रविष्टि सभ एके सप्ताहमे संशोधित। तीन पन्ना पर एके लाल पेन्सिलक छोट टिप्पणी—“सीमा सुधार।” क्षेत्र-मुआयना तिथिक खाने दू पन्नामे खाली, बाँकी पाँचमे एके तिथि। उपस्थित ग्राम-प्रतिनिधिक हस्ताक्षर नहि।

“ई साधारण प्रक्रिया छल?” माधवी पुछली।

विनय कहलनि, “ओहि समयक नियम पूरा देखब। मुदा एके दिन पाँच क्षेत्रक निरीक्षण, बिना प्रतिनिधि हस्ताक्षर—प्रश्न अवश्य उठैत अछि।”

जयनारायण रासबिहारीक १९३५ आवेदन निकाललनि। “एतऽ की लिखल?”

अभिराम पढ़लक—“भूकम्प-पुनर्वासक सामुदायिक सीमा पुरान पोखरि, चूल्हा-ठाम आ राहत-शिविर सूचीसँ मिलान करि स्थिर कएल जाए; अनुपलब्ध मूलक कारण भविष्यक नकलमे सीमा बदलल नहि जाए।”

कक्ष किछु क्षण चुप भेल।

माधवीक देहमे सिहरन उठल। “ओ पहिने सँ बुझैत छलाह जे मूल गायब भेल तऽ सीमा बदलि सकैत अछि।”

“बुझैत छलाह, कि डरैत छलाह,” जयनारायण सुधारलनि। “दुनूमे अन्तर अछि।”

सूत्र फेर गणना कएलक। एहि बेर १९५७क नकल-अनुरोध जोड़ल गेल। ओहि आवेदनमे सात टोला दिससँ शिकायत—“पुरान सामुदायिक चूल्हा-ठाम अभिलेखमे घराना-खाता भीतर देखाओल।” आवेदनक निपटारा: “पुरान मूल उपलब्ध नहि; वर्तमान सीमांकन मान्य।”

माधवी धीरे कहलनि, “तँ गलती एक बेर नहि। बादक शिकायत सेहो दबि गेल।”

विनय हाथ उठौलनि। “दबि गेल—ई शब्द एखन नहि। ‘स्वीकृत नहि भेल’ कहू। कारण एखन ज्ञात नहि।”

“कानून सब शब्दक पयर नापैत अछि,” माधवी बुदबुदेली।

जयनारायण सुनि लेलनि। “आ अपराधी ओही पयरक बीच चलैत अछि।”

दुपहर बाद सभ सात टोला दिश निकलल। कागजी रेखा जमीन पर कोना देखाइत अछि, ई देखब आवश्यक छल। हाथमे धएल मापक यंत्र, पुरान नक्शाक छपाइ, वर्तमान खाता—सभ संग।

डोमाहीक किनार पर पहिल बिन्दु पुरान पोखरि लग पड़ैत छल। नक्शाक अनुसार सामुदायिक बाट पोखरि सँ कमारपट्टी धरि सीधा जाइत छल; वर्तमानमे बीचमे ऊँच देवाल आ निजी गोदाम। गोदामक मालिक उपस्थित नहि। बाहर पहरेदार कहलक, “ई जमीन बहुत पुरान खरीदक अछि।”

“कतेक पुरान?” विनय पुछलनि।

“हम की जनैत छी, बाबू। हम पहरा दैत छी।”

जयनारायण ओकर नाम लिखलनि, खरीद नहि।

आगाँ मुसहरीक बगल एक बूढ़ि स्त्री, फुलो देवी, माटि लीपैत छलीह। नक्शा देखिते हँसलीह। “कागजमे बाट खोजैत छी? हमर माय कहैत छलीह, एतऽ बरियात चलैत छल। एखन देवाल।”

माधवी घुटना मोड़ि हुनका लग बैसली। “अहाँक माय ककरा सँ सुनने छलीह?”

“अपन माय सँ। हम तऽ कथा सुनलहुँ। प्रमाण अहाँ सभ खोजू।”

जयनारायणक चेहरा प्रसन्न भेल। “ई उत्तर नीक अछि।”

फुलो देवी हँसलीह। “बूढ़ लोकक कथा लिखब तऽ आध झूठ, आध साँच। मुदा देवाल नया अछि, ई आँखि देखल।”

अभिराम वर्तमान निर्देशाङ्क दर्ज करैत रहल। माधवी ओकरा लग नहि गेली, मुदा दूरसँ देखली जे ओ प्रत्येक लोकक कथन केँ “लोकस्मृति—स्वतंत्र सत्यापन आवश्यक” नामसँ जोड़ैत अछि।

साँझ धरि सातो क्षेत्रक तीन-तीन बिन्दु जाँचल गेल। परिणाम पूर्ण नहि, मुदा दिशा फेर एके। जहाँ पुरान स्थिर चिन्ह बचल छल, वर्तमान सीमा ओहि सँ हटि घराना-दिसक भूभाग बढ़बैत छल। जहाँ चिन्ह नष्ट, सूत्र “अनिश्चित” लिखलक।

कचहरी घुरलापर जयनारायण नब नक्सा प्रिन्ट करौलनि। पुरान सीमा नील पट्टी, वर्तमान कारी, बीचक हानि लाल छायामे।

“ई अदालतमे एखन नहि,” विनय कहलनि। “पहिने अभिलेखपाल, सर्वेक्षक आ मूल पन्नाक प्रमाणिकता।”

“मुदा वसुधाक जमीन-मुकदमामे ई बहुत पैघ बात,” माधवी कहली।

“हँ,” जयनारायण उत्तर देलनि। “आ सम्भवतः एही कारणे वसुधा बेचैन छलीह। मुदा याद राखू—जमीनक छल सिद्ध भेलासँ हत्या करनिहार अपने नहि निकलि जाएत।”

माधवी सिर हिलेली।

अभिराम नक्साक एक प्रति ओकरा दिस बढ़ौलक। “अहाँ राखू। स्रोत-सूची पाछाँ अछि।”

माधवी लेलनि। “धन्यवाद।”

दू साधारण शब्द। काल्हिक दरार नहि भरल, मुदा पहिल बेर ओकर किनार पर हाथ राखल गेल।

अभिराम धीरे कहलक, “एहि नक्सामे एक बात आरो अछि।”

“की?”

“सातो पुरान सीमाक मूल मिलानमे एक चिह्न बेराबेरी आयल—गोलक भीतर सात बिन्दु। स्कैन खराब अछि, मुदा तीन अलग स्रोतमे।”

माधवीक नजर तीक्ष्ण भेल। “सातम साक्षी?”

“नाम नहि देब एखन। केवल चिन्ह।”

जयनारायण दूरसँ सुनि कहलनि, “नीक। नाम रहमत काका देताह कि कागज—काल्हि देखब।”

माधवी नक्सा मोड़ली नहि। सीधा पुट्टीमे राखली। बाहर अन्हार बढि रहल छल। जमीनक रेखा कागज पर सरकल छल; ककर हाथसँ, से एखनहुँ अन्हारे।

अध्याय ३५ — रहमत काकाक गाँठि

रहमत काकाक दुकान कचहरीक पछिला गलीमे एहन ठाम छल जतऽ नव किताब बिकैत नहि, पुरान किताब मरबासँ बचैत छल। दरबज्जा आध खुलल, भीतर गोंद, कागज, कपड़ा, धूरि आ पुरान चमड़ाक मिली-जुली गन्ध। छतसँ धागाक छोट-छोट गुच्छा लटकल—उज्जर, करिया, पीयर, हरियर, नील।

माधवी भीतर पयर रखिते ऊपर देखली। “एतेक रंग?”

रहमत काका बिना माथ उठौने कहलनि, “रंग देखिकऽ कथा नहि बनाउ, बेटी। काल्हि अंबिका फोन पर कहि चुकलीह जे अहाँ सभ नील धागाक पाछाँ पड़ल छी।”

अभिराम एक क्षण माधवी दिस देखलक। माधवीक मुँह पर हलुक मुस्की आयल। “अंबिका काकी पहिने सँ खबर पहुँचा देलनि?”

“ओ खबर नहि पहुँचबैत छथि, आदेश दैत छथि।” रहमत काका चश्मा माथ पर चढ़ौलनि। “बैसू।”

दुकानमे तीन कुर्सी छल, चारि लोक। जयनारायण अपन छोट मोढ़ा बाहरसँ खींचि अनलनि। विनय कागजक पुट्टी खोललनि। पहिने नील धागाक जाँच-छवि, तकर बाद देवालक खोखरसँ भेटल गाँठिक बड़ा चित्र, फेर नछत्तर-पोथीक सिलाइमे अँटकल सूतक चित्र।

रहमत काका तुरन्त हाथ नहि लगौलनि। “मूल कतऽ?”

“जाँचघरमे,” विनय कहलनि।

“ठीक। फोटो सँ रंग देखब, गाँठि देखब; उमेर नहि कहब।”

जयनारायण हँसलाह। “सभ लोक एखन सीमा लिखए लगल।”

रहमत काका फोटो आँखिक लग अनलनि। “ई गाँठि पुस्तक-बँधनीक नहि।”

अभिराम पुछलक, “किएक?”

“बँधनीमे सूत भीतर कसैत छी, गाँठि मेरुदण्डक पाछाँ नुका दैत छी। ई देखू—दू फेरा, बीचमे छोट कसाव, फेर एक छोर जानि-बुझि लम्बा छोड़ल। ई चिन्ह करबाक गाँठि अछि।”

“ककर चिन्ह?” माधवीक प्रश्न तुरन्त निकलल।

रहमत काका चश्मा उतारि ओकरा देखलनि। “एतऽ फेर जल्दी। रंगक कोनो एक सरकारी भाषा नहि छल। एक घरमे नीलक अर्थ कन्या, दोसरमे पूजा-पोथी, तेसरमे केवल एही लेल जे उज्जर सूत समाप्त। जँ अहाँ ‘नील बराबर फलाँ परिवार’ लिखब तऽ हम अपन बयान फेर लऽ लेब।”

विनय हलुक हँसलनि। “एहि बात कै पहिल पाँतिमे लिखब।”

रहमत काका उठि दुकानक पाछाँ गेलाह। ओतऽ लकड़ीक आलमारीक नीचा एक चपटा संदूक। चाबी हुनकर कुर्ताक भीतर डोरीमे। खोलला पर कपड़ामे लपेटल दर्जनो पातर बही।

“हमर सम्पत्ति ई अछि,” ओ कहलनि। “दुकान किरायाक, घर छोट, पुत्र बाहर दिन-मजूरी पर। मुदा ई बही बेचि देब तऽ तीन पीढ़ीक हाथक काम चलि जाएत। तँ गरीबीमे सेहो एकरा बेकार वस्तु नहि मानलहुँ।”

माधवीक मन एकाएक दुलारी पर गेल। साधारण लोकक चीज सभ दूसराक नजरमे बेकार वस्तु, मुदा ओहीमे इतिहासक पयर बचल।

रहमत काका एक बही खोललनि। पन्ना पर तारीख, ग्राहकक नाम, जिल्दक कपड़ा, धागाक रंग, मरम्मत-काज। पुरान प्रविष्टि कतेको हाथक—ककरो अक्षर गोल, ककरो पातर, ककरो उर्दू, ककरो मैथिली, ककरो केवल निशान।

“ई सभ अहाँ लिखने?” अभिराम पुछलक।

“हम कतऽ नब्बे बर्खक?” रहमत काका हँसलाह। “दुकान पहिने हमर पितामहक गुरु लग छल। फेर हुनकर हाथ, फेर बाबूजी, फेर हम। नाम बदलल, गोंदक गन्ध नहि।”

जयनारायण पुछलनि, “१९३४ आसपासक किछु अछि?”

“तिथि सँ नहि, काज सँ खोजब।”

ओ पन्ना बेराबेरी पलटैत रहलाह। बीच-बीचमे उँगुरी रोकि कागजक मोटाइ छूटैत। अभिराम अधीर, माधवी चुप। लगभग पन्द्रह मिनट बाद रहमत काका एक पन्ना पर ठहरलाह।

“एतऽ।”

प्रविष्टि पुरान छल। किनार पर कारी स्याही, बीचमे नील पेन्सिलक बादक टिप्पणी। रहमत काका धीरे पढ़लनि—“घराना-पत्रक नकल... किनार फाटल... नील सूत न हटेब... कन्याक निज चिन्ह...”

माधवीक साँस अटकली। “कन्या?”

रहमत काका अगिला शब्द पर चश्मा कसि लेलनि। “नाम आध घिसल। ‘कुसु...’ देखाइत अछि।”

अभिराम तुरन्त फोन निकालए लगल, फेर विनय रोकलनि। “पहिने पूरा पन्नाक फोटो विधिसम्मत।”

रहमत काका प्रसन्न भेलाह। “नीक। पुरान बहीक हँसी-खेलक छवि बनेबय नहि आएल छी।”

फोटो, माप, बहीक आवरण, पृष्ठ-संख्या सभ दर्ज भेल।

माधवी पुछली, “ई रासबिहारीक नील धागा नहि?”

रहमत काका सिर हिलौलनि। “एहि प्रविष्टिक अनुसार नहि। रासबिहारीक कार्य-पचीं पर नील सूत बाँधल गेल, मुदा सूत ‘कन्याक निज चिन्ह’ लिखल अछि। पुरुषक नाम अगिला पाँतिमे अलग—‘नकलनवीस रासबिहारी’। जँ ई वही कुसुमा छथि जिनकर कथा अहाँ सभ खोजैत छी, तऽ नील धागा हुनकर चिन्ह छल, रासबिहारीक नहि।”

माधवीक मनमे सपना चमकल—लाल ओढ़नी, नील धागा। ओ तुरन्त अपने केँ रोकली। “सपना अलग।”

जयनारायण सुनि मुस्कुरौलनि। “आ बही अलग।”

अभिराम बहीक प्रविष्टि केँ सूत्रमे जोड़बाक अनुमति माँगलक। रहमत काका पुछलनि, “सूत्र की करत?”

“अक्षर, तिथि, नाम, धागाक उल्लेख, बाकी स्रोतसँ मिलान।”

“आ बादमे कहत—नील धागा देखल तऽ कुसुमा?”

अभिराम कने लजायल। “पहिने कहि सकैत छल। एखन नहि। हम नियम जोड़ब—‘स्थानीय/निज संकेत; सार्वत्रिक अर्थ नहि।’”

रहमत काका ओकरा ध्यानसँ देखलनि। “यंत्र सीखैत अछि?”

“जँ मनुष्य गलती मानि सिखबय, तऽ।”

“मनुष्य?”

अभिराम एक क्षण माधवी दिस देखलक। “ओहो कखनो-कखनो।”

माधवी नजर बही पर रखली।

रहमत काका दोसर पन्ना खोललनि। “रंगक बात बुझू। पुरान कचहरीमे अलग-अलग गठरी चिन्हबाक लेल कखनो धागा लगैत छल, मुदा नियम ठाम-ठाम अलग। लाल कपड़ा न्यायालयी बस्ता हो सकैत, करिया सूत लेखा-बही, पीयर विवाह-पोथी—मुदा ई सब सामान्य सत्य नहि। बँधनिहार अपन ग्राहकक आदति जानैत। इतिहास केवल सरकारी मुहरमे नहि, हाथक ढंगमे सेहो बचैत अछि।”

माधवी पुछली, “अहाँ एतेक कागजक कथा याद कोना रखैत छी?”

रहमत काका सूखल हँसी हँसलाह। “जे लोक नाम लिखैत अछि, ओकर नाम कागज पर रहैत। जे कागज बचबैत अछि, ओकर नाम कतहु नहि। तँ हम कथा याद रखैत छी—अपने लेल।”

ओ एक फाटल पोथी उठौलनि। “देखू, ई विधवा पेंशनक बही। पाँच बर्ख पहिने नालीमे भीजि गेल छल। सभ कहल फेकि दिअ। सुखा कऽ पन्ना अलग कएलहुँ, फेर बाँधलहुँ। भीतर बीस स्त्रीक अँगूठा-छाप छल। जँ फेकि दैतहुँ, ककरो लेल ई केवल पुरान कागज; ओ स्त्री सभ लेल पाँच-पाँच मासक अनाज।”

दुकानक बाहर सँ साइकिलक घंटी बजल। भीतर किछु क्षण कोनो आवाज नहि।

जयनारायण धीरे कहलनि, “ताहि लेल अहाँ हमरा जाँचमे जरूरी छी।”

“हम जरूरी नहि,” रहमत काका उत्तर देलनि। “काज जरूरी अछि।”

बहीक पुरान प्रविष्टि फेर पढ़ल गेल। नील सूतक पाँति नीचा एक छोट निशान—गोलक भीतर सात बिन्दु।

माधवी उँगुरी हवामे रोकि देली, छूली नहि। “एही चिन्ह नक्सामे सेहो अछि।”

विनय नक्साक छवि खोललनि। तीन स्रोतक धुँधला चिन्ह आ बहीक साफ निशान एक संग रखल गेल। आकार पूर्ण एक नहि, मुदा विन्यास एक—बीचमे एक बिन्दु, चारू कात छह।

अभिराम कहलक, “सूत्र दृश्य-समानता देत, मुदा अर्थ नहि।”

“अर्थक कने पयर एतऽ अछि,” रहमत काका कहलनि। “एहि पन्नाक पाछाँ देखू।”

पाछाँ हलुक अक्षर—“सात चिन्हक पर्ची; फाटल भाग जिल्द भीतर सुरक्षित।”

विनयक चेहरा बदलल। “कोन जिल्द?”

रहमत काका अगिला पाँति पढ़लनि। “दाखिल-बही, संवत् ... अंक घिसल। नीचा अंग्रेजी अङ्कमे 1935। ‘जिल्द २७’।”

जयनारायण तुरन्त पुछलनि, “ई बही एतऽ अछि?”

“नहि। अदालत अभिलेखागारक। बहुत बर्ख पहिने मरम्मत लेल एतऽ आयल होएत। फाटल निजी कागज फेकि देबाक बदला पुरान बँधनिहार कखनो जिल्दक भीतर एक पातर जेब बनाकऽ राखि दैत छल। सोचैत—मालिक फेर पूछत।”

माधवीक हृदय तेज धड़कए लागल। “तँ आधा पत्रक दोसर भाग—”

जयनारायण तुरन्त रोकलनि। “एखन केवल सम्भावना।”

“हँ,” माधवी अपने केँ सँभालली। “सम्भावना।”

अभिराम अभिलेखागारक सूची खोललक। १९३५क दाखिल-बही जिल्द २७ दर्ज छल, मुदा टिप्पणी—“नाजुक; सीमित उपयोग।”

विनय फोन उठौलनि। “आइ नहि खोलब। अभिलेखपाल, वीडियोग्राफी, संरक्षणक लोक—सभ रहत। ई निजी टुकड़ा हो सकैत अछि, खाली कागजो।”

रहमत काका बही बन्द कएलनि। “धैर्य रखू। गाँठि जोर सँ खींचब तऽ सूत टूटैत अछि।”

माधवी नील धागाक फोटो फेर देखली। एतेक दिन ओ एक पुरुष—रासबिहारी—दिस इशारा बुझाइट छल। एखन ओ कुसुमाक अपन छोट घोषणा बनि उठल—“ई हमर चिन्ह।”

बाहर निकलैत अभिराम धीरे कहलक, “हमरा लग एकटा बात कहबाक अछि।”

माधवी रुकली, मुदा ओकरा नहि देखली।

“काल्हि जँ हम पहिने कहि दैतहुँ, आइक काज बदलैत नहि। मुदा अहाँक हमरा देखबाक ढंग बदलैत। हम ई बुझि रहल छी।”

माधवी किछु क्षण बाद उत्तर देली, “बुझब शुरू करब आ विश्वास घुसब—दू अलग काज अछि।”

“जानैत छी।”

“नीक।”

ओ आगाँ चलली। अभिराम कने पाछाँ। एहि बेर दूरी काल्हि जतेक कठोर नहि छल, मुदा समाप्तो नहि।

पाछाँ दुकानमे रहमत काका फेर अपन फाटल किताब पर झुकि गेलाह। इतिहासक मोट-मोट नाम बाहर अदालतमे घुमि रहल छल; एक बूढ़ बँधनिहार चुपचाप सूतमे गाँठि लगा रहल छल, ताकि ककरो छोट नाम पन्नासँ फेर नहि खसय।

अध्याय ३६ — सातम साक्षी शब्दक असल अर्थ

अगिला भोर जिला अभिलेखागारक संरक्षण-कक्षमे हवा साधारण कक्षसँ ठंड छल। मेज पर उज्जर कपड़ा, पातर दस्ताना, काँचक वजन, प्रकाशक दू समतल दीप। १९३५क दाखिल-बही जिल्द २७ केँ एना राखल गेल जकाँ बीमार वृद्ध केँ करवट देल जा रहल हो।

अभिलेखपाल शशिभूषण मिश्र पहिने स्पष्ट कएलनि, “जिल्दक भीतर किछु भेटल तऽ ओ स्वतः एहि प्रकरणक साक्ष्य नहि बनत। पहिले उत्पत्ति, कागज, स्याही, फाटल किनार, लिखावट—सभ जाँच।”

जयनारायण कहलनि, “हमरा एही वाक्य चाही छल।”

माधवीक हथेली ठंड छल। सपना, हवेली, आधा पत्र, नील धागा—सभ एक संग मनमे उठि रहल। ओ अपने सँ कहली—जे देखब, ओतबे।

रहमत काका सेहो उपस्थित छलाह, मुदा मेजसँ दू हाथ दूर। “जिल्द हम नहि खोलब। हमरा केवल बँधनीक ठाम देखेबाक अछि।”

वीडियो शुरू भेल। बहीक बाहरी भागक चारू कात छवि। मेरुदण्डक कपड़ा कने उठल, मुदा मूल सिलाइ स्थिर। संरक्षण-कर्मि पातर औजारसँ भीतरक ढीला आवरण अलग कएलनि। पहिल तहमे धूरि, दोसरमे पुरान कागजक रेशा। तेसर तहक पाछाँ एक पातर जेब-जकाँ मोड़।

रहमत काका दूरसँ कहलनि, “ओही ढंग। पुरान कारीगर फाटल टुकड़ा फेकि नहि दैत छल।”

जेब खोलल गेल। भीतर कागजक एक छोट, भूरा टुकड़ा। एक किनार सीधा, दोसर अनियमित फाटल। स्याहीक चारि पाँति देखाइत।

माधवी साँस रोकली।

विनय हाथसँ संकेत कएलनि—कोनो लोक आगाँ नहि। पहिने फोटो। माप। पुट्टी क्रमांक। कागजक स्थिति। तकर बाद टुकड़ा अलग पारदर्शी थाली पर राखल गेल।

अभिराम अपन पर्दा पर हवेलीसँ भेटल आधा पत्रक उच्च-विरचना छवि खोललक। दुनू छवि एक-दोसराक लग। फाटल किनारक दाँत-जकाँ रेशा देखाइत छल—एक ठाम छोट त्रिकोण, दोसर ठाम लम्बा रेशा, बीचमे स्याहीक आध अक्षर।

“स्वतः जोड़ू नहि,” जयनारायण कहलनि।

“नहि,” अभिराम उत्तर देलक। “पहिने केवल किनार-समानता।”

सूत्र तीन अलग माप-पद्धतिसँ फाटल रेखा तुलना कएलक। परिणाम—“उच्च दृश्य-संगति; भौतिक मूल-मिलान आवश्यक।”

जयनारायण माधवी दिस देखलनि। “देखलहुँ? ‘दोसर भाग’ एखनहुँ नहि कहल।”

माधवी सिर हिलेली।

कागज-जाँच विशेषज्ञ केँ तत्काल छवि भेजल गेल। मूल दुनू टुकड़ा एके ठाम आनबाक विधि शुरू भेल। ओ दिन पूर्ण भौतिक मिलान सम्भव नहि छल, मुदा अक्षरक आध भाग एतेक साफ जुड़ैत छल जे कक्षमे उपस्थित सबक धैर्य कठिन परीक्षा देत।

हवेलीसँ भेटल भागक अन्तिम दृश्य पाँति छल—“...पहिल छह चिन्ह जतेक जरूरी...”

नब टुकड़ाक पहिल पाँति—“...सातमो घराना-पत्रक चिन्ह ततेकहि जरूरी...”

माधवीक मुँहसँ अनायास निकलल, “सातमो।”

शशिभूषण मिश्र पुछलनि, “अक्षर निश्चित?”

रहमत काका आगाँ झुकलनि, छूला बिना। “हमरा ‘सातमो’ देखाइत अछि, मुदा पुरान ‘त’ आ ‘स’ घुलि सकैत अछि। लिखावट विशेषज्ञ पढ़त।”

दुपहर धरि प्रारम्भिक पठन तैयार भेल। जुड़ल पाठक सम्भावित रूप एहि प्रकार:

“...कागज न्यायालय धरि नहि पहुँचल तऽ नकलक सात चिन्ह मिलाएब। पहिल छह चिन्ह जतेक जरूरी, सातमो घराना-पत्रक चिन्ह ततेकहि जरूरी। गोल भीतर सात बिन्दु राखल अछि, जाहिसँ नकल बदलल गेल तऽ चिन्ह टूटत। कार्य-पर्ची पर कुसुमा हँसि एकरा सातम साक्षी कहलीह...”

पाठ एतऽ कने धुँधला, फेर साफ:

“...नील सूत हुनक निज चिन्ह, अभिलेखक नहि...”

माधवी आँखि बन्द कएलनि। नील धागा, जे एतेक दिन रहस्यक केन्द्र जकाँ लगैत छल, अचानक बहुत मानवीय भऽ गेल—एक युवतीक अपन छोट चिन्ह।

अभिराम धीरे कहलक, “तँ ‘सातम साक्षी’ व्यक्ति नहि।”

जयनारायण तुरन्त सुधारलनि, “एहि पत्रमे नहि। शब्द दोसर ठाम दोसर अर्थो राखि सकैत अछि।”

“हँ।” अभिरामक स्वर विनम्र छल। “एहि पत्रमे—सातम प्रमाण-चिह्न।”

विनय पुरान १९३४ दस्तावेजक प्रमाण-सूची खोललनि। पहिल छह प्रमाण पहिने ज्ञात छल—राहत-सूची, पुरान नक्शा, कर-रसीद, सामुदायिक चूल्हा-ठामक विवाह-बही, पोखरि उपयोगक लेखा, सीमाक स्थानीय साक्ष्य। सातम पाँति—घराना-पत्रक पुरान स्वीकार।

“आ गोल भीतर सात बिन्दु ओकर पहचान,” माधवी कहली।

“ठीक,” विनय उत्तर देलनि। “कागज गायब भऽ जाए, नकल बचल रहय, तऽ सात चिन्ह मिलान। एक तरहक पुरान प्रमाणिकता-पद्धति।”

अभिरामक आँखि चमकल। “आ सूत्र एतेक दिन ‘सातम साक्षी’ केँ व्यक्ति-नामक सम्भावना देत रहल, कारण आसपास ‘जे देखल’, ‘गवाही’, ‘नाम’ सन शब्द छल।”

माधवी ओकरा देखली। “यंत्र भाषा बुझलक कि शब्दक पड़ोस?”

“शब्दक पड़ोस।”

“मनुष्य?”

अभिराम कने हँसल। “मनुष्य कथा बनौलक।”

जयनारायण कहलनि, “दुनू मिलि गलत भऽ सकैत अछि। एही लेल कागज।”

सूत्रक ज्ञान-सूची सुधारल गेल। पुरान वर्गीकरण—“सातम साक्षी: सम्भावित व्यक्ति/उपनाम”—काटि नब प्रविष्टि: “ऐतिहासिक कार्य-पर्वीमे सातम प्रमाण-चिह्नक अनौपचारिक नाम; व्यक्ति-परिचयक समर्थन नहि।” बदलावक कारण, स्रोत, समय सभ दर्ज।

अभिराम प्रविष्टि सेव करबाक पहिने माधवी केँ देखौलक। “किछु जोड़ब?”

माधवी पढ़ली। “एक बात—‘कुसुमाक निजी नील सूत सरकारी प्रमाण-चिह्न नहि।’ ई अलग लिखू। बादमे फेर केओ रंग देखिकऽ कथा नहि बनाउ।”

“ठीक।”

रहमत काका पाछाँसँ कहलनि, “एखन हमरा चैन।”

सब हँसि पड़ल।

मुदा पत्रक अन्तिम दू पाँति एखनहुँ पढ़ल नहि गेल छल। कागजक तहक दाग हटेबाक डिजिटल प्रक्रिया बाद अक्षर उभरल। पहिल पाँति आध मैथिली, आध तत्कालीन दफ्तरी भाषा:

“सात चिन्ह कागजक रक्षा करैत अछि, मुदा...”

अगिला पाँति स्पष्ट छल:

“जे देखैत अछि मुदा नाम नहि कहैत, ओकरा कोन लेखामे राखब?”

कक्ष फेर चुप।

माधवीक पीठमे सिहरन उठल। “ई के?”

जयनारायण उत्तर नहि देलनि।

अभिरामक पर्दा पर सूत्र तुरन्त तीन सम्भावना देखेलक—“अनाम प्रत्यक्षदर्शी”, “रूपक”, “लेखकीय टिप्पणी।” आत्मविश्वास सभमे निम्न।

माधवी हँसि देली। “कम सँ कम एखन ई ‘एकटा निश्चित आदमी’ नहि कहि रहल।”

अभिराम सेहो मुस्करायल। “सुधार भेल।”

रहमत काका पत्रक छवि दूरसँ देखैत छलाह। “कखनो कागज बनबैत लोक अपने लेल एक पाँति छोड़ि दैत अछि। सभ पाँतिक अर्थ मुकदमा नहि होइत।”

जयनारायण पुछलनि, “अहाँ केँ की लगैत?”

“हम बँधनिहार छी। अनुमानक मजदूरी नहि लैत।”

“बढ़िया,” जयनारायण कहलनि।

भौतिक मिलानक प्रारम्भिक प्रतिवेदन साँझमे आयल। कागजक रेशा, मोटाइ, जलचिह्नक अंश, स्याहीक दृश्य गुण आ फाटल किनार—सभ एके मूल पन्नाक दू भाग होबाक पक्षमे मजबूत। अन्तिम रासायनिक जाँच शेष। प्रतिवेदन साफ लिखैत छल—“समान मूलक उच्च सम्भावना; अन्तिम निष्कर्ष विस्तृत परीक्षण बाद।”

माधवी पत्रक पूरा डिजिटल रूप पहली बेर देखली। नब्बे बर्ख पहिने कुसुमा ठठामे देल नाम एतेक दिन लोकक कथा, सपना आ यंत्रक अनुमानमे मनुष्य बनि घूमैत रहल; वास्तविकतामे ओ एक कागजी सुरक्षा-चिह्न छल।

तइयो अन्तिम पाँति फेर दरबज्जा खोलि देलक—“जे देखैत अछि मुदा नाम नहि कहैत...”

“ई पाँति जमीन-मुकदमामे उपयोगी?” माधवी पुछली।

विनय उत्तर देलनि, “भावार्थ नहि। मुदा पत्रक पहिल भाग, सात प्रमाणक क्रम आ चिन्हक विवरण—जँ प्रमाणिकता सिद्ध—पुरान दस्तावेजक नकल सत्यापित करबामे उपयोगी हो सकैत अछि। हत्या-मुकदमामे सीधा साक्ष्य नहि।”

“वसुधा दीदी ई बुझि गेल छलीह?”

“हुनकर नोट देखब,” जयनारायण कहलनि। “अनुमान नहि।”

ओहि समय अभिराम चुपचाप अपन बैगसँ काल्हिक नब नक्सा निकाललक। सात टोला सीमा, सात प्रमाण, सात बिन्दुक चिन्ह। “एकटा चीज मिलि रहल अछि। १९४१क संशोधित सीमांकनमे जे गोल-सात-बिन्दु चिन्ह रहबाक चाही, ओ पाँच नकलमे नहि अछि। दू पुरान छविमे बहुत धुँधला बचल।”

जयनारायणक नजर तीक्ष्ण भेल। “अर्थ?”

“अर्थ ई जे संशोधित नकल सभ मूल सात-चिह्न श्रृंखला पूरा नहि करैत। ई अपने प्रमाण नहि जे जाली अछि, मुदा सत्यापनक पुरान पद्धति टूटल अछि।”

विनय कहलक, “एहि पर विशेषज्ञ राय चाही। सार्वजनिक किछु नहि।”

माधवी पुट्टी पर हाथ रखली। “कुसुमा एकटा हँसीमे जे नाम देलीह, ओ नब्बे बर्ष बादो जमीन बचाबय सकैत अछि।”

रहमत काका सिर हिलौलनि। “नाम नहि, बेटी। चिन्ह। नाम तऽ लोक बदलि दैत अछि।”

बात माधवीक भीतर उतरि गेल।

अभिलेखागारसँ बाहर निकलला पर साँझक हवा गरम छल। अभिराम सीढ़ी पर रुकल। “माधवी।”

ओ रुकली।

“हम काल्हिक माफी फेर नहि दोहराएब। शब्द दोहरौने विश्वास नहि घुसत। मुदा जतेक स्रोत हमर हाथमे आएत, पहिने साझा करब। अहाँ राग करू, प्रश्न करू—मुदा हम रोकब नहि।”

माधवी ओकरा बहुत देर देखली। “ई वचन हमरा नहि, जाँच केँ दिअ।”

“दुनू केँ।”

माधवीक मुँह पर क्षीण मुस्की आयल, मुदा ओ तुरन्त फेर गम्भीर भेली। “विश्वासक मरम्मत रहमत काका जकाँ होइत—पुरान कागज फेकि नब जिल्द नहि। जे फाटल अछि, ओ देखाइत रहत।”

अभिराम धीरे कहल, “हम फाटल किनार नुकाएब नहि।”

दुनू सीढ़ी उतरि गेल। बीचक दूरी एखनहुँ छल, मुदा पहिने जकाँ अनाम नहि। ओकर नाम छल—डर, चुप्पी, आ फेर सँ सीखल भरोसा।

पाछाँ संरक्षण-कक्षमे पूरा पत्रक दू भाग अलग-अलग सुरक्षित आवरणमे राखल गेल। कागज पर सात बिन्दुक छोट गोल चिन्ह स्थिर छल। मुदा अन्तिम पाँति, जे कोनो मुहरसँ बान्हल नहि छल, कक्ष खाली भेलो हवा मे जकाँ रहि गेल—

“जे देखैत अछि मुदा नाम नहि कहैत, ओकरा कोन लेखामे राखब?”

अध्याय ३७ — परिवारक टूटल घेरा

संरक्षण-कक्षसँ निकललाक दोसर भोर विनय ठाकुरक मेज पर तीनटा नब फाइल छल। एक बैंकसँ, एक दूरसंचार कम्पनीसँ, आ तेसर प्रखरक अपन कारोबारी साझेदारीक लेखासँ। ऊपर सँ देखला पर सभ साधारण कागज—तिथि, खाता, अंक, मुहर। मुदा जयनारायण कहैत छलाह, परिवारक झूठ प्रायः शब्दमे नहि, हिसाबक बीचक खाली ठाममे पकड़ाइत अछि।

अभिराम फाइल खोलबाक पहिने माधवी दिस देखलक। “पहिने अहाँ। काल्हि जे वचन देलहुँ, मोन अछि।”

माधवी कागज लेलखिन। “वचन हमरा नहि, जाँच केँ देने छलह।”

“दुनू केँ।”

ओ उत्तर नहि देलीह, मुदा फाइल अपन सोझाँ खींचि लेलखिन। विश्वासक फाटल किनार एखनहुँ देखाइत छल, तथापि ओहि किनार पर पहिल बेर नब गोंदक पातर तह पड़ल जकाँ बुझायल।

प्रखरक कारोबार कागजमे जमीन-खरीद-बिक्रीक छोट दलाली-साझेदारी लिखल छल। वास्तविकतामे पिछला दू बर्खमे ओकर तीन सौदा बिगड़ल, एक गोदामक अग्रिम धन डूबल, आ निजी कर्ज बढ़ैत-बढ़ैत अठारह लाख टाका पार कऽ गेल छल। एहि कर्जक एक भाग साधारण बैंकक नहि, सात टोला जमीन खरीदबाक चेष्टा करैत भूमि-समूहक दू साझेदारसँ आयल छल। कागजमे ऋण नहि—“अग्रिम परामर्श-शुल्क” लिखल।

माधवी पन्ना फेरली। “परामर्श ककर?”

विनय कहलक, “कोनो लिखित काम नहि। कोनो करार नहि। बस तीन किस्त। पहिल दू वसुधाक मुकदमा तेज होएबासँ पहिने, तेसर किस्त मृत्यु सँ चारि दिन पहिने।”

जयनारायण पुछलनि, “तेसर किस्तक बाद प्रखरक कर्जदारक दबाव घटल?”

“बैंकक कर्ज नहि। मुदा निजी कर्जक दू पुरान पर्ची एक्के दिन फाइल गेल। ऋण देनिहार कहैत अछि प्रखर नगद चुकता कएलक। स्रोत स्पष्ट नहि।”

अभिराम सूत्रक धन-रेखा खोललक। “ई प्रणाली केवल एक बात देखबैत अछि—जतऽ प्रखरक खाता खाली होइत गेल, ओतऽ भूमि-समूहसँ जुड़ल लोकक खाता सँ ओकर फर्ममे धन आयल। कारण नहि कहैत।”

“कारण मनुष्य खोजत,” जयनारायण कहलनि। “पहिने ई देखू—राति ओ कतऽ छल।”

विनय दोसर फाइल खोललनि। प्रखरक मुख्य दूरभाष राति एगारह बजि बाइस मिनट धरि घरक संकेत-क्षेत्रमे छल। तकर बाद बन्द। भोर चारि बजि बयालीस पर फेर चालू। एतबे तथ्य पहिने सेहो छल, मुदा परिवार कहने छल—प्रखर राति घरहि छल, दूरभाषक विद्युत-कोष समाप्त भऽ गेल छल।

नब बात दोसर नम्बर छल। सस्ता, बिना नामक एक छोट यंत्र, जे प्रखरक फर्मक कार्यालयमे उपयोग होइत कहि दर्ज छल। ओ भोर तीन बजि छत्तीस मिनट पर कार्यालयक संकेत-क्षेत्रमे सक्रिय भेल, तीन बजि उनचास पर शहरक मध्य भाग, चारि बजि चारि मिनट पर कचहरीक पश्चिम संकेत-स्तम्भ, आ चारि बजि सत्ताइस पर फेर नब भवनक पाछाँक स्तम्भमे।

माधवीक उँगुरी कागज पर रुकि गेल। “ई यंत्र प्रखरक हाथमे छल—एतकर प्रमाण?”

“एखन सीधा नहि,” अभिराम तुरन्त कहलक। “फर्मक यंत्र अछि। ककरो हाथमे भऽ सकैत अछि।”

जयनारायण अभिराम दिस देखलनि। “ठीक। सूत्रक पाँति पढ़ू, मुदा ओकरा आदमी मत बनाउ।”

अभिराम मुस्करायल नहि। ओ एखन एहि सावधानीक वजन बुझए लागल छल।

विनय एक छोट छवि सोझाँ राखलनि। प्रखरक कार्यालयक भवनक बाहरी कैमरा। भोर तीन बजि एकतीस मिनट। बरखाक कारण चेहरा साफ नहि, मुदा एक मनुष्य भीतरसँ निकलैत, हाथमे छोट थैला, हेलमेट बामा हाथमे। गाड़ी नम्बरक अन्तिम चारि अंक प्रखरक मोटरसाइकिलसँ मेल।

“घरतऽ?” माधवी पुछली।

“कार्यालय घरसँ दू गली दूर। परिवार कहैत छल ओ राति दस बाद बाहर नहि गेल।”

जयनारायण कुर्सी पर पाछाँ झुकलाह। “परिवारक बयान फेर पढ़ू।”

विनय चारि पन्ना अलग कएलनि। वसुधाक माय प्रारम्भिक बयानमे कहने छलीह—
“प्रखर राति देर धरि ओसारामे छल; हम करीब बारह बजे देखलहुँ।” सासु कहने छलीह—
“हम दू बजे पानी पीबय उठलहुँ, ओकर कोठरीक बत्ती जलैत छल।” अरुण कहने छल—

“प्रखर बाहर नहि गेल; मोटरसाइकिल आँगनमे छल।” स्वयं प्रखर कहने छल—“दस बजे बाद फोन बन्द कऽ सुतलहुँ।”

चारि कथन एकहि निष्कर्ष दिस धकेलैत छल—ओ घरमे छल। मुदा चारूमे प्रत्यक्ष देखबाक समय अलग, आ ककरो कथन चारि बजिक आसपास नहि।

जयनारायण धीरे कहलनि, “एके बात बचाबय लेल चारि लोक चारि देवाल बनौलक। बीचमे कोठरी खाली रहि गेल।”

माधवीक मनमे वसुधाक घरक पहिल दिन उठि अएल—माला फेरैत सासु, खिड़की लग प्रखर, अरुणक मापल शब्द, मायक रोदन। तखन सबकेँ एक-दोसरासँ बचैत देखल छल। आइ बुझाइट छल, ओ सभ ककरोसँ ककरो बचाबि सेहो रहल छल।

“मायजी केँ फेर पुछब?” माधवीक स्वर धीमा छल।

“पृथक-पृथक,” विनय कहलक। “कोनो सामना नहि। पहिने जे सहज टूटत, ओकरा दोसरा पर हथियार नहि बनाउ।”

प्रखरक घर पहुँचला पर बरामदामे आइ भीड़ नहि छल। मृत्यु बादक भीड़ जतेक जल्दी जुटैत अछि, ओतेक जल्दी अपन-अपन घर घुरि जाइत अछि। फूलक माला सूखि भूरा पड़ि गेल, धूपदान कोनमे उलटल, आ वसुधाक फोटो पर नब गेंदा राखल छल।

माय अकेले बैसल छलीह। हाथमे वसुधाक पुरान सलवारक फाटल सीवन। सुईमे सूत घुसबैत घुसबैत आँखि धुँधला जाइत, फेर ओ सुई नीचे रखि दैत छलीह। माधवी लग बैसली। विनय सोझाँ नहि, कने एक कात।

“मायजी,” विनय बहुत नरम स्वरमे पुछलक, “ओ राति प्रखर केँ बारह बजे देखलहुँ?”

माय सुईक नोक पर नजर टिकौने रहलखिन। “हम कहने रही।”

“एखन की मोन पड़ैत अछि?”

“हम ओकर चप्पल देखलहुँ।”

माधवीक छाती कसि गेल।

“प्रखर केँ?”

माय माथ हिलेलखिन। “नहि। ओसारामे ओकर चप्पल। कोठरीक दुआर बन्द। हम बुझलहुँ भीतर अछि।”

“तखन बयानमे ‘देखलहुँ’ किएक?”

बहुत देर कोनो उत्तर नहि। बाहर काग करकल। माय फाटल सीवन पर उँगुरी फेरैत कहलखिन, “बेटी मरि गेल छल। बेटा पर पुलिसक आँखि पड़ि रहल छल। हम... हम शब्द बदलि देलहुँ।”

माधवी हुनकर हाथ पकड़बाक चाहली, फेर रुकि गेली। शोक करुणा माँगैत छल; झूठ उत्तरदायित्व। दुनू एकहि देहमे बैसल छल।

माय स्वतः कहए लगलीह, “वसुधा आ प्रखर छोटसँ लड़ैत। फेर एक-दोसर बिना रहितो नहि। प्रखर खराब जन्मल नहि छल, बेटी। कारोबारमे फँसल। घरक लोक सोचल—कर्ज अछि, कटि जाएत। वसुधा कहलक—‘कर्ज चुकाबय लेल सात टोला बेचब?’ ओ दिन बहुत झगड़ा भेल।”

“कखन?”

“मृत्युसँ दू दिन पहिने।”

“प्रखर की कहलक?”

मायक आँखि वसुधाक फोटो पर गेल। “कहलक—‘तौँ कागज रोक, हम सभ बचि जाएब।’ वसुधा कहलक—‘हमर घर बचाबय लेल सात टोला उजाड़ब? नहि।’”

माधवीक भीतर वसुधाक आवाज जिवित भऽ उठल।

“ओ राति प्रखर बाहर गेल से अहाँ जानैत छलीह?” विनय पुछलक।

माय आँखि बन्द कएलखिन। “भोरमे मोटरसाइकिलक ध्वनि सुनलहुँ। हमरा निदा टूटल। घड़ी नहि देखलहुँ। ओ भीतर आयल, कपड़ा भीजल। हम पुछलहुँ कतऽ गेल छलह। कहलक—‘कार्यालय।’ मुँह देखिते बुझि गेलहुँ किछु भेल अछि। मुदा ओ कहलक दीदीक नाम नहि लिअ। भोरक बाद खबर आयल—वसुधा...”

वाक्य टूटि गेल। एखन रोदन आयल। धीमा, देह भीतर सँ।

माधवी हुनकर काँध पर हाथ रखली। एहि स्पर्शमे क्षमा नहि छल; केवल मनुष्यक दुःखक स्वीकार।

सासुक बयान अलग कोठरीमे भेल। पहिने ओ कहलीह हुनका किछु मोन नहि। तखन विनय केवल ई पुछलक—“दू बजे बत्ती जलैत देखलहुँ?”

ओ चुप। फेर कहलीह, “बत्ती हम जलौने रही।”

“किएक?”

“प्रखरक माय कहलीह, पुलिस फेर आए तऽ बुझत ओ भीतर सुतल अछि।”

माधवी जे बाहर बैसल छलीह, ई सुनि देहमे ठंढ उतरैत महसूस कएलनि। घरक नाम बचाबयवला वाक्य एखन अपन पूरा रूप देखबैत छल—कखनहुँ नाम बचाबय लेल घर सत्य केँ अन्हारमे राखैत अछि।

अरुणक बारी एला पर ओ पहिने प्रतिरोध कएलक। “हम ककरो झूठ बनाबय बैठक नहि कएने छी।”

जयनारायण पहिल बेर पुछलनि, “मोटरसाइकिल आँगनमे छल कहने रही।”

“हम राति दस बजे देखल।”

“भोर चारि बजे?”

अरुणक नजर हटि गेल। “नहि।”

“तखन ‘बाहर नहि गेल’ कोना?”

“घरमे सभ कहि रहल छल। हम मानि लेलहुँ।”

“आ बयानमे अपन देखल जकाँ लिखेलहुँ।”

अरुण दाँत भींचलक। “ओ समय... वसुधा मरल छलीह। माय टूटल छलीह। प्रखर डरायल। हम सोचलहुँ पहिले घर सँ पुलिस हटय, फेर—”

“फेर सत्य कहब?”

अरुण उत्तर नहि देलक।

जयनारायण कहलक, “झूठक सभसँ सुविधाजनक काल सदिखन ‘एखन नहि, बादमे’ होइत अछि।”

प्रखर घरमे नहि छल। विनय पहिने सँ जानैत छल—ओ अपन कार्यालयमे अछि। पुलिस ओकरा बजेलक, मुदा गिरफ्तारी नहि कएलक। जयनारायणक आग्रह छल—“जँ प्रमाण अछि, तकरा सोझाँ रखू। डर देखाकऽ कथन नहि बनाउ।”

कार्यालयक छोट बैठकमे प्रखरक चेहरा पछिला बेरसँ अलग छल। दाढ़ी बढ़ल, आँखि लाल, मुदा आवाज एखनहुँ तीत। “हमरा परिवार केँ फेर किएक सताओल जा रहल अछि?”

विनय बैंकक तीन पन्ना ओकर सोझाँ रखलक। “ई धन?”

प्रखर एक नजर देखलक। “व्यावसायिक अग्रिम।”

“ककर काज?”

“जमीन परामर्श।”

“सात टोला?”

प्रखरक पलक थमल। “सीधा नहि।”

“कतेक घुमा कऽ?” जयनारायण पुछलनि।

“अहाँ वकील छी?”

“नहि। प्रश्नक उत्तर नहि चाही तऽ नहि दिअ। मुदा प्रश्न रहत।”

विनय दोसर कागज रखलक—दूरभाष संकेत। तेसर—कार्यालयक कैमरा। चारिम—प्रखरक मुख्य फोन पर ओ संदेश, जे माधवी पहिल दिन एक झलक देखने छलीह। “फेर फोन नहि करू। एखन घरमे पुलिस अछि।” प्रेषकक नाम तखन नहि देखायल छल; सेवा-प्रतिलिपिमे नम्बर भूमि-समूहक दलाल विजय मल्लिकक निकसल।

प्रखरक चेहरा पहिल बेर सचमुच ढहि गेल। “ई निजी कारोबारी बात।”

“विजय मल्लिक मृत्यु-पछिला भोर अहाँ केँ किएक फोन करैत छल?”

“ओकरा खबर मिलल होएत।”

“भोर पाँच बजि दू मिनट पर ओ अहाँ केँ संदेश पठाैलक—‘कागज?’ अहाँ उत्तर देलहुँ—‘नहि भेटल।’ ई ककर कागज?”

प्रखर कुर्सीक बाँह पकड़लक।

माधवी कमरेमे नहि छलीह। ओ बाहर रचना संग बैसल। भीतरक प्रश्नोत्तर बंद दुआर पार साफ सुनाइत नहि छल। ओकरा ई नीक लगल। सत्य तमाशा नहि।

विनय अगिला पन्ना खोललक। “चारि बजि दसक चाय पीनिहारक पहिचानमे कमली देवी पहिल बेर अरुण केँ चुनलीह। समय-रेखासँ ओ सम्भव नहि। दोसर निष्पक्ष प्रक्रियामे ओ जे छवि पर ‘ई चाल सन’ कहलीह, ओ अहाँक छल। ओ निश्चित नहि छलीह, तँ हम एहि बात केँ मात्र सहायक संकेत मानैत छी।”

प्रखरक होंठ सुखि गेल। “कमली कतेको लोक देखैत अछि।”

“ठीक। तँ ई अकेले किछु सिद्ध नहि करैत।”

जयनारायण टेबुल पर उँगुरीसँ तीन धीमा, दू तेज ठकठक कएलनि। प्रखरक नजर तुरन्त हुनकर हाथ पर गेल। जयनारायण पहिल दिन खिड़कीक पट्टी पर ओकर एहि लय केँ मोन रखने छलाह। “तोहर मन घबराए तऽ उँगुरी एही तालमे चलैत अछि।”

प्रखर हाथ बाँधि लेलक। “ई अपराध अछि?”

“नहि। आदति अछि। अपराध प्रमाण कहत।”

विनय आखिरी पन्ना राखलक—भूमि-समूहक आन्तरिक लेखाक प्रतिलिपि। “सात टोला प्रकरण ‘रुकल’ तऽ अहाँक निजी देनदारीक छओ लाख टाका माफ। ई नोट विजय मल्लिकक

लेखापालक उपकरणसँ विधिसम्मत जप्त प्रतिलिपिमे भेटल। तिथि—वसुधाक मृत्यु सँ पाँच दिन पहिने।”

प्रखर बहुत देर चुप। बाहर पंखाक चरचराहट।

जयनारायण नरम स्वरमे कहलक, “तोरा बहिन कागज छोड़ए तैयार नहि छलीह।”

प्रखरक आँखि एकाएक भरि आयल, मुदा ओ मुँह फेरि लेलक। “अहाँ सभ बुझैत छी हम ओकरा मारलहुँ?”

“हम बुझैत नहि,” जयनारायण कहलक। “हम पुछैत छी—ओ राति तूँ घरमे नहि छलह। भोर कचहरी लग छलह। कर्ज छल। कागज रोकबाक कारण छल। परिवार तोहर अनुपस्थिति नुकौलक। एखन तौँ कह—कचहरी किएक गेलह?”

प्रखरक छाती तेज उठि-गिरि रहल छल। ओ पहिने कहलक, “वकील चाही।”

विनय तुरन्त प्रश्न रोकि देलक। “ठीक। एखन एको प्रश्न नहि।”

जयनारायण उठि गेलाह। दुआरि धरि पहुँचि प्रखर पाछाँसँ बजल—“हम दीदी केँ मारबाक लेल नहि गेल रही।”

कक्षमे सभ थमि गेल।

विनय घुरि कऽ कहलक, “अहाँ वकील माँगलहुँ। हम एखन कथन नहि लेब।”

प्रखर अपन माथ दुनू हथेलीक बीच दबा लेलक। “बस एतबे...”

“एखन नहि,” विनय दोहरौलक। “अहाँक अधिकार अछि। वकील आबथि, तखन।”

बाहर माधवी दुआरि खुलबाक ध्वनि सुनि उठली। जयनारायणक चेहरा पढ़बाक प्रयत्न कएलनि, मुदा ओ केवल कहलक, “परिवारक घेरा टूटल।”

“प्रखर?”

“ओ बोलए चाहैत अछि। विधिसम्मत ढंगसँ बोलत।”

“दीदीक माय?”

जयनारायणक नजर बरामदाक फर्श पर गेल। “ओ पहिने बोलि चुकलीह। अपना विरुद्धो।”

साँझ धरि प्रखरक वकील पहुँचल। औपचारिक कथन ओहि दिन पूरा नहि भेल। मुदा तकर पहिने एक नब तथ्य आयल। प्रखरक दोसर दूरभाषसँ राति दस बजि सत्ताइस मिनट आ भोर चारि बजि तेइस मिनट पर एके नम्बर पर छोट-छोट संवाद छल। नम्बर अभिलेख-विभागक पुरान कर्मचारीक नामे—नवलकिशोर झा, वरिष्ठ अभिलेख-सहायक, जेकरा कचहरीमे सभ ‘पुरान अभिलेख-मुंशी’ कहैत छल।

माधवी नाम सुनि चौकली। “ओही लोक जे पहिल भोर कहने छल घड़ी काल्हि दिनभर चलैत देखल?”

विनय माथ हिलेलक।

रामचरित सेहो कहने छल—पुरान वायु-नली आ निरीक्षण-पट्टी जाननिहारमे एक पुरान अभिलेख-मुंशी अछि।

जयनारायण किछु नहि बजलाह। हुनकर मनमे दुलारीक बयानक तीन छोट बात एक संग उठल—बामा पएर बाहर घुमैत डेग, पीतलक पैघ गोल छल्लावला चाभीक गुच्छा, सूखल खाँसी।

“नवलकिशोर एखन कतऽ?” विनय पुछलक।

एक सिपाही उत्तर देलक, “सेवा-निवासमे। भोरसँ छुट्टीक आवेदन पठौने अछि—सीना जकड़न आ खाँसी लिखने।”

जयनारायणक आँखि उठल, मुदा ओ तुरन्त कहलनि, “खाँसी लाख लोक केँ होइत अछि। पएर लाख लोकक टेढ़ होइत अछि। चाभी कर्मचारीक हाथमे रहिते अछि। तीनू मेलल तँ प्रश्न बनत; उत्तर नहि।”

माधवी धीरे पुछली, “तखन अगिला प्रश्न?”

जयनारायण खिड़की बाहर गाढ़ होइत साँझ दिस तकलनि। “चारि बजि सतरह मिनट पर वास्तवमे की भेल—एखन ओकरा टुकड़ा-टुकड़ा जोड़ब। मुदा कथा नहि। प्रत्येक टुकड़ाक नीचा स्रोत लिखब।”

अध्याय ३८ — चारि बजि सतरह मिनट

नवलकिशोर झाक सेवा-निवास कचहरीक नब भवनसँ आध कोस दूर छल। पुलिस जखन पहुँचली तखन ओ बाहर बरामदामे तुलसीक गमला लग बैसल छल, काँध पर शाल, हाथमे गरम पानीक लोटा। विनयक गाड़ी देखिते उठल, आ उठबाक पहिल डेगमे बामा पएर कने बाहर घूमल।

जयनारायणक नजर ओतहि गेल, मुदा चेहरामे कोनो विजय नहि। दुलारीक स्मृति एखनहुँ स्मृति छल, पहचान नहि।

नवलकिशोर खाँसल। सूखल, दू छोट झटका। फेर कहलक, “एतेक लोक? हम बीमार छी।”

विनय खोज-अनुमतिक कागज देखेलक। “अहाँक घर आ सरकारी चाभीक वस्तु-सूची देखबाक आदेश अछि। अहाँ चाही तऽ अपन प्रतिनिधि बजा सकैत छी।”

नवलकिशोरक पत्नी भीतरसँ घबरायल निकललीह। “की भेल?”

“किछु नहि,” ओ तुरन्त कहलक। “कार्यालयक कागजक बात।”

जयनारायण एहि ‘किछु नहि’ केँ मोनमे राखलनि। परिवारक लोक अनर्थक पहिल क्षणमे प्रायः एही दू शब्द चुनैत अछि।

सूची बनैत-बनैत एक लोहेक आलमारी खोलल गेल। सरकारी चाभीक अलग रजिस्टर छल। नवलकिशोरक जिम्मामे पुरान भवनक पाँच चाभी, नब अभिलेख-कक्षक दू, आ मरम्मत-पट्टीक एक छोट चाभी दर्ज छल। सब उपस्थित, मुदा एक पीतल रंगक पैघ गोल छल्लामे।

सरोज देवी छल्ला उठेलखिन। जयनारायण तुरन्त रोकलनि। “दुलारी केँ एहि वस्तुक फोटो एखन नहि। पहिने स्वतंत्र पहचान प्रक्रिया बनत।”

विनय सहमति देलक।

घरमे कोनो रक्त, जड़ल कागज वा चमत्कारी प्रमाण नहि भेटल। जयनारायण एही चाहैत छलाह। बहुत साफ अपराध-कथा ओकरा डरबैत छल। वास्तविक जीवन वस्तु सभ केँ छाँटि-छाँटि सुराग नहि बनबैत।

मुदा सरकारी मोटा कोट, जे बरखाक राति पहिरल गेल होएत, तकर दहिना जेबक तल्लामे कारी धूरिक सूक्ष्म कण भेटल। पुलिस ओहि ठामे अर्थ नहि बनौलक; वस्तु सील भऽ प्रयोगशाला गेल।

दोसरा कात प्रखर अपन नियुक्त अधिवक्ताक उपस्थितिमे बयान देबाक तैयार भेल। दुलारीक जमानत लड़ने रचना झा एहि प्रक्रियासँ पृथक छलीह; परिवार प्रखर लेल दोसर अधिवक्ता बजौने छल। औपचारिक प्रक्रिया शुरू भेला पर प्रखर पहिल वाक्य कहलक—“हम दीदी लग गेल रही, मुदा हम हुनका मारबाक मनसँ नहि गेल रही।”

विनय घड़ीक समय लिखलक। “अहाँ अपन इच्छा सँ कथन दऽ रहल छी?”

“हँ।”

“अधिवक्ता उपस्थित छथि?”

“हँ।”

तखन प्रश्न शुरू भेल।

भोर तीन बजि सत्रह मिनट पर भूमि-समूहक विजय मल्लिक प्रखर केँ छोट नम्बर पर फोन कएने छल। बात चौवन सेकण्ड। प्रखर पहिने कहल—कारोबारी कर्जक बात। जखन विनय पूछलक “कागज” शब्द आयल कि नहि, ओ चुप। फेर कहलक—“ओ कहलक भोर धरि कागजक ठाम जानू नहि तँ समझौता समाप्त।”

“कुन समझौता?”

“कर्ज माफी।”

“बदला?”

“सात टोला केसक मूल आधार कमजोर करब।”

“कोना?”

प्रखर आँखि नीचा कएलक। “जे पुरान नकल पर वसुधा भरोसा करैत छलीह, ओ जमा नहि होअय। हम ओकरा बुझाएब, कागज रोकब। बस।”

जयनारायण पुछलनि, “नवलकिशोर?”

प्रखरक जबड़ा फेर कसल। “ओ पहिने सँ भूमि-समूहक लोकक काज करैत छल। पुरान नकल जल्दी निकालि देब, गलत क्रमवला पन्ना पाछाँ करब, एहन छोट काम। पैसा लैत छल।”

“राति दस बजि सत्ताइस पर फोन किएक?”

“ओ कहलक वसुधा लग नकल अछि। हम कहलहुँ—कागज हटाउ, वसुधा केँ हाथ नहि लगाउ।”

कक्षमे क्षण भरि मौन।

विनयक स्वर कठोर भेल। “कागज हटाउ—अर्थात् चोरी?”

“हम... हैं। कागज। व्यक्ति नहि।”

जयनारायण कहलक, “अपराध छोट करबाक लेल वाक्य छोट मत कर। ककरो कागज चोराबय कहलह। ई सेहो अपराध अछि।”

प्रखर माथ झुका लेलक।

राति दसक आसपास नवलकिशोर पुरान भवनमे पहुँचल। दुलारी ओतऽ छली। बुच्चनक बेटा दू कप चाय देने छल—नील कप वसुधाक, बिना चीनी; सफेद कप नवलकिशोरक, दू चमच चीनी। एहि बातक पुष्टि नवलकिशोरक नियमित चाय-आदति कमलीक पुरान हिसाबसँ बादमे भेल—“मुंशी बाबू मीठ बिना पीबे नहि करैत।”

नवलकिशोर पहिल पूछताछमे एहि रातिक उपस्थिति नकारलक। मुदा कर्मचारी प्रवेश-पट्टीक एक अधटूट लेखनी-चिह्न, बुच्चनक बेटाक बयान, आ ओकर छोट फोनक संकेत पुरान भवन लग देखेलक। तखन ओ कहलक—“कागज लऽ गेल रही, वसुधा स्वयं बजौने छलीह।” वसुधाक दूरभाषमे ओकरा बजाबयवला कोनो संदेश नहि।

दुलारी बाहर निकलला पर नवलकिशोर केँ लोहेक ड्रम लग कागज जरबैत देखलक। ओ कागज मूल दस्तावेज नहि, वसुधाक संग रहैत किछु छाया-प्रतिलिपि आ भूमि-समूहसँ जुड़ल पत्राचारक नकल छल—ई बात राखसँ पुनर्प्राप्त दुई शब्द आ एक फाइल क्रमांकसँ मेलल। मुदा नवलकिशोर खोजल मुख्य छाया-नकल दुलारी पहिनेसँ अपन कपड़ामे सुरक्षित कऽ लेने छली।

“तखन तूँ ओकरा बतौलह जे कागज नहि भेटल?” जयनारायण प्रखर केँ पुछलनि।

“ओ कहलक आधा काज भेल। मुख्य नकल नहि।”

“वसुधा?”

“जीवित छलीह। रागमे। ओ नवलकिशोर केँ बाहर कऽ देलखिन।”

“एहि बात तोरा के कहलक?”

“नवलकिशोर।”

भोर धरि प्रखर घरमे घूमैत रहल। कर्ज, बहिन, परिवार, भूमि-समूह—चारू दिससँ दबाव। तीन बजि सत्रहक फोन बाद ओ छोट कार्यालय गेल, ओतऽ सँ दोसर फोन लेल, कारण मुख्य

फोन घरमे छोड़ि देलक—परिवार केँ बुझाय जे ओ घरमे अछि। तीन बजि एकतीस पर कार्यालयसँ मोटरसाइकिल निकाललक।

चारि बजि दसक आसपास कमलीक दोकान पर रुकल। कमलीक पहिल गलत पहचान अरुण छल; दोसर निष्पक्ष पंक्तिमे ओ प्रखरक छविक चाल पर ठमकल छलीह। प्रखर एखन स्वीकारलक—“चाय पीने रही। दू चमच चीनी।”

माधवी जे अलग कक्षमे बयानक प्रतिलिपि पढ़ैत छलीह, ई पाँति पर आँखि बन्द कएलनि। सात मिनट। पहिल दिनसँ कथा जे समय पर अटकल छल, ओ समय एखन मनुष्यक पएर पाबि रहल छल।

प्रखर कहलक, “दीदीक कोठरी खुलल छल। दुआरि भीतरसँ बन्द नहि। ओ अकेली छलीह।”

“नवलकिशोर?”

“नब भवनक पाछाँ रहल। हम कहलहुँ जरूरत पड़त तऽ फोन करब।”

“किएक?”

“किएक तँ ओ पुरान भवनक चाभी, नली, सभ जानैत छल। हमरा डर छल दीदी कागज कोनो बंद पेटीमे रखने होएत।”

जयनारायणक स्वर धीमा भेल। “तूँ बहिन लग बात करए नहि, खोज करए गेल छलह।”

प्रखरक आँखि भरि आयल। “दुनू।”

वसुधा मेज लग छलीह। नील कप खाली, सफेद कप रातिक ओहि ठाम। कागज सभ फैलल। प्रखर भीतर गेलापर पहिल पाँच मिनट वाद-विवाद भेल। वसुधा कहलीह—“तोहर कर्ज हमर मुकदमा नहि।” प्रखर कहलक—“घर डूबि रहल अछि।” वसुधा उत्तर देलीह—“सात टोला घर नहि?”

प्रखर एहि वाक्य पर रोय लगल। बयान रोकल गेल, पानी देल गेल। किछु देर बाद ओ स्वयं आगे कहलक।

“हम झोरा पकड़लहुँ। दीदी खींचि लेलखिन। हम फाइल पकड़लहुँ। ओ हमर हाथ झटकलीह। हम... हम हुनका पाछाँ हटेबाक लेल धक्का देलहुँ।”

“कतेक जोर?”

“रागमे। हमरा नहि मालूम।”

“ओ कहाँ गिरलीह?”

“मेज आ देवाल बीच लोहेक पुरान अलमारीक कोन पर माथ लागल। आवाज भेल। घड़ी सेहो हिलल—अलमारीक ऊपरक पातर पट्टी देवालसँ टकरायल।”

चिकित्सकीय मत माथक दहिना चोटक संग मेल खाइत छल। घटनास्थलक पुरान अलमारीक बामा कोन पर सूक्ष्म रक्त-प्रोटीनक अवशेष पहिल सफाई बादो गहिरी दरारमे भेटल छल; आरम्भिक प्रतिवेदनमे मात्रा अत्यल्प कहि महत्व नहि देल गेल, मुदा हत्या-जाँच फेर खुलला पर नमूना पुनः जाँचल गेल। आनुवंशिक मिलान वसुधाक रक्तसँ मेल खायल।

“घड़ी?” विनय पुछलक।

प्रखर कहलक, “हम नहि देखलहुँ। ओ गिरलीह तखन दीवाल पर किछु टनकल। बादमे नजर गेल—चारि सतरह।”

अर्थात् घड़ी सम्भवतः धक्काक कम्पनसँ ओहि क्षण रुकल। बनाओल दृश्यक केन्द्र जे समय बनल, ओ पहिने दुर्घटनाक वास्तविक बिन्दु छल।

वसुधा गिरलापर किछु क्षण चेतन छलीह कि नहि—प्रखर निश्चित नहि कहि सकल। ओ कहलक, “ओ आँखि खोलि हमरा देखलीह। होंठ हिलल। आवाज नहि निकलल। हम डरि गेलहुँ।”

“चिकित्सक?” जयनारायण पुछलनि।

प्रखर मुँह झुका लेलक।

“एम्बुलेंस?”

कोनो उत्तर नहि।

“तू बहिन केँ चोट लगेलह। ओ जीवित हो सकैत छलीह। सहायता बजाबयक बदला तू नवलकिशोर केँ फोन कएलह?”

प्रखर रोदन रोकए लगल। “हम सोचि नहि सकलहुँ।”

जयनारायणक स्वर पहिल बेर कठोर भऽ गेल। “डर सोचक अभाव नहि, विकल्पक परीक्षा अछि। तोहर पहिल विकल्प बहिनक प्राण नहि, अपन बचाव छल।”

कक्षमे उपस्थित अधिवक्ता धीरे कहलीह, “प्रश्नक भाषा संयत राखू।”

जयनारायण तुरन्त चुप भऽ गेलाह। विनय आगे बढ़ल।

चारि बजि तेइस मिनट पर नवलकिशोर केँ छोट फोन। अवधि तेइस सेकण्ड। फोनक संकेत नब भवन पाछाँ। चारि बजि सत्ताइस पर नवलकिशोरक उपकरण पुरान भवनक भीतरवला स्तम्भ पकड़ैत अछि।

नवलकिशोर आरम्भमे एहि संवादक बात नकरैत रहल। तखन प्रखरक कथन ओकरा सोझाँ नहि पढ़ाओल गेल; केवल दूरसंचार अभिलेख देखाओल गेल। बहुत देर बाद ओ कहलक, “प्रखर कहलक—दीदी गिरि गेली।”

“अहाँ गेलहुँ?”

“हँ।”

“जीवित?”

नवलकिशोरक आँखि नीचे। “हम नाड़ी देखबाक जानकारी नहि। देह गरम छल।”

“डॉक्टर किएक नहि?”

“हमरा डर लागल।”

“ककर?”

“सभक। नौकरी, कागज, पैसा... हम रातिए कागज जरा चुकल रही।”

एतऽ अपराधक दोसर दुआरि खुलल। नवलकिशोर बुझि गेल छल जे वसुधा बचलीह तऽ दस्तावेज-नाशक बात खुलत; मरलीह तऽ हत्या-जाँचमे ओकर रातिक उपस्थिति खुलत। ओकर लाभ वसुधाक प्राण बचाबयमे नहि, दृश्य बदलयमे छल।

ओ स्वीकारलक जे मेजक कागज फेर सजेलक। वसुधाक अधूरा चेतावनी-पत्रक निचला भाग, जाहिमे भूमि-समूहक दू नाम छल, ओ फाड़ि छोट पात्रमे जरौलक; किछु राख मेज नीचा खसल। सुपारीक डिबिया फाइल खोजैत-खोजैत दहिना सँ बामा सरकल; रातिक सुपारीक टुकड़ा ओ स्वयं वसुधासँ बात करैत काल डिबियासँ निकालने छल, कारण ओकरा सुपारीक आदति छल। ई छोट बात पहिल दिनसँ जयनारायण केँ खोंचारने छल—वसुधा राति सुपारी नहि खाइत छलीह, मुदा आगन्तुक खा सकैत छल।

“कुर्सी?” विनय पुछलक।

“हम वसुधा केँ उठेबाक प्रयासमे कुर्सी हटेल्हुँ। फेर मेज सोझाँ राखि देल्हुँ।”

वसुधा बामा पएर मोड़ि लिखैत छलीह; कुर्सीक दहिना घुमल स्थिति ताहि लेल असुविधाजनक छल। नवलकिशोर हुनकर लेखन-आदति नहि जानैत छल।

“दुआरि भीतरसँ बन्द कोना?”

एहि प्रश्न पर नवलकिशोर बहुत देर चुप। फेर कहलक, “पुरान वायु-नली।”

जयनारायणक कंठ भीतर किछु कसि गेल। अनुमानक एक टुकड़ा अन्ततः मनुष्यक मुखसँ निकलल, मुदा ओ विजय नहि छल।

नवलकिशोर मरम्मतक समय निरीक्षण-पट्टीक चाभी राखने छल। ओ प्रखर केँ पाछाँक गलियारा सँ बाहर पठेलक, स्वयं कोठरी बन्द कऽ कबाड़क कक्ष गेल। पातर मजबूत सूत आ छोट काँटावला तारसँ वायु-नलीक बाट साँकलक छल्ला खींचि भीतर अँटका देलक। बादमे सूत खींचि निकालि लेल। प्रतिरूप-जाँच जे सम्भावना देखौने छल, ओहि तकनीकक मूल विवरण ओकर कथनसँ मेल खायल।

“सूत?”

“मरम्मतघरक डोरी। उज्जर।”

बाहरी देवाल पर वर्षाक धार बीच पहिल दिन देखल पातर उज्जर रेखा सम्भवतः ओहि डोरी वा औजारक अस्थायी सम्पर्कक छाप छल; प्रयोगशाला एहि पर निश्चित मत नहि देलक, मुदा तरीका मेल खाइत छल।

“घड़ी अहाँ रोकलहुँ?”

“नहि। हम भीतर अएलहुँ तखन चारि सतरह पर रुकल छल।”

प्रखर सेहो एही कहने छल। घड़ीक यांत्रिक दाँत पर धक्काक चिन्ह आ अलमारीक कम्पन-पथक प्रतिरूप जाँच एहि कथनसँ संगत छल।

“आत्महत्या बनाबय लेल की कएलहुँ?”

नवलकिशोर कहलक—दुआरि भीतरसँ बन्द दृश्य, अधूरा पन्ना मेज पर, कुर्सी सोझाँ, कागजक ढेरी व्यवस्थित। वसुधाक मृत्यु कोना आत्महत्या बुझाओल जाए, तकर ओ पूरा चिकित्सा-कथा नहि बना सकल। ओकर भरोसा छल—बन्द दुआरि, अधलिखल पन्ना, रातिक अकेलापन, गायब दुलारी—बाकी कथा लोक स्वयं बना लेत।

जयनारायण धीरे कहलनि, “आ लोक बनौलक।”

नवलकिशोर माथ झुका लेलक।

“सूत्रो,” अभिराम, जे प्रक्रिया कक्ष बाहर सँ देखैत छल, बहुत धीमे कहलक।

“सूत्र लोकक दत्तांश पढ़लक,” जयनारायण उत्तर देलनि। “दत्तांश लोकक बनाओल दृश्यसँ भरल छल।”

एखन प्रश्न मृत्यु-कारणक विधिक नाम छल। धक्का जानि-बुझि? हत्या करबाक मन? घातक चोट बाद सहायता नहि बजाबयब? प्रमाण नष्ट करब? षड्यन्त्र? ई सभ न्यायालय तय करत। जाँच-दल अपन प्रतिवेदनमे घटना केँ एक वाक्यक “हत्या” कहि समाप्त नहि कएलक। प्रत्येक चरण अलग लिखल गेल—आगमन, झगड़ा, धक्का, चोट, सहायता न

बजाओल, नवलकिशोर केँ फोन, दस्तावेज नष्ट करब, दृश्य बदलब, झूठा बन्द कोठरी बनायब।

माधवी राति देर तक प्रतिवेदनक मसौदा पढ़ली। एक पाँति पर ओकर आँखि अटकली—
“वसुधा कर्ण सम्भवतः चोटक तुरन्त बाद जीवित छलीह।”

ओ पन्ना बन्द कऽ देली। एतेक दिन ओकर मन हत्यारा खोजैत छल। एहि पाँति पर अपराध आओर भयावह भऽ गेल—दीदीक जीवन आ मृत्यु बीच किछु मिनट छल, जाहिमे मदद बजाओल जा सकैत छल।

अभिराम कमरेमे आयल, मुदा किछु नहि पुछलक। टेबुलक दोसर कात बैसि रहल। बहुत देर बाद माधवी कहली, “जँ ओ डॉक्टर बजा दैत?”

अभिराम उत्तर देबाक पहिने साँस लेल। “हम नहि जानैत छी ओ बाँचितथि कि नहि।”

“हँ। नहि जानैत छी।”

“ई नहि जानबो जरूरी अछि।”

माधवी ओकरा देखली। पहिने अभिराम एहन रिक्त जगहमे सम्भावना-प्रतिशत खोजित। आइ ओ रिक्त जगह रिक्ते छोड़ि रहल छल।

“तौँ बदललह,” ओ कहली।

अभिराम हलुक मुस्कुरायल। “सूत्रो।”

“हम?”

“अहाँ... एखन निर्णय नहि।”

माधवीक मुँह पर बहुत दिन बाद सच्चा मुस्की आयल, क्षण भरि मात्र। “ठीक अछि। दत्तांश अधूरा।”

राति कचहरीक घड़ी फेर चलि रहल छल। मरम्मत बाद ओकर काँटा सामान्य गति सँ बढ़ैत। चारि बजि सतरह मिनट एखन इतिहास बनि चुकल छल—न आत्महत्याक मुहर, न यंत्रक जादुई उत्तर; एक झगड़ाक हिंसक क्षण, जकर बाद मनुष्य सभ अपन-अपन डर बचाबय लेल दृश्य, बयान आ मौन बदलैत गेल।

मुदा एक साक्षी एखनहुँ पूरा नाम नहि कहने छल—दुलारी। ओ हत्या नहि देखल छल। ओ कागजक आगि देखल छल। आ अदालतमे आगि आ हत्या बीचक दूरी जतेक स्पष्ट राखल जाएत, ततेक न्याय सम्भव होएत।

अध्याय ३९ — दुलारीक आँखि

दुलारी कै फेर थाना बजाओल गेल तखन ओ पहिल प्रश्न पुछली—“हम आरोपी छी कि साक्षी?”

सरोज देवी कहलीह, “साक्षी। आ एहि बेर अहाँक बयान पहिल बयान कै बदलत नहि; जे नब देखाओल जाएत, तकर अलग लेखा रहत।”

“तखन ठीक।”

ओ अपन कापी सेहो संग आनने छली। रातिक पाठशालाक गृहकाज आध लिखल—“हमर गामक एक दिन।” ऊपर दू पाँति, तकर बाद खाली। सरोज पुछलखिन, “पूरा नहि भेल?”

“पुलिसक गृहकाज बेसी भऽ गेल।”

दुनू हँसलीह। थानाक दीवाल, कड़ा कुर्सी, बयानक कागज—कने देर लेल साधारण भऽ गेल।

पहिचानक प्रक्रिया एहि बेर चेहरा पर नहि, चाल पर छल। रचना आग्रह कएने छलीह जे दुलारी कै पहिने नवलकिशोरक नाम वा गिरफ्तारीक बात नहि कहल जाए। पाँच पुरुषक छोट वीडियो, सभ समान दूरी, चेहरा धुँधल, हाथमे कोनो खास वस्तु नहि। प्रत्येक लोक तीन बेर सामान्य चालमे बरामदा पार करैत।

विनय बाहर रहल। जयनारायण सेहो। भीतर सरोज, एक दण्डाधिकारी, लेखनिहार, आ दुलारी।

पहिल वीडियो। दुलारी देखली, माथ हिलेली—“नहि जानैत।”

दोसर। “नहि।”

तेसर पर ओ आगे झुकली, मुदा तुरन्त पाछाँ। “फेर चलाउ।”

वीडियो फेर चलल। पुरुष बामा पएर धरैत कने बाहर घुमेलक, मुदा ओ बहुत हलुक। दुलारी कहली, “चाल मिलैत जकाँ। चेहरा नहि देखाओल अछि, तँ पक्का नहि।”

“क्रमांक?”

“तीन। मुदा लिखू—पक्का नहि।”

चारिम, पाँचम—नहि।

क्रमांक तीन नवलकिशोर छल।

दण्डाधिकारी परिणाम सील करेलनि। तकर बाद अलग मेज पर छओ चाभीक छल्लाक फोटो देखाओल गेल—सभ पीतल रंगक, पैघ-छोट अलग। दुलारी दू फोटो पर ठमकली। “ई दुनूमे सन। हम आगिक उजासमे चमक मात्र देखलहुँ। गोल पैघ छल।”

नवलकिशोरक सरकारी छल्ला ओहि दू मे एक छल। फेरो निश्चित नहि।

सरोज देवी दुलारी दिस देखलखिन। “खाँसी?”

दण्डाधिकारी तुरन्त रोकलनि। “एखन नहि। ई प्रश्न निर्देशित भऽ सकैत अछि।”

दुलारी सरोज दिस मुस्कुराइ कऽ कहली, “हमरा मोन अछि। मुदा जँ अहाँ पहिने शब्द देब तऽ बादमे लोक कहत हम अहाँक शब्द दोहरौलहुँ।”

सरोज सिर झुका लेलखिन। “ठीक कहैत छी।”

प्रक्रिया समाप्त भेला बाद विनय भीतर आयल। तखन मात्र दुलारी कै कहल गेल जे क्रमांक तीन नवलकिशोर झा अछि—ओही अभिलेख-सहायक जे पहिल भोर घटनास्थल लग उपस्थित छल।

दुलारीक चेहरा पर कोनो विजय नहि आयल। उलटे ओ चुप भऽ गेल।

“चिन्हैत छह?” माधवी, जे बाहर बाट जोहि रहल छलीह, पुछली।

दुलारी धीरे कहली, “कचहरीमे देखने छी। नाम नहि जानैत रही। कई बेर फाइल लऽ जाइत। एक बेर दीदी ओकरा कहने छलीह—‘नकलक पन्ना क्रम बदलल तँ हम लिखित शिकायत करब।’ ओ दिन ओ हँसि देने छल।”

“ई बात पहिने किएक नहि कहलह?”

“किएक तँ हमरा ओतबा मोन नहि छल। आइ चेहरा सुनला बाद पुरान बात जुड़ल। ताहि लेल ई बात पहचानक हिस्सा नहि बनय। अलग लिखू।”

जयनारायण बाहरसँ सुनि रहल छलाह। हुनका दुलारी पर गर्व जकाँ किछु भेल, मुदा ओ कहला सँ बचलाह। गरीब युवतीक सत्य कै “बहादुरी” कहि सजाएब सेहो कतेको बेर ओकर सामान्य बुद्धि कै तमाशा बना दैत अछि। दुलारी जे करैत छल, ओ अपन कथनक सीमा बचा रहल छल—ई अधिकार प्रत्येक साक्षीक होएबाक चाही।

प्रयोगशालाक प्रतिवेदन ओहि दुपहर आयल। नवलकिशोरक कोटक जेबक कारी कणमे कागजक जड़ल सेलुलोज, पुरान कार्बन-स्याहीक अवशेष आ लोहेक ड्रमक राखमे भेटल दू

सूक्ष्म खनिज समान श्रेणीमे छल। विशेषज्ञ साफ लिखने छल—“समानता सम्बन्धक समर्थन करैत अछि; एके स्रोत निश्चित नहि।”

दुलारी प्रतिवेदन सुनि कहली, “अर्थात् आगि हमरा आँखि अकेले नहि कहैत अछि।”

“हँ,” विनय कहलक, “मुदा विज्ञानो ‘ओहे आगि’ एखन नहि कहैत।”

“ठीक। सभकेँ अपन सीमा अछि।”

एहि वाक्य पर अभिराम मुस्कुरायल। “सूत्र केँ सेहो।”

दुलारी ओकरा देखली। “ओकर सीमा पहिने लिखि दिअ, बादमे गरीबक जेल कम होएत।”

अभिरामक मुस्की थमल, फेर ओ गम्भीर भऽ माथ हिलेलक। “लिखल अछि। आओर साफ लिखब।”

दुलारीक पहिल बयान फेर खोलल गेल। ओहि मे ओ कहने छल—“लोक चिन्हल जकाँ लागल, मुदा हम झूठ नाम नहि कहब।” न्यायालयमे एहि पाँति पर अभियोजन कहि सकैत छल—साक्षी डरायल। बचाव कहि सकैत—साक्षी अनिश्चित। दुनू सत्यक किछु भाग छल।

रचना, जे एखन दुलारीक विधिक सहायता सँ जुड़ल छलीह, ओकरा बुझेलखिन, “अदालतमे तोरा पुछल जाएत—तूँ हत्या देखलह?”

“नहि।”

“प्रखर केँ कोठरीमे देखलह?”

“नहि।”

“नवलकिशोर केँ कागज जरबैत साफ चेहरासँ देखलह?”

दुलारी रुकली। “चेहरा आध। चाल, चाभी, देह—मिलल। आइ प्रक्रिया मे चाल मिलल। मुदा हम ‘साफ देखल’ नहि कहब।”

“एही उत्तर देब।”

“लोक कहत हमरा किछु मोन नहि।”

“लोक जे कहय। अदालतमे जे मोन अछि, सएह।”

दुलारी कापी बन्द कएलक। “दीदी सेहो एही सिखौने छलीह—कागज पर अपना मुँहसँ बेसी नहि लिखाउ।”

माधवीक गला भरि आयल।

दुलारी ओकरा देखली। “फेर रोयब?”

“नहि।”

“चेहरा कहैत अछि हँ।”

“तोहर आँखि बहुत देखैत अछि।”

दुलारीक मुँह गंभीर भेल। “एही तऽ समस्या भेल।”

कने देर बाद ओ अपन भागबाक राति फेर कहए लगली। एखन पुलिस प्रश्न नहि करैत छल; कथा ओकर भीतरसँ निकलि रहल छल।

“हम ड्रम लग आगि देखलहुँ। ओ लोक पाछाँ घुमल। हमरा लागल नजर मिलल। पक्का नहि। मुदा ओ क्षणमे हमर माथमे पहिल बात ई नहि आयल जे पुलिस केँ कहब। पहिल बात आयल—हमरा कियो नहि मानत। दोसर—जँ ओ कचहरीक लोक अछि, पुलिस पहिने ओकरा पूछत कि हमरा? तेसर—दीदी हमरा कागज देने छलीह। ओ भेटल तऽ कहत चोरी कएने छी। तँ हम भागल नहि—हम अपन बयान बचाबय ठाम बदललहुँ।”

रचना पुछली, “ई शब्द अदालतमे सेहो कहि सकैत छह—‘ठाम बदललहुँ’?”

“हँ। भागल कहला पर लोगक मन पहिने अपराधी बना लैत अछि।”

जयनारायण धीरे कहलनि, “शब्दो घटनास्थल होइत अछि।”

दुलारी हँसली। “आब अहाँ फेर भारी बात शुरू कएलहुँ।”

कक्ष हलुक भेल।

मुदा ओ तुरन्त फेर गम्भीर भेली। “एक बात आओर। जखन हम चर पर रही, हमरा डर केवल पुलिससँ नहि छल। भूमि-समूहक लोक हमर माय लग पहिने ढेला फेंकने छल। हम सोचलहुँ—जँ दीदी मरलीह, तऽ जे कागज चाहैत छल ओ हमरा सेहो खोजत। फुलमति दादीक घर हम एहि कारण गेलहुँ जे ओतऽ कियो हमरा वसुधा दीदीक छौड़ी नहि, फूलोक बेटी जकाँ जानैत छल।”

माधवी ई वाक्य मोनमे राखली। मुख्य कथा दुलारी केँ “साक्षी” कहैत घुमैत रहल, मुदा ओ अपन जीवनमे पहिने बेटी, विद्यार्थी, मजदूर, पड़ोसिन, मित्र छल। अपराध-जाँच मनुष्यक पूरा नाम प्रायः एक भूमिका मे छोट कऽ दैत अछि।

दुपहर बाद दुलारी अपन घर गेली। फूलो दरबज्जा पर कपड़ा सुखा रहल छलीह। बेटी पुलिसक गाड़ीसँ उतरिते ओ आँखि तरेरलीह। “फेर थाना?”

“साक्षी।”

“ई शब्द सँ पेट भरत?”

“आइ भात अछि?”

“तोरा लेल नहि।”

“तखन हम चुनकी दादी लग घुरि जाएब।”

फूलो तुरन्त दुआरि छोड़ि भीतर गेलीह। “जा हाथ धो। भात गरम करैत छी।”

माय-बेटीक प्रेम फेर झगड़ाक रूपमे घर भरि देलक। माधवी, जे ओकरा छोड़य आयल छलीह, बरामदामे बैसि ई दृश्य देखैत रहलि। दीदी जीवित छलीह तखन कतेको बेर एही घरमे बैसल छलीह। टीनक छत, धुँआ, कापी, भातक गमक—न्यायक कागज एहि सभ लेल छल; अदालतक भाषा एहि सभ सँ बहुत दूर लगैत, मुदा अन्तमे अर्थ एतहि घुरि आबैत।

दुलारी भात खाइत-खाइत कापी खोलली। गृहकाज—“हमर गामक एक दिन।” ओ लिखए लगली—भोरमे नल पर भीड़, माय कपड़ा धोइत, बच्चा विद्यालय भागैत, माछ बेचैत लोकक हाँक, साँझक पाठशाला। हत्या, पुलिस, जमीन—किछु नहि।

माधवी पुछली, “ई दिनमे थाना नहि?”

“गामक सभ दिन थाना थोड़े होइत अछि।”

“सही।”

“आ हमरा जीवनक सभ पन्ना वसुधा दीदीक मृत्यु थोड़े अछि।”

माधवी चुप भेली। ई वाक्य दुलारीक पूर्ण चरित्र जकाँ ओकर सोझाँ ठाढ़ भेल।

साँझमे विनयक संदेश आयल—प्रखर आ नवलकिशोर विरुद्ध पृथक-पृथक धारामे औपचारिक आरोपक आवेदन न्यायालय पठाओल गेल। प्रखरक विरुद्ध हिंसक धक्का, सहायता नहि बजाबय, प्रमाण नष्ट करबाक षड्यन्त्र आ जाँच भटकाबयक काज; नवलकिशोरक विरुद्ध प्रमाण नष्ट करब, घटनास्थल बदलब, अभिलेखक अवैध छेड़छाड़ आ षड्यन्त्र। अन्तिम कानूनी वर्गीकरण न्यायालय तय करत।

माधवी संदेश दुलारी केँ देखेलखिन।

दुलारी पढ़ि कहली, “हमर नाम?”

“मुख्य साक्षी।”

“फेर ई ‘मुख्य’।”

“की लिखाउ?”

“दुलारी सदाय। बस।”

माधवी हँसली। “ई फाइलमे सम्भव नहि।”

“तखन अदालतकेँ कहब।”

राति पाठशालामे दुलारी पहुँचल तखन मास्टरनी पहिल बेर ओकरा किछु नहि पुछलीह। खाली कापी देखलीह। “गृहकाज पूरा?”

“आधा।”

“किएक?”

“दिन बीचमे लम्बा भऽ गेल।”

मास्टरनी कहलीह, “आइ पूरा करू।”

दुलारी बैसि गेली। कापीक पन्ना पर दीपक पीयर उजास पड़ल। ओकर आँखि जे आगि देखल छल, ओहि आँखि एखन अक्षर देखैत छल। आगिक बात अदालतमे जायत; अक्षर ओकरा अपन बाट पर लऽ जायत। दुनूक काम अलग।

कचहरीक दोसर कात, जयनारायण अन्तिम बहस लेल तथ्यक चारि ढेरी बना रहल छलाह—मानवीय साक्ष्य, भौतिक प्रमाण, अभिलेख-श्रृंखला, आ सूत्रक विश्लेषण। अभिराम पूछलक, “सभ एक फाइलमे किएक नहि?”

जयनारायण उत्तर देलनि, “किएक तँ अदालत बुझय—के कहैत अछि, वस्तु की कहैत अछि, कागज कतऽ सँ आयल, आ गणना कोना बनल। सभ मिला देब तऽ फेर एकटा चमकैत कथा बनि जायत।”

माधवी दुआरि लग ठाढ़ छलीह। “आ सातम साक्षी?”

जयनारायण चारू ढेरी निहारि मुस्कुरौलनि। “ओ शब्दक काम एखन कथा करैत रहय। अदालतमे जे सिद्ध अछि, सएह जाएत।”

बाहर राति उतरि रहल छल। पुरान कचहरीक घड़ी चलैत छल। चारि बजि सतरह मिनट पार कऽ ओ बहुत आगाँ बढ़ि चुकल छल।

अध्याय ४० — अन्तिम बहस

वसुधाक मृत्यु केँ आठ महीना बीति चुकल छल। बरखा फेर आबि गेल छल, मुदा एहि बेर कचहरीक पुरान घड़ी चलैत छल। ओकर काँटा चारि बजि सतरह मिनट पर ठमकल नहि रहैत; दिन भरि अपन गोल बाट नपैत रहैत। जयनारायण केँ ई छोट बातो महत्त्वपूर्ण लगैत छल। एका बेर जे समय केँ कथा बनाओल गेल, ओकरा फेर साधारण समय बनबामे बहुत दिन लागैत अछि।

मुकदमा अन्तिम बहस धरि पहुँचला पहिने बहुत किछु घटि चुकल छल। कमली देवी शपथ पर अपन भोरक चाय देबाक बयान देलखिन। दुलारी अपन सीमा नहि बदलली—ओ हत्या नहि देखल छल, प्रखर केँ कोठरीमे नहि देखल छल, नवलकिशोरक चेहरा पूरा नहि देखल छल; मुदा आगि, चाल, चाभीक चमक, आ ओकर पहिने देखल कचहरीक देह-ढंगक बात कहली। प्रयोगशाला नवलकिशोरक कोटक कण आ ड्रमक राख बीच सम्बन्धक समर्थन कएलक, मुदा एके स्रोतक निश्चित दावा नहि कएलक। चिकित्सकीय विशेषज्ञ कहलक जे वसुधाक माथक चोट जीवनकालमे लागल छल, आ गिरलापर एहन चोट सम्भव अछि।

प्रखरक दूरभाष-स्थान, गाड़ी, बैंकक कर्ज, भूमि-समूहक भुगतान, आ परिवारक पहिल बयानक विरोधाभास अलग-अलग प्रमाण बनि अदालतमे आयल। अरुण मानि लेलनि जे ओ पहिने भाई केँ बचाबय लेल समय गलत कहने छलाह। वसुधाक माय सेहो स्वीकार कएलखिन जे “घरक नाम” बचाबयक भयमे ओ प्रखरक भोरक अनुपस्थितिक बात नुकौने छलीह। परिवारक झूठ हत्या सिद्ध नहि करैत छल, मुदा घटनाक चारूकात बनाओल घेरा जरूर तोड़ि देलक।

नवलकिशोरक विरुद्ध पुरान अभिलेख-नकल बदलबाक क्रम, पन्ना-संख्या, लाल पेन्सिलक “सीमा सुधार”, आ बादक राख सभ सामने छल। ओकर घरसँ भेटल पुरान चाभीक छल्ला घटनास्थलक कोठरीक बाहरी सेवा-दुआरि खोलि सकैत छल। कोठरीक मुख्य दुआरि भीतर सँ बन्द देखाइत छल, मुदा सेवा-दुआरि आ वेंटिलेटरक पुरान बनावट एहि दृश्य केँ बनाओल जा सकैत छल। प्रयोगशालाक प्रतिरूप-परीक्षणमे ई सम्भावना सिद्ध भेल; ई नहि सिद्ध भेल जे ओही राति ओही ढंग प्रयुक्त भेल।

रचना मंडल एखन दुलारीक बचाव-अधिवक्ता नहि मात्र, न्यायालयक अनुमति सँ साक्ष्य-प्रक्रियाक प्रश्न पर सहायक अधिवक्ता सेहो छलीह। दुलारी विरुद्ध अभियोजन पहिनहि औपचारिक रूपेँ आरोप वापस लऽ चुकल छल। इरा सिन्हा आदेशमे लिखने छलीह—“प्रारम्भिक शंका केँ दोषक स्थायी छाया बनि रहबाक अधिकार नहि।” दुलारी ओ पाँति सुनि केवल कहने छली—“ठीक। आब हमर कापीमे ई बात नहि लिखब।”

अन्तिम बहसक दिन न्यायालय भरल छल। मुदा इरा सिन्हा शुरू मे कहलीह, “ई मुकदमा दर्शक लेल नहि। जे लोक ठाढ़ अछि, बैसि जाउ। जे फुसफुसायत, बाहर जाएत।” कोठरी तुरन्त शान्त भऽ गेल।

अभियोजन चारि पुलिन्दा राखलक। पहिल—मानवीय साक्ष्य। दोसर—भौतिक प्रमाण। तेसर—अभिलेख-श्रृंखला। चौठ—तकनीकी विश्लेषण। जयनारायण पाछाँ बैसि रहल। आठ महीना पहिने ओ चारि ढेरी बनौने छलाह; आइ अदालतमे लगभग ओही रूप देखिकऽ हुनकर मुँह पर क्षीण मुस्की आयल।

अभियोजन कहलक, “राज्य एहि मुकदमाक आधार ककरो एक साक्षी पर नहि राखैत अछि। कमली देवी प्रखर केँ भोरक चाय लेने पहचानैत छथि। परिवारक पहिल बयान कहैत छल ओ घरमे छल; स्थान-सूचना, गाड़ी आ बादक स्वीकारोक्ति एहि बात केँ काटैत अछि। वसुधा कर्ण भूमि-अभिलेखक मूल श्रृंखला सार्वजनिक करबाक तैयारीमे छलीह। प्रखर भूमि-समूहक कर्ज-जालमे छल। हुनकर बीच भिड़न्त भेल। हिंसक धक्का बाद वसुधा कठोर किनारसँ टकरायली। सहायता बजाबयक बदला प्रखर नवलकिशोर केँ बजौलक, जे अभिलेख-छेड़छाड़मे पहिनेसँ जुड़ल छल। नवलकिशोर घटनास्थल बदललक, कागज जरौलक, आ आत्महत्याक कथा बनेबाक चेष्टा कएलक।”

बचाव अधिवक्ता उठलाह। “कथा सुगठित अछि। मुदा सुगठित कथा प्रमाण नहि। कमली देवी अन्हार-भोरमे किछु क्षण देखलीह। दूरभाष-स्थान क्षेत्र बतबैत अछि, कोठरी नहि। चोट गिरलासँ भऽ सकैत अछि। प्रखरक कर्ज अपराध नहि। परिवारक झूठ भय आ लाजसँ सेहो जन्मि सकैत अछि। नवलकिशोरक कोटक राख समान श्रेणीक अछि, एके ड्रमक सिद्ध नहि। दुलारी स्वयं कहैत छथि जे चेहरा पूरा नहि देखलीह। आ ‘सूत्र’क पहिल निष्कर्ष गलत छल—एक बेर दुलारी केँ जोखिम मानलक, फेर अपन निष्कर्ष बदललक। एहन साधन पर अपराध सिद्ध नहि कएल जा सकैत।”

इरा सिन्हा पुछलीह, “राज्य ‘सूत्र’क निष्कर्ष केँ स्वतंत्र प्रमाण मानैत अछि?”

अभियोजन कने रुकि कहलक, “नहि, माननीय। समय-रेखा आ दस्तावेजक परस्पर मिलान लेल सहायक विश्लेषण।”

“तखन अंतिम बहसमे ओकरा अलग राखू। जे तथ्य मूल स्रोतसँ सिद्ध अछि, ओ तथ्य कहू। यंत्रक भाषा सँ ओकर वजन नहि बढ़ाउ।”

अभियोजन सिर झुका लेलक।

अभिराम साक्षी-कुर्सी पर पहिने जिरह झेलि चुकल छल। आइ ओ पाछाँ माधवीक कात बैसल छल। ओकर लैपटॉप बन्द। पर्दा पर कोनो प्रतिशत नहि। माधवी धीरे पुछली, “असहज?”

“कने।”

“किएक?”

“पहिने लगैत छल जे जतेक साफ नक्सा बनत, सत्य ओतेक नजदीक। एखन बुझैत छी—कतेको बेर नक्सा साफ होइत अछि, मुदा मनुष्यक इरादा एखनहुँ धुँधला रहैत अछि।”

माधवी कहली, “ई बात सूत्रमे लिखल?”

“नहि। ई हमरा लिखबाक अछि।”

बहस फेर चलल। अभियोजन वसुधाक नखक पलस्तर, माथक चोट, घड़ीक झटका, चीनी पड़ल भोरक चाय, दू कप, सेवा-दुआरि, जड़ल कागज, आ चारि बजि नौ सँ बाइस मिनटक बीच स्रोत-विच्छेद अलग-अलग पढ़लक। प्रत्येक बिन्दु बाद इरा सिन्हा पूछैत छलीह—“ई ककर द्वारा प्रमाणित?” “श्रृंखला कहाँ?” “पहिल निरीक्षणक तिथि?” “फोटो कखन?” “ककर हस्ताक्षर?”

एक बिन्दु पर अभियोजन कहलक, “सूत्रक समय-रेखा बतबैत अछि—”

न्यायाधीश रोकलीह। “सूत्र समय नहि देखलक। कैमरा, दूरभाष, प्रवेश-पंजी आ मानवीय बयानक समय केँ जोड़लक। स्रोतक नाम कहू।”

कोठरीमे फेर चुप्पी। अभिरामक आँखि नीचा भऽ गेल, मुदा एहि बेर लाजसँ नहि। ओकरा लगा जे अदालत ओहि साधन केँ अपमानित नहि, ठीक मापमे रखि रहल अछि।

नवलकिशोरक बचाव कहलक, “दुलारीक पहचान अनिश्चित। राख अनिश्चित। चाभी समान रूपक। एहि सभसँ प्रमाण-नाशक निष्कर्ष सुरक्षित नहि।”

रचना, जे अदालतक अनुमति सँ दुलारीक साक्ष्यक सीमा पर छोट प्रस्तुति देबाक छलीह, उठली। “दुलारीक बातक वजन ओकर अनिश्चितता घटबैत नहि; ओकर विश्वसनीयता बढ़बैत अछि। ओ जतऽ नहि देखली, नहि कहलखिन। न्यायालय ओकर कथन केँ ओतबे मानय

जतेक ओ कहैत छथि—आगि देखली, एक मनुष्य देखल जकर चाल बादक विधिसम्मत प्रक्रियामे नवलकिशोरसँ मिलल, चाभीक पैघ गोल चमक देखली, आ पहिने वसुधा केँ एहि अभिलेख-कर्मीसँ पन्ना-क्रम पर झगड़ैत सुनने छली। एकर आगाँक कड़ी भौतिक प्रमाण आ अभिलेख देत, साक्षी नहि।”

न्यायाधीश पुछलीह, “दुलारी एखन कतऽ छथि?”

रचना पाछाँ देखली। दुलारी अन्तिम बेंच पर मास्टरनीक संग बैसल छलीह। हाथमे विधिक नोट नहि, विद्यालयक कापी।

“उपस्थित छथि।”

इरा सिन्हा दुलारी केँ केवल एक प्रश्न पुछलीह। “अहाँक पहिल बयान आ आइक बातमे कोनो एहन जोड़ अछि जे बादमे ककरो कहला पर मोन पड़ल?”

दुलारी ठाढ़ भेली। “हँ। नवलकिशोर केँ कचहरीमे वसुधा दीदीसँ झगड़ैत पहिने देखने छलहुँ; नाम पहचान-प्रक्रिया बाद मालूम भेल। हम एहि बात केँ अलग कहलहुँ। आगिक ओहि रातिक चेहरा साफ देखने छलहुँ—एना हम एखनहुँ नहि कहैत छी।”

“ठीक। बैसि जाउ।”

अन्तिम बहसक सबसँ कठिन भाग प्रखरक मनसाय पर छल। हत्या पहिने सँ रचल छल कि भिड़न्तमे हिंसा भेल? अभियोजनक पास भूमि-समूहक भुगतान, कर्ज, वसुधाक शिकायतक मसौदा, आ भोरक उपस्थिति छल। मुदा वसुधा केँ मारबाक पहिने बनाओल योजना सिद्ध करब कठिन छल। नवलकिशोर केँ भोरमे बजाओल गेल—ई सम्पर्क रेकर्ड छल; मुदा प्रखर पहिने सँ ओकरा कोठरीमे राखने छल, से सिद्ध नहि।

बचाव एहि बिन्दु केँ पकडलक। “दुर्घटना बादक कायरता केँ पहिने सँ रचल हत्या नहि बनाउ।”

अभियोजन उत्तर देलक, “धक्का जानि-बुझि कऽ देल गेल। गिरला बाद सहायता नहि बजाओल गेल। उलटे दृश्य बदलल गेल। ई साधारण दुर्घटना नहि।”

जयनारायण पाछाँ आँखि बन्द कऽ सुनैत रहलाह। हुनका वसुधाक पहिल दृश्य मोन पड़ल—एक स्त्री जे कानूनक कागज बीच मृत भेटल छलीह, आ सभ लोक तुरन्त अपन मनपसिन कथा बना लेने छल। ओ स्वयं सेहो। वृद्ध अनुभव केँ अन्तर्दृष्टि कहब आसान अछि; ओकर भीतरक पक्षपात केँ देखब कठिन।

बहस समाप्त भेल तखन इरा सिन्हा कहलीह, “निर्णय परसँ सुनाओल जाएत। दूनू पक्ष लिखित संक्षेप देत। तकनीकी सामग्रीक विषयमे एक बात एखन साफ करैत छी—न्यायालय

ककरो यंत्र कै साक्षी नहि मानत। यंत्रक विश्लेषण तखनहि उपयोगी, जखन ओकर मूल स्रोत प्रमाणित, प्रक्रिया परीक्षण योग्य, आ मानवीय उत्तरदायित्व चिन्हित हो। निर्णयक बोझ मनुष्यक अछि।”

परसँ न्यायालय फेर भरल। एहि बेर जयनारायण पहिने आयल छलाह। दुलारी नहि आयली; ओकर विद्यालयमे परीक्षा छल। “अदालत हमरा बिना निर्णय देब जानैत अछि,” ओ कहि पठौने छली।

इरा सिन्हा लमहर निर्णय पूरा नहि पढ़लीह। मुख्य निष्कर्ष पढ़ल गेल।

“प्रखर कर्णक विरुद्ध पहिने सँ रचल हत्या पर्याप्त रूपेँ सिद्ध नहि। मुदा आर्थिक हित, वसुधा कर्णसँ भिड़न्त, जानि-बुझि कऽ देल हिंसक धक्का, चोट बाद तत्काल सहायता नहि बजाबय, आ तकर बाद घटनास्थल बदलबाक काजमे सहभागिता एक समेकित श्रृंखला बनबैत अछि। मृत्यु ओकर हिंसक काजक प्रत्यक्ष परिणाम सिद्ध होइत अछि। तदनुसार पहिने सँ रचल हत्या सँ पृथक, मृत्यु कारक गंभीर अपराध आ प्रमाण-नाशक षड्यन्त्रक दोष सिद्ध।”

प्रखरक चेहरा खाली भऽ गेल। वसुधाक माय रोइ पड़लीह। अरुण आँखि बन्द कएलनि। परिवारक घेरा अन्ततः कानूनक शब्दमे टूटल छल।

“नवलकिशोर झाक विरुद्ध घटनास्थल बदलब, दस्तावेज जराबय, अभिलेखक पन्ना-क्रम छेड़ब, आ जाँच भटकाबय लेल प्रखरक संग मिलि कऽ काज करब—मानवीय बयान, चाभी-प्रवेश, राखक सम्बन्ध, कपड़ा-कण, सम्पर्क-समय आ अभिलेखीय अनियमितताक संयुक्त श्रृंखलासँ सिद्ध। वसुधाक मूल चोट देबाक प्रत्यक्ष प्रमाण नवलकिशोर विरुद्ध नहि; एहि सीमा कै निर्णय स्पष्ट राखैत अछि।”

फेर न्यायाधीश दुलारीक विषय उठौलखिन। “दुलारी सदाय विरुद्ध पहिने उठल शंका पूर्णतः समाप्त। अदालत पुलिस कै निर्देश दैत अछि जे जमानत, गिरफ्तारी आ बादक आरोप-वापसीक सभ अभिलेखमे स्पष्ट उल्लेख रहय, जाहिसँ भविष्यक सत्यापनमे ‘हत्या आरोपी’क अधूरा छाया हुनकर नामसँ नहि जुड़ल रहय।”

रचना गम्भीर भऽ सिर झुकेलखिन। एहन पाँति कागज पर छोट होइत अछि, मुदा गरीब मनुष्यक भविष्य मे पैघ।

अन्तिम पाँति तकनीकी सामग्री पर छल। “सूत्रक पहिल त्रुटिपूर्ण निष्कर्षक उपयोग एहि मुकदमाक चेतावनी अछि। बादक सुधार उपयोगी रहल; मुदा उपयोगिता सर्वज्ञता नहि। न्यायिक निर्णय स्रोत, परीक्षण, जिरह आ उत्तरदायी मनुष्य पर टिकत।”

अभिराम गहरी साँस लेलक। ओकरा लगा जे ओकर बनाओल साधन आइ हारल नहि। ओकरा पहिल बेर मर्यादा भेटल।

बाहर पत्रकार सभ दौड़ल। प्रश्न चहुँदिस छल—प्रखर, नवलकिशोर, कृत्रिम-बुद्धि, भूमि-समूह। विनय एतबे कहलक, “निर्णय पढ़ू। एक वाक्यमे मुकदमा नहि समाइत।”

सीढ़ी उतरैत जयनारायण कहला, “बहुत लोक सत्य केँ एक पाँति चाहैत अछि।” अभिराम हँसि जोड़लक, “कतेको बेर पूरा जिल्द, संगमे संस्करण-इतिहास।” फाटक बाहर कमली देवीक चाय उबलि रहल छल।

मुकदमाक आपराधिक गाँठि खुलि गेल छल। मुदा वसुधा जे कागज बचाबय चाहैत छलीह, ओकर असल जीवन एखन दोसर न्यायालयक बाट जोहि रहल छल—सात टोला, सात चिन्ह, आ ओ माटि जकर नाम कागजमे बेराबेरी बदलल गेल छल।

अध्याय ४१ — माटि फेर नाम पबैत अछि

अपराध-मुकदमाक निर्णयसँ जमीन अपने आप घुरि नहि आयल। ई बात सात टोला परिवार केँ रचना पहिल बैठकमे साफ कहि देलखिन। “प्रखर आ नवलकिशोरक दोष सिद्ध भेला सँ अभिलेख-छेड़छाड़क सन्देह मजबूत भेल। मुदा भूमि-अधिकार अलग कार्यवाही अछि। एतऽ प्रत्येक कागजक उत्पत्ति, सीमा, कब्जा, कर-रसीद, परिवार-श्रृंखला आ सरकारी नकलक इतिहास फेर जाँचल जाएत।”

बैठक रहमत काकाक आँगनमे भेल। बँधनीक रंगीन कपड़ा बाँसक डोरी पर सुखाइत छल। सात टोला सँ लोक आयल—कियो कागजक पुरान झोरा, कियो टीनक डिब्बामे रसीद, कियो दादा-दादीक नाम मात्र। दुलारी पाछाँ बच्चा सभ संग बैसल, मुदा नोट सभसँ नीक ओही लिखैत छल।

“हमर नाम सूचीमे कोना?” एक बूढ़ि पुछलीह।

“पहिने जे अछि, से पढ़ब,” रचना कहलीह। “जे नहि अछि, ओ अपने सँ नब कथा बना कऽ नहि जोड़ब।”

जयनारायण रहमत काका दिस देखलनि। “ई वाक्य हम सभ परियोजनामे लिखि देबाक चाही।”

रहमत काका धागाक गाँठि कसैत कहलनि, “लेखक लोकक पेट काटि देत।”

सभ हँसल।

सातम प्रमाण-चिह्नक विशेषज्ञ जाँच पूरा होइत-होइत दोसर महीना लागल। गोल भीतर सात बिन्दु—जकर चर्चा कुसुमाक पत्रमे छल—१९३४क दू सुरक्षित नकल, १९३५क दाखिल-बहीक जेबमे भेटल टुकड़ा, आ तीन परिवारक निजी घराना-पत्रक छविमे मिलल। १९४१ बादक पाँच संशोधित नकलमे चिन्ह टूटल, स्थान बदलल अथवा पूरा गायब। कागज, स्याही आ लिखावट विशेषज्ञ सभ एके बात नहि कहलक; मुदा संयुक्त मत स्पष्ट छल—पुरान सात-चिह्न श्रृंखला बादक नकलसँ अधिक प्राचीन आ परस्पर सम्बद्ध अछि।

सरकारी अभिलेख विभाग अपन पहिल उत्तरमे सावधानी बरतलक—“एहि सँ स्वामित्व स्वतः सिद्ध नहि।”

रचना कहलीह, “ठीक। हम सेहो स्वतः सिद्ध नहि कहैत छी। मुदा जे आधार पर विस्थापन नोटिस देल गेल, ओ नकलक प्रमाणिकता एखन गंभीर प्रश्नमे अछि। तखन लोक केँ उजाड़ि कऽ बादमे जाँचब न्याय नहि।”

भूमि-अधिकारक अन्तरिम सुनवाई जिला दीवानी न्यायालयमे भेल। एहि बेर कक्षमे कैमरा नहि, भीड़ कम। जमीनक मुकदमा अपराध जकाँ तात्कालिक तमाशा नहि बनैत; ओ वर्षक वर्ष चलैत रहि सकैत अछि। मुदा सात टोला परिवार लेल एक दिनो भारी छल, कारण भूमि-समूहक बुलडोजरक अनुबन्ध तैयार छल।

सरकारी पक्ष कहलक, “वर्तमान अभिलेखमे भूखण्ड परियोजनाक नाम। पुरान दस्तावेजक प्रमाणिकता जाँचाधीन। याचिकाकर्ता सभक कब्जा मिश्रित, किछु अतिक्रमण सेहो।”

रचना उत्तर देलखिन, “हम अन्तिम स्वामित्व आइ नहि माँगैत छी। हम यथास्थिति माँगैत छी। जे नकल पर राज्य भरोसा कऽ रहल अछि, ओकर निर्माण-श्रृंखलामे आपराधिक छेड़छाड़ सिद्ध भेल अभिलेख-कर्मी जुड़ल अछि। सात पुरान प्रमाणक चिह्नक श्रृंखला वर्तमान नकलमे टूटल अछि। परिवार दशकसँ निवास, कर, जल-उपयोग, विद्यालय आ पंचायतक अभिलेखमे उपस्थित अछि। जाँच पूरा होएबाक पहिने विस्थापन अपरिवर्तनीय क्षति होएत।”

न्यायाधीश पुछलखिन, “सरकार एखन तुरन्त कब्जा किएक चाहैत अछि?”

अधिकारी फाइल पलटलनि। “परियोजनाक समय-सीमा बाँधल अछि।”

“मनुष्यक घर समय-सारिणीक खाली खाना नहि,” न्यायाधीश कहला, फेर तुरन्त जोड़लनि, “मुदा अदालत भाव पर नहि, अभिलेख पर आदेश देत। राज्य सात दिनमे मूल भू-अभिलेख, संशोधन आदेश, मुआयना-बही आ नकल-निर्माणक श्रृंखला प्रस्तुत करय।”

आदेशक अन्तिम पाँति सुनिते सात टोला लोकक साँस एक संग निकलल—“तावत यथास्थिति। कोनो ध्वस्तीकरण, बलपूर्वक विस्थापन अथवा तृतीय पक्षक नब अधिकार नहि बनाओल जाए।”

बाहर आबि कऽ कियो नारा नहि लगौलक। बूढ़ि पार्वती देवी जमीन पर बैसि गेलीह आ अपन झोरा खोलि एक पुरान रसीद फेर छूलीह। “जीत भेल?”

रचना हुनका कात बैसलीह। “एखन घर बचल। अन्तिम जीत नहि।”

पार्वती देवी कहलीह, “घर बचल तऽ मुकदमा लड़ब।”

ई वाक्य सात टोला मे साँझ धरि घूमल।

अगिला सप्ताह सर्वेक्षण दल आयल। एहि बेर गुपचुप नाप नहि। प्रत्येक सीमा-बिन्दु पर स्थानीय परिवार, सरकारी अमीन, अदालतक नियुक्त पर्यवेक्षक, आ चित्रांकन। अभिराम अपन प्रणाली लऽ आयल, मुदा पहिने कागज पर लिखल—“सूत्रक नक्सा सहायक दृश्य; वैधानिक माप नहि।” दुलारी पढ़ि हँसली। “आब तोहर औजार अपन सीमा पहिने लिखैत अछि।”

“तोहर देन।”

“हमर जेलक फीस देब?”

अभिरामक चेहरा कस्सल। दुलारी तुरन्त कहली, “ठट्ठा। मुदा याद रहय।”

“रहत।”

माधवी माप टोलीक संग घर-घर घूमली। सिलाइ करैत माय छप्परक भीतरसँ पुरान बक्सा निकालि देलखिन। ओहि मे वसुधाक दू चिट्ठी छल—एकमे विद्यालयक फीस माफीक निवेदनक मसौदा, दोसरमे सात टोला स्त्री सभक नाम। वसुधा जमीनक मुकदमा केवल खेतक सीमा जकाँ नहि देखैत छलीह; हुनका लेल माटि घर, विद्यालय, चूल्हा, पोखरि, मजदूरीक बाट, मृतकक चिता आ बच्चाक खेलक ठाम छल।

माधवी चिट्ठी पढ़ि दीर्घ समय चुप रहलि। माय पुछलीह, “फेर रोबह?”

“नहि।”

“तोर चेहरा दुलारी जकाँ झूठ पकड़ि दैत अछि।”

दूनू हँसलीह।

रहमत काकाक घराना-पत्रक पुरान नील धागा वैज्ञानिक परीक्षण लेल काटल नहि गेल। विशेषज्ञ केवल चित्र, रेशा-दिश आ रंगक अविनाशी परीक्षण कएलक। काका साफ कहने छलाह—“पुरखाक कागज बचाबय लेल पुरखाक धागा काटब जरूरी नहि तऽ नहि काटू।” अदालत सेहो मानि लेलक।

एक दिन सरकारी नकल-कक्षसँ खबर आयल—१९७२क प्रमाणित नकल बनेबाक आदेश-बही भेटल अछि। आदेशक मूल पन्नामे सात टोला सीमाक “सुधार” लेल कोनो वैधानिक स्वीकृति नहि। ककरो बादक हाथसँ पन्ना किनार पर टिप्पणी जोड़ल। हस्ताक्षर अपठनीय, मुदा स्याही कालान्तरक। ई अन्तिम स्वामित्व सिद्ध करैत नहि, मुदा वर्तमान परियोजना अभिलेखक नींव आओर कमजोर कऽ देलक।

रचना कागज टेबुल पर राखि कहलीह, “ई एखन सभसँ पैघ बात नहि जे पुरान कागज साँच अछि। पैघ बात ई जे नब कागज अपने केँ साँच सिद्ध नहि कऽ पा रहल अछि।”

जयनारायण कहलनि, “कतेको मुकदमामे झूठ पकड़ब सत्य खोजबासँ आसान होइत अछि।”

“मुदा जमीन लोक केँ सत्य चाही,” माधवी कहली.

“ताहि लेल समय।”

तीन महीना बाद अन्तरिम आदेश विस्तारित भेल। राज्य केँ पुनः सर्वेक्षण, सात टोला परिवारक दावाक व्यक्तिगत सुनवाई, आ पुरान सात-चिह्न श्रृंखलाक विशेषज्ञ प्रतिवेदन पर निर्णय देबाक निर्देश भेटल। भूमि-समूहक निर्माण अनुमति तावत स्थगित।

एहि आदेशक दिन कचहरी बाहर दुलारी अपन परीक्षा-परिणाम लऽ कऽ आयली। ओ रातिक पाठशालाक उच्चतर कक्षा मे उत्तीर्ण भऽ गेल छलीह। कागज हाथमे नचबैत कहली, “आइ हमर जमीनक आदेश सँ पैघ समाचार ई अछि।”

फूलो झट कहलीह, “पहिने नौकरी खोज।”

“पहिने पढ़ब।”

“पेट?”

“दुनू।”

कमली देवी चाय देलखिन। रहमत काका ओकर कापीक लेल कपड़ाक छोट जिल्द बनेने छलाह—नील नहि, हरियर। “नील धागा बहुत मुकदमा करा देलक,” ओ कहला।

दुलारी हँसि उठली। “हरियरक मुकदमा बादमे।”

सात टोला लौटैत समय सड़कक कात एक सरकारी तख्ती नव लागल छल—“पुनः सर्वेक्षणाधीन क्षेत्र; न्यायालयीय यथास्थिति आदेश लागू।” ई स्वामित्व-पत्र नहि छल। मुदा बुलडोजरक लाल निशान पर पहिल बेर कानूनक दोसर रंग चढ़ल छल।

पार्वती देवी तख्ती पढ़ि नहि सकैत छलीह। दुलारी पढ़ि सुना देलक। बूढ़ि माटि छूलीह। “हमर नाम लिखल?”

“एखन क्षेत्रक नाम अछि।”

“हमर नाम कखन?”

दुलारी कहली, “जखन सुनवाईमे अपन कागज देब।”

पार्वती देवी मुस्करेलीह। “तखन हम जीवित रहब।”

माधवी ई वाक्य सुनि वसुधा केँ मोन कएलक। ककरो जीवन पूरा परिणाम देखबाक पहिने समाप्त भऽ जाइत अछि। तकर अर्थ ओकर काज अधूरा नहि; कतेको बेर दोसर लोक ओहि अधूरापन केँ अपन दिनक काज बना लैत अछि।

साँझमे सात टोला पोखरिक कात बच्चा सभ खेलैत छल। अमीनक सफेद चूना-चिन्ह एखनहुँ माटि पर देखाइत। अभिराम मोबाइलमे नक्सा खोलि फेर बन्द कऽ देलक। माधवी पुछली, “देखब नहि?”

“आइ आँखिसँ देखब।”

“उन्नति भेल।”

“सूत्र ई बात दर्ज करय?”

“नहि। सभ सुधार डेटा नहि होइत।”

दूनू कने दूर चलल। बीचक दूरी पहिने जकाँ कस्सल नहि छल। नेह तुरन्त पुरान रूपमे घुरल नहि। विश्वासक माटि सेहो पुनः सर्वेक्षण माँगैत छल—कुन सीमा साँच, कुन रेखा भयमे खींचल, कुन शब्द बादमे जोड़ल।

अभिराम कहलक, “हम तोरा एक बात एखन कहब चाहैत छी, बिना ककरो कागजक पाछाँ नुकौने। हमरा तोहर संग रहब पसिन अछि। मुदा हम ई नहि चाहैत छी जे वसुधा दीदीक मृत्यु, मुकदमा, वा साझा काम हमरा दूनू केँ बलजोरी एक कथा बना दय।”

माधवी पोखरिक पानि दिस देखली। “हमरो तोहर संग रहब नीक लगैत अछि। मुदा जँ फेर किछु नुकाएब—”

“तँ?”

“तँ हम पहिने राग करब, बादमे प्रश्न।”

“क्रम उलट नहि सकैत?”

“नहि।”

अभिराम हँसल। “ठीक।”

माधवी ओकर हाथ पकड़ली, बस किछु डेग लेल। कोनो प्रतिज्ञा नहि, कोनो भविष्यवाणी नहि। साँझक बाट, दुई हाथ, आ कने कम भय।

पाछाँ सात टोला मे लोक अपन-अपन घर लौटि रहल छल। माटि एखन पूर्णतः घुरल नहि छल, मुदा ओकर नाम फेर उच्चरित होए लागल छल—रसीदमे, सुनवाईमे, नक्सामे, बच्चाक गृहकाजमे। कागज पर मिटाओल नाम सभ धीरे-धीरे फेर आवाज पबैत छल।

अध्याय ४२ — जतऽ तर्क थमि जाइत अछि

हवेलीक मुख्य कोठरी फेर सँ सील कएल छओ महीना भऽ चुकल छल। अपराध-मुकदमा समाप्त, भूमि-मुकदमा चलि रहल, आ पुरान भवन एखन न्यायालयक आदेशसँ संरक्षित अभिलेख-स्थल मानल गेल छल। भीतर प्रवेश लेल दू चाभी, हस्ताक्षर, समय-पंजी आ गलियाराक कैमरा आवश्यक छल। वसुधाक मृत्यु बाद कियो अकेले भीतर नहि गेल।

माधवी एखन जिला अभिलेख केन्द्रमे अनुबन्ध पर काम करैत छलीह। ओकर काम पुरान दस्तावेजक स्थानीय नाम, बोली, परिवार-स्मृति आ आधिकारिक सूचक बीच पुल बनायब। अभिराम “सूत्र”क नब संस्करण पर काम करैत छल—एखन प्रत्येक निष्कर्षक सोझाँ तीन चीज अनिवार्य: स्रोत, अनिश्चितता, आ “ककर मानवीय समीक्षा?” जयनारायण अपन निवृत्ति फेर एक बेर घोषित कऽ चुकल छलाह, जकर अर्थ सभ जानैत छल—ओ रोज कचहरी नहि जाएत, मुदा जे दिन कियो कहत “एकटा बात बुझि नहि पड़ैत”, ओ उपस्थित भऽ जाएत।

दुलारी विद्यालयक नियमित कक्षामे नाम लिखौने छलीह। रातिक पाठशाला छोड़ल नहि; ओ कहैत छली—“ओतऽ हम पहिने अपन नाम लिखने रही।” फूलो एखनहुँ पढ़ाइ पर खरचा देखिकऽ भुनभुनाइत छलीह, मुदा बेटी देर कएलापर दुआरि पर ठाढ़ भेटैत। कमली देवी चायमे चीनी पुछबाक आदति बदलने नहि छलीह। रहमत काका एखन सात टोला दस्तावेज लेल संरक्षण-कपड़ा सिअबैत छलाह।

जीवन रहस्यक बादो चलैत अछि। ई बात सभसँ कठिन आ सभसँ सान्त्वनादायक छल।

एक साँझ संरक्षण विभागक संदेश आयल—हवेलीक मुख्य कोठरीमे छतक नमी देखल गेल अछि; बरखा पहिने निरीक्षण आवश्यक। विनय ठाकुर, अभिलेखपाल शशिभूषण मिश्र, भवन अभियन्ता, माधवी, अभिराम आ जयनारायण केँ संयुक्त निरीक्षण लेल अनुमति भेटल।

“हम किएक?” जयनारायण पुछलनि।

विनय उत्तर देलक, “किएक तँ अहाँ नहि रहब तऽ बादमे कहब—कोना देखलहुँ?”

“ठीक। बूढ़क अपमानक ई नब तरीका अछि।”

अगिला भोर सभ सील जाँचि भीतर गेल। कैमरा-पंजी सही। पिछला प्रवेश अठारह दिन पहिने छत-माप लेल भेल छल; ओ समयो पाँच लोक उपस्थित। मुख्य कोठरीक मोहर अखण्ड। खिड़की भीतरसँ बन्द। सेवा-दुआरि पर नब धातुक सील। वेंटिलेटर पर जाली।

माधवीक देहमे ओ पुरान सिहरन फेर उठल, मुदा भय पहिने जकाँ तीक्ष्ण नहि। कोठरी एखन घटनास्थलसँ बेसी स्मृति-स्थल लगैत छल। मेज ओही ठाम, देवालक दाग संरक्षित, घड़ी प्रयोगशाला बाद फेर टाँगल नहि गेल; खाली गोल हलुक निशान मात्र।

अभियन्ता छतक कोना देखए लगल। शशिभूषण नमी-मापक यंत्र रखलनि। विनय सील-पंजी लिखैत रहल। अभिराम कैमरा-समय मिलान करैत छल। जयनारायण खिड़कीक कात ठाढ़ बाहरक पीपड़ देखैत रहलाह।

माधवी मेजक लग गेली। पहिले ओ बुझली जे कियो संरक्षण-कपड़ा मोड़ि छोड़ने अछि। उज्जर कपड़ाक बीच एक भूरा पन्ना छल। पन्नाक चारु कात नील धागा एक बेर घूमि छोट गाँठिमे बान्हल।

ओ ठमकि गेली।

“विनय।”

स्वर एतेक धीमा छल जे सभ घुरि देखलक।

“कियो किछु छूबू नहि,” विनय तुरन्त कहलक।

कक्ष स्थिर। अभिरामक हाथ हावामे रुकल। जयनारायण धीरे मेज दिस अएलाह, मुदा दू डेग दूर ठाढ़। शशिभूषण दस्ताना पहिरने छलाह, तइयो हाथ पाछाँ कऽ लेलनि।

विनय पहिने चारु कात वीडियो बनौलक। मेजक पृष्ठ, पन्ना, धागा, धूरिक रेखा, खिड़की, दुआरि। “ई पिछला निरीक्षणक सूचीमे छल?”

शशिभूषणक चेहरा सफेद पड़ल। “नहि।”

“संरक्षण दल किछु छोड़ने?”

“नहि। सभ वस्तु सूचीबद्ध। नील धागासँ बान्हल किछु नहि।”

अभिराम कहलक, “कैमरा देखैत छी।”

“एखन नहि,” जयनारायण कहलनि। “पहिने जे सामने अछि, ओ पूरा दर्ज हो।”

विनय हुनका देखलनि, फेर सिर हिलेलक।

पन्ना खोलबाक निर्णय तुरन्त नहि भेल। न्यायालयक मोहर लागल कक्षमे अज्ञात वस्तु भेटल छल; ताहि लेल दण्डाधिकारीक दूरभाष अनुमति, स्वतंत्र साक्षी, आ संरक्षण प्रक्रिया फेर शुरू भेल। दू घण्टा बाद सभ औपचारिकता पूरा भेला पर नील धागाक गाँठि काटल नहि

गेल; रहमत काका केँ वीडियो पर देखाओल गेल। ओ कहला, “गाँठि खोलू। काटू नहि। ई कुसुमाक बँधनी-जकाँ अछि, मुदा ‘जकाँ’ लिखू। हमरा सामने मूल नहि।”

शशिभूषण पातर औजारसँ गाँठि ढीला कएलनि। पन्ना खुलल।

माधवीक साँस रुकल।

ई ओही पत्रक पूरा पाठ छल जकर दू भौतिक टुकड़ा जिला अभिलेखागारक अलग सुरक्षित आवरणमे एखनहुँ मोहरबन्द छल। पहिल छह चिन्ह, सातमो घराना-पत्रक चिन्ह, गोल भीतर सात बिन्दु, कुसुमाक “सातम साक्षी” नाम, नील सूतक निजी चिन्ह—सभ। अन्तिम पाँति सेहो:

“जे देखैत अछि मुदा नाम नहि कहैत, ओकरा कोन लेखामे राखब?”

मुदा ई पन्ना फाटल नहि छल। अखण्ड।

कियो किछु बेर बजल नहि।

अभिराम पहिने सँ सुरक्षित डिजिटल छवि खोलबाक लेल लैपटॉप दिस बढल, फेर रुकल। “पहिने मूल दू टुकड़ाक मोहर जाँचब जरूरी।”

विनय तुरन्त अभिलेखागार दूरभाष कएलक। लाइव वीडियो पर सुरक्षित आवरण देखाओल गेल—दू टुकड़ा अपने-अपने क्रमांक संग भीतर। सील अखण्ड। प्रवेश-पंजीमे कोनो असामान्यता नहि।

शशिभूषण कुर्सी पर बैसि गेलाह। “तँ ई तेसर प्रति हो सकैत अछि।”

जयनारायण कहलनि, “हो सकैत अछि।”

“कागजक आयु जाँचब।”

“जाँचब।”

“स्याही।”

“जाँचब।”

अभिराम एखन कैमरा-पंजी खोललक। हवेलीक बाहरी फाटक, मुख्य गलियारा, कोठरीक दुआरि—तीन स्रोत। पिछला अठारह दिनक गति-चिह्न खोजल। जे लोक प्रवेश कएल, सभ सूचीमे। रातिमे ककरो छाया नहि। कोनो स्रोत-विच्छेद नहि।

“कैमरा ककरो प्रवेश नहि देखबैत अछि,” अभिराम धीरे कहलक।

विनय तुरन्त कहलक, “तकर अर्थ कियो प्रवेश नहि कएल—एखन ई नहि कहब। अन्हर कोना, पुरान रेकर्डिंग, छतक बाट, तकनीकी दोष—सभ जाँच।”

अभिराम ओकरा देखलक। “ठीक।”

माधवीक होंठ पर अनायास मुस्की आयल। “सभ सुधरि गेलहुँ।”

जयनारायण कहला, “नहि। सभ डरि गेल अछि।”

कक्षमे हलुक हँसी उठल, मुदा तुरन्त फेर शान्ति।

पत्रक नील धागा देखिते माधवी केँ सपना मोन पड़ल—लाल ओढ़नी, पायल, अन्हार बरामदा, एक एहन स्त्रीक पीठ जकर चेहरा ओ कखनो साफ नहि देखल। एखन ओ सपना केँ प्रमाण नहि बनबैत छल। ओ अपने सँ कहली—सपना सपना अछि। सामनेक कागज कागज अछि। दुनूक बीच जे सिहरन अछि, ओकर नाम अलग अछि।

“अहाँ केँ की लगैत?” अभिराम धीरे पुछलक।

“हमरा लगैत अछि हमरा किछु नहि मालूम।”

“ई उत्तर तोहर पहिने नहि छल।”

“तोहरो नहि।”

दूनु एक-दोसराक दिस देखल। नेहक बीच कतेको बेर सबसँ सुरक्षित वाक्य “हम नहि जानैत छी” होइत अछि। एहि वाक्यमे छल नहि, अभिनय नहि, केवल जगह—दोसर मनुष्य लेल, नब तथ्य लेल, भिन्न भविष्य लेल।

निरीक्षण समाप्त होइत साँझ भऽ गेल। पन्ना अलग नब साक्ष्य-पुट्टीमे राखल गेल; नील धागा सेहो। परीक्षण बादे किछु कहल जाएत। विनय स्पष्ट लिखलक—“उत्पत्ति अज्ञात; ऐतिहासिकता अप्रमाणित; दृश्य समानता मात्र।” अभिराम एहि वाक्यक फोटो लेल।

“किएक?” माधवी पुछली।

“सूत्रक प्रशिक्षण लेल।”

“फेर?”

“एहि बेर प्रशिक्षणक पहिल पाठ—अज्ञात केँ अज्ञात लिख।”

जयनारायण बरामदा पर आबि गेलाह। बरखा थमि चुकल छल। भीजल आँगनमे पीपड़क पात पर उजास अँटकल। दूर कचहरीक घड़ीक ध्वनि आयल—पाँच बेर।

माधवी आ अभिराम हुनकर कात ठाढ़ भेल। विनय पाछाँ कागज बन्द करैत छल।

अभिराम पुछलक, “जयनारायण बाबू, कैमरा साफ। सील साफ। दू टुकड़ा अभिलेखागारमे। एतऽ अखण्ड प्रति। अहाँक अन्तर्दृष्टि की कहैत अछि?”

जयनारायण ओकरा एहन नजरसँ देखलनि जेना बहुत पुरान प्रश्न फेर नब कपड़ा पहिरि आयल हो।

“अन्तर्दृष्टि एखन चुप अछि।”

“सच?”

“हँ। जखन तथ्य कम हो, चुप्पी बुद्धिक हिस्सा अछि।”

माधवी हँसली। “ई बात पहिने किएक नहि सीखलहुँ?”

“उमेर बेकार नहि गेल।”

तीनू सीढ़ी उतरए लगल। आधा बाट पर जयनारायण रुकलाह। पाछाँ हवेलीक बन्द दुआरि देखलनि। ओहि दुआरि पाछाँ एखन एक नब प्रश्न मोहरबन्द छल—न अपराध सुलझेबाक लेल, न जमीनक अधिकार सिद्ध करबाक लेल। बस प्रश्न।

माधवी हुनका देखैत पुछली, “सभ साक्षीक नाम होएबाक चाही?”

जयनारायण मुस्करौलनि।

“सभ साक्षी अदालतमे बयान नहि दैत अछि।”

एतबे कहि ओ आगाँ बढि गेलाह।

बरखाक बादल फाटि पश्चिममे हलुक उजास निकलल। माधवी अभिरामक हाथ पकड़ली। एहि बेर किछु डेग लेल नहि; मुदा ओ ई सेहो नहि सोचली जे सदिखन लेल। वर्तमानक हाथ वर्तमानमे पर्याप्त छल।

पाछाँ हवेली चुप। कैमरा चलैत। सील चमकैत। पन्ना पुट्टी भीतर। नील धागा अलग आवरणमे। तर्क अपन काम पूरा कऽ जतेक दूर जा सकैत छल, गेल। ओकर आगाँ अन्हार नहि, एक अनिश्चित उजास छल—जतऽ प्रश्न बचल रहि सकैत अछि, बिना झूठ उत्तरक।

सातम साक्षी ओही उजासमे चुप रहल।